राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(आनरेरि डायरेक्टर)—भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४८

मुंहता नैणसी विरचित

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

मुंहता नैणसी विरचित

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग १

सम्पादक

बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१६
प्रथमावृत्ति ७५०

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८१

खिस्ताब्द १९६०
मूल्य ८.५० न. पै.

मुद्रक—पृ. १ से ५६ राजस्थान टाम्इस प्रेस, अजमेर; पृ. ५७ से १०४ जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर और शेष सामग्री साधना प्रेस, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी-तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६.००। २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०.७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३.००। ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १.७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४.००। १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान, मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान, मूल्य ३.७५। ४. बांकीदासरी ख्यात–महाकवि बांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७. कवीन्द्र-कल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००। ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। १०. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न. पै.।

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७. वसन्तविलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. वस्तुरत्नकोश। ११. चान्द्रव्याकरण। १२. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ। १८. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी। २. गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम। ४. सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. राजस्थानी दूहा संग्रह। ६. वीरवांण–ढाढी बादर। ७. रघुवरजसप्रकाश–किसनाजी आढ़ा। ८. राठोड़ांरी वंशावली। ९. राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची। १०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २। १३. देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता। १४ पुरोहित वगसीराम और अन्य वार्ताएँ। १५ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामें लिखित गद्य-साहित्यके अन्तर्गत अनेक ख्यातें प्राप्त होती हैं, जिनमें वांकीदासरी ख्यात, मुंहता नैणसीरी ख्यात, राठोड़ांरी ख्यात, दयालदासरी ख्यात, सीसोदियांरी ख्यात, कछवाहांरी ख्यात, जोधपुररी ख्यात, महाराजा मानसिंघजीरी ख्यात और चहुवांण, सोनगरांरी ख्यात विशेष प्रसिद्ध हैं। इन ख्यातोंका साहित्यिक और ऐतिहासिक दोनों ही प्रकारसे विशेष महत्त्व है, किन्तु इनमेंसे अधिकांश ख्यातें अब तक अप्रकाशित हैं तथा साहित्य-क्षेत्रमें थोड़े ही व्यक्तियोंको इनके विषयमें परिचय प्राप्त है।

प्रस्तुत ख्यात-साहित्यका निर्माण मुख्यतः हमारे पूर्वजोंमें जागृत हुए ऐतिहासिक गौरवाभिमानके कारण हुआ है और इस कार्यके लिये हमारे ख्यात-लेखकोंको विभिन्न-विषयक सामग्री खोजने और उसको विधिवत् सङ्कलित करनेमें पर्याप्त परिश्रम करना पड़ा है। हमें भारतीय साहित्यिक और ऐतिहासिक इतिवृत्त लिखनेमें ऐसी ख्यातोंसे विशेष सहायता मिल सकती है किन्तु अद्यावधि इनका उपयोग नाम मात्रके लिये ही हुआ है। इसका एक कारण इन ख्यातोंका अप्रकाशित रहना भी है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके अन्तर्गत "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाका" प्रकाशन प्रारम्भ करनेके साथ ही हमने निश्चय किया था कि महत्वपूर्ण ख्यातें शीघ्र ही सुसम्पादित रूपमें प्रकाशित करदी जावें। तदनुसार "वांकीदासरी ख्यात" और "मुंहता नैणसीरी ख्यात" प्रेसमें दी गईं। "वांकी-दासरी ख्यात" तो हम पहले ही साहित्य-जगत्में प्रस्तुत कर चुके हैं और चिर प्रतिक्षित "नैणसीरी ख्यात" प्रथम भाग को अब प्रकाशित करनेका अवसर प्राप्त हो रहा है।

"मुंहता नैणसीरी ख्यात"का हिन्दी अनुवाद कुछ वर्षों पहले काशीकी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हुआ है किन्तु यह अनुवाद अविकल हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। इस अनुवादमें अनेक घटनाएँ विपर्यस्त रूपमें लिखी गई हैं जिससे ग्रन्थकी वास्तविकताका अपेक्षित परिचय नहीं मिल पाता। "नैणसीरी ख्यात"की राजस्थानी भाषा-शैली हमारे साहित्यमें विशेष महत्त्वपूर्ण है और गद्यकी यह एक परिमार्जित एवं प्रौढ़ कृति है। किसी भी साहित्यिक कृतिका रसास्वाद मूल पाठके विना नहीं प्राप्त किया जा

सकता, इसलिये हम प्राचीन कृतियोंके सम्पादन एवं प्रकाशनमें मूल रचनाके पाठको प्रधानता देते हैं।

"मुंहता नैणसीरी ख्यात"के प्रकाशनमें हमें कई कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। कार्य-विस्तारका अनुमान करते हुए हमने पहले राजस्थान टाइम्स प्रेस, अजमेरमें इसका मुद्रण प्रारम्भ करवाया किन्तु उक्त प्रेसके वन्द हो जानेसे यह कार्य जयपुरमें जयपुरप्रिन्टर्सको और तत्पश्चात् प्रतिष्ठानके नव-निर्मित भवनमें जोधपुर स्थानान्तरित हो जाने पर साधना प्रेस, जोधपुरको दिया गया। हमने इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य श्री बदरीप्रसादजी साकरियाको तत्परतापूर्वक एवं समय पर सम्पादित कर देनेके उनके आग्रह और श्री अगरचन्दजी नाहटाके अनुरोधसे सौंपा था किन्तु कतिपय अन्तर-वाह्य कारणोंसे अपेक्षित समयमें कार्य पूर्ण नहीं हो सका। ग्रन्थके पूर्ण होनेमें अव भी विलम्वका होना अनुभव करते हुए आज हम यह प्रथम भाग प्रकाशित कर रहे हैं। ख्यातका लगभग इतना ही अवशिष्ट अंश, ख्यात-संबंधी विशेष ज्ञातव्य और ख्यातगत विशेष नामोंकी अनुक्रमणिका आदि दूसरे भागमें प्रकाशित किये जावेंगे।

हम इस ख्यातके शेष भागको भी शीघ्र ही प्रकाशित करनेके लिए प्रयत्नशील हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।
माघ शुक्ला १४, सं० २०१६ विक्रमीय

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

RAJASTHANA PURATANA GRANTHAMALA

General Editor - **Acharya Jinavijaya Muni, Puratattvacharya**
[Honorary Director, Rajasthan Prachyavidya Pratisthana, Jodhpur]

MUNHATA NAINSI-RI KHYAT

[Rajasthani]

First Part

Published by
The Rajasthana Prachyavidya Pratisthana
[The Rajasthan Oriental Research Institute]
Government of Rajasthan
JODHPUR

V.S. 2016] *[1960 A.D.*

विषय-सूची

|| ॐ शिव ||

मुंहता नैणसीरी ख्यात

|| अथ सीसोदीयांरी ख्यात[1] लिख्यते[2] ||

|| दं० || श्रीगणेशायनमः || आदि सीसोदीया[3] गैहलोत[4] कहिजै । एक वात यूं सुणी । इणांरी ठाकुराई पेहली दिख्णनूं[5] नासिक त्रंबक हुती । सु इणांरै पूर्वजरै सूर्यरो उपासन हुतो । माँताधेन[6] करता । तद सूर्य प्रतक्ष आय हाजर हुतो । तिणसूं[7] को[8] जुध्र जीप[9] सकतो नहीं । सु राजा घणी धरतीरो धणी हुवो । सु राजारै पुत्र नहीं । तरै[10] सूर्यजीसूं पुत्ररी वीनती की । तरै सूर्य कह्यो–"आंबाइ देवी[11] मेवाड़ ईडररै गड़ासंध[12] छै । उठारी[13] जात[14] बोलो । इछना[15] करो । आधांन[16] रहसी, तठा पछै[17] जात करज्यौ ।" पछै जात इंछी । रांणीरै आधांन रह्यौ । पछै राजा रांणी आंबाइरी जातनूं[18] चालीया । सु रांणी चालतां राजारो मंत्र आवाहन रह्यो । तरै ग्रासीयां[19] कांठळियां[20] दाव लाधौ[21], सूर्यरो उपासन मिटियो । तरै सिगळा[22] भेळा हुय राजा ऊपर आया । राजा बाज मूओ[23] । गढ़ वांसलो[24] भोमियां लीयो । रांणी आँबायरी जात कर नैं गांव नागदहै[25] बांभणांरै[26] आंण

---

1 ख्यात–प्राचीन इतिहास-वार्ता, किसी किसी पोथीमें इसके बाद 'वार्ता लिख्यते' ऐसा वाक्य भी लिखा मिलता है । 2 लिखी जाती है । 3 सीसोदा गाँवमें रहनेके कारण सीसोदिया कहलाये । उदैपुरके महाराणा सीसोदिया हैं । 4 सीसोदिया पहले गहलोत कहलाते थे, गुहिलके वंशज होनेसे गहलोत कहलाये । 5 दक्षिणकी ओर । 6 मान्यता और ध्यान । 7 उससे । 8 कोई । 9 जीत नहीं सकता था । 10 तब । 11 गुजरातकी एक प्रसिद्ध देवी । 12 समीप । 13 वहाँकी । 14 पुत्र आदिकी प्राप्तिके निमित्त किसी देवी देवताकी यह मान्यता करना कि पुत्रकी प्राप्ति हो, हो जाने पर उसको साथमें लेकर दिन निर्धारित कर निश्चित परिमाणमें प्रसादी चढ़ानेको, देवी देवताकी यात्राको जाना । 15 मनवाँछितकी प्राप्तिके लिये दृढ़ विश्वाससे याचना करना । 16 गर्भ । 17 जिसके बाद । 18 को । 19, 20, 21 भाग लेनेवाले और प्रति समय सेवामें रहनेवाले सरदारोंको अवसर मिला । 22 समस्त । 23 लड़कर मर गया । 24 गढ़का नाम । 25 एकलिंगजीके समीप एक गाँव । अब खंडहर मात्र है । 26 । ब्राह्मण ।

डेरो कीयो[1]। वांसां[2] घरांसूं सुणावणी[3] आई। पाघ[4] आई। रांणी बळणनुं तयार हुई। चह[5] खिड़क तयारी करी। तिण वेळा[6] नागदहा गांवरै वांभणाँ रांणीनुं कह्यो – "पेट आधांन थकां[7] बलियां दोखण[8] घणो छै। थांरै दिन पिण पूरा हुआ छै[9]।" दिन १५ तथा २० रांणी छूटी[10]। बेटो जायो। तठा पछै रांणी १५ तथा २० वळे[11] रहि नैं माथो धोयो[12]। पछै चह तयार हुई। रांणी बळणनूं चाली छे। डावड़ो[13] राँणीरी गोद मांहै थो। सु उण ठोड़ कोटेश्वर महादेव छै। तठै वांभण विजयदत पुत्र अर्थ सेवा करै छै। तिणनूं[14] से[15] रांणी तेड़ नै[16] पटोला[17] सूं वींटनै[18] बेटो दीयो। बांभण विजैदत्त जांणीयो क्युंइ[19] माल छै। सु विजैदत्त उरो लीनो[20]। तितरै[21] डावड़ो रोयो तरै वांभण कयो – "औ रजपूतरो बेटो[22] हूं किथो[23] करूं? सवारै[24] ओ[25] सिकार रमै। जिनावर मारै। मोटो हुवै। तरै वैर-वाद[26] करै दुनीसूं[27]। हूं अधर्म भेळो होऊं। म्हारो कर्म-धर्म जाय। मोसौ[28] ओ दांन लीयो नहीं जाय।" तरै रांणी विजैदत बांभणनूं कह्यो – "थे वात कही सु सही, पिण[29] जो हूं सतसूं[30] बळूं छूं, तो इण डावड़ारी ओलादरा[31] राजा हुसी[32], तिके[33] दस पीढी थाहरै[34] कुळरै आचार हालसी[35]। थाँनूं[36] घणो सुख देसी[37]।" तरै वांभणनूं डावड़ो दीयो। सु वांभण विजैदत्त लीयो। कितरोइक[38] ऊपर गहणो, क्युंइक[39] रोकड़ दीयो। तद वांभण डावड़ानूं ले घर गयो। रांणी वळी। तठा पछै विजैदतरै उण डावड़ारी ओलाद हुई सु पीढी १० वांभणारी क्रिया चालीया। नागदहा वांभण कहांणां।

---

1 आ कर डेरा डाला। 2 पीछेसे। 3 मृत्यु-समाचार। 4 पगड़ी। 5 चिता। 6 समय। 7 गर्भ होते हुए। 8 दूवण पाप। 9 गर्भके नौ मास पूरे होने आये हैं। 10 रानीको प्रसव हुआ। 11 और। 12 सूतिका स्नान किया। 13 पुत्र। 14 उसको। 15 उस। 16 बुलाकर। 17 वस्त्र। 18 लपेटकर। 19 कुछ माल। 20 लेलिया। 21 इतनेमें। 22 मैं। 23 क्या। 24 कल, भविष्यमें। 25 यह। 26 शत्रुता और लड़ाई। 27 दुनियासे। 28 मेरेसे। 29 परन्तु। 30 पातिव्रतकी सत्यतासे। 31 संतानके। 32 होंगे। 33 वे। 34 तेरे। 35 अनुकरण करेंगे। 36 तुमको। 37 देंगे। 38 कितनाक। 39 कुछ।

पीढीयांरी विगत –

१. विजैदत	७. भोगादित
२. सोमदत सूर्यवंसीं गैहलोत	८. देवादित
३. सिलादत	९. आसादित
४. ग्रहादित	१०. भोजादित
५. केसवादित	११. गुहादित
६. नागादित	१२. रावळ बापो

वात[1] – रावळ बापो गुहादितरो । तिण[2] हारीत-रिखरी[3] सेवा करी । पछै हारीत-रिखीश्वर प्रसन हुय, बापानूं मेवाड़रो राज दीयो, नै[4] हारीत-रिख वींमान[5] बैस[6] चालतो थो । सु बापानूं तेड़ियो[7] थो, सु मोड़ेरो[8] आयो । सु पछै बापानूं रथ बैसतां[9] बांह झाली[10] । बापारी देह हाथ दस वधी । पछै तंबोळ[11] हारीत-रिख बापानूं आपरो[12] देह अमर करणनूं[13] देतो हुतो[14], सु मुंहडा मांहे पड़ न सकियो । बापारै पग ऊपरै पड़ियो । तरै हारीत कह्यो–"मुंहडै मांहि पड़ियो हूंत[15] तो देह अमर हूंत[16] । तोही[17] पग ऊपर पड़ियो छै । थाहरै पगसूं[18] मेवाड़रो राज नहीं जाय ।" नै बापानूं ऋखीश्वर कह्यो–"फलांणी[19] ठोड़ छपन कोड़[20] सोनइया[21] छै । तिके उठाथी[22] ले नै सामान कर । नै चीतौड़ मोरी[23] धणी छै, सु मार नै गढ उरो लेजो[24] ।" सु बापै ओ माल उरो ले[25], सामान कर नै गढ लीयो ।

कवित रावळ बापा रो –

राव बुहारै बार, राव घर पांणी आंणै,
राव करै मांजणो, राव मोजड़ियां तांणै ।

---

1 वर्णन, कथा । 2 उसने । 3 हारीत ऋषिको । 4 और । 5 विमान । 6 बैठकर । 7 बुलाया । 8 देरीसे । 9 बैठते हुए । 10 पकड़ी । 11 तांबूल, पान । 12 उसका । 13 करनेको । 14 था । 15 होता । 16 हो जाती । 17 तो भी । 18 तेरे वंशजोंसे । 19 अमुक । 20 करोड़ । 21 सुवर्ण मुद्राएं । 22 वहांसे । 23 मौर्यवंशका । 24 ले लेना । 25 ले कर ।

कवित्तका अर्थ – रावल बापाके कई राजा तो द्वार पर झाड़ू लगाते हैं, कई पानी भर कर लाते हैं, कई बरतन रगड़ते हैं, कई जूतियां पहनाते हैं ।

राव पांन ग्रह रहै, राव पोहरै नित जागै,
राव तेग* गहि पुळै, राव लुळपावै लागै।
गज चड रथ चड तुरिय चड, राव न को मांडंत रंण,
चिंतवै च्यार चक्कह तणा, सहू राव बापा सरण ।। १ ।।

रावळ खूमांण बापारो[1] – तिणरो[2] कवित –

त्रिनै लख्ख पायक्क, लख्ख मत्ता तोखारह,
सहंस एक छत्रपती, हुये गहमह दरबारह ।
खड़े सेन खरहंड, धूंण लीधी धर धारह,
परमारां दळ पहट, दीध्र प्रसणां पाहारह ।
पंचास लख्ख मालवपती, मेवाड़े सोह गांजियो,
खूमांण राव बापै-तणै, सिद्धराव भड़ भांजियो ।। २ ।।

कवित रावळ अलु - मेंहदरारो[3] –

तीन लख्ख तोखार, हसत सो तीन तयासी,
पंच लख्ख पायक्क, करै ओळग मेवासी ।

---

1 बापाका पुत्र रावल खूंमाण । 2 उसके सम्बन्धका । 3 अल्लट महेन्द्र ।

कई हाथमें पान लिये खड़े रहते हैं, कई रातमें जग कर पहरा देते हैं, कई रावलका शस्त्र पकड़ कर उसके आगे - आगे चलते हैं, कई झुककर उसके चरणोंका स्पर्श करते हैं। और हाथी, घोड़े और रथों पर चढ़नेवाले कोई भी राजा रावल बापासे युद्ध रचनेका तो साहस ही नहीं करते । अपितु चारों दिशाओंके समस्त राजा लोग रावल बापाकी शरणमें रहनेकी इच्छा करते हैं ।। १ ।।

कवित्तका अर्थ – रावल खूंमाणकी सेनामें दो लाख पादातिक और एक लाख पुष्ट घोड़े हैं । एक सहस्र राजा लोग जिसके दरबारकी शोभाको बढ़ाते हैं । उसने अपनी सेनाके साथ तीव्र गतिसे चढाई करके और तलवारसे युद्ध करके पृथ्वीको जीता । परमारोंके दलका नाश कर शत्रुओं पर प्रहार किया । मालवपतिके पास पचास लाख सेना थी उस सबका नाश कर दिया । ऐसे रावल बापाके पुत्र खूंमाणने वीर सिद्धरावको भी मार भगाया ।। २ ।।

रावल आलूकी सेनामें तीन लाख घोड़े, तीन सौ तँयासी हाथी और पांच लाख पादातिक हैं और मेवासी लोग जिसकी सेवामें रह कर प्रशंसा करते हैं ।

* यहां 'तेग' अशुद्ध प्रतीत होता है, क्योंकि कोई भी राजा अपना शस्त्र किसीको नहीं सौंपता । इसके स्थान 'तुरंग' शब्द उपयुक्त है और यही संगत भी है । 'तुरंग'मे एक मात्रा बढ़ती है अतः 'तुरँग' किम्वा 'तुरग' होना चाहिये ।

आउर नयर नरेस, माल मांडव उग्रावै,
घर बैठां डर हूंत, भेट गुज्जरह पठावै ।
आठ ही पोहर आलू भए, तयण नींद कोय न करै,
गहलोत गजां दळ चालतां, अवर राय ओद्रक मरै ॥ ३ ॥

रावळ आलूरी ठाकुराई गढ आहोर हुई । तिका[1] आहोर उदैपुरसूं कोस १० झांलावळी सादड़ी कनै[3] छै । पीढचांरी विगत –

रावळ आलू	रावळ करनादित
,, सीहो	,, भादु
,, सकतकुमार	,, गात्रड़
,, सालीवाहन	,, हंस
,, नरवाहन	,, जोगराज
,, अंबापसाव[3]	,, वैरड
,, कीरतब्रह्म	,, वैरसी
,, नरदेव	,, श्रीपुंज
,, उत्तम	,, करण

रावळ करण श्रीपुंजरो, तिणरै[4] दोय बेटा हुवा – राहप, तिकणनूं[5] रांणाई[6] दी । चीतोड़ पाट[7] । माहपनूं रावळाई[8] दी । वागड़ पाट । रावळ वैरड़रो कवित – वैरड जोगराजरो –

गूजरवै नह नमै, नमै नह डाहल रायह,
डाहालू श्रब चित, लीध सँभर वैंचायह ।

---

1 वह । 2 पास । 3 अंबाप्रसाद । 4 उसके । 5 जिसको । 6, 7. चित्तोड़की गद्दी और 'राना'की उपाधि दी गई । 8 वागड़की गद्दी और रावलकी पदवी दी गई ।

आहोर नगरका नरेश रावल आलू माँडवपतिसे करके रूपमें द्रव्य प्राप्त करता है और गुर्जरपति तो डरके मारे घर बैठे ही भेंट भेज देता है । आलूके भयसे आठों पहर शत्रु नींद नहीं ले सकते । गहलोतके हाथियोंके दलके चलनेसे अन्य राजा लोग भयसे घबरा कर ही मर जाते हैं ॥ ३ ॥

कवित्तका अर्थ – रावल वैरड़नै न तो गुजरात और न डाहलके राजाको अपना सिर झुकाया । परन्तु उलटा डाहालुओंसे सांभरका बँट लेकर उन सभीको बड़ी चिन्तामें डाल दिया ।

वार सत्त पंचास, गुड़ै गैमर गळ गंजै,
लख्ख एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड़ भंजै ।
पाताल सेस पड़िहाइयो, दुर देस राव डंडवै,
वांकड़ो राव वैरड़ नमुह, मुणस हेक मेवाड़वै ॥ ४ ॥

वात रांणा राहपरी ।

(३२) रांणो राहप
( ) ,, नरपति[1]
(३३) ,, दिनकर
(३४) ,, जसक
(३५) ,, नागपाळ

दूहो, रांणा नागपाळरो –

नागपाळ रायाँ-सु गुर, जिण भंजै खुरसांण ।
चक्रवत सोह चेला किया, हेम सेत लग आंण ॥ १ ॥

(३६) रांणो पुनपाळ
(३७) ,, (पेथड़) प्रथम[2]
(३८) ,, भुणंगसी[3]
(३९) ,, जैतसी
(४०) ,, गिड़[4] मंडलीक लखमसी
(४१) ,, अरसी
(४२) ,, हमीर
(४३) ,, खेतो
(४४) ,, लाखो
(४५) रांणो मोकल
(४६) ,, कूंभो
(४७) ,, रायमल
(४८) ,, सांगो
(४९) ,, उदयसिंघ
(५०) ,, प्रताप
(५१) ,, अमरसिंघ
(५२) ,, करन
(५३) ,, जगतसिंघ

(५४) रांणो राजसिंघ

॥ इति ॥

---

1 नरपतिका नाम दूसरी ख्यातोंमें नहीं है । मेवाड़के इतिहासमें और हमारी इस प्रतिमें है ।

2 हमारी प्रतिमें 'रांणो प्रथम' लिखा है किन्तु कइयोंमें 'पेथड़' और पृथीप ।

3 भीमसिंह अथवा भुवनसिंह । 4 सिंहोंके वीचमें 'सूअर'के समान निर्भय । लक्ष्मणसिंह, रावल रत्नसिंहकी सहायतामें अलाउद्दीन खिलजीसे लड़ा और रत्नसिंहके काम आ जाने पर स्वयं चित्तोड़के राज्यके लिये अपने कई वेटों सहित वीरगतिको प्राप्त हुआ ।

वैरड़ने ५७ वार कई सजे हुए और पाखर किये हुए हाथिओं और एक लाख घोड़ोंको शत्रुओं पर डालकर उनका नाश किया । इसकी सेनाके भारसे पातालमें शेष नाग घवराने लगा । वैरड़ने दूर-दूरके देशोंके राजाओंको दंड दिया । मनुष्योंमें मेवाड़की भूमि पर एक वैरड़ ही ऐसा रणवंका राजा उत्पन्न हुआ ।

दूहेका अर्थ – राजाओंमें गुरु रूप नागपालने कई वादशाहोंको हराया और समस्त चक्रवर्ती राजाओंको अपना शिष्य वनाया एवं हिमालयसे सेतुवंध तक अपनी आज्ञा मनाई ।

वार्ता दूसरी –

रावळ बापै हारीत-रिखरी सेवा करी[1]। मेवाड़रो राज लीयो। तिणरी साखरा[2] कवित, रावळ बापारा –

आदि मूळ उतपति, ब्रह्म पिण खत्री जांणां,
आणंदपुर सिणगार, नयर आहोर वखांणां।
दळ समूह राव रांण, मिळै मंडळीक महाभड़,
मिळै सवै भूपती, गरू गहलोत नरेसर।
एकल्ल मल्ल ध्रू ज्युं अचळ, कहै राज बापै कीयौ,
एकलिंगदेव आहूठमां. राजपाट इण पर दीयो ॥ १ ॥

छपन कोड सोव्रन्न, रिखी हारीत समप्पै,
सँदेही श्रग गयौ, राय-रायां उथप्पै।
अंतरीख ले अमृत, सिद्ध पिण आघो कीन्हो,
भयो हाथ दस देह, सस्त्र वज्र मई सु दीन्हौ।
आवध्ध अंग लग्गै नहीं, आदि देव इम वर दीयौ,
गुहादित-तणै भैरव भणै, मेदपाट इण पर लीयौ ॥ २ ॥

हर हारीत पसाय, सात-वीसां वर तरणी,
मंगळवार अनेक, चैत वद पंचम परणी।

---

1 की। 2 साक्षी रूप।

कवित्तका अर्थ – बापा रावलके वंशकी उत्पत्तिका मूल कारण ब्राह्मण हैं, जो अब क्षत्री जाने जाते हैं। वे आनंदपुरके श्रृंगार हैं। वह नगर आहोर नामसे प्रसिद्ध है। कई बड़े २ राजा, राना, मंडलीक और महाभट भूपति मिले, जिनमें गहलोत नरेश्वर रावल बापा सबका गुरू माना जाता है। हेकल-मल्ल रावल बापाको ध्रुवके समान अचल राज्य करने वाला कहा जाता है। एकलिंग महादेवने प्रसन्न होकर रावल बापाको इस प्रकार किसीके द्वारा नहीं जीता जाने वाला राज्यपाट दिया ॥ १ ॥

हारीत ऋषिने बापाको छप्पन करोड़ सुवर्ण-मुद्राएँ दीं। कई राजाओंको उथल कर वह सदेह स्वर्गको गया। सिद्ध हारीत ऋषिने उसे अंतरिक्षमें उठाकर अमृत द्वारा उसका सन्मान किया, जिससे उसकी देह दस हाथ हो गई और उसे वज्रके समान शस्त्र प्रदान किया। आदि देव महादेवके द्वारा अमृत दिये जानेके कारण बापाके शरीरमें कोई शस्त्र नहीं लग सकता था। कवि भैरव कहता है कि गुहादित्यके पुत्र बापाको इस प्रकार मेवाड़का राज्य दिया ॥ २ ॥

महादेव और हारीत ऋषिकी कृपासे रावल बापाने चैत्र कृ० ५ मंगलवारको एक साथ १४० युवतियोंसे विवाह किया।

चित्रकोट कैलास, आप वस परगह कीधौ,
मोरी दळ मारेव, राज रायां गुर लीधौ ।
वारह लख वोहतर सहस, हय गय दळ पैदल वणे,
नित मूडो मीठो ऊपड़ै, भूंजाई वापा तणै ॥ ३ ॥
खडग धार पाहार, नित भँयसा दुय भंजै,
करै आहार छ वार, ताम भोजन मन रंजै ।
पट्टोळो पैंतीस हाथ, पेहरण पहरीजै,
पिछोड़ो सोळै हाथ, तेण तन नहीं ढकीजै ।
पय तोडर तोल पचास मण, खड़ग वतीसां मण तणौ,
सुण वापा सेन सम्मं चलै, जिण भय कांपै गज्जणौ ॥ ४ ॥
जालंधर कसमीर, सिंध सोरठ खुरसांणी,
ओड़ीसा कनवज्ज, नगरथट्टा मुलतांणी ।
कुंकण नै केदार, दीप सिंघळ मालेरी,
द्रावड़ सावड़ देस, आंण तिलँगांणह फेरी ।
उतर दिखण पूरव पछिम, कोई पांण न दख्खवै,
सांवत एक एकाणवै, वापा समो न चक्कवै ॥ ५ ॥

अथ सीसोदियांरा भेद –

सीसोदो गांव उदैपुरसूं तठै घणा दिन रह्या तिण वास्ते सीसोदिया गांव लारै कहावै छै । नागदहा कहावै छै सु घणा दिन नागदहै गांव वसीया तिण कारण ।

एक वात यूं सुणी छै – आगै श्रै बांभण हुता । राजा परीखतरै वैर जनमेजै नाग होमाया, तिके इणां[1] होमिया । नागदहो गाँव एकलिंगसूं कोस १ छै । सीसोदीयांरो विरद 'आहूठमा-नरेस' कहावै छै । तिणरो भेद आढै महेस संमत १७०६ में कह्यो । एक तो आहूठ हाथ - सारा आदमी - तिण सारांरो धणी । एक आहूठ कोड़

1 इन्होंने ।

राजाओंके गुरू रावल वापाने मौर्य वंशके समूहको मार उनका राज्य अपने अधीनमें किया और कैलाशके समान चित्रकूट (चित्तोड़) पर्वत पर परिग्रह सहित अपना वास-स्थान वनाया । वापाने हाथी, घोड़े और पैदल, सव मिलाकर वारह लाख वहत्तर हजारकी अपनी सेना वनाई । वापाकी रसोईमें नित्य एक मूड़ा परिमाण तो नमक ही उठ जाता था ॥ ३ ॥

प्रथी, तिण सारैरा धणी आहूठमा नरेस कहावै । कैलपुरा कहावै सु के दिन कैलवै वसीया । आहाड़ा कहावै सु के दिन आहाड़ वसीया । वात राँणा चीतोड़रा धणीयांरी –

एक तो उपरलै[1] पांनै ४९७ लिखी छै नै वात एक पोकरणै बांभण[2] कवीसर जसवंतरो भाई जोसी मनोहरदास इण भांत मंडाई[3] छै –

इणरो विजैपांन गोत्र । ब्रह्मारो बेटो विजैपांन हुवो । तिणरो परवार –

अै[4] घणां दिन बांभण थका[5] बडा रिखीश्वर[6] हुवा । बड़ी तपसीया करी । इतरी पीढी तांई श्रै सर्मा[7] कहांणां । पीढीयांरी विगत –

१. ब्रह्मा	२. विजैपांन	३. देवसर्मा	४. अग्नसर्मा
५. विजैसर्मा	६. खेमसर्मा	७. रिखीसर्मा	८. जगसर्मा
९. नरसर्मा	१०. गजसर्मा	११. वायसर्मा	१२. दतसर्मा
१३. जयसर्मा	१४. वसुसर्मा	१५. केसवसर्मा	१६. जायसर्मा
१७. चीरसर्मा	१८. विजैसर्मा	१९. लेखसर्मा	२०. राजसर्मा
२१. विराजसर्मा	२२. हरखसर्मा	२३. पीचसर्मा	२४. वेदसर्मा
२५. हृदैसर्मा	२६. कलससर्मा	२७. जनसर्मा	२८. लिलाटसर्मा
२९. वासंतसर्मा	३०. नरसर्मा	३१. हरसर्मा	३२. धर्मसर्मा
३३. सुक्रतसर्मा	३४. सुभाख्यसर्मा	३५. सुबुद्धसर्मा	३६. विश्वसर्मा
३७. वरदेवसर्मा	३८. कामपतिसर्मा	३९. नरनाथसर्मा	४०. पीतसर्मा
४१. हेमवर्णसर्मा	४२. जनकारसर्मा	४३. राजासर्मा	४४. गालवदेवसर्मा
४५. गालवसर्मा	४६. गालवसुरसर्मा	४७. पालदेवसर्मा	४८. हर्जनरसर्मा
४९. हर्जनकारसर्मा	५०. दरमादिसर्मा	५१. गोविंदसर्मा	५२. गोवरधनसर्मा
५३. गोदसीससर्मा	५४. वाक्यसर्मा	५५. विराटसर्मा	५६. वेगसर्मा
५७. नित्यानंदसर्मा	५८. वनसर्मा ।		

शुभं भवतु ॥

1 उपरोक्त । 2 ब्राह्मण । 3 लिखाई है । 4 ये । 5 रहते हुए । 6 ऋषीश्वर । 7 शर्मा ।

अठा आगे[1] इतरी पीढी रांणारा पूरवज[2] 'दीत[3]- ब्राह्मण' कहांणां –

१. गोदसीदित्य	२. अजादित्य	३. ग्रहादित्य
४. माधवादित्य	५. जलादित्य	६. विजलादित्य
७. कमलादित्य	८. गोतमादित्य	९. भोगादित्य
१०. जालमालादित्य	११. पदमादित्य	१२. देवादित्य
१३. कृस्नादित्य	१४. जगादित्य	१५. हेमादित्य
१६. कलादित्य	१७. मेघादित्य	१८. वेणादित्य
१९. रामादित्य	२०. कर्मादित्य	२१. हर्खमादित्य
२२. देवराजादित्य	२३. विक्रमादित्य	२४. जनकादित्य
२५.नेमकादित्य	२६. रामादित्य	२७. केसवादित्य
२८. करणादित्य	२९. यमादित्य	३०. महेंद्रादित्य
३१. गंजमादित्य	३२. गंगाश्वरादित्य	३३. गोविंदादित्य
३४. गंगादित्य	३५. गोवरधनादित्य	३६. मेरादित्य
३७. मेवादित्य	३८. माधवादित्य	३९. मर्दनादित्य
४०. घनादित्य	४१. रनादित्य	४२. वेणादित्य
४३. वीकादित्य	४४. नाराइणादित्य	४५. खेमादित्य
४६. खेकादित्य	४७. विजयादित्य	४८. केसवादित्य
४९. नागादित्य	५०. भोगादित्य	५१. भागादित्य
५२. ग्रहादित्य	५३. देवादित्य	५४. अंबादित्य
	५५. भोगादित्य।	

इतरी पीढां इणांरी[4] 'दीत[5]' हुवा। ब्राह्मण कहांणां।

राजा परीख्यतनुं[6] साप खाधो[7]। तिणरै वैर जनमेजय परीख्यतरै बेटै नागांसूं धेख[8] कीयो तरै[9] सारा ब्राह्मणांनै भेळा[10] किया, कह्यो–"म्हारै बापरै वैर नाग होमीया[11] चाहीजै" तरै आ वात किणही रिखीश्वर ब्राह्मण कबूल की नहीं, तरै रांणारा पूरबज आ

1 इससे आगे। 2 पूर्वज। 3 आदित्य - ब्राह्मण। 4 इनकी। 5 आदित्य। 6 परीक्षतको। 7 सर्प डसा था। 8 द्वेष। 9 तव। 10 सम्मिलित किये। 11 यज्ञमें होमना चाहिये।

बात कबूल की । पछै नागदहो गांव मेवाड़में छै । उदैपुरसूं कोस[1] छै तठै नाग होमीया । सु कुंड अजे[2] जिग्यरा[3] छै । तठै नाग होमींया तिणथी नागदहा कहांणा[4] । वात –

श्रीएकलिंगजी कनै राठासण देवी छै । तठै हारीत रिख बारै वरस वडी तपस्या करी । तठै बापो रावळ टोघड़ा[5] चारतो, बांभणरो बेंटो थको[6] । सो इण हारीत रिखरी बारै वरस घणी सेवा करीं । पछै रिखीस्वररी तपस्या पूरी हुई । रिखीस्वर चालणरो विचार कीयो तरै क्यूं ई बापानै देणरो विचार कीयो । तरै हारीत राठासण देवीं ऊपर कोप कीयो । कह्यो –"बारै वरस थांसूं[7] निकट तपस्था करी, थे म्हारी कदेइ[8] खबर न लीनी ।" तरै प्रतख्य[9] हुय देवी कह्यो –"मोनूं कासूं[10] अग्या करो छो ।" तरै हारीत रिखीस्वर कह्यो– "म्हारी इण डावड़ै[11] बापै घणी सेवा करी, इणनुं अटारो[12] राज दीयो चाहिजै ।" तरै देवी कह्यो–"श्रीमहादेवजी प्रसन[13] करो । राज महादेवजीरी सेवा बिना पाईजै[14] न छै ।" तरै हारीत रिख महादेवजीरो ध्यान कीयो । उग्र स्तुत करी । तिणथी पाहाड़ प्रथी फाड़ नै जोतल्यंग[15] श्रीएकल्यंगजी प्रगट हुवा । तरै हारीत रिख वळै[16] महादेवजीरी उग्र स्तुती करी । महादेवजी प्रसन हुवा । कह्यो –"हारीत ! कासूं माँगै छै ? सु कहि । म्हे वर दां[17] ।" तरै रावल बापारी[18] वीनती करी । बापो मेवाड़रो राज पावै । तरै महादेवजी देव राठासण प्रसन हुआ । वर दीयो । राज दीयो । सु हमैं रांणानुं आश्रीवाद[19] दीजै छै । तरै हर हारींत प्रसन कहीजै छै । महादेव प्रसन कर नै हारीत आयो । तितरै[20] बापो आय हाजर हुवो । बापानुं रिखीस्वर आग्या[21] दी – तैं म्हारी घणी सेवा करी । म्हैं तोनूं[22] मेवाड़रो राज महादेवजी देवीजी प्रसन कर दीरायो छै ।

---

1 १ कोस=दो मील । 2 अभी । 3 यज्ञ । 4 कहाये । 5 गायोंके बछड़े । 6 होते हुए । 7 तुम्हारे पास । 8 कभी । 9 प्रत्यक्ष । 10 क्या । 11 लड़के । 12 यहांका । 13 प्रसन्न । 14 प्राप्त नहीं होता है । 15 ज्योतिर्लिंग श्रीएकलिंगजी । 16 पुनः । 17 दें । 18 बापाके लिये । 19 आशीर्वाद । 20 इतनेमें । 21 आज्ञा । 22 तेरेको ।

इण ठोड़ एकलिंग प्रकट हुवा छै। और देवी राठासण छै। उणरी तूं घणी सेवा करजै। राज ताहरो अविचल रहसी। नै तूं रात घड़ी[1] च्यार ४ पाछली थकी आए। वळै तोनै कुंहीक[2] कहणो छै, सु कहीस[3]। तरै बापो घरै जाय सूय रह्यो[4]। मोड़ो[5] जागीयो। तरै दोड़'र गयो। आगै हारीत रिख विमान बैसतो थो तिण वेळा गयो। विमान ऊंचो हुवो। बापारी रिखीस्वर बांह झाली[6]। हाथ दस बापारो डील[7] वधीयो। रिखीस्वर मुखरो तंबोळ देतो थो। जाँणीयो इणरा मूंडा मांही पड़सी[8] तो इणरी देही[9] अमर हुवै। सु तंबोळ चूक नै पग ऊपर पड़ियो। तरै रिखीस्वर कह्यो –"थाहरा[10] पगसूं मेवाड़रो राज कदै जाय नहीं। नै बापानुं कह्यो – फलांणी[11] ठोड़ छपन कोड़ सोनइया छै सु उरा लेजो। सामांन कर नै चीतोड़ ऊपर जा। मोरी[12] आगे राज करै छै। सु मार नै राज चीतोड़रो उरो ल्यो। संमत ५० कहै छै। बापानुं हुवो। बापै मोरी मार नै चीतोड़रो राज लीयो। इतरी पीढी रावळ कहांणा –

१.	भोजादित्य	१२.	बिबपसाव रावळ
२.	बापो रावळ	१३.	नरबिब ,,
३.	खूमाण ,,	१४.	नरहर ,,
४.	गोयंद ,,	१५.	उदतराज ,,
५.	सीहेन्द्र ,,	१६.	करणादित ,,
६.	आलुस ,,	१७.	भादू ,,
७.	सीहड़ ,,	१८.	गात्र ,,
८.	सकतकुमार	१९.	हंस ,,
९.	सालवाहन	२०.	जोगराज ,,
१०.	नरवाहन	२१.	वडसीस ,,
११.	अंबपसाव	२२.	बीरसीह ,,

1 पिछली रातकी चार घड़ी रात रहे तब आना। 2 कुछ। 3 कहूंगा। 4 सो रहा। 5 देरसे। 6 पकड़ी। 7 देह बढ़ गई। 8 पड़ेगा। 9 शरीर। 10 तुम्हारे पांवोंसे अर्थात् वंशवालोंसे मेवाड़का राज्य कभी नहीं छूटेगा। 11 अमुक। 12 मौर्य वंशके।

२३. समरसी रावळ	२६. नवखंड रावळ
२४. रतनसी रावळ पदमणी वाळो प०	२७. कुरमेर ,,
	२८. जैतसी ,,
२५. सिरपुंज रावळ	२९. करन ,,

अठा-सूधा[1] पाट २९सु चीतोड़रा धणी रावळ कहांणा[2]। रावळ करनैरै बेटा दोय माहप नै राहप हुवा। सु वडा बेटा महापनुं फोज वड़ी साथै दे नै मेड़ते कोई रांणो हुतो, तिण ऊपर मेलीयो[3] हुतो। सु रुत[4] उनाळारी[5] हुती। कवर जाय भाखरां[6] मांहे ठाढी छांह झरणा देख बैस रह्यो। उमराव सारानुं[7] घरांरी विदा करी कह्यो – "हमार[8] गरम-रुत[9] छै। मास २ मेह[10] हुवां आंपै मेड़ते ऊपर जास्यां[11]।" रांणो करन अठै बैठो बाट देखे सु कवररो कदे कागद पत्र आवै नहीं। कवर माहप पाटवी नै रांणी सुहागणरै[12] पेटरो, तिण वास्तैसू[13] कोई[14] जांणै, पिण परधांन खवास पासवाँन कोई आ वात रावळ करननुं सुणावै नहीं। रावळ जोर[15] आतुर हुवो कहै –"कंवररी खबर न आई।" तरै किणहीक[16] कह्यो –"कंवर तो गरम रुतरै वासतै मेड़ते ऊपर गयो नहीं। मेह वूठां[17] जासी[18]। साथनुं ही घरांरी सीख दीवी छै[19]। तिण वासतै राजनुं अरदास[20] न आवै छै।" सु रावळ वात सुण नै हैरांन हुवो। मन मांहे जांणियो – 'ओ कंवर पाट जोग नही'। तरै और फोज लोहड़ा – बेटा[21] राहपरै साथे दे विदा कीयो। राहप तिणहीज वेळा[22] चढीयो। इळगार[23] कर मेड़ता ऊपर तूट पड़ीयो। मेड़तो मारीयो[24]। मेड़तारो धणी रांणो पकड़ीयो नै चीतोड़ ल्यायो। रावळ करन लोहड़ा बेटासूं बोहत राजी हुवो। रांणो पकड़ ल्यायो, तेथी[25] इणनुं रांणारो किताब[26]

---

1 यहां तक। 2 कहाये। 3 भेजा था। 4 ऋतु। 5 ग्रीष्मकी। 6 पहाड़। 7 सबको। 8 अभी। 9 ग्रीष्म ऋतु। 10 अपन। 11 जायेंगे। 12 कृपापात्र रानीके। 13 इस वातको। 14 'सूं कोई' के स्थान 'स कोई' पाठ होना चाहिये। स कोई - सब कोई। 15 अत्यन्त। 16 किसी एकने। 17, 18 वर्षा हो जाने पर जायगा। 19 साथ वालोंको घर चले जानेकी आज्ञा दे दी,। 20 सामाचार, निवेदन। 21 छोटा पुत्र। 22 उसी समय। 23 संपूर्ण सेनाके साथ और क्रोधित होकर। 24 मेड़तेको जीत लिया। 25 जिससे। 26 पदवी, ख़िताब।

दे आपरै पाटवी कीयो। माहपनुं अगली रावळाई[1] दे नै डूंगरपुर वांसवाळो दियो। तिणरी ओलाद डूंगरपुर वांसवाळै छै। नै रांणा राहपरा चीतोड़रा धणी छै[2]।

रतनसीं अजैसीरो, भड़ लखमसीरो भाई। पदमणीरै[3] मामलै लखमसी नै रतनसी अलावदीसूं लड़ काम आया। एक वार पातसाह चढ खड़ीया[4] हुता सु पछै उदैपुररा* डैरांसूं इणां पाछो तेड़ायो[5]। बारै[6] दिन एक एक बेटो लखमणसीरो गढ़सूं उतर लड़ीयो। तेरमैं[7] दिन जुहर[8] कर रांणो लखमणसी रतनसी कांम आया। भड़ लखमसी, रतनसी, करन तीनै भाई गढ – रोहै[9] कांम आया। भड़ लखमसीरो बेटो अनंतसी जाळोर परणीयो[10] हुतो, सु उठै कांनड़दे साथै कांम आयो, सु जाळोरमें डूंगरी वाजै छै[11]। अरसी साथै कांम आयो। तिणरो बेटो रांणो हमीर चीतोड़ वरस ६४ मास ७ दिन १ राज कीयो। १ अजैसी गढ - रोहै काढीयो[12]। तिणरा कुंभावत १, ककड़ १, मांकड़ कांम आया। १ ओझड़ १ पेंथड़रा भाखरोत। तठा आगै[13] इतरी[14] पीढी चीतोड़ रांणा हुवा –

---

1 माहपको परंपरागत 'रावल'की पदवी देकर डूंगरपुर और वाँसवाड़ेका देश दिया। 2 राना राहपके वंशज चित्तोड़के स्वामी हैं। 3 परम सुन्दरी महाराना रत्नसिंहकी रानी पद्मिनी, जिसको प्राप्त कर अपनी बेगम बना लेनेकी उत्कट अभिलाषासे अलाउद्दीन खिलजीने चित्तोड़ पर चढ़ाई की। भयंकर युद्ध हुआ। लखमसी और रतनसी दोनों इस मामलेमें काम आये। 4 रवाना हुए थे। 5 बुलाया। 6 बारह, । 7 तेरहवें। 8 युद्धमें मारे जानेके पश्चात् शत्रुओं द्वारा उनकी स्त्रियोंका अपमान न हो अतः जौहर करनेकी (धधकती हुई अग्निमें कूद कर जल जानेकी) आज्ञा दे कर राना लखमणसी और रतनसी काम आ गये। 9 शत्रुको गढ़में प्रवेश न करने देनेके लिये गढ़के द्वार पर की जाने वाली भीषण मुठभेड़। 10 विवाह किया था। 11 जालोरमें जिस पहाड़ी पर अनंतसी काम आया वह पहाड़ी 'अनंतसीरी डुंगरी' कहलाती है। 12 युद्धमें घायल हो जाने पर अजैसीको वंश - रक्षाके लिये गढ-रोहैसे बचा कर बाहर निकाल लिया। 13 जिसके आगे। 14 इतनी।

* 'उदैपुर' पाठ अशुद्ध है। "········सु पछै उणनै पुररा डेरांसूं इणां पाछो तेड़ायो।" पाठ अधिक संगत है। लिपिकारको इतिहासका ज्ञान नहीं होनेसे प्रतिमें स्पष्ट 'पुर' शब्दके पूर्व अस्पष्ट अक्षरोंको 'उदै' समझ कर 'उदैपुर' कर दिया है। उदैपुर तो उस समय था ही नहीं।

१- राहप रांणो, करन रावळरो ।

२- देहु रांणो, ३- नरू रांणो, ४- हरसूर राँणो, ५- जसकरन रांणो, ६- नागपाल रांणो, ७- पुणपाल रांणो, ८- पेथड़ रांणो, ९- भवसी रांणो, १०- भीमसी रांणो, ११- अजैसी रांणो ।

१२- भड़ लखमसी रांणो, बारै बेटांसू कांम आयो चीतोड़ ।

१३- अरसी रांणो, १४- हमीर राँणो, १५, खेतसी रांणो ।

१६- रांणो लाखो खेतारो । राव चूंडारी[1] बेटी हंसबाई परणी हुती[2], तैरै[3] पेटरो राँणो मोकल ।

१७- राणो मोकल, राव रिणमलरो[4] भाँणेज ।

१८- ,, कूँभो, बावण - विसनरो अवतार कहाँणो[5] ।

१९- ,, रायमल, कूंभारो ।

२०- ,, साँगो, रायमलरो ।

२१- राँणो उदयसिंघ, २२- राँणो प्रताप, २३- राँणो अमरसिंघ, २४- राँणो करन, २५- राँणो जगतसिंघ, २६- राँणो राजसिंघ।

२७- हमीर, अरसीरो बेटो । देवी सोनगरीरे पेटरो । कोई दिन[6] खभणोर कनै[7] उनावो गांव छै तठे[8] रहचा । मा उठै[9] रहता तिण परसंग[10] ।

राणा हमीरसुँ पाटवीयाँरा बेटांरी विगत –

१ राँणो खेतो १ लूंणो १ खंगार वैरसल, हमीररो ।

राँणा खेतारा बेटा –

२ राँणो लाखो २ राँणो भाखर । भाखररै वंसरा भाखरोत । चाचारा दिखणनुं - भुंहसाजळ - साहजी[11], सिवो[12] २ मेरो, खातणरै[13] पेटरा ।

---

1 राठोड़ राव वीरमका पुत्र चूंडा, जो मारवाड़के प्रचलित राठोड़ वंशके राजाओंके पूर्वजोंमें मंडोरका सर्व प्रथम स्वामी बना था । 2 व्याही थी । 3 जिसके । 4 राठोड़ राव चूंडेके १४ पुत्रोंमेंसे सबसे बड़ा । किन्तु अपने छोटे भाई काह्ला और राव सत्ताके बाद मंडोरका स्वामी बना । 5 विष्णु भगवान्का वामन अवतार कहलाया । 6 किसी समय । 7 पास । 8 वहां । 9 वहां । 10 कारण । 11 चाचाका पुत्र शाहजी भोंसला । 12 मरहटोंका राज्य स्थापित करने वाला वीर छत्रपति शिवाजी । 13 खाती जातिकी स्त्री, खातिन ।

२ महियो २, भवणसी २, भूवरा भूवरोत, २ सलखारा सलखणोत, २ सिखरा सिखरावत ।

२ राँणो लाखो —३ चंडैरा चंडावत, ३ राघवदे पितर[1] हुवो, ३ ऊदारा ऊदावत, ३ रुदारा रूदावत, ३ दुलहरा दूलावत, ३ गजसिंघरा गजसिंघोत, ३ डूगररा भाँडावत ।

राँणो मोकल लाखावत - राव चूंडारी बेटी हंसवाईरो । राव चूंडारो दोहीतरो[2] । तिणनुं[3] चाचे, मेरे - राँणा खेतेरै बेटाँ खातणरै पेटरा मारीयो । पछै चाचो मेरो पईरै डूंगरे[4] चढीया, तिके[5] घेर नै राव रिणमल मारीया ।

४- राँणो कुंभो मोकलरो । राँणे कूंभे कुंभलमेर वसायो । तद वडी वसती[6] हुई । घणो लोक पारपखै[7] आय वसीयो । तिण समै कहै छै कुंभलमेरमें देहुरा[8] सातसै ७०० हुता । तठै झालर ७०० वाजती[9] । नै घर ७०० श्रीमाली - वाँभणाँरा हुता । तिण (थी[10]) कहै छै एकूके घर दीठ[11] थाळी ७०० थी । पछे राँणो उदैसिंघ पिण केइक दिन कुंभलमेर रह्यो । राँणो कूंभो मोकलरो ।

४- खींवारा देवळियेरा धणी । ४- सूआरा सूआवत । ४ सतारा कीतावत । ४- अढूरा अढुओत । ४ गढूरा गढुओत । ४- वीरम ।

राँणो कुंभो मोकलरो । मोकल मारीयाँ पछै राव रिणमल चाचा मेरानूं मार नै चीतोड़ पाट बैसाँणीयो[12] । पछै कूंभो मोटो[13] हुवो । (साहवी[14]) सारीरी[15] मुदार[16] राव रिणमल ऊपर । सु मेवाड़रा रजपूताँ नै स्वावै[17] नहीं । पछै सीसोदीयै चूंडै लाखावत

---

1 प्रेतत्त्व मुक्त मृत - पूर्वज । 2 दौहित्र । 3 जिसको । 4 पई नामक पहाड़ी । 5 जिनको । 6 बहती । 7 अपार । 8 मंदिर । 9 जहाँ ७०० घड़ियाल एक साथ बजती थीं । 10/11 जिससे कहा जाता है कि उन प्रत्येक सात सौ घरोंमें ७०० थालियें लागें (नेगकी) दी जाती थीं । 12 राठोड़ रिणमलने चाचा मेराको मार कर कुंभाको चित्तोड़की गद्दी पर बैठाया । 13 बड़ा । 14 शासनाधिकार, मालिकपन । 15 सबकी । 16 मूल आधार । 17 सुहाता नहीं ।

पवार महिपै रांणा कूंभानूं भखायनै[1] राव रिणमलजीनूं सूतानूं[2] मारीयो। कवर जोधो बीजा राव रिणमलरा बेटा चीतोड़री तळहटी-डेरे[3] था सु नीसरींया[4]। कूंभै फोज मेल मारवाड़ एक वार ली। पछै राव जोधेजी रांणारो थांणो[5] मार नै मंडोवर लीयो। पछै रांणा कूंभारो चित टळ गयो[6]। तरै कूंभारै बेटे उदै रांणा कूंभानूं मारीयो। पछै रजपूतां मेवाड़रा ऊदानूं कबूल न कीयो[7]। रायमल कूँभावतनूं टीको दीयो।

५ रांणो रायमल। ५ ऊदो, जिण रांणा कूभानूं मारीयो। पछै ओ अठारो काढीयो[8] केई दिन सोभत रह्यो।

५ नगारा नगावत ५ गोयंद अऊत गयो[9]। ५ गोपाळ अउत गयो।

५ रांणो रायमल कूँभारो, चीतोड़ धणी हुवो। बेटो बड़ो वालाइ[10] हुवो।

६ उडणो-प्रणो प्रथीराज निपट झाळपूळा हुवो[11]। टोडो नै जाळोर एक दिनरै बीच मारीया[12] तरै आ वात पातसाह सुणी। तरै उडणो प्रथीराज कहांणौ। असंख प्रवाड़ै जैतवादी रांणो रायमल जीवत ही मुओ[13]।

७ वणवीर।

६ जैमल रायमलोत। प्रथीराज मुवाँ पछै[14] टीकायत [15] रायमल रांणै कीयो। पछै वदनोर राव सुरतांण सोळंकी तारादेरै बाप

---

1 वहका कर। 2 सोते हुएको। 3, 4 ··· चित्तोड़के गढ़की तलहटीके डेरोंमें थे सो वहाँसे निकले। 5 मंडोरकी रक्षाके लिये राना कुंभाने वहाँ एक थाना लगा रखा था, जिसमें रहनेवाले मनुष्योंको मार कर राव जोधाने मंडोर पर पुनः अपना अधिकार कर लिया। 6 राना कुंभाका चित्त विक्षिप्त हो गया। 7 स्वीकार नहीं किया। 8 यह यहाँसे निकाला गया। 9 अपुत्र मरा। 10 बली। 11 एक स्थान पर विजय करके उसी दिन अन्य शत्रुके किसी दूरके स्थान पर तीव्र गतिसे भाग कर प्रतिज्ञाके साथ दूसरी विजय करने वाला प्रिथीराज अत्यन्त उग्र और तेजस्वी हुआ। 12 जैपुर डिवीजनके टोडा-रायसिंह और मारवाड़के जालोर, इन दोनों पर्याप्त दूरस्थ स्थानोंको एक दिनमें विजय किया। 13 प्रिथीराज, उसके बाप राना रायमलके जीवन कालमें ही मर गया। 14, 15 प्रिथीराजके मरनेके बाद रायमलने जैमलको युवराज बनाया।

ऊपर गयो। वे वदनोर छाड़ नीसरीया[1] । राँणै वांसो कीयो[2] । अटाळी क़नै आवतां गाडानूं पोहता[3] । तठै राव सुरतांणरो परधांन सांखलो रतनो साळो पिण हुतो। तिण एकल असवार पाछा वाळीया[4] । रात पाछली घड़ी ४ रहो थी । सारा उंघावता था[5] । जैमल घुड़ वैहल[6] वैठो थो। रतनो आइ साथ भेळो[7] हुवो । आवतो २ राँणारी वैहल निजीक आयो। खुर[8] घोड़ो कर नें जैमलरै रतने साँखले वरछी छाती माँहै लगाई। मरमरी लागी । राँणो मुंवो । पारवतीरै[9] रतनानूं मारीयो ।

६. जैसो पिण सुणियो छै[10] । जैमल मुंवाँ पछै रायमल मुदायत कीयो[11] पछै राँणो रायमल असमाधियो[12] । तरै जैसो लायक नहीं । रजपूत राजी नहीं। तरै सांगानुं तेड़ नै[13] हाजर कीयो। राँणो रायमल धरती वालीयो[14] । पछै राँणो रायमल मुंवो । साँगानूं टीको[15] हुवो । गीत राँणा साँगारो–

आयो आगरै जक दनी जवनपुर, समहर संग सप्रांणो ।
दिलड़ी तणी धरा धक धूणै, रोस चईनो रांणो ।। १ ।।
पारंभ माल पसरीयो परखंड, अत साहस ऊलटीयो ।
ढिलड़ी जोय जथै धवळागिर, हिंदुवो रांणो हठीयो ।। २ ।।

---

1 छोड़ कर निकल गये । 2 रानाने पीछा किया । 3 अटाली गांवके पास आते ही उनके गाड़ोंको पकड़ लिया । 4 पीछा लौटा दिया । 5 सब नींदमें थे । 6 घोड़ोंका रथ । 7 शामिल हुआ । 8 घोड़ेके अगले पांवोंको (रथके ऊपर) उठा कर । 9 पासवालोंने । 10 'जैसा' के लिये भी सुना गया है । 11 जैमलके मरनेके बाद रायमलने उसको अधिकारी बनाया । 12 मरणासन्न हुआ । 13 बुला कर । 14 राना रायमलको धरती पर लिटाया । 15 राज्यतिलक हुआ ।

गीतका भावार्थ–

युद्ध करनेमें महाबली, राना सांगा दिल्लीकी धराको नष्ट करता हुआ जिस दिन क्रोधावेशमें यवनोंके नगर आगरेमें आया, उसको देख लोग चकित हो गये ।। १ ।।

पहले राना रायमलने पृथ्वीके दूसरे खंडोंमें अति साहससे अक्रमण किया था, किंतु अब दिल्ली प्रदेश और हिमालय तक जहां देखो वहाँ हिंदुपति राना सांगा (विजय करनेके लिये) अपनी हठ पर चढ़ा हुआ है ।। २ ।।

नरवर गोगा चलै नीवते, समपै सिखर सबाही ।
सुण सुरतांण जु कीनी सांगै, मुकंद तणा थर मांही ।। ३ ।।
माल-तणौ सझीयो मोगरथट, लोह तणै रस लागो ।
पूरब देस भंगाण पड़ंते, भौ तिण पँडवो भागो ।। ४ ।।

६. राँणो सांगो रायमलरो वडो भाग बळी[1] हुवो । घणी धरती खाटी[2] । माँडवरो पातसाह साँगे दोय वार पकड़ नैं छोडीयो । पीळीयाखाल[3] सूधी[4] एक वार हद कीवी[5] । पछै बाबर पातसाहसूं वेढ़[6] हुई, तठै राँणो सांगो भागो । सांगानूं कवर वाघा सूजावतरी बेटी धनाई परणाई थी, तिणरो बेटो राँणो रतनसी ।

६ किसनारा किसनावत ।
६ धनो रायमलरो अउत[7] ।
६ देवीदास अउत ।
६ पतो राँमो अउत ।

संमत् १५३९ रा वैसाख वद ९ सांगारो जनम । संमत् १५६६ जेठ सुद ५ राँणो सांगो पाट बैठो । संमत् १५९४ रा काती सुद ५ सीकरी बाबर (हुमायूँ) पातसाहसूं वेढ हारी । रांणो साँगो वडो प्रतापबळी[8] ठाकुर हुवो । घणी धरती खाटी । संमत् १५३९ रा वैसाख वद ९ रो जनम । घणो तपीयो[9] । उडणो प्रथीराज मुंवाँ पछै मुदै[10] हुवो । पेहली घणो विखै फिरीयो । पछै वडो ठाकुर हुवो । इसड़ो चीतोड़ राँणो कोई न हुवो । दोय वार माँडवरो पातसाह पकड़ छोडीयो । पीळीयेखाल जाय बाबर पातसाहसूं लड़ीयो तिका

जिस राना सांगाको, गोपा नरवर नगर और उसके समस्त शिखर आदि प्रदेश अर्पण करते हुए और सिर झुका कर चलता बना । हे सुलतान ! सुन, बूंदेलेके राजा मुकुंदके घरमें उस राना सांगाने जो की (वह क्या साधारण बात थी?) ।। ३ ।।

वीरोंमें अग्रणी रायमलका पुत्र राना सांगा खड्गके रसमें अनुरक्त होनेके कारण पूर्वके देशोंमें भगदड़ मचनेसे भयके कारण पँडुवा वहाँसे भाग गया था ।। ४ ।।

1 भाग्यशाली । 2 जीत कर प्राप्त की । 3 गांवका नाम । 4 तक । 5 सीमा बनाई । 6 लड़ाई । 7 अपुत्र, निःसंतान । 8 प्रतापी । 9 खूब शानके साथ बहुत समय तक राज्य किया । 10 राज्यधिकारी हुआ । 11 पहाड़ और जंगलमें संकटके मारे छिप कर रहना ।

वेढ हारी । वळै राँणै सांगै चंदेरी[1] (मारी) थी । वंधवैरै[2] वाघेले मुकंदसू' वेढ हुई । मुकंद भागो । हाथी घणा पड़ाउ-आया[3] । खिड़ीये खींवराज[4] वात कही ।

राँणो रतनसी कंवर वाघारो दोहीतो, धनाईरै पेटरो । तिको हाडा सूरजमल नारणदासोतसूं लड़ काँम आयो । मामलो भैंसरोडरै गाँव किवाजणै[5] हुवो । गाँव चीतोड़थी[6] कोस २२ । वूदीसूं कोस १० ।

७. राँणो विक्रमादित करमेती[7] हाडीरा पेटरो । उदैसिंघरो वडो भाई । रतनसी माराँणै टीके बैठो[8] । पछै विक्रमादित चीतोड़ थकाँ[9] संमत १५९९ जेठ सुद १२ पातसाह वहादर चीतोड़ ऊपर आयो । गढ लीयो[10] । हाडी करमेती जुहर कीयो । रजपूत काँम आया । पछैं वळे हमाउ पातसाह विक्रमादितरी मदत[11] करी । हमाउ चीतोड़ आयो । वहादरनूं घेंच काढीयो । विक्रमादितनूं पाछो चीतोड़ वैसाँणीयो[12] । पछै पूतळ[14] छोकरीरै वेटे विक्रमादित रमतानुं मारीयो[14] । वणवीर चीतोड़ लीवी ।

७. राँणो उदयसिंघ साँगारो । बडो प्रतापवळी ठाकुर हुवो । विक्रमादित मारीयो तद कोई दिन कुंभलमेर रह्यो[15] । पछै वणवीर आय कुंभलमेर घेरीयो[16] सु राँणो उदयसिंघ सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरी वेटी परणीयो हुतो[17] । पछै अखैराजनूं उदैसिंघ कहा-ड़ीयो-[18] म्हानूं मुसकल आय वणी छै[19] । माहरी[20] मदत करज्यो, पछै अखैराज घणो साथ[21] ले नै आयो । कूंपो मेहराजोत[22], राँणो

---

1 गांवका नाम । 2 वांधवगढ । 3 घायल पड़े हुए हाथ आये । 4 खिड़िया जातिका चारण खींवराज । 5 गांवका नाम । 6 से । 7 राना सांगाकी स्त्री । 8 रतनसीके मारे जाने पर, विक्रमादित्यको राज्यतिलक हुआ । 9 चित्तोड़में विक्रमादित्यके शासनकालमें । 10 चित्तोड़गढ़को वहादुरशाहने जीत लिया । 11 मदद । 12 विक्रमादित्यको पुनः चित्तोड़के सिंहासन पर वैठा दिया । 13, 14 दासीपुत्र वनवीरने खेलते हुये विक्रमादित्यको मार डाला । 15 विक्रमादित्यके मारे जानेके वाद चित्तोड़ पर वनवीरका अधिकार हो गया इसलिये उदैसिंहको वहुत समय तक कुंभलमेरमें रहना पड़ा । 16 वनवीरने कुंभलमेर पर घेरा डाल दिया । 17 वेटीसे विवाह किया था । 18 कहलाया। 19 मेरेमें आपत्ति आ पड़ी है । 20 मेरी । 21 सेनाको ले कर आया । 22 राठोड़ राव रिणमलका पौत्र मेहराजका पुत्र कूंपा ।

अखैराजोत[1], भदो, कह्ल पंचायणोत[2], जैसो भैरवदासोत[3]। मारवाड़रो सारो[4] साथ[5] ले नै[6] उदयसिंघरी मदत अखैराज आयो। वणवीरसुँ गांव माहोली बडी वेढ[7] हुई। कोई कहै छै वणवीर मारीयो[8]। कोई कहै छै वणवीर भागो नै उदैसिंघ चीतोड़ धणी हुवो[9]। महा उग्र तेज हुवो[10]। तठा पछै[11] अकबर पातसाह चीतोड़ ऊपर आयो[12]। संमत् १६२४ राणो भाखरे गयो[13]। जैमल सीसोदीयो, पसो[14] जगावत और घणो साथ काम आयो[15]। पछै संवत १६२४ रांणै उदैसिंघ चीतोड़ छोड़ उदैपुर वसायो। आगे आ ठोड़ देवड़ारा गाँव ५० गरवो कहीजतो[16]। उदैसागर तळाव बंधायो। संवत १५७९ रा भादवा सुद ११ रो जन्म। संवत १६२९ रा फागुण सुद १५ राणो उदैसिंघ काल प्राप्त हुवो[17]।

७ भोजराज सांगावत[18]। इणनुं, कहे छै मीरांबाई राठोड़ परणाई हुती[19]।

७ करन रतनसीरो भाई।

राणा उदैसिंघरा बेटारी विगत—

९ राणो प्रताप, सोनगरा अखैराजरो दोहीतो।

९ कह्ल, करमचन्द पवाररो दोहीतो।

९ फरसराम।

९ भोजराज।

९ दुरजनसिंघ।

९ रुद्रसिंघ।

---

1 राव रिणमलके पुत्र अखैराजका पुत्र रांणा। 2 भद्दो और काह्ला, अखैराजके पुत्र पंचायणके पुत्र हैं। 3 भैरवदासका पुत्र जैसा। 4 समस्त। 5 सरदारों सहित सेना। 6 ले कर। 7 लड़ाई। 8 मारा गया। 9 उदैसिंह चित्तोड़का स्वामी बना। 10 अत्यन्त तेजस्वी हुआ। 11, 12 जिसके बाद अकबर बादशाह चित्तोड़ पर चढ़ कर आया। 13 राना उदैसिंह भाग कर पहाड़ोंमें चला गया। 14 जगाका पुत्र पता ("पसो" अशुद्ध है)। 15 बहुत सरदार और सेना काम आ गई। 16 पहले इस स्थान पर देवड़े चौहान राजपूतोंके ५० गांव थे जो 'गरवा' नामसे प्रसिद्ध थे। 17 स्वर्ग वासी हुआ। 18 सांगाका पुत्र। 19 कहा जाता है कि भक्त-शिरोमणि 'मीरांबाई मेड़तणी' इसको व्याही गई थी।

९. नगो, तिणरा नगावत ।

९. सांँम ।

९. साहब खाँन ।

९. माधोसिंघ । राँणा जगतसिंघ कना[1] छाड नै[2] पातसाहरै वास वसीयो । झाला हरदासनै ताजणेरै माँमले मारीयो[3] ।

९. जैतसिंघ ।

९. सुरताँण । कल्याँणमल जैतमलोतरै[4] वास थो[5] ।

९. वीरमदे ।

९. लूंणो ।

९. सादूळ ।

९. सुजाँणसिंघ ।

९. महेस ।

९. जगमाल । राँणा उदैसिंघरो । रावळ लूंणकरनरी[6] बेटी धीरबाईरै पेटरा[7] । भाई ५–८ जगमाल, ८ सगर, ८ अगर, ८ साह, ८ पंचाइण । तिण माँहे[8] जगमाल वडो काँमरो माँणस थो[9] । सीरोहीरा राव माँनसिंघरी बेटी परणी थी । सो मानसिंहरै बेटो कोई न हुवो । टीको[10] राव सुरतांण भांणरानूं[11] हुवो । सु महाराज रायसिंघजीनूं[12] गिरनार सोरठरी हुई[13] । सोवो हुवो थो[14], सु जावता छा[15] । सु तद[16] राव सुरतांणदे वीजै हरराजोत आदो दीयो[17] । तैसूं[18] राव सुरतांण महाराज रायसिंघजीसूं मिळीयो । आपरी[19] हकीकत कही । राजा सुरतांण ऊपर कीयो[20] । आधी सीरोही

---

1 पास । 2 छोड़ कर । 1, 2, 3 राना जगतसिंहके पास रहना छोड़ कर बादशाहकी सेवामें रहा । चाबुकके मामलेमें माधोसिंहने झाला हरदासको मार दिया था । 4 जैतमलका पुत्र । 4, 5 सुरतांण, जेतमलके पुत्र कल्याणमलकी सेवामें रहता था। 6, 7 जैसलमेरके रावल् लूणकरणकी बेटी धीरबाईकी कोखसे उत्पन्न पाँच (पुत्र) भाई । 8 जिनमें । 9 जगमाल बड़े कामका मनुष्य था । 10 राज्य तिलक, 11. भांणके पुत्रको । 12, 13 बीकानेरके महाराज रायसिंहको सौराष्ट्र देशका गिरनार प्रदेश मिला । 14 संदेह हुआ था । 15 सो जाते थे । 16 तब । 17 अपनी । 18 सहायता की ।

पातसाहजीरै कीनी । आधो सिरोही राव न दीनी । तिको[1] आधरो वंट[2] पातसाह जगमालनू दीनो । जगमाल तालिको ले आयो[3] । राव आध परो दीयो[4] । जगमालनू विजो आय मिळीयो । विजै भखायो[5] । कह्यो – सुरतांण कुण ? तूं रांणा सांँगारो पोतो, माँनसिंघरो जमाई । सारी सिरोही उरी काय न ले[6] ? पछै एक दो दाव घाव मोहलाँ[7] ऊपर कीया । पाघरै ऊपर वया[8] । तरै जगमाल खिसांणो पड़ वळे दरगाह गयो[9] । फरीयाद करी [10] । पछै पातसाह जगमालरी मदत राव चन्द्रसेनरा बेटानूं सोभत दे, रावाई[11] दे, रायसिंघनूं, सिंघ कोळीनूं[12] मदत मेलीया[13] । पछै अै[14] सीरोहीं आया । तरै सुरतांण राव सहर छोड़ भाखरां पैठो [15] । पछै अै पिण उठी गयां पछै संवत् १६४० रा दतांणी डेरां ऊपर आया । वेढ़ हुई । जगमाल, रायसिंघ, सिंघ कोळी तीनों काम आया । संमत १६११ रा असाढ वदि ५ रिववाररो जनम ।

रामसिंघ जगमालरो ।

स्यांँमसिंघ ।

(१० मनोहर) ।

रूपसिंघ, देवीदास जैतावतरो[16] दोहोतो ।

रुद्रसिंघ ।

रांँणो सगर उदैसिंघरो, जगमालरो सगो[17] भाई । सु जगमालनूं राव सुरतांण मारीयो । तरै सगर जांणीयो म्हे तो दीवांणरै[18] श्रैन छां[19], पिण दीवांण छोटा ही गोतीरो ऊपर करै छै[19], तो

---

1 उस । 2 भाग । 3 जगमाल जागीरीका प्रमाणपत्र (पट्टा) ले आया । 4 रावने आधा भाग दे दिया । 5 विजैने जगमालको भरमाया । 6 समस्त सिरोहीका राज्य क्यों नहीं ले लेता है ? 7, 8 पीछे एक दो बार अवसर देख महलोंमें जा कर जगमालने सुरतांँणके ऊपर प्रहार किये, किन्तु वे पघडीके ऊपर लगे । 9 तब जगमाल लज्जित हो कर फिर बादशाहके दरबारमें पहुँचा । 10 पुकार की । 11 राव पदवी दे कर । 12 सिंघ नामके कोली राजपूतको । 13 भेजे । 14 ये । 15 पहाड़ोंमें घुस गया । 16 जैताका पुत्र । 17 सहोदर भाई । 18 मेवाड़ राज्यके अधीश्वर इकलिंग महादेव माने जाते हैं और राना अपनेको उनके महामन्त्री-'दीवान' मानते हैं । 19 अति समीप कुटुम्बके और मुख्य हैं ।

जगमाल मारीयांरो दावो रांणो अमरसिंघ राव कनै मांगसी[1] सु दीवांण कदै रावनूं ओळभो[2] ही दिरायो नहीं, नै रावसूं सांमो[3] घणो सुख[4] कीयो। रावनूं बेटी परणाई। तरै सगरनूं इण वातरो घणों इमरस[5] आयो। तरैं सगर दरगाह आयो। मेवाड़री सारी वात पातसाह जहांगीरनुं गुजराई[6]। वात सहल[7] कर दिखाई। तरै रांणासूं विखो कीयो[8]। पातसाह जहांगीर सगरनूं राणाई दीवी[9]। चीतोड़ मेवाड़ सारो दियो। ऊपर[10] नागोर अजमेर वळे[11] घणा परगणा दीया। घणी मया करी[12]। सगर वरस उगणीस १९ चीतोड़ राज कीयो। निपट वडो ठाकुर हुवो।

पछै संमत १६७१ पातसाह जहांगीर आप आय अजमेर बैठो। साहजादो खुरम आय उदैपुर बैठो। तरै राणो अमरसिंघ खुरमसूं मिळीयो। असवार १००० सूं चाकरी कबूल करी। तरै मेवाड़ पाछो रांणा अमरसिंघनूं दीयो[13]। सगरनूं रावताई[14] दीवी। पूरबमें जागीरी दीवी। श्रीवाराहजीरो देहुरो पोकर माथै सगर संवरायो[15] संमत १६१६ भादवा वद ३ रो सगररो जनम छै। सगररा बेटांरी विगत–

९ इंद्रसिंघ सेखावतांरो भांणजो। सगर जीवतां मूंवो[16]।

९ मांनसिंघरो जनम सगर वांसै[17] रावताई पाई तैसूं, संमत १६३९ रो।

१० हरीसिंघ।

१० मोहकमसिंघ।

---

1 जगमालको मारनेसे उत्पन्न हुई शत्रुताके बदलेका दावा राना अमरसिंह राव सुरताणसे मांगेगा अर्थात् वैरका बदला लेगा। 2 उपालम्भ। 3 उल्टा। 4 प्रेम। 5 अमर्ष। 6 निवेदन की। 7 बातको सुगम कर दिखाया। 8 रानाको संकटमें डाला। 9 राना बना दिया। 10 इनके अतिरिक्त। 11 और। 12 कृपा की 13 तब मेवाड़ पुनः राना अमरसिंहको दे दिया। 14 और सगरको रानासे रावत बना कर पूर्वमें कुछ जागीरी दे दी। 15 तीर्थ गुरु पुष्करके श्री वाराह मन्दिरका सगरने जीर्णोद्धार करवाया। 16 सगरके जीवन कालमें मर गया। 17 मानसिंहका जन्म १६२६, पाटवी इन्द्रसिंहके मरजानेके कारण रावताई इसे मिली।

१० आसकरन ।

१० मोहणसिंघ । सगर जीवतां मूंवो ।

१० वैरीसाल ।

१० रुघनाथदास

१० मदनसिंघ । पेट मार मूंवौ[1] ।

१० हरीरांम । राजा रायसिंघजीरो चाकर रह्यो छौ[2] ।

१० फतैसिंघ ।

१० जगतसिंघ । गोड़ वीठलदासरै कांम आयो ।

९ अगर । रांणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर थो ।

९ जसवंत । जोधपुर वास वसीयो[3]। गांव १२ सूं सोभतरो सिणलो दीयो[4] । पछै संवत १६७३ छाडीयो[5] । ब्राहनपुर मोहबतखांनरै रह्यो[6]। संमत १६९० वळे रावळे वसीयो[7] । धोळहरो गांव १२ सूं दीयो हुतो[8] । पछै मोहबतखांन कह्यो, मत राखो। तद सीख दीवी ।

९ सबलसिंघ । जोधपुर संमत १६७९ वास वसीयो ।
गांव ४ जालोररा कुरड़ासूं[9] । दीया ।·······दीवी दस ।

१० सबलसिंघ । ९ कल्यांणदास ।

९ साह । रांणा उदयसिंघरो ।

१० दुरजनसिंघ । राजा जैसिंघरो मांमो ।

१० माधोसिंघ । मुथरादास ।

१० पंचाइण । रांणा उदैसिंघरो । ९ किसनसिंघ ।

९ बलू । चूंडावतां वैरमें मारीयो[10] ।

---

1 पेटमें कटारी मार कर मर गया । 2 बीकानेरके राजा रायसिंघके यहां नौकर रहा था । 3 जोधपुरमें आकर रह गया । 4 जोधपुरके महाराजा सूरसिंघने उसे बारह गांवोंके साथ सोजत परगनेमें सिणला गांव जागीरमें दिया । 5 मारवाड़ छोड़ दिया । 6 बुरहानपुर जा कर मोहबतखानके यहां नौकर रहा । 7/8 सं० १६९० में पुनः जोधपुर आ कर बस गया, तब उसे, १२ गांवोंके साथ धोलेरा गांव जागीरमें दिया था । 9 घासके निमित्त जो गांव थे उनमेंसे चार उसे दिये । 10 चुंडावतोंने वैरका बदला लेनेके लिये उसे मारा ।

१० सूरसिंघ । ११ भींव ।

८ सकतो । रांणा उदैसिंघरो । पातसाही चाकर हुवो । इणरा वेटा वडा निपट आछा रजपूत हुवा नै इणरो परवार घणो । सकतारा पोतरांरी आज वडी साख हुई छै[1] । सकतावत कहावै ।

९ भांण सकतावत । मोटा राजारी[2] वेटी राजकुवर परणी हुंती ।

१० सांमसिंघ । महाराज श्रीजसवंतसिंघजीरै सगो मांमो[3] ।

११ करमसेन । जोधपुर वास । चंडावळरो पटो ।

१२ सिवरांम । १२ जगरूप । १० पूरो भांणोत । राजा ।

११ सवलसिंघ पूरावत ।

११ सत्रसल । १२ मोहकर्मसिंघ ।

१० मांनसिंघ भांणोत[4] । राजा भींवरो चाकर । भींव कांम आयो तद कांम आयो ।

१० गोकुलदास भांणोत । मोटा राजारो दोहीतो । राजा भींवरो चाकर । भींव कांम आयो तद पूरे लोहे पड़ीयो[5] । तरै राजा गजसिंघजी उपाड़ीयो[6] । घाव बंधाया । पछै रांहिण रु. २९००० रो पटो दे वास राखीयो[7] । पछै संमत १६९४ खुरम तखत वैठो तरै पातसाहरै वसीयो । बडो दातार । वडो झुझार मोत मूंओ[8] ।

११ सुंदरदास । ११ जूझारसिंघ । ११ वीरमदे । ११ कल्यांणसिंघ ।

१० केसोदास भांणरो । मोटा राजारो दोहीतो । राजवाई

---

1 सकतेके पौत्रोंकी वड़ी शाखा फैली । 2 जोधपुरके मोटा राजा उदैसिंघकी कन्या राजकँवर भाणको व्याही थी । 3 सगो मांमो=माताका सहोदर भाई । 4 भांणका पुत्र । 5–6 शरीर पर शस्त्रोंके खूब प्रहार हो जाने पर गिर गया तो राजा गजसिंहने स्वयं उसे उठा कर दूर किया । 7 मेड़ते परगनेका रांहिण नामक, रु. २९०००) की आयका गांव दे कर अपने पास रखा । 8 वड़े जूझारोंकी मौत मरा ।

भटीयांणी नांनी हुवै । केसोदास को[1] दिन जोधपुर नांनी कनै रह्यो । गांव सरेचो मोटे राजा पटै दीयो हुतो ।

९ अचळो सकतावत[2] । वेगम पटै[3] । राव कहीजतो । आपरो गळो आपरै हाथ काट मूंवो ।[4]

१० रावत नरहरदास । ११ जसवंत रावत । ११ विजो ।

११ पतो । ११ कांन । ११ रावत केसरीसिंघ ११ जगनाथ ।

११ रतनसी । ११ सादूळ । ११ भीम ।

१० रावत नाराणदास । रांणा सगररै वास वसीयो । सगर रावताई दी थी ।

११ रावत किसन । ११ कल्यांण । ११ स्यांम । ११ भावसिंघ ।

११ धरमांगद ।

९ बलू सकतावत । रांणो उंटाळै झूंबीयो तद कांम आयो[5] ।

१० लाडखां । ११ साहिब । १० कमो । १० खंगार । ११ सुजांण ।

१० रांमचंद । १० सांवळदास । १० कचरदास ।

९ भगवांन सकतावत । रांणारी दी बूट पटै[6] ।

९ जोध सकतावत । वडो आखाड़ सिध[7] रजपूत हुवो । रांणारो चाकर जीहरण थांणै हुतो[8] । पछै रावत भांनो देवलीयेरो धणी मनदसोररा फौजदारनूं ले नै आयो । असवार २००० पाळा ८२००० ले ऊपर आयो । जोध असवार ६० सूं हुतो । सु मैदांनरी लड़ाई करी । रावत भांनो, सैंद मांखन दोनांनूं मार मुंओ[9] ।

१० भाखरसी । १० नाहरखांन । अरजन । १० मांडण सकतावत

९ दलपत । १० गिरधर । १० गजसिंघ । अजबसिंघ ।

९ भोपत । १० नगो । ९ मोहण । ९ माल । १० हररांम ।

---

1 केशोदास कई दिन जोधपुरमें अपनी नानीके पास रहा । 2 3 अचला सकतेका पुत्र जिसको वेगम ठिकानेका पट्टा है, राव कहा जाता । 4 जो अपना गला अपने हाथसे काट कर मरा था । 5 राना ऊंटाले गांवमें लड़ा वहाँ बलू काम आया । 6 रानाकी ओरसे दिया हुआ बूट गांव उसके अधीन है । 7 रणरूपी अखाड़ेका सिद्ध अर्थात् अकेला ही युद्धको जीतने वाला । 8 रानाका नौकर जीहरण नामक गांवके थानेमें रहता था । 9 रावत भाना और सैयद माखनखाँ दोनोंको मार कर मर गया ।

११ विजो । ९ चत्रभुज । १० भोज । ११ बलरांम ।
१२ महासिंघ ।
९ वाघ । १० जगमाल । ११ मोहणसिंघ । १२ कह्न ।
९ राजसिंघ । १० कीतो ।
११ सूरसिंघ ।
१२ रांणो प्रताप, रांणा उदयसिंघरो। सोनगरा अखैराजरो दोहीतो। संमत १५९६ जेठ सुद ३ रविवाररो प्रताप रांणारो जनम ।

रांणै प्रतापरा बेटा –

९ रांणो अमरसिंघ, संमत १६१६ रा चैत सुद ७ रो जनम । पूरबीयां पवारांरो भांणेज । संमत १६७१ रा फागुण मांहे वरस नवरा विखाथी खुरमनूं मिलीयो[1] । संमत १६७६ उदैपुरमें काल कीयो[2] ।

९ सेखो प्रतापरो ।

१० चतुरभुज, जोधपुर वसीयो थो। संमत १६६९ गांव ६ सूं । करमावस[3], सिवांणेरो पटो दीयो ।

९ कल्यांणदास ।

९ कचरो ।

९ सहसो प्रतापरो। वडो ठाकुर। विखा माहे रांणा अमरसिंघरी घणी कीवी चाकरी ।

१० भोपत सहसावत । वडो दातार हजार छै आदमी लीयां दरगाह चाकरी रांणारो मेलीयो करतो[4] ।

१० केसरीसिंघ ।

९ पूरणमल प्रतापरो। जोधपुर वास वसीयो। संमत १६६४ मेड़तारो गांव संमत १६६६ ढाहो[5] गांव ५ सूं दीयो ।

---

1 पैदल नौ वर्ष तक गुप्त रूपसे जंगल और पहाड़ोंमें रहनेके संकट सह कर फिर खुर्रमसे मिला। 2 मरा । 3 समदड़ी से दक्षिण लूनी नदीके किनारे सिवाने परगनेका एक गांव । 4 छ हजार मनुष्योंके साथ रानाकी ओरसे भेजा हुआ बादशाहके यहां नौकरी करता था । 5 गांवका नाम ।

१ जसवंत । १ हाथी । १ मांनो । १ गोपालदास । १ चंदो ।
१ सांवल । १ करमसी । १ भगवांन ।

रांणो अमरसिंघ नै[1] जहांगीर पातसाहरै वात हुई[2]। रांणो अमरो साहिजादे खुरमसूं घोघूंदैमें[3] मिलीयो। तद रांणानूं मेवाड़ ऊपर इतरी[4] ठोड़ जागीरमें दे नै[5] पंच हजारी असवाररो मुनसब कीयो[6]। असवार ह. १००० चाकरी थापी[7]।

१ मांडलगढ संमत १७११ तागीर कीयो थो। संमत १७१५ वळे दीयो[8]। २००००) एक।

१ वदनोर संमत १७११ तागीर कीयो। संमत १७१५ वळे दीयो।

१ फूलीयो संमत १६९४ जागीर कीयो।

१ नीमच,[9] गांव २४५ छै चीतोड़ थी कोस १५ रु. २२५०००)।

१ जीहरण, गांव १२ देवलियारो गड़ासिंघ[10]।

१ वसाड़, संमत १३९४ रावत केसरीसिंघनूं मार नै जांनसाखांन उरी लीवी[11] मनदसोररै निजीक[12]।

१ भैंसरोड, गांव १२४ खखर भखररी ठोड़[13]।

१ सुणेर, गांव १२ रांमपुरा कन्है[14]। संमत १६९४ तागीर।

१ डूंगरपुर, संमत १६९४ तागीर कीयो। संमत १७१५ औरंगजेब पूठो दीयो[15]।

१ हंसवाहलो[16]। संमत १७१५ दीयो।

१ देवलियो। पछै रावल जसवंत मारीयो......उरो लीयो[17]।

१ वेघम गांव ९४ चोतोड़सूं गांउ[18] २२ बूंदीरै कांकड़[19]। रेख रु. १००००)।

---

1 और। 2 परस्पर मंत्रणा हुई। 3 गांवका नाम। 4 इतनी। 5 जागीरमें दे कर। 6 पांच हजार घोड़े और उनके असवारोंके साथ मनसबदार बनाया। 7 बदलेमें असवार १००० की सेवा निश्चित की। 8 पुनः दे दिया। 9 गांवका नाम। 10 जन्त। 11 ले ली। 12 पास। 13 खखर-भखरकी (जंगल और पहाड़ों की) जगह। 14 पास। 15 वापिस दे दिया। 16 बांसवाड़ा। 17 ले लिया। 18 गाउ (गव्यूत)=दो मील। 19 सीमा।

राँणो अमरसिंघ, रांणा प्रतापरो । संमत १६१६ चैत सुद ७ रो जनम । पवार-पूरबीयाँरो[1] भांणेज । पातसाह जहांगीरसुं वरस नवरो विखो जाजरीयो[2] । घणी लड़ाई करी विखा मांहे । मालपुरो (साहिजादो खुरम) राजा मांनसिंघ उदैपुर बैठां मारीयो[3] । अकबररै दोर मांहे[4] । पछै पातसाह जहांगीर जोर हठ ऊपर आयो[5] । सगर वडो ग्रासियो हुवो चीतोड़ आइ वसीयो[6] । वरतीरा रजपूत कितरा-हेक मिलीया[7] और मिलणनूं तयार हुवा । पातसाह जहांगीर आप आय अजमेर वैठो, तरै आपरो दाव[8] देख रांणो अमरसिंघ साहिजादानूं घोघुंदे आय मिलीयो । असवार १००० री चाकरी कबूल करी । पछै साहिजादे खुरम दिन १ रांणानूं राख सीख दीनी[9] । कंवर करननूं ले नै खुरम अजमेर आयो संमत १६७१ रा फागुण मांहे । संमत १६७६ रांणे अमरसिंघ उदैपुर काल कीयो[10] ।

रांणा अमरसिंघरा बेटा –

१० रांणो करन । संमत १६४० रा सावण सुदी १२ रो जनम । संमत १६९४ फागुणमें काल प्राप्त हुवो[11] ।

१० अरजन अमरारो । सदा रांणारो चाकर हीज रह्यो । देवड़ा विजारो दोहीतो ।

१० सूरजमल अमरारो ।

११ सुजांणसिंघ । पातसाही चाकर । फूलीयो पटै ।

११ वीरमदे । पातसाही चाकर ।

१० राजा भीम, वडो रजपूत हुवो । विखे सारे मांहे ठोड़ ठोड़ भींव पातसाही फोजांसूँ लड़ीयो । पछै विखै मिटीये[12] साहिजादा खुरमरै चाकर रह्यो । संमत १६७९ राजाई

---

1 पूरविये परमारोंका । 2 सहन किया । 3 खुर्रम और मानसिंह कछवाहाके उदयपुरमें बैठे हुए मालपुराको लूट लिया । 4 अकबरके शासनकालमें । 5 बादशाह जहाँगीर अत्यन्त हठ पर चढ़ा । 6 सगर ग्रासियेकी (लूट खसोट करनेवाला) स्थितिमें होते हुए भी चित्तौड़ आकर बस गया । 7 देशके कितने ही राजपूत उससे मिल गये । 8 अवसर । 9 जानेकी आज्ञा दी 10 उदैपुरमें मरा । 11 मरा । 12 संकट मिटने पर ।

किताब पायो[1] । मेड़तो जागीरमें पायो । विखे मांहे खुरम साथे फिरीयो । संमत १६९१ काती सुदी पूरबनुं ढस नदी ऊपर लड़ाई हुई परवेज मोहबतखांनसूं । तठै[2] कांम आयो ।

११ किसनसिंघ ।

११ राजा राइसिंघ । संमत १६९५ राजाई पाई । नाराणदास पातावतरो दोहितरो ।

१० वाघ, रांणा अमरारो । संमत १६६५ एक वार रावलै वसतो थो । गांव २० दूधवड़[3] देता था, पण रह्यो नहीं ।

११ सबळसिंघ । पातसाही चाकर हुवो । वाघ प्रथीराजोतरो दोहितरो ।

१० रतनसी, रांणा अमरारो ।

१० रांणो करन अमरारो । संमत १६७६ टीके बैठो । सु संतोसी ठाकुर हुवो ।

रांणा करनरा बेटा –

११ रांणो जगतसिंघ । संमत १६६४ रा भादवा सुद १२ रो जनम । मेहवेचा-राठोडांरो[4] भांणेज ।

११ गरीबदास । घणा दिन रांणाजी कनै रह्यो । पछै पातसाही चाकर हुवो । संमत १७१४ रा जेठ मांहे धवलपुररी लड़ाई कांम आयो, मुरादबगस साथे ।

११ छत्रसिंघ ।

११ मोहणसिंघ सुरतेरो ।

११ राजसिंघ ।

रांणो जगतसिंघ संमत १६९४ में उदेपुर टीके बैठो । संमत १७१० काळ प्राप्त हुवो । जगतसिंघ वडो दातार विवेकी ठाकुर हुवो । कलजुग[5] मांहे वडा २ सुक्रत कीया । वडा २ दांन दीया ।

---

1 राजाका पद मिला । 2 वहां । 3 बीस गाँवों सहित दूधोड़का पट्टा देते थे फिर भी नहीं रहा । 4 मारवाड़के मालानी प्रान्तमें मेहवा नगरके नाम पर मेहवेचा - राठोड़ोंकी एक शाखा । 5 कलियुग ।

१२ रांणा राजसिंघ ।

१२ अरसी ।

वात[1] एक रांणो उदैसिंघ उदेपुर वसाइयांरी[2]–

संमत १६२४ चैत सुद ११ अकबर पातसाह चीतोड़ लीवी । सीसोदीयो पतो जगावतरो जैमल वीरमदेओत,[3] ईसर वीरमदेओत और ही घणो साथ गढमें कांम आयो । चीतोड़ छूटां रांणो उदयसिंघ एक वार कुंभलमेर आयो । तठा[4] पछै वेगो हीज उदैपुर वसायो । उदैपुररी ठोड़ अठै[5] देवड़ा वसता गांव ५२ गिरवाररा[6] कहावता । तिका गांवांरी विगत–

" गिरवार देवड़ांरो । अजेस[7] देवड़ा इणां गांवां मांहे मांणस[8] हजार २००० रहे छै । १ पीछोली । १ पालड़ीरी । ठोड़ उदैपुर ।

	१ आहाड़ ।	१ दहबारी ।	१ टीकली ।
१ लकड़वा ।	१ कलड़वा ।	१ मटूंण ।	१ कोटड़ो ।
१ तीतरड़ी ।	१ भवणो ।	१ आंबरीं ।	१ वेदलो ।
१ रुआंध ।	१ छापरोळी ।	१ लखाहोळी ।	१ वेहड़वा ।
१ चीखलवा ।	१ वड़गांव ।	१ देवड़ी ।	१ मूंडखसोल ।
१ वड़ी ।	१ थूर ।	१ कवीथो ।	१ वरसड़ो ।
१ नाई ।	१ बुजड़ो ।	१ सीसारमो ।	१ धार ।

देवड़ो वलू उदेभांणोत[9] देवड़ांमें वडेरो[10] । दीवांणरो चाकर छै । टका५०००सूं इये जायगा[11] आपरै नांवे[12] पाधर[13] मांहे पीछोला तळाव ऊपर सहर उदैपुर वसायो । गांव निजीक छोटोसो माछळो मगरो[14] छै । माछळारा मगरासूं उतरनै[15] सहर छे । दीवांणरा मोहल[16] पीछोळारी पाल ऊपर छै । मोहलांथी[17] आथवणनूं[18] तळाव लगतो[19] सहर छै । कोस २ रै फेर छै[20] । सहररी एक कांनी[21]

1–2 राणा उदैसिहने उदयपुर वसाया जिसका एक वर्णन । 3 वीरमदेका पुत्र । 4 जिसके वाद तुरंत ही उदयपुर वसाया । 5 यहां । 6 देवड़ोंके इन गांवोंका समूह पहाड़ोंसे घिरे हुए रहनेके कारण गिर वार=गिरि वाला कहलाता था । 7 अभी तक । 8 मनुष्य । 9 उदैभाणका पुत्र । 10 पुरखा । 11 इस जगह । 12 अपने नामसे । 13 समतल भूमि । 14 पहाड़ । 15 उत्तर दिशाकी ओर । 16 महल । 17 से । 18 पश्चिममें । 19 लगता हुआ । 20 दो कोसके घेरेमें हैं । 21 ओर ।

माछळारो मगरो छै। एकण-कांनी[1] खरक-[2] दिस सिसरवारो मगरो छै। तळाव घणो भरीजै तरै [3] पांणी मगरै तांई[4] जाय छै[5]। तळावमें पांणी माछळारा मगरारो, सीसरवारा मगरारो घणो आवै छै। तळाव निपट [6] वडो छै। मांहे मगरमछ रहै छै। तळाव ऊंडो घणो छै। ते[7] तळावरी मोरी[8] छूटै छै। तिणथी[9] घणी धरती दोळो[10] फिरै छै। तिणरो घणो हासल हुवै छै[11]। पछै तळावरो पांणी वेडच नदी भेळो हुवै छै,[12] अहाड़री पाखती जातो थको[13]। पीछोला पाखती दीवांणरा कोट, महल, सहर छै। मोहलांसूं निजीक तळाव पीछोला मांहे लाखोटारी[14] ठोड़ तळाव विचै रांणे अमरसिंघ वादळ-महल करायो छै। तळावरी पेली तीर [15] रांणे जगतसिंघ मोहण-मिदररा मोहल कराया छै सु छै[16]। वाग छै। सहररी पांणीरी मुदार[17] तळाव पीछोला ऊपर छै। बीजो[18] पांणीरो निवांण[19] तिसड़ो[20] सहररी पाखती घाटू छै[21]। वाग-बाड़ी छै[22]। सहर मांहे देहुरा[23] १५ तथा २० छै। जैनरा, सिवरा।

सहररी वसतीरो उनमांन[24]–

१. घर २००० महाजनांरा – ओसवाळ, महेसरी, हूबड़, चीतोड़ा, नागदहा, नरसिंघपुरा, पोरवाड़।[25]

२. घर १५०० ब्राह्मणांरा।

३. घर ५०० पंचोळीयांरा घणा[26], दूसरा भटनागर।

---

1 एक ओर। 2 वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचकी दिशा। 3 तब। 4/5 तक जाता है। 6 अत्यन्त। 7 उस। 8 नाली। 9/10 जिससे पानी बहुत सी भूमिके चारों ओर फिर जाता है। 11 जिसका बहुत लगान प्राप्त होता है। 12 बेड़च नदीमें मिल जाता है। 13 आहाड़ गांवके पास जाते। 14 किनारेसे पानीकी दूरी और गहराईका अनुमान लगानेके लिये बनाया हुआ मान. सूचक टीबा एवं तैराकोंकी प्रतिस्पर्द्धामें निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँच जानेका चिह्न या स्थान (लक्ष्य घट्ट)। 15 परले किनारे। 16 कराये हैं सो हैं। 17 आधार। 18 दूसरा। 19 जलाशय। 20 जैसा। 21 कम है। 22 बाग बगीचे हैं। 23 मंदिर। 24 अनुमान। 25 महाजनोंकी (वणिक समाजकी) सात जातियोंके नाम। 26 कायस्थ और भटनागरोंके मिलकर ५०० घर, जिनमें कायस्थोंके अधिक।

४. घर ६० भोजग[1] ।

५. ५०० खांट भील[2] ।

६. ५००० माहिलवाड़ियो लोक[3] ।

७. घर १५०० रजपूत ।

८. ९००० पूणजान[4] ।

महररी वसती घर हजार बीसरो उनमांन छै ।

उदैसागर तळाव संमत १६२० तथा संमत १६२१ रांणे उदैसिंघ बंधायो । कोस १० रै फेर[5] पांणी छै । पाळ लंबी गज ५००रो बंधेज छै[6] । आडी गज २५०[7] । ऊंची गज ७० पांणीमें । गज पांणी बारै उघाड़ो[8] । नाळो[9] गज ५० ऊंडो, गज १२ रै पनै[10] भाखर वाढ काढियो छै ।

पीछोलो रांणा लाखारी वार[11] मांहे किणही विणजारे बंधायो[12] । पांणी कोस ४ रै फेरमें छै ।

श्रीएकलिंगजी सहरसूं कोस ५, देहुरो मगरा ऊपर छै । उदैपुरसूं भरहेर[13] कूंण मांहे छै । गांव देलवाड़ो झाला कल्याणवाळो एकलिंगजीथी कोस १ छै । देवी राठासणरो[14] देहरो भाखर[15] ऊपर छै, सु एकलिंगजीथी कोस २ । एकलिंगजीरा देहुराथी बेउ[16] तरफ भाखरांरी गाळ[17] छै । देहुरारा दोळो छोटो कोट छै । देहुरो एकलिंगजीरो चौमुखो[18] छै । चार दरवाजा छै । देहुरा ऊपर डंड कळस[19] सोनारो छै । पाखती और ही देहुरा घणा छै, नै एकलिंगजीरा देहुरा

---

1 शाकद्वीपी अर्थात सेवक जाति । 2 भील, नायक आदि । 3 कृषि कर्म करने वाली समस्त जातियें, जिनमें चाकर आदि आश्रित जातियें और भील, थोरी, नायक आदि भी सम्मिलित हैं । 4 इनके अतिरिक्त पवन अर्थात् शेष जातियों के ९००० घर हैं । (ब्राह्मण आदि चार वर्णोंके अंतर्गत समस्त जातियोंके समूहको छत्तीस-पवन कहा जाता है) । 5 घेरमें । 6/7 जिसकी लंबाईका बांध ५०० गज और चौड़ाईका २५० गज है । 8 बारह गज पानीके ऊपर । 9/10 नालेकी गहराई ५० गज, जिसकी चौड़ाई १२ गज-पहाड़को काट कर निकाला गया है । 11 समय । 12 किसी वनजारेने उसे बंधवाया था । 13 ईशान और पूर्वके बीचकी दिशा । 14 राष्ट्रश्येना देवी । 15 पहाड़ । 16 दोनों । 17 दरी । 18 चार मुंहों (द्वार) वाला । 19 मंदिरके शिखरके ऊपरका ध्वजदण्ड और कलश सोनेके हैं ।

निजीक उदैपुर दिसा निजीक कुंड छै। एकलिंगजीथी निजीक[1] उदैपुर दिसा[2] कोस १ नागदहो गांव छै। नागदहा गांवरा उगवण वडो तळाव छै। पड़िया-साजा घणा देहुरा छै[3]। नागदहाथी सीसोदिया नागदहा कहावै छै। इण गांव इणांरा वडेरा रह्या छै। तळाव उदैसागर उदैपुर सहरसूँ कोस ३ उगवणानूँ छै, दहबारीरी घाटीसूँ निजीक। तळाव निपट वडो। कोस २० चोगिरद विसतार छै भरीजै तरै[4]। घोघूंदै कुंभलमेररै मगराँरो पांणी आवै। तिणरी नदी वेड़च आवै छै, सु तळाव मांहे आवै छै। थोड़ो बहुत पांणी वेड़चमें सदा वहतो रहै छै नै तळाव उदैसागर दोळा चोगरद मगरा छै। पांवडा २०० तथा २५० उदैसागररी पाळरो बंधेज छै। सिगळो[5] नाळो मोरीरुखो[6] सदा वहतो रहै छै। तळाव हेठै[7] पांणी नाळारो वहै छै, तिण ऊपर रांणै जगतसिंघरा कराया मोहल छै।

घाटी राहरी हकीकत[8]–

दहबारी घाटी सहरथी कोस ३ छै। केवड़ारी नाळ सहरसूँ कोस १ कूँण रूपारास[9] मांहे छै। सहरसूँ कोस ४ डूँगरपुर वांसवाळा गुजरातरै पैंडे[10] भाखर नाळ कोस ७ छै। केवड़ो गांव नाळांरै पैले ढाळ छै[11]। दोनां कानी भाखर छै। जावररी नाळ सहरसूँ कोस ४ दिखणादनूँ। चावंडेरानूँ पैंडै। दीवांणरै विनांण[12] चावंड मगरा छै। विखेरी मदार[13] इणां मगरां माथै छै। जावररी खांण रूपारी[14] रोज १ रु० ४००) तथा ५००) आवै। जसद, रूपो नीसरै[15] घोघूंदो कोस ९ आथुणनूँ[16]। जीमणैरो[17] घाटनूँ पैंडो। खमणोररो घाटो सहरती[18] कोस ३ ईशाण-कूँणनूँ[19] मारवाड़नूँ घाटो। सायररो

1 एकलिंगके पास। 2 उदयपुरकी ओर। 3 टूटे-फूटे और बिना टूटे-फूटे अनेक मंदिर हैं। 4 तब। 5 समस्त। 6 जिधर मोरी है उस रुखमें। 7 नीचे। 8 वर्णन। 9 पूर्व और अग्निकोणके बीचकी दिशा। 10 मार्ग। 11 उस ओरकी ढलाईमें। 12 संकटकालमें राणाके गुप्त रूपसे रहनेके लिये चावंडके पहाड़ हैं। 13 आधार। 14 जावरकी चांदीकी खानसे ४००) व ५००) की आय होती है। 15 उसमेंसे चांदीके साथ जसद भी निकलता है। 16 पश्चिमकी ओर। 17 दहिनी ओर। 18 शहरसे। 19 ईशानकोण।

घाटो कोस १४ पंचाध-कूँणनूँ[1] । आवड़-सावड़रा वडा मगरा छै । घाटारै ढाळ देहुरो रांणपुरमें श्रीआदनाथजीरो सा धरणरो[2] करायो । वडो प्रसाद[3] छै । पहली अठै वडो सहर वसतो । ऊदा-कूंभावतांरो वसायो । हमैं तो[4] सहर सूनो[5] छै । रांणपुर आगे कोस तीन सादड़ी वसै छै । घांणेरारो[6] घाटो उदैपुरसूँ कोस १९ वायव[7] कूँणमें, गढ कुंभलमेर निजीक । जिल्हवाड़ारो घाटो सहरथी[8] कोस २३ । मांनपुरैरो घाटो सहरथी कोस ४० सारण उत्तरे ।

गिरवारी हकीकत–

उदैपुररी गिरदवारी कोस ५ । आगे गिरवो[9] कहीजै । गांव ५२ देवड़ांरो उतन[10] छो । तिण मांहे उदैपुर वसिया वे तूट गया[11] । हळखड़सा[12] अजै[13] गांवां मांहे छै ।

च्यार-छपनरी[14] विगत–

उदैपुर कोस[15] छपनिया-राठोड़ांरो[16] उतन छै । अै छपनिया राठोड़ सोनगरा पोतरा । वडा भूमिया[17] । रांणो उदैसिंघ इणांरै मेवाड़ वास तोड़णनूं हुवो थो[18], सु रांणा प्रतापरी वार[19] मांहे जातां तूटा । पिण छूटा-फूटा[20] छपनिया अजेस-तांई[21] छपनूरा गांवां मांहे छै । मेवास[22] को नहीं ।

च्यारै छपनरा गांव २२४–

५६ एक झाडोलरी लार[23] ।

५६ एक सलूँबर लार ।

1 उत्तर और वायव्य कोणके बीचकी दिशा । 2 शाह धरणका बनवाया हुआ राणपुरमें आदिनाथजीका मंदिर । 3 वड़ा मंदिर है । 4 अब तो । 5 खाली । 6 घाणेराव नामक गांव । 7 वायव्य कोण । 8 से । 9 उसके पूर्व गिरवा कहलाता था । 10 जन्म-भूमि । 11 उदैपुर बसा तब वे टूट गये । 12 हल चला कर कृषि पर निर्वाह करने वाले (कृषक)। 13 अब भी । 14 राठोड़ोंके छप्पन-छप्पन गाँवोंके चार समूह । 15 कोसोंकी संख्या मूल प्रतिमें नहीं है। 16 चार समूह वाले छप्पन-छप्पन गांवोंमें रहने वाल राठोड़ राजपूत, जो अब भी छपनिया राठोड़ ही कहलाते हैं । 17 वड़े जागीरदार । 18/19 राना उदयसिंह इनका मेवाड़में रहना उखाड़नेको तत्पर हुआ था सो राना प्रतापके समयमें ये टूटे । 20/21 फिर भी टूटे-फुटे छप्पनिये अभी तक इन छप्पनके गांवोंमें हैं । 22 छिपे हुए रह कर लूट-खसोट करनेकी स्थितिमें कोई नहीं है । 23 छप्पन गाँवोंका एक समूह झाड़ोल गाँवके अन्तर्गत ।

५६ सैंबरारी लार।

५६ चावंड लार।

उदैपुरसूं इतरै[1] कोसे[2] अै सहर छै–

२९ चीतोड़।	४० सोभत।
२० कुंभलमेर।	९० अहमदावाद।
३५ सीरोही।	४५ ईडर।
३० डूंगरपुर।	४० देवळियो।
५२ मनंदसोर[3]।	३५ जोजावर।
४० मीमच[4]।	२० कपासण।
२० तांणो।	१७ मोही।
६७ जोधपुर।	६० मेड़तो।
५० जाळोर।	६० मालपुरो।
६५ अजमेर।	४५ बधनोर।
३० बांसवाळो।	९० उजेणसूं अजमेर[5]।
४५ मांडलगढ।	५० बूंदी।
३५ करहेड़ो।	१२ घोघूंदो।
११ ऊंटोळाव[6]।	

चीतोड़सूं इतरा[7] सहर इतरै कोसे–

२९ उदैपुर।	४० बूंदी।
४० गढ रिणथंभोर।	१३ पुर।
३५ बधनोर।	५० बाँसवाहळो।
२४ कोठारियो।	२७ दसोर[8]।
२५ फूलियो।	६० उजेण।
१७ मांडलगढ़।	६७ मेड़तो।
१५ वेघम।	१७ मांडल।
७० ईडरगढ।	३० देवळियो।

1 इतने। 2 कोसों पर। 3 मंदसोर। 4 नीमच। 5 उज्जैन हो कर अजमेर ९० कोस। 6 ऊंठाला। 7 इतने। 8 मंदसोर।

१५ मीमच[1] । ५७ मूळपुरो[2] ।

४५ सिरवाड़ ।

दीवांणरी हद, कोसां, दिसावांरी विगत–

मारवाड़ कूँण-वायव[3] । उत्तरथा डावी[4] । अजमेरसूं कोस ६०, ब्यावर रांणारी । समेळ खालसा[5] अजमेररी । मानपुरारो घाटो[6] । मारण घाटावळ[7] । जाजपुरसूँ हद लागै[8] ।

रामपुरासूं कोस ४५ तथा ५० हद । उगवणथा कूँण जीवणी दिस गांव जारोड़ो रांमपुरारो[9] ।

देवळियासूँ कोस ४२, दखणरी डावी तरफ[10] दीवाणरो गांव धीरावद नै[11] आगै देवळियो कोस ५ विचै छोटो गांव भैंसरोड़ दीवांणरी[12] ।

बूंदी कोस ६५ तथा ७० उगवण[13] था[14] क्यूंई[15] डावेरी[16] दसोर दिसा[17] हद । कोस २५ तथा २७ दिखणथा डावेरी रूपारास[18] नीमच दीवांणरी । लिखमड़ी दसोररी ।

डूँगरपुर वांसवाळा वीच भीड़वाड़ो मूँड़लो गांव दीवांणरो छै । डूँगरपुरसूं हद कोस १९ दिखण खरक[19] दिसा ।

सोमनदी मींव कोस १९ । सलूंबर, सेवाड़ी, आसपुर, ईडरसूँ कोस ३० खरक कूँण मांहे । पांनोरो भीलांरो मेवास, दीवांणरा थका छै[20] । गांव छाळी-पूतळी रांणारी । दलोल ईडररो । डूँगरपुर वांसवाहळा वीच गांव जवाछ भीलांरो मेवास छै, सु दीवांणरा थका छै ।

---

1 नीमच । 2 मालपुरा । 3 वायव्य कोणकी ओर मारवाड़ । 4 उत्तरसे बांई ओर । 5 समेल । अजमेरके अंतर्गत वादशाही गांव है । 6 दर्रा । 7 बड़ा दर्रा । 8 जहाजपुरको सीमा लगती हैं । 9 पूर्वसे दाहिनी ओर रामपुरेका जारोड़ा गांव । 10 दक्षिणकी बाँई ओर । 11 और । 12 धरियावद गांवके आगे देवलिया ५ कोस, उसके बीच छोटा गांव भैंसरोडगढ़ जो दीवानका (महाराणाका) है । 13 पूर्व दिशा । 14 से । 15 किंचित् । 16 बांई ओर । 17 ओर । 18 एक गाँवका नाम (मारवाड़की १६ दिशाओंमेंसे 'रूपारास' एक दिशा भी है जो आग्नेय और पूर्व दिशाके बीचमें है) । 19 मारवाड़की १६ दिशाओंमेंसे एक दिशा जो वायव्य और पश्चिम दिशाके बीचमें है । 20 भीलोंकी रक्षाका (गुप्त) स्थान 'पानोरा' जो दीवाणका (महाराणाका) है ।

सीरोहीसूं हद कोस २५ आथुण[1] दिसा ।

वांसवाहळो उदैपुरसूं कोस ४० वीच डूंगरपुर । कांकड़[2] नहीं ।

उदैपुरसूं कोस ५० ईडर । इण मारग[3]–

१ उदैपुरसूं सींगड़ियो । ३ चंदवासो । ४ आहोर । ७ भीमरो ओगो (गोडो) । ७ पांनोरो भीलांरो । १ छाळी पूतळी रांणारी । ३ दलोल कलोल ईडररी । १ ईडर ।

उदैपुररी हवेलीरा[4] गांव निजीक[5] तिणरो[6] हैंसो[7] भोगरो[8] वरसाळी[9]-हैंसो ३ लाग सूधो[10] आधो । ऊनाळी[11]हैंसो ३ आध पड़ै ।

वात–

कछवाहो मांनसिंघ कवरपदै[12] । अकबर पातसाह गुजरात मेलीयो छौ[13] । तद चीतोड़धणी प्रताप छै । सु रांणेजी मांनसिंघ कनै[14] सोनगरो मांनसिंघ अखैराजोत, डोडियो भींव[15] सांडावत मेलनै हळभळ कराई हुती[16] । सु मांनसिंघ कछवाहो पाछो वळतो[17] डूंगरपुर आयो । उठै[18] रावळ सैसमल मेहमांनी करी[19] । उठाथी[20]सलूंबर आयो । तरै सीसोदिये रावत खंगार रतनसीयोत मेहमांनी करी । रांणोजी तद घोघूंदै रहै छै । रावत खंगार मांनसिंघरी रीत-भांत दीठी[21] । प्रकत एकण भांतरी छै[22] । सु रांणाजीनूं कहाड़ियो[23]–'राज! मांनसिंघसूं मत मिळो । ओ एकण भांतरो आदमी छै ।' रांणो वरजियो रह्यो नहीं[24] । आय मिळियो । मेहमांनी करी । जीमण पगा[25] विरस[26] हुवो । तद मांनसिंघ दरगाह गयो । रांणा ऊपर मुहम

1 पश्चिमकी ओर । 2 सीमा । 3 उदैपुरसे ईडर जाते समय निम्न प्रकार गाँव अंकित संख्याकी दूरीसे मार्गमें आते हैं । 4 निजी । 5 समीप । 6 जिसका । 7 हिस्सा । 8 कृषककी ओरसे (खेत भोगनेके उपलक्षमें) खेतके स्वामीको दिया जाने वाला अन्नके रूपमें अमुक परिमाणमें निश्चित किया हुआ एक कर । 9 खरीफ (बरसाती या सावनू) फसलका भाग । 10 सहित । 11 रबी (वसंत ऋतु) की उपजका भाग । 12 कुमार-पद पर । 13 भेजा था । 14 पास । 15 डोडिया शाखाका क्षत्रिय सांडाका पुत्र भीम । 16 तैयारी कराई थी । 17 पीछे लौटता । 18 वहाँ । 19 भोजन आदिसे सन्मान किया, अतिथि-सत्कार किया । 20 वहांसे । 21 तौर-तरीका, चालढाल । 22 प्रकृति एक निराले ही ढंगकी है । 23 कहलवाया । 24 मना करने पर भी माना नहीं । 25 भोजनके कारण । 26 मनोमालिन्य ।

मांग लीधी[1] । घोड़ा ४०००० ले ऊपर आयो । निजीक आया तठै दुरदास परवतसिंघरो पूरवियो नै सीसोदियो नेतो भाखरोत बे[2] वांसै[3] मेलिया था[4], सु मानसिंघरो डेरो वनास ऊपर गांव मोळेळा हुवो छै । नै रांणारो डेरो लोहसिंगे हुवो छै । उदैपुरसूं कोस ९ उत्तरनूं । कोस ३ रो वीच छै । तद मांनसिंघ सिकार-रमतो[5] असवार हजार १००० रांणारा डेरासूं कोसेक[6] आयो नै आपरो[7] डेरो कोस २ इक[8] वांसै रह्यो, तरै[9] इण दावसूं दीठो[10] । वडी घातमें आयो[11] । राणानूं जाय कह्यो "वेगा हुवो[12], ज्यूं वैठा छौ त्यूं चढो[13] । मानसिंघ वडी घातमें[14] । चाळीस हजार घोड़ा वांसै मेल-नै हजार असवारसूं आयो । रावळो वडो भाग[15] । केई मार लांछां केई भाज जाय छै[16] ।" तद रांणेजी चढणरी तयारी करी । पण झाले वीदे चढण न दिया। सवारै[17] खंभणोर वनासरै ढाहै[18] वेढ[19] हुई । रांणा कनै असवार हजार ९००० तथा दस हुता । कछवाहै वेढ जीती । रांणें हारी । इति संपूर्ण ॥

अथ मेवाड़रा भाखरांरी[20] वात लिख्यते—

रूपजी-वासरोड़[21] देसरै फळसै[22] छै । रूपजीसूं कोस ३ जील-वाळो दिखणनूं[23] छै। जीलवाळाथी कोस २ रीछेर उगवणनूं छै। रीछेर वाघोरारी खांभ[24] छै । जीलवाड़ा नै रीछेर वीच अमजमाळरो वडो भाखर छै । लांवो कोस ५ छै । उलै-कांनी[25] कैलवो छै । वाघोररै आगै घाटो गांव छै। तठा आगै[26] भोरड़ारो पहाड़ लांवो कोस ५ उत्तर-दिखण छै । तठै भोरड़ नै मछावळा वीच

1 सेना मांग कर ली। 2 दोनोंको । 3 पीछे । 4 भेजा था । 5 शिकार खेलता हुआ । 6 कोस भर निकट आ गया । 7 अपना (उसका) । 8 दो कोस भर । 9 तब । 10 दूरसदासने देखा कि मानसिंह अच्छे दावमें आ गया है । 11 आक्रमण कर दें ऐसी स्थितिमें आ गया है । 12/13 शीघ्रता करो । जैसे बैठे हो वैसे ही चढ़नेकी तैयारी करो । 14 मानसिंह बड़ी घातमें आ फँसा है । 15 श्रीमान्‌का बड़ा भाग्य । 16 कइयोंको मार लेते हैं और कई भाग जाते हैं । 17/18/19 दूसरे दिन प्रातःकाल खमनोरके पास बनास नदीके तट पर युद्ध हुआ । 20. पहाड़ोंकी । 21/22 रूपजी-वासरोड मेवाड़ देशकी सीमा-द्वार पर स्थित है । 23 को । 24 पर्वतकी गोड़में आया हुआ है । 25 इस ओर । 26 वहांसे आगे ।

समीचो गांव कूंभावतां सीसोदियांरो उतन छै । उदैपुरसूं समीचो कोस १७, रूपजीथी कोस १२ छै । कूंभळमेरसूं कोस १० समीचो छै । तठा आगै मछावळो पहाड़ कोस ७ लांबो छै । गांव ९ मछावळा दोळा[1] छै–१ समीचो । १ मदार । १ मचीद । १ मदारड़ो । १ वरदाड़ो । १ वरणो । १ गमण । १ ओरू । मछावळा ऊपर पांणी घणो । झाड़[2] घणा । वेरणी नावै[3] । तठा आगै वरवाड़ो । तठासूं वर नदी नीसरी छै । बनास नीसरी छै[4] । तठा आगै घांसेररो मगरो कोस १ लांबो छै । तठा आगै पीडरझांपरो मगरो छै । घांसेर नै पीडरझांप वीच झांसनाळो कोनरो कोस २ छै । तठा आगै खमणरो मगरो छै । तठै लोहसींग गांव छै । तठै एक छोटी-सी नदी नीसरी छै । खमणरो मगरो उत्तर दिखण कोस २ छै । तठा आगै ईसवाळरो मगरो छै । कड़ी गांव वसै[5] छै । गिरवारा भाखरांसूं जाय लागो छै । ईसवाळ उदैपुरसूं कोस ५ उत्तर पछिमनूं छै । जीलवाड़ाथी कोस ५ देसूरी । देसूरीथी कोस १ घांणेरो[6], कुंभळमेररी तळेठी[7] तठै । आगै कोस २ कुंभळमेररो पहाड़ कोस १५ री गिरदवायमें[8] छै । सादड़ी, रांणपुर, सेवाड़ी तांई[9] कुंभळमेररो मगरो छै । सेवाड़ी कुंभळमेरसूं कोस ७ छै । तठा आगै राहगरो मगरो छै । निपट वडी ऐदी[10] ठोड़ छै । पांणी पहाड़ मांहे निपट घणो छै । गांव २५ राहग दोळा वसै छै । राहग कोस १६ लांबो छै । रांणारै विखो[11]विनांण रहणनूं वडी ठोड़ छै । राहग सीरोहीरा सरणउआरै मगरै जाय लागो छै । राहग कोस १५ लांबो, कोस १५ पनरै पहळो[12] छै । कोस ३० री गिरदवाई छै । गांवां रैत[13]– सीरवी[14], वांभण[15], वांणीया[16] वसै छै । गांवांरी विगत –

भाटोद, भूणोद, माल्हणसू, नाँणो, वेहड़ो, पाद्रोड़, पींडवाड़ो सिरोहीरो । वेकरीयारो घाटो । जूही नदी उठै छै । राहग वालीसांरो

1 चारों ओर । 2 वृक्ष । 3 वर्णन करनेमें नहीं आवै । 4 जहांसे वर और बनास नदियें निकली हैं । 5 बसा हुआ है । 6 घाणेराव । 7 तलहटी । 8 विस्तार में 9 । तक । 10 अत्यन्त विकट स्थान है । 11 सुरक्षाके लिये संकट कालमें । 12 चौड़ा । 13 प्रजा । 14 एक कृषक जाति । 15 ब्राह्मण । 16 बनिये ।

उतन[1]। जरगा नै राहग वीच आ ठोड़ देसेहरो देस कहीजै। उणां गांवां रजपूत, सांसण[2] वसै छै। खरवड़, चंदेल, वोडांणा, चांदण वसै छै। रैत ज्यूं भोग दै[3]। चावळ, गोहूं[4], चिणा, उड़द घणा नीपजै। आंबा छै। विचली-पाख[5] मछावळा नै जरगा वीच कुहाड़ियो नळो[6] कहीजै छै। उदैपुरसूं कोस २० छै। कुहाड़ीयो नळो कोस १० लांबो छै। कळूंझो रेवली उठै गांव छै। जरगो कुहाड़िया नळासूं जीमणो छै। जरगारी पैली-कांनी[7] केलवाड़ो नै दिखणनूं रोहिड़ो गांव छै। केलवाड़ाथी कोस ९ रोहिड़ो छै। दोळा-दोळा[8] जरगारा गांव छै। ऊपर–१ सायरो। १ आंतरी। १ गुढ़ो। १ काकरवो। १ कीसेर। १ गूंदाळी। जरगा ऊपर राजा हरीचंदरी थापी गुसांईरी पादुका छै[9]। तठै त्रिसूल छै। जरगा ऊपर पांणी घणो। तठा आगै नाहेसर भाडेरा मगरा कोस सात ७ रोहिड़ासूं छै, सु रोहिड़ासूं लागे छै। धरती निपट वांकी[10]। गांव अठै घणा छै। मेवाड़ सीरोहीरी कांकड। नै[11] मारग पिण सीरोहीनै[12] उदैपुरसूं जाय। गांव–१ ढोल, १ कमोल, १ सींघाड़, १ बोखड़ा। घोघूंद भाखर उलै-कांनै[13] भाडेरथी कोस ४ उरै पूरबनूं। गांव दिखणनूं–गांव अठै पार-बाहिरा[14] छै। अै निपट[15] वडा मगरा। टगरा-वती, झड़ोलरा मगरा, गढ आहोररा मगरा, नाहेसररा मगरा,

---

1 निवास, ठिकाना। 2 सांसण (शासन) = साधु ब्राह्मण आदिको किसी राजा या जागीरदारकी ओरसे प्रायः उसकी मृत्युके समय संकल्प करके दानमें दिये हुए खेत वा ग्राम आदि जिन पर उनका निजी शासन रहता है और उनसे किसी भी प्रकारका कर नहीं लिया जाता है। किन्तु यहां 'सांसण' शब्द दानमें दी हुई भूमिके अर्थमें व्यवहृत नहीं हुआ है। इस प्रकारकी भूमिके भोक्ताओंसे तात्पर्य है। मंदिर, मठों आदिका पूजा आदि प्रबंध निरंतर चलते रहनेके निमित्त एवं चारण, भाटों आदिकी काव्य रचनाओं पर भेंट स्वरूप दी जाने वाली भूमि वा ग्राम भी 'सांसण' कहलाते हैं। कहीं-कहीं 'सांसण' और डोलीको, किंचित् अंतर होते हुए भी एक ही मानते हैं। 3 खरवड़, चंदेल आदि राजपूत जो यहां रहते हैं (उन्हें राजपूत होनेके नाते कोई मुआफी नहीं है) साधारण प्रजाकी भांति भोग आदि कर देते हैं। 4 गेहूं। 5 मध्य-पार्श्वमें। 6 नाला। 7 उस ओर। 8 चारों ओर, आसपास। 9 जरगा पहाड़के ऊपर राजा हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित गुसांईकी चरण-पादुका हैं। 10 विकट। 11 और। 12 को। 13 इस ओर। 14. अपार। 15 अत्यन्त।

पनोरा भाडेरा मगरा, पई-मथारारा मगरा, देवहररा मगरा। इणाँ आगै मांणचरा मगरा कोस १५ खरक मांहे। भील वसै।

इणाँ-आगै[1] ईडर दिसा[2] गंगादासरी सादडीरा मगरा, भील वसै। इणां आगै छाळी-पूतळीरा मगरा, दलोल कलोलरा मगरा ईडरसूं कोस ७ उरै। डूंगरपुर नै देव गदाधर वीच जवाछरा मगरा छै। भील वसै। ईडर डूंगरपुरसूं कोस १० छै। पीपळहड़ी सीरोड़रा मगरा, छपन चावड नै जवाछ, जावर वीच उदैपुरसूं कोस १७। चावळ, गोहूं हुवै। झाड़, पाहाड़ घणा छै। सूरज दीसै नहीं। बारबरड़ांरा मगरा, भील वसै। चावळ, गोहूं ऊपजै। आंबा फूलाद[3] घणो। तठा आगै डूंगरो[4] देस छै। डूंगरपुरसूं डावो[5] वाँस-वाहळौ छै। वांसवाहळाथी[6] देवळिया वीच मेवाड़रा गांव छपनरा जांनो,[7]जगनेर[8] छै। सु[9] देस मूंडल[10] कहीजै। गांव धीरवद वडवाळारो परगनो छै। अठै बडा भाखर छै। घणा झाड़ छै। राठोड़ छपनिया अर चहवांण वसै छै। तठा-उरै[11] धीरवदथा आथुणनूं मेवलरा मगरा छै। तठै अै गांव छै –

१ सलूंबर। चूंडावतांरो उतन।

१ बाहरड़ो। सलूंबरथी १२।

१ बांभोरो। सारंगरो। सारंग देओतांरो[12] उतन।

बाहरड़ा सलूंबर वीच वडा पाहाड़ छै। बाहरड़ाथी कोस ३ उदैसागर आथवणनूं छै।

उदैसागरसूं कोस १ दहबारी छै।

दहबारीथी कोस २ आहाड़ छै।

आहाड़थी कोस १ उदैपुर छै। [पीछोलारी पाळ मोहल[13] छै। उदैपुरसूं कोस ५ सींगड़ियारो भाखर पछमनूं[14] छै। वडो मगरो छै। तठा आगै धाररो पाहाड़ कोस ३ उदैपुरसूं छै। लाखाहोळी

1 इनके आगे। 2 ओर। 3 पुष्पों वाले वृक्ष पौधे आदि। 4 डूंगरपुरका। 5 बांया। 6 से। 7/8 गांवोंके नाम। 9 वह। 10 मण्डल ? 11 जहांसे इस ओर। 12 सारंगदेवके वंशजोंका। 13 महलमें। 14. पश्चिममें।

उतरनूं छै। तठै चीरवारो घाटो उतरनूं छै। आंबेरी गांव छै। चीरवाथी[1] कोस २ एकलिंगजी छै। उदैपुरसूं कोस ५ एकलिंगजी छै।

एकलिंगजीसूं कोस १ राठासणरो मगरो छै। कोस २ गिरदवाई छै। पांणी नहीं।

एकलिंगजीसूं कोस १ झालांवाळो देलवाड़ो छै।

देलवाड़ाथी कोस ७ कोठारियो चहवांणारो[2] छै। उदैपुरसूं कोस १२ छै। अठै देलवाड़ा कोठारिया वीच सहलसा[3] मगरा छै।

कोठारियासूं उगवणनूं मेवाड़रो मंझ[4] देश चौड़ो छै।

कोस २५ चीतोड़ कोठारियासूं छै, उगवणनूं।

चीतोड़थी कोस १ अरवणरा मगरा मोटा छै। पिण ऊपर पांणी नहीं। नै अरवणरा मगराथी कोस २ पठार[5] छै। भाखर ऊपर गांव छै। तिकां[6] गांवांरी विगत–

पठाररा गांव–

४४ खैरवरा। रैत गूजर, वांभण।

८४ रतनपुररी चोरासी[7], चूंडावतांरी ठोड़। गोहूं, चिणा नीपजै[8] ९४ वेघमरो वडो मुलक। वडी पनवाड़ी। गोहूं, चिणा नीपजै। चूंडावतांरी ठोड़।

वेघमथी कोस ७ वीझोली पँवार इंद्रभांणरी।

महीनाळ तीरथ मांडलगढथी कोस ७ वीझोली। गाँव २४ ऊपरमाळरा छै।

वीझोलीथी कोस ९ भैंसरोड़गढ। वडा भाखर छै।

भैंसरोडथी कोस ९ कोटो। पळाइतो[9] हाडांवाळो छै।

भैंसरोडथी कोस १ वूंदी छै।

---

1 से। 2 चौहानों। 3 चौड़ी और छोटी पहाड़ियें हैं। 4 मध्य। 5 पहाड़की ऊपरी समतल भूमि। 6 उन। 7 ८४ गांवों वाले एक प्रान्तको 'चौरासी' कहा जाता है। 8 उत्पन्न होते हैं। 9 हाडा शाखाके चौहानोंका पलाइता गांव है।

भैंसरोडथी कोस ४ रिख-विसळपुर मेवास[1] छै । भील वसै छै । भैंसरोड पंचळदेस[2] । गांव २५ लागै । गांव बारै हवेलीरा[3] भैंसरोडसूं लागै ।

तठा-आगै[4] गांव ४५ कूंडाळरा । मोहिल-मांकड़ारो परगनो कहावै छै[5] । उदैपुरथी कोस ५० ।

भैंसरोडसूं कोस २० रांमपुरो । दखणनूं कोस १२ तांई[6] रामपुरै दिसा भैंसरोड़री हद छै । भैंसरोड हेठै[7] चांमळ[8] नदी वहै छै । तीन नदी भैंसरोडरा कोट दोळी फिरै छै । भैंसरोड कोट १ भींतरो छै । बीजो खाई गढरै आकार पड़ गई छै[9] । घर ४०० कोट मांहे वसै छै ।

नदी तीनरी विगत–१ चांबल[10] । १ बांभणी[11] । १ पगधोई ।

मेवळ मेरांरी[12] नै पटे बंभारारै[13] । मांहे सीसोदिया सारंगदेओतांरो उतन । इणांरो[14] एक छेह[15] उदैपुरथी कोस ६ उदैसागररै नाळै हद । बीजो[16] छेह देवळियाथी कोस ३ वडो मेरवाड़ो हुतो[17] । बूरड़, बरगड़, बुजमा, लड़मर, इणां[18] जातांरा मेर गांव १४० मांहे रहता, सु एक वार रांणै जगतसिंघ काढिया हुता[19] । पछै झाले कल्यांण अरज कर नै उरा अणाया[20] । हमार[21] रांणै राजसिंघ मेर परा काढ नै[22] सिगळा[23] गांवांमें सीसोदिया, चूंडावत, सकतावत, रांणावत, वसीयां[24] सूधा[25] वसाया छै । नै मेर देवळियांरै मेरवाड़े गया । विगाड़ करै छै । देवळियानै मेवल वीच मूंडळरो मुलक कहावै छै । मुदै[26] ठोड़ धीरावद, तठै[27] ही मेर वसता । रैत हुवा चालता के[28] मेवासी हुवा चालता ।

---

1 वीसलपुर वालोंका 'रिख' नामक मेवास (लुटेरोंका रक्षा स्थान) भैंसरोडसे चार कोस पर स्थित है । 2 पाञ्चाल देश । 3 राजा व जागीरदारकी निजी सम्पत्तिके । 4 वहांसे आगे । 5 कहलाता है । 6 तक । 7 नीचे । 8 चम्वल । 9 गढ़ीके समान एक दूसरी खाई वन गई है । 10 चंवल । 11 ब्राह्मणी (ब्रह्मणी) 12/13 मेवल मेर-क्षत्रियोंकी और वंभाराकी जागीरीमें । 14 इनका । 15 छोर । 16 दूसरा । 17 था । 18 इन । 19 निकाल दिया था । 20 पीछे कल्याणसिंह झालाने अर्ज करके वापिस वुलवा लिया । 21 अभी । 22 निकाल करके । 23 समस्त । 24 वसीवान, जागीरदारके कामदार आदि वे लोग जिनसे किसी प्रकारका टॅक्स नहीं लिया जाता है । नाई, कुम्हार आदि कई जातियां भी जागीरीमें वसीवान होती हैं । 25 सहित । 26 मुख्य स्थान धीरावद 27 । वहां ही । 28 कई ।

गांव १४० लागै । सु रांणै राजसिंघ परा काढ नै रजपूत सारंगदेओत वसाया छै । पिण उठै पांणी घणो लागै छै[1] । न वसै[2] ।

नाहेसर भील धणी[3] । वडा स्याँमधरमी[4] । रांणारै चाकर छै । वडेरा रावत कहावै[5] । हमार रावत नरसिंघदासरै मुदै[6] छै । भाखररो नाँव नाहेसर छै । मुदै ठोड़रो नाँव गाँव जूड़ो । परगनो पिण जूड़ारो कहावै छै । उदैपुरसूं कोस २५ घोघूंदै लगतो छै । सीरोहीरा भीतरोठ लगतो उगवण दिसा नाहेसर । उलै ढाळ[7]नै आथुण दिसा भाखररै ढाळ सीरोहारो भीतरोठ[8] छै । अंबावथी कोस १० तथा १२ नाहेसररा गाँव ९०० री केहवत[9] छै । धरती माँहे रैत भील, कुळबी[10], वाँणीया, गूजर रहै छै ।

एक भाखर भाडेररो । कोस १० लाँबो, कोस २ पहै[11] । नाहेसर कोस १२ लांबो, पैनै[12] कोस २ । तिण बीच जूडारो मुलक । गांव १ वांसै[13] बीघा ५०० तथा ७०० खेती लायक । बीजी[14] धरती भाखरां हेठै । झाड़ - आंबा, रांयण[15] पिण आंबली झाड़ घणा । धांन साळ[16], गोहूं, चिणा, मकी, उड़द घणा नीपजै । वालरण-काकड़ी[17] घणी नीपजै । दीवाँणरै नास-भाज विखानूं[18] वडी ठोड़ इतरी[19]–

इतरा गांवां माँहे–

९०० नाहेसर, नरसिंघदासजी ।

२० पनोर, राँणो दायाळदास भील ।

९४ गंगादासरी सादड़ी, गंगादासरा पोतरा[20] छै ।

१४० झाड़ोली, टगरावटी । भील रैत थका रहै छै[21] । पटै झालांरै[22] ।

---

1 परन्तु वहाँका पानी अधिक लगने वाला (अस्वास्थ्यकर) है । 2 अतः वहाँ नहीं रहते । 3 नाहेसरका स्वामी भील । 4 स्वामीभक्त । 5 मुख्य वयोवृद्ध रावत कहलाता है । 6 अभी प्रमुख रावत नरसिंहदास भील हैं । 7 इस ओरके उतारमें । 8 सिरोही राज्यका एक प्रान्त । 9 कहे जाते हैं । 10 कलबी एक कृषक जाति, पटेल । 11 चौड़ाईमें । 12 चौड़ा । 13 पीछे, लिये । 14 दूसरी । 15 खिरनीका वृक्ष । 16 लाल चावल, शालि । 17 एक प्रकारकी ककड़ी जो अम्लरहित और लंबी होती है; वालम वा वालण ककड़ी । 18/19 विपत्तिके समय महाराणाके भाग कर जानेके लिये इतने सुरक्षाके बड़े स्थान हैं । 20 पौत्र । 21 भील प्रजाकी स्थितिमें रहते हैं । 22 झाला राजपूतोंकी जागीरोंमें ।

२५ छाळी-पूतळी । ईडररी कांकड़ दलोल-कलोससूं लागै ।

२५० जवाच । भील रहै । डूंगररै पूठवाड़ै[1] भील खंगार भगारो रहै छै । कोस १५० मांहे भील छै ।

बनास नदी नीसरी[2] तैरी[3] हकीकत –

जरगारा भाखरथी नीसरी । तिको[4] जरगो उदैपुरसूं कोस २९ छै । उठाथी[5] रोहिड़ै गांव आवै । जको राजा हरचंदरो वसायो छै । उठाथी कोस २ गांव वरवाड़ो मेवाड़रो तठै[6] आवै । आगै कठाड़ गांव मदाररै गांव माछमें नै घांसाररै मगरे बीच नीसरै नै कांम-सकराही गांव वसै छै तठै आवै । उठाथी खभणोर आवै, उदैपुरथी कोस १२ । उठाथी कोठारिये आवै । तठा आगै गांव मोही तुंवरांवाळे आवै । तठा आगै गांव कुराज आवै । तठा आगै मीरमी पहुनै[7] आवै । उठा आगै गांव छाकरलो[8] पुररो छै । पुरसूं कोस ६ आगै मांडळगढरै आकोले आवै । उठा आगै जावद-नंदराय वीच नीसर नै गांव चीहळी आवै, उठै चोलेररो पारसनाथ छै । उठा आगै पाड़लोळी जाजपुररो गांव छै, तठै आय नै जाजपुर आवै । तठाथी[9] सावड़रै गांव देवळी आवै । आगै डाबर तोडारै[10] गांव आवै, तठै खारी[11] वधनोर वाळी भेळी हुई । आगै तोडाथी कोस ४ गोकर्ण राह छै[12] । बडो तीर्थ छै । मधुकीटभ[13] तपस्यां की छै । रांवण तपस्या की छै तठै आवै । तठा आगै तोडारा गांव विसळपुर रावर आवै । तठै सीसोदीये रायसिंघ मोहल[14] कराया छै । तठा आगै वणहड़ै हुय[15] टूंक आई । पछे मलीरणैरै गांव झूंपड़ाखेड़े[16] सोहड़ भगवंतगढ सैसभारिजै मलीरणैरै वीछूंदैनै हुय[17] जीरोतरो गांव हाडोतीरो हुय नै आगै खंडरगढ चांबळ भेळी हुई[18] । तठै देवी वरवासणरो थांन छै[19] ।

---

1 पीछेकी ओर । 2 निकली । 3 जिसकी 4 वह । सो । 5 वहाँसे । 6 वहाँ । 7 हो कर । 8 गाँवका नाम । अन्य प्रतियोंमें 'बाकरलो' लिखा है । 9 वहाँसे । 10 गांवका नाम टोडाका । 11 एक नदीका नाम । 12 टोडासे आगे ४ कोस गोकर्ण महादेव नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थानको जानेका मार्ग है । 13 पुराणोंमें वर्णित मधुकैटभ दैत्य । 14 महल । 15 हो कर । 16 गाँव 17 को हो कर 18 से मिल गई । 19 जहाँ पर कछवाहोंकी कुलदेवी 'वरवासण'का मंदिर है ।

वात पहली यूं[1] सुणी थी। संवत १६२४ चीतोड़ तूटी। तठा पछै रांणै उदैसिंघ आय उदैपुर वसायो[2], सु खिड़ीये खींवराज कह्यो[3]— चीतोड़ तूटी पेहली वरस ५ तथा १० उदैपुर रांणै उदैसिंघ वसायो थो। उदैसागर पण पेहली करायो छो[4]। चीतोड़ तूटी पछै रांणो उदैसिंघ आयोई नहीं[5]। घोघूंदै हीज रह्यो। रांणै उदैसिंघ संमत १६२९ घोघूंदै काळ कियो[6]। रांणा प्रतापनूं टीको घोघूंदै हुवो[7]।

कछवाहो मांनसिंघ कँवर थको[8] गुजरात गयो थो। पाछो वळतो[9] नीसरियो[10] तरै सलूंबर आयो, तरै रांणो घोघूंदै छो। उदैपुर मांनसिंघनै मेहमांनी करी, तिणसूं वेरस[11] हुवो। पछै मांनसिंघ पातसाह कनै गयो। हकीकत कही। तद मेवाड़ ऊपर वहीर हुवो[12]। खंभणोर वेढ़ हुई। तठा पछै रांणामें विखो हीज रह्यो। संमत १६७१ रांणो अमरसिंघ साहजादे खुरमसूं मिळियो। तठा पछै रांणो अमरसिंघ उदैपुर आयो। तठा पछै राजथांन[13] उदैपुर हुवो। रांणानूं मेवाड़ हुई, तद मेवाड़ ऊपर पंचहजारी जात, पंच हज़ार असवाररो मुनसब दियो छो[14]। तिणरी जागीरमें इतरी ठोड़ दीवी छी[15]—

१ मांडळगढ, संमत १७११ उतरियो थो[16]। संमत १७१५ वळे पाछो दियो। रुपिया २०००००)

१ वधनोर, संमत १७११ उतरीयो थो। संमत १७१५ वळे दियो छै।

१ फूलियो, उरो लियो संमत १६९४ पातसाह साहिजहां[17]।

१ जिहरण गांव १२, देवळियारी गड़ासिंघ[18] छै।

---

1 इस प्रकार। 2 वि० सं० १६२४ में चित्तोड़ टूट गया (चित्तोड़में पराजय हो गई), जिसके वाद राना उदयसिंहने आ कर उदयपुर बसाया। 3 जिसके सम्बन्धमें खिड़िया चारण खींवराजने इस प्रकार कहा। 4 था। 5 आया ही नहीं। 6 मर गया। 7 राना प्रतापको राज्य तिलक घोघूंदामें हुआ। 8 राजकुमारकी स्थितिमें। 9 पीछे लौटता। 10 निकला। 11 मनोमालिन्य। 12 जब मेवाड़ पर चढ़ कर रवाना हुआ। 13 राजस्थान। 14 रानाको जब मेवाड़ मिली तब मेवाड़ पर (रानाको) पांच हजार जात और पांच हजार सवारका मनसब दिया था। 15 जिसकी जागीरमें इतने स्थान दिये थे। 16 जब्त हो गया था। 17 फूलिया, जो पहिले मेवाड़में था और शाहजहांने जिसे वि० सं० १६९४ में जब्त कर लिया था (उसे वापिस नहीं दिया)। 18 निकट।

१ भैंसरोड, गांव १२४ खखर-भखररी[1] टोड़ छै, रांणारै ।
१ सीमच, गांव ४५ छै । चीतोड़सूं कोस १५, रु० २,२५०००)।
१ वसाड़, संमत १६९४ पैंजारखांन रावत केसरीसिंघ मार लीयो। मनदसोर निजीक ।
१ सुणेर, गांव १२ रांमपुरा कनै । संमत १६९४ में तागीर[2] ।
१ डूंगरपुर, संमत १६९४ तागीर कियो। संमत १७१५ वळे दियो।
१ देवळीयो तागीर कियो थो । संमत १७१५ वळे दियो[3] ।
१ वांसवाहळो एक वार उतरीयो छो । हमै तो रांणारै छै[4] ।
१ वेघम, गांव ९४, चीतोड़सूं कोस १२, बूंदीसूं कांकड़ । रु० १०,०००) ।

वात १ चारण आसीये गिरधर कही । संमत १७१९ रा भादवा सुदी ९ नै–

मांडवरो पातसाह वहादर एक वार गढ चीतोड़ ऊपर आयो[5] । गढ़ घेरियो तिण दिन चीतोड़ टीके रांणो विक्रमादित्य सांगारो, वाळक छै। हाडी करमेती हाडा नरवद भांडावतरी बेटी । तिणरै पेटरो[6] उदैसिंघ, विक्रमादित सगो भाई[7] छै । पछै कितरैहेक[8] दिन गढ एकण तरफ भिळियो[9] । सीसोदीया खांडारै मुंहै गया[10] । तठै आदमी १४ सिरदार कांम आया । तितरै मांहले बाहरले वात कीवी[11] । गढ ऊपर पातसाहरा आदमी गया, तरै रांणारा आदमी तळेटी आय नै सला करी । उदैसिंघनूं कौल-बोल दे नै पातसाहरै पांवै ले गया[12] । चाकरी रांणा उदैसिंघरी कबूल करी । बहादर पातसाह उदैसिंघनूं ले नै कूच कियो। कितराहेक[13] दिन हुवा । पातसाह बहादररै बेटो न छै[14], तरै अमरावे[15] पधार नै अरज पोहचाई ।

1 स्थान विशेषका नाम (वन-पर्वत) । 2 जब्त । 3 पुनः दे दिया । 4 अब तो रानाके अधिकारमें हैं । 5 चित्तोड़गढ़ पर चढ़ कर आया । 6 कोखका । 7 सहोदर भाई । 8/9 कितनेक दिन वाद गढ़में एक ओरसे प्रवेश कर अधिकार कर लिया । 10 शिशोदिया तलवारके मुंहसे काम आये । 11 इतनेमें भीतर और बाहर वालोंने परस्पर वात-चीत की । 12 उदैसिहको वचन दे कर वादशाहके चरणोंमें ले गये । 13 कितनेक दिन हो जानेके बाद । 14 नहीं है । 15 तब राजाओंने जा कर अर्ज पहुंचाई ।

पातसाह तो पुखता[1] हुवा छै। कोई एक भतीजो खोळै ल्यो[2]। तरै पातसाह कह्यो–'रांणारो भाई खूब[3] छै। वडा घररो छोरू छै[4]। इणनूं हूं मुसलमांन कर नै खोहळै लेइस[5]।' आ वात मुसकस थयी[6]। (उदैसिंघरा चाकरां आ वात सुणी) उदैसिंघनूं खवर हुई। इणे[7] विचार कर नैं रातरा नास आयो[8]। परभात हुवां[9] पातसाहनैं खवर हुई, कह्यो–उदैसिंघ नास गयो। तरै पातसाह तुरत वांसै चढियो। सतावी[10] गढ आय घेरियो। तरै उदैसिंघ, विक्रमादित्य दोयांनूं[11] काढ नै[12] इणांरी[13] मा हाडी करमेती जूहर कर वळी[14]। हाडी करमेती साथै इतरी वळी—

१ हाडी करमेती।

१ करमेतीरी बेटी १। खीची भारथीचंदनूं परणाई हुती[15]।

१ वैर[16] विक्रमादितरी १, हाडी कला जगमालोतरी[17] बेटी।

१ रा. देवीदासरी बेटी। इतरी करमेती साथै वळी।

इण मांमले[18] इतरा रजपूत कांम आया—

१ रावत दूदो रतनसीरो।

१ सीसोदियो कमो रतसीरो।

१ रावत वाघो सूरमचंदरो।

१ हाडो उरजन नरवदरो।

१ रावत सतो रतनसीरो।

१ रावत वाघो सूरजमलोत।

१ सोनगरो मालो, बालारो। इणरो उतन देवळीयारी कांकड़।

१ सोळंकी भैरवदास नाथावत। प्रोळ कांम आयो, सु चीतोड़ भैरव प्रोळ कहावै छै[19]।

१ रावत देवीदास सूजावत[20]।

---

1 वृद्ध। 2 गोद ले लीजिये। 3 वहुत अच्छा है। 4 वड़े घरका पुत्र है। 5 इसको में मुसलमान वना कर गोद ले लूंगा। 6 तय हुई। 7 इसने। 8 भाग कर आ गया। 9 होने पर। 10 शीघ्र ही। 11 दोनोंको। 12 निकाल कर। 13 इनकी। 14 जौहर कर जल गई। 15 व्याही थी। 16 स्त्री, पत्नी। 17 जगमालका पुत्र। 18 युद्धमें। 19 पोलमें मारा गया अतः वह चित्तोड़ का दरवाजा भैरव-पोल कहलाता है। 20 सूजेका पुत्र।

१ सीसोदियो नगो सिंघावत[1]। जगारो भाई।

१ झालो सिंघ अजारो। इतरा रजपूत कांम आया।

बात एक रांणा कूंभा चित भरमियारी[2]–

कोई समंद मांहे साह गयो थो। तिकै[3] एक मृतक देह दीठी[4] थी। तिणरी वात रांणा कूंभानूं कही। तद रांणो कूंभो चित-भरमीयो हुवो। क्यूंही[5] रोवै, क्यूंही बोलै। तद कूंभळमेर रहता, सु गढ ऊपर एक ठोड़ मांमा-कुंड छै। मांमा वड़ छै। तठै रांणो बैठो थो। कूंभारै बेटो मुदायत[6] ऊदो थो, तिण कूंभानूं कटारीयां मार नै आप पाट बैठो[7]। तद भला-भला रजपूत तिणां घणो बुरो मांनियो[8]। आपती[9] सको[10] वडा ठाकर मन खांच रह्या[11]। कोई दरबार आवै न छै। नै भाई बेटा मेल दीया छै[12]। पछै रायमल ईडर थो, तिणसूं कहाव करनैं छांनै तेड़ायो[13]। रायमल आयो तरै वडा ठाकरांरा बेटा ऊदै कनै रहता, तिणांनूं[14] पांच वडे ठाकुरै कहाड़ीयो[15]–उदानूं मिस कर नैं[16] कठीक[17] दिन ४ रेक[18] सिकारनूं ले नीसरो[19]। पछै वो कंवरांरो साथ ले नीसरियो। वांसै रायमलनूं वडा ठाकुर हुता सु ले नै चीतोड़रै गढ ऊपर ले आंण सींघासण वैसाणियो[20]। टीको काढियो। वाजा वजाया। कवरांनूं उमरावे तेड़ लिया[21]। ऊदानूं कहाड़ मेलीयो[22]– थारो काळो मूंहडो[23], तूं परो जावै[24], नहीं तो तोनूं रायमल मारसी[25]। पछै ऊदो सोझत आयो। केई दिन वसीरै दुहरै[26] रह्यो।

एक वात सुणी हुती–कंवर वाघारी बेटी परणियो हुतो। पछै वीकानेरनूं गयो। उठी हीज मूवो। उणरी ओलादरो तो कोई वीकानेररी तरफ छै।

---

1 सिंघका पुत्र। 2 विक्षिप्त। 3 जिसने। 4 देखी। 5 कभी, कुछ। 6 राज्यका मुख्य अधिकार रखने वाला। 7 गद्दी पर बैठा। 8 जिन्होंने बहुत बुरा माना। 9 आपसे। 10 समस्त। 11 मन खींच लिया। 12 भेज दिया है। 13 बुलाया। 14 जिनको 15 कहलाया। 16 बहाना करके। 17 कहीं भी। 18 चारेक। 19 ले निकलो। 20 पीछेसे रायमलको, बड़े ठाकुर जो थे उन्होंने उसको ला कर चित्तोड़के गढ़ सिंहासन पर विठा दिया। 21 बुला लिया। 22 कहला भेजा। 23/24/25 तेरा काला मुंह, तू यहांसे चला जा, नहीं तो तुझे रायमल मार देगा। 26 मंदिरमें।

दूहो साखरो[1]—

ऊदा वाप न मारजै, लिखियो लाभै राज ।
देस वसायो रायमल, सरचो न एको काज[2] ॥

रांणा राजसिंघनूं पातसाही तरफरी इतरी जागीरी छै—तिणरी विगत लिखी छै—

छ हजारी जात । छ हजार असवार त्यां-मांहे[3] पाँच उवांरा-उरदी[4] । एक हजार दुअसपाह[5] ।

रुपिया-दांम[6] आसांमी १७०००००) ६९००००००) ।

तलव जात[7] छ हजारी ३०००००) १२००००००) ।

खास जात[8] छ हजारी १४०००००) ५६००००००) ।

तावीनदार[9] असवार ६००० तिणमें एक हजार दुअसपाह १७०००००), ६९००००००), ५०००००), २००००००) ।

इनांम २२०००००), ९९००००००) ।

तिंनखाह १२५०००), ९६००००००) ।

सूबै अजमेर रु० १२५००००), ४७५००), १९००००) ।

सिरकार अजमेर परगनो १ । ४७५००) १९ ।

प्र० जोजावर १७२७५००), ६९१०००००) ।

सरकार चीतोड़ महल २७—२५०००), १००००००) ।

प्र० हवेली मोकीली मोहल २—५५०००), २२००००) ।

प्र० उदैपुर महल ३ । ४०००), २२०००००) ।

प्र० अरणो महल २७५०००), ११०००००) ।

प्र० इसलांमपुर कोसाथळ ३७५०), १५००००) ।

प्र० इसलांमपुर मोही ९७५००), ३५००००) ।

प्र० ऊपरमाल व भैंसरोड महल २—५००००), २००००) ।

---

1 साक्षीका । 2 दोहेका भावार्थ—हे उदयसिंह ! तुझे अपने पिताको नहीं मारना चाहिये था । राज्य तो भाग्यमें लिखा हो तो मिलता है । तेरा एक भी काम सिद्ध नहीं हुआ । राज्य तेरे छोटे भाई रायमलको बदा था जो देशको वसानेका अधिकारी हुआ । 3 तिनमें । 4 विना वरदीके । 5 द्विगुणित । 6 रुपयेका चालीसवाँ भाग । 7 व्यक्तिगत वेतन सम्बन्धी । 8 मुख्य २ व्यक्तियोंके वेतन सम्बन्धी । 9 प्रत्येक समय हाजिर रहने वाले सवार ।

प्र० बेघू २००००), ९०००००)।
प्र० वणोर २०००००), ९००००००)।
प्र० पुर ७५०००), ३०००००)।
प्र० जीरण २७५०००)।
प्र० साहिजिहानाबाद कपासण १२५०००), ५०००००)।
प्र० सादड़ी २५०००), १००००००)।
प्र० साहिजिहानाबाद कणवीर ७५००), ३००००)।
प्र० घोसमन ३५०००), २०००००)।
प्र० मदारे ५०००००), २०००००)।
मीमच महल ३१२५०), ५००००)।
प्र० हमीरपुर २५००००), १००००००००)।
प्र० बधनोर २०००००), ९००००००)।
प्र० मंडलगढ ४०००००), १६००००००)।
प्र० डूंगरपुर २०००००), ९००००००)।
प्र० वांसवाहळो १७२७५००), ६९१०००००)।
३७५०००), १५००००००)।

सिरकार कूंभलमेर मेहल ९५ त्यां माँहे महल ६२ पहाड़ां मांही।

बाकी महल २३ त्यां मांहे महल ३ साहिजादे खुरम रांणा अमर ऊपर आयो[1] तद राजा सूरजसिंघनूं इनांम दिया था, त्यांरी जमै न थी, सु रांणा राजसिंघरै छै[2]–१ गोढवाड़। १ सादड़ी। १ नाडूल।

बाकी महल २० त्यांरा नाम पढिया न जाय। २१५००००), ९६००००००), ५००००), २००००००) सूबो मालवै परगनो।

१ वसाड़ २००००००), ९९००००००)।

वात १ सीसोदिया राघवदे लाखावतरी। राघवदेनूं रांणै कूंभै, राव रिणमल मारियो–

तिकण समय[3] रांणो कूंभो मोकळोत चीतोड़ राज करै नै रावघदे धरती मांहे क्यूंही[4] उजाड़-विगाड़[5] करै। तरै रांणै कूंभै राघवदेनूं

1 चढ़ कर आया। 2 जिनकी जमा नहीं थी, वे राणा राजसिंहके अधिकारमें हैं। 3 उस समय। 4 कहीं कुछ। 5 लूट-खसोट।

मारणो तेवड़ियो[1]। पछै एक दिन राघवदे दरबार आवतो थो। पहरणनूं आंगी[2] हुती। तिणरी बांह ढीली हुती, सु आधी काढ़ी थी। तरै आय नै एक बांह रांणै कूंभै पकड़ी नै एक पाखती[3] राव रिणमल पकड़ी। नै दोनां बगलां राघवदेरै कटारी लगाई। सु राघवदे कटारी लागतां आपरी[4] कटारी दांतांसूं काढ़ी[5]। तरै इणां बांह छोड़ दी। तरै ओ जलेवखानानूं[6] नीसरियो। इणां हाथ छोड़ दिया। जांणियो कटारी सबळी लागी छै, आपै हेठो पड़सी[7]। नै तितरै[8] ओळरै बारणै[9] आयो। तितरै एक रजपूत भटकारी दीनी सु माथो तूट पड़ियो। सु माथो पड़ियां ही उठ दोड़ीयो[10]। तरै सगळाई[11] अळगा[12] हुवा, तरै आपरो[13] माथो दुपटीसौं[14] कड़ियांरै[15] दोळो बांध जलेव[16] आय नै आपरै[17] घोड़े चढ़ियो नै आपरा घरांनूं खड़िया[18]। परभात हुवो तरै पड़ावल चीतोड़सूं कोस १७ छै, तठै गांव निजीक आयो। तरै कोई वैर[19] पिणहार ज़िण दीठो। तरै कह्यो–'देखो कोई मांटी[20] माथा विगर चढियो जाय छै।' सु वा वैर मैले-माथे हुती[21]। तिणरी छाया पड़ी। तरै राघवदे घोड़ासूं छिटक पड़ियो[22]। उठै ५ क[23] सात वैरां राघवदेरी, पड़ावलथी आय नै वळी[24]। सु राघवदे सीसोदियो पूजीजै छै।

साखरो गीत–

राय-आंगण रांण कुंभक्रन रूठै,
हाथां ग्रहे हिंदुवै-राय।
काढ़ी राघव भली कटारी–
दांतां, सरसी ऊपर[25] डाय॥ १॥

---

1 विचार किया। 2 अंगरखी। 3 एक ओरसे। 4 अपनी। 5 निकाली। 6 पासकी राज्य-सभा। 7 अपने आप नीचे गिर जायगा। 8 इतनेमें। 9 बाहिर। 10 सिर गिर जाने पर भी उठ कर दौड़ गया। 11 सब ही। 12 अलग। 13 अपना 14 दुपट्टेसे। 15 कमर। 16 पास। 17 अपने। 18 चलाया। 19 पनिहारिन-स्त्री। 20 मनुष्य 21 वह स्त्री रजस्वला थी। 22 गिर गया। 23 अथवा 24 पड़ावलसे आ कर सती हुई। 25 गीतका अर्थ — हिंदुपति राजा कुंभकर्णने क्रोध करके राज्य आंगनमें राघवदेवके हाथ पकड़ लिये। उस समय राघवदेवने अपने दांतोंसे अपनी कटारीको खूब निकाला, जो उसके ऊपर दाव = आक्रमण करनेवालोंसे एक श्रेष्ठ (पराक्रम) की बात थी।

वात १ वीठू झाझण[1] कही–

मांडवरा पातसाहरो मेवाड़ जेजियो[2] लागतो। सु जद रांणो रायमल राज करै। सु रायमल स्याँणो[3] ठाकुर हुवो, सु क्यूंही[4] बोलतो नहीं। रायमलरै बेटो प्रथीराज हुवो। सु प्रथीराज सिकार रमणनूं गयो थो। सु सिकार रमतां एक लुगाई घड़ो भरियां जावती थी, तिणरै सोकलारी[5] लगाई। सु गोढवाड़रो लोक ओछो-बोलो[6] तो हुवै छै। तरै उण लुगाई कह्यो–"कंवरजी मांरो घड़ो कांई फोड़ियो। इसड़ा[7] तरवारिया[8] छो, तो मेवाड़ जेजियो लागै छै सु परो छोड़ावो[9]। तितरै[10] पाखतीरा[11] ऊभा था[12] तिणां उणनूं डराई। कह्यो–"तूं बोल मती।" नै प्रथीराज बोलियो–"क्यूं हो ठाकरां! आ कांई कहै छै?" किणहेक कह्यो, आ यूं कहै छै–"आखी[13] मेवाड़नूं मांडवरा पातसाहरो जेजियो लागै छै, सु कंवरजी छुड़ावो नी क्यूं?[14]" तरै आप कह्यो–"जेजियो ले छै सु कुण छै?" तिण कह्यो–"तिके पाटण कोट मांहे हीज रहै छै। वे दीवांणरा चाकर न छै। वे मांडवरा पातसाहरा चाकर छै। जेजियो उघरावै[15] छै।" तद दीवांण कुंभळमेर रहता। नै कंवर आ वात सुण नै सिकार रम पाछो

---

1 झाझण नामक वीठू जातिका चारण। 2 जजिया नामक एक कर जो बादशाही समयमें हिंदुओंसे लिया जाता था। 3 शान्त स्वभावका। 4 कुछ भी। 5 शस्त्रका अग्रभाग, चूंकला, नोक। (यह शब्द 'चूंकलो' वा 'चूंकली' होना चाहिये। मारवाड़में 'चूंक' नोकदार कीलको कहते हैं। गाड़ीमें जुते हुए बैलों आदिको चलानेके लिये लकड़ीके अग्रभागमें पैनी चूंक लगा कर बनाई हुई 'चूंकली' काममें लाई जाती है, जिसे 'आर' वा 'परांणी' भी कहते हैं। गोढ़वाड़में 'च' 'छ' आदि वर्णोंका उच्चारण 'स' की भाँति ही किया जाता है अतः यहाँ 'चूंकलो' वा चोकलोके स्थान 'सोकलो' लिखा गया है। 6 अपशब्द बोलने वाले। (प्रसंगमें तो स्त्रीकी ओरसे ओछा बोलना नहीं प्रतीत होता। इसके विरूद्ध प्रिथीराजके ओछे व्यवहार और प्रजाकी एक स्त्रीके साथ दुर्व्यवहार और अपमानका साहसपूर्ण, समुचित और प्रेरणादायक कटाक्षमय उत्तर है, जो वास्तविक और समयोचित है। यही नहीं, जो उस समयके शासकगणोंकी कर्त्तव्य-हीनता और निरंकुशता एवं दूसरी ओर सर्वसाधारणमें देश और जातिके अपमानके अनुभवका परिचायक है।) 7 ऐसे। 8 तलवार चलाने वाले। 9 हटवा दे। 10 इतनेमें। 11 पास वाले। 12 खड़े थे। 13 समस्त। 14 उसको कुँवरजी क्यों नहीं हटवाते? 15 जजिया वसूल करते हैं।

आयो, तेरे साथनूं कह्यो[1] –"आपै[2] तुरकांनूं मारस्यां[3] । खवरदार रहज्यो" तद साथ कह्यो–"दीवांणसूं गुदरावो[4]" प्रथीराज कह्यो–"म्हे[5] दीवांणसूं गुदरावस्यां[6] । मार ल्यो ।" पाछो कोटमें आवतसमा[7] तूट पड़िया[8] । डेरा ऊपर मार लीया । पछै दीवांण आ वात सुणी । तरै प्रथीराजसूं रीसांणा[9] । प्रथीराज कह्यो–"दीवांण ! आप तो घणाई दिन धरती भोगवी[10] । हमैं म्हे मोटा हुआ । दीवांण ! विराज्या रहो[11] । म्हे धरतीरी खवर लेस्यां[12] ।" सु मांडवरा पातसाहरो उमराव ललाखांन तोडै रैतो सु उणरी तावीनरो[13] लोक अठै जेजियो उवरावणनूं आवतो सु प्रथीराज मारियो – आ पुकार ललाखांन कनै पूगी । तरै ललाखांन चढियो । चढती ही नै मगरोप, आकोलो, अै मेवाड़रा गांव छै, सु मारियां[14] । लोक वंध किया[15] । तरै पुकार आई, प्रथीराज कनै । तद प्रथीराज कूंभळमेरसूं चढियो दिन-आथवतांरो[16] । सु परभात जाय तोडै ललाखांननूं मारियो । मार नै साथनूं पूछियो–क्यूं ठाकुरां ! अठाथी सूरजमल खींवावतनूं किण ताकथी मारियो जाय[17] ? तरै किणहेक कह्यो–हां राज ! सूरजमल आठमरो-आठम[18] गांव ऊंटाळावरै कनै चारण देवी छै तिणरै आवै छै[19] ।"

वात–

मेवाड़ रांणा अमरारो विखो छै[20] । पातशाह जहांगीर दृढ़ लागो छै[21] । साहिजादो खुरम, अवदुलो लारै छै[22] । सु इणासूं[23] उदैपुर

---

1 और कुमारने इस वातको सुन कर जव वह शिकार खेल कर वापस आया, तव अपने साथ वालोंको उसने कहा । 2/3 अपन तुर्कोंको मार देंगे । 4 अर्ज करो, पूछा जाय । 5 हम । 6 अर्ज कर देंगे । 7 आते समय । 8 टूट पड़े । 9 नाराज हुआ । 10 आपने तो वहुत दिनों तक देशका राज्य कर लिया । 11 दीवान ! आप अव वैठे रहें । 12 हम देशकी सार-सम्हाल करेंगे । 13 उसकी अधीनताके मनुष्य । 14 लूट लिया । 15 वहांके मनुष्योंको क़ैद कर दिया । 16 संध्या समय । 17 किस प्रकार मारा जाय । 18 प्रति अष्टमी । 19 चारण देवी है उसके दर्शनको आता है । नोट—प्रसंग अपूर्ण लिखा हुआ प्रतीत होता है । 20 मेवाड़का राणा अमरसिंह गुप्त रीतिसे पहाड़ोंमें विपत्तिके दिन काट रहा है । 21 हठ पर चढ़ा हुआ है । 22 पीछे लगे हुए हैं । 23 इनसे ।

छूटो छै। कितराएक दिना चावडांरा ही मगरा[1] अबदूळे छुड़ाया। सु रांणो अमरसिंघ घणो हीज पछतावो करै छै। भींवनूं कहै छै— "भींव ! देख ! आंपांथी[2] चावडांरा मगरा छूटा। आ वड़ी ठोड़ छूटी[3]। मोनूं[4] उदैपुर छूटांरो धोखो न हुवो तितरो[5] इण ठोड़ छूटांरो पछतावो हुवै छै[6]। इण ठोड़-छूटतां एक रातीवासो[7] ओ[8] बीजो अबदूलै सूनो कियो तो घणो बुरो दीससी[9]। तरै भीम तसलीम कर[9A] कह्यो—"अवस दीवांण ! आज अबदूलाथी इसो मामलो करूं[10], लड़तो २ अबदूलारी डोढ़ियां तांई[11] जाऊ'' दीवांणसूं कहनै[12] विदा हुवो[13]। सु आ खबर अबदूलैनै हुई, जु ! भींव वीदा हुवो सु कहै छै[14]—"हू[15] लड़तो २ अबदूलारी डोढियां तांई[16] जाईस[17]।" सु अबदूलै ही घणा[18] पातसाही लोक उमराव था सु दोढियां राखिया छै। भींव दिन घड़ी ४ चढतां विदा हुवै छै। सु पहली तो केई आपरी[19] धरतीरा लोक तुरकांसूं जाय मिलीया था, त्यांसूं[20] मामलो कियो। पछै रात आधी एकरो[21] अबदूलारा लसकर ऊपर तूट पड़ीयो सु पेहली तो आडै धंस[22] आया सु वाढ़ नांखीया[23]। घणा घोड़ा, रजपूत, पातसाही लोक डेरा मारिया[24]। यूं करतां मारतो कैहतो "आवै माहरांणो अमरसिंघ[25]।" सु असवार हजार दोयसूं दोढियांरै मुंहड़ै[26] आयो। अबदूले ही घणी जाबता[27] कीवी थी। दोढी घणो साथ[28] सु अठै लड़ाई हुई। घणो तरवारियांरो रीठ पड़ियो[29]। पातसाही लोक, सिरदार, मांणस[30] ५० तथा ६० वडा उमराव मारिया। अठै

---

1 पहाड़। 2 अपनेसे। 3 रक्षाका यह वड़ा स्थान भी छट गया। 4 मुझको। 5 उतना। 6 पश्चाताप होता है। 7 रातको रहनेका (भय रहित) स्थान। 8 यह। 7/8/9 यह दूसरा रात्रिनिवासका स्थान भी अवदुलेने अपनेसे छुड़वा कर सूना कर दिया तो बहुत बुरा दीखेगा। 9A प्रणाम करके। 10 युद्ध करूं। 11 तक। 12/13 कह कर रवाना हुआ। 14 भीम अपने ऊपर चढ़ कर रवाना हुआ है और वह कहता है कि। 15 मैं। 16/17 ड्योढ़ी तक चला जाऊँगा। 18 बहुत से। 19 अपनी ही। 20 उनसे। 21 लगभग आधी रातको। 22 सामने। 23 काट डाले। 24 डेरोंका नाश किया। 25 यों मारता जाता और कहता जाता था कि 'महाराणा अमरसिंह आ गया है'। 26 ड्योढ़ीके द्वार पर आ गया। 27 प्रबंध किया था। 28 सैनिक। 29 तलवारोंसे घमासान युद्ध हुआ। 30 मनुष्य।

भींवरा ही मांणस २० तथा २५ जीनसाळिया[1] पड़िया। पड़िया-पड़िया कहता "दोढियां तांई तो गया[2] । आघी चूरी जाय नहीं[3] ।" आगै तिके वहादर सिलहां-किया[4] ऊठिया। तिणथी डोढी चूरी जावै नहीं[5] । आगै भींवरै ही लोह[6] एक दोय लागा, नै आप जिण घोड़ै चढियो थो, जिण घोड़ारो पग पड़ियो[7] । जोयो[8], ज्यूं[9] आघो जाणरो तोल क्यूं ही नहीं[10]। तरै रजपूते भींवनूं पाछो वाळियो[11]। कटक बारै[12] आया तरै आपरो[13] घोड़ो छिटकनै पड़ियो। तरै घोड़ारो पग निलंग[14] छिटक पड़ियो। तरै भींव कह्यो–'दोढियां आगै घोड़ारो पग पड़ियो।' वीजै[15] घोड़ै चढ नै चलाया सु दीवांण छपनरै मगरै था। भींव आय मुजरो कियो। रातरा मांमलारी वात कही। दीवांण वोहत राजी हुवा। भींवरी घणी दिलासा[16] करी। कह्यो–"साबास भींव! वडो मांमलो कियो।" पछै[17] इण मांमला हुवां पछै[18] अवदूलो च्यार[19] मास ताँई दीवांणरी फोज ऊपर दोड़ियो नहीं[20]।

गीत–

खित[21] लागा वाद बिनह खूंदालम,
सूता अणी सनाहे साथ।
थापै खुरम जेवड़ा थांणा,
भींव करै तिवड़ा भाराथ ॥ १ ॥
हुवा प्रवाड़ा हाथ हिंदुवां,
असुर सिंघार हुवै आरांणा।

---

1 पखरेत घोड़ोंके सवार। 2 घायल पड़े-पड़े कहते थे कि ड्योढ़ियों तक तो पहुँच ही गये। 3 आगे शत्रुओंका चूर्ण करके नहीं पहुँचा जा सकता। 4 कवचधारी। 5 जिससे ड्योढ़ी पर खड़े शत्रुओंका नाश किये विना आगे नहीं जाया जाता। 6। तलवारके घाव। 7 घोड़ेका पांव टूट गया। 8 देखा। 9/10 तो आगे बढ़नेका कोई उपाय नहीं। भींमको पीछा लौटाया। 12 वाहिर। 13 अपना (उसका)। 14 घोड़ेका पांव टूट कर अलग जा गिरा 15 दूसरे। 16 खातिर, सन्मान। 17 फिर। 18 वाद। 19 चार। 20 दीवानकी (महाराणाकी) सेना पर चढ़ाई नहीं की। 21 पृथ्वीके लिये दोनों (दिल्ली और मेवाड़के) वादशाह ऐसे युद्धरत हुए कि दोनों अपनी सेनाके साथ कवच धारण करके ही सोया करते। खुर्रमने जितने थाने स्थापित किये भीमने वहां जा कर उतने ही युद्ध किये ॥ १ ॥ हिंदुओंके हाथों (यशस्वी) युद्ध हुए जिनमें तुर्कोंका अपार संहार हुआ।

साह आलम मूकै साहिजादो,
रायजदो थाप लियो रांण ॥ २ ॥
मंडियो वाद दिली मेवाड़ां,
समहर तिको दिहाड़ै सींव ।
अवस न पैठा किसा भाखरां ?
भाखर किसै न विढियो भींव ? ॥ ३ ॥
आरंभ जांम अमर धर ऊपर,
लड़ै अमर छल तांम लग ।
आवढ़ियो घटियो असुरायण,
खूमांण मांजसियो खग ॥ ४ ॥

वात—

सोदो—बारहठ[1] थाहरू[2] चीतोड़रो । बूंदी रांणा खेतारी वार[3] मांहे हाडां लाल[4] कनै गयो हुतो[5] । सु लाल वात कहतां कुंई दीवांण दिसा बुरो बोलियो[5 A] । तरै थाहरू पेट मार मूवो[6] । कोई कहै छै—कमळ-पूजा[7] कर मूवो । तिण दावै[8] सीसोदियां हाडांरै वैर पड़ियो । घणा दिन अदावत वुही[9] । घणो वैर धुखियो[10] । पछै सीसोदियांसूं हाडा पौंच सकै नहीं[11] तरै वैर भागो[11 A] । सीसोदियां १२ सिरदार हाडांरै परणिया[12], नै गांव[12 A] २४ बूंदी राव दायजै[13] दिया, वूंदी नै[14]

उधर शाहआलम खुर्रमको भेजता है तो इधर राणा अमरसिंहने अपने भाई (रायजादा) भींमको नियुक्त कर दिया है ॥ २ ॥ दिल्ली और मेवाड़ वालोंके परस्पर ऐसा युद्ध जमा जो उन दिनोंके युद्धोंकी एक (चरम) सीमा थी । तुर्क कौनसे पहाड़ोंमें नहीं घुसे और भीमने उनका पीछा कर कौनसे पहाड़ोंमें युद्ध नहीं किया ? ॥ ३ ॥ अमरसिंह अपने आरंभकालसे ही युद्ध लड़ता रहा । उसने जितने भी आक्रमण किये उनमें मुसलमानोंका वल क्षीण होता गया । इस प्रकार खुमाणके वंशज अमरसिंहने अपनी तलवारको पवित्र किया ॥ ४ ॥

1 चारणोंकी एक शाखा । 2 चारणका नाम । 3 समय । 4 बूंदीके हड़ा लालसिंह । 5 था । 5 A लालसिंहने वात करते समय दीवान(राना खेता)के संबंधमें कुछ बुरे शब्द कहे । 6 तब थाहरू पेटमें छुरी मार कर मर गया । 7 सिर काट कर । 8 इसी कारण । 9 शत्रुता चलती रही । 10 शत्रुता अधिक जग उठी । 11, 11 A फिर जब हाड़े सीसोदियोंको नहीं पहुँच सके तब जाकर शत्रुता मिटी । 12 वारह सिसोदिया सरदारोंने हाडोंके यहां विवाह किया । 12 A दहेजमें गांव ६ ही दिये हैं भूलसे २४ लिख दिये गये हैं । गांवके नाम भी छः हीं हैं । 13 दहेज । 14 और ।

मालगढ बीच । गांवांरा नाम—

१ जीलगरी   १ धनवाड़ो   १ वाजणो
१ खिणीयो   १ भीलड़ियो   (१ वंको)

इतरा गांव दिया ।

वात पठाण हाजीखांन रांणै उदैसिंघ वेढ[1] हरमाड़ै हुई, तिणरी धधवाड़िये खींवराज लिख मेली[2] । संमत १७१४रा वैसाख मांहे—

हाजीखांन पठांण ऊपर मालदेरी फोज अजमेर आई । रा० प्रथीराज जैतावत । तद हाजीखांन रांणै उदैसिंघ कनैं आदमी मेलिया[3] । कह्यो—"मांहनूं राज मारै छै[4] । म्हे तो रावळा थका वैठा छां[5] ।" तरै रांणो असवार हजार ५००० सूं तुरत चढियो । अजमेर आयो । तरै राठोड़े भेळा होय नै[6] प्रथीराजनूं[7] कह्यो—"आपे ही मरस्यां[8] । राव मालदेरै आगै ही[9] वडा ठाकुर था सु सारा कांम आया छै । नै आंपै मरस्यां तो ठकुराई हळवी पड़सी[10] । आंपै उठै जाव साथ भेळो करनैं लड़ाई करस्यां ।" इण भांत राठोड़ै समझाय नै प्रथीराजनूं पाछा मारवाड़ ले गया । सु प्रथीराज खिसांणो थको वगड़ी रीयो[11] । वारै उतरियो[12] । गांवमें न गयो । नै इण मामलै रांणा साथै सिरदार—राव सुरजन, राव दुरगो, राव जैमल मेड़तियो, साथै हुता । तठा पछै राव मालदे वेगो ही कटक कियो । सु रावजीरै मेड़तियांसूं खुसांण हुती[13] । सु राव मालदे कहै मेड़ता ऊपर जास्यां । नै राव प्रथीराज कहै अजमेर जाय रांणारा साथसूं वेढ़ करस्यां । सु पछै रावजी मेड़ते आया । मेड़तियांसूं वेढ हुई । राव प्रथीराज कांम आयो । वेढ हारी । राव रांणारी तो वात अठै हीज नीवड़ी । तठा पछै कितरेक[14] दिने रा० तेजसी डूंगरसियोत नै वालीसा सूजानूं रांणै उदैसिंघ कह्यो—थे अजमेर जाय नै हाजीखांननूं कहो—"म्हे थानूं राव मालदे कना

1 युद्ध । 2 दधवाड़िया शाखाके चारण खींवराजने लिख भेजी । 3 भेजे । 4 मुझको प्रथीराज मारता है । 5 हम तो आपके आश्रयमें बैठे हैं । 6 इकट्ठे हो करके । 7 को । 8 हम ही परस्पर मरेंगे । 9 पहिले भी । 10 और हम मरेंगे तो अपनी ठकुराई अशक्त हो जायगी । 11 प्रथीराज लज्जित हो कर वगड़ीमें जा कर रहा 12 वाहिर ठहरा । 13 खटक थी । 14 कितनेक ।

राख लिया छै। थे म्हानूं केहेक[1] हाथी, क्युंहेक[2] सोनो, थाहरै अखाड़ो छै[3] तिणमें रंगराय पातर छै सु म्हानूं दो।" तरै ठाकुरां रांणाजोसूं कह्यो–"हाजीखांन भलो मांणस छै नै विखायत थको छै। दीवांणजी वडो उपगार कियो छै[4]। सु हाजीखांननूं आ वात कहाड़ियांरो जुगत न छै[5]।" सु आ वात दीवांण मांनी नहीं। यां ठाकरांनै मांडां मेलिया[6]। अै अजमेर गया। आ वात कही तरै हाजीखांन कह्यो–"म्हारै देणनै तो क्युंही नहीं। नै पातर[7] तो माहरी[8] बैर[8A] छै।" तद इण वात ऊपर हाजीखांन नै रांणारै अदावद[9] हुई। तरै रांणारा परधानांनूं तो सीख दीवी[10]। नै राव मालदे कनै आदमी २ आपरा[11] मेलिया। म्हारी मदत करावो। तरै रावजी असवार १५०० रा० देवीदास जैतावत साथै दे नै मेलिया। देवीदास जैतावत, रावळ मेघराज, लखमण भादावत, जैतमाल जैसावत, बीजा ही[12] घणा ठाकुर साथै दे नै मेलिया। सु अै[13] पिण अजमेर आया। भेळा हुवा। रांणो आप पिण उदैपुरसूं चढियो। दस देसोत[14] साथै हुवा। रांणो हरमाड़ै आयो। हाजीखांन पिण हरमाड़ै आयो। वले वीचरा तेजसी नै बालेसो सूजो फिरिया। दीवांणजीनूं कह्यो–"वेढ नै कीजै। पांच हजार पठांण नै हजार राठोड़ दोनूंरा मरसी।" सु आ वात दीवांण मांनी नहीं। खेत बुहारीयो। अणी बांटी[16]। तठै[17] हाजीखांन दाव कियो। साथ थो सु आगं ठेल ऊभो कियो[18]। नै असवार हजार १००० सूं आय भाखरीरै ओटै[19] जाय ऊभो रह्यो। नै रांणो आप हरोलांरा[20] अणी मांहे थो सु गोळरा अणी मांहे जाय ऊभो रह्यो। तरै हाजीखांननूं आ खबर आई तरै हाजीखांन गोळरी अणी माथै तूट पड़ियो[21]। तरै

1 कितनेंक। 2 कुछ। 3 तुम्हारे पास स्त्रियोंका दल है उसमें रंगराय नामकी एक नर्तकी है, जिसको मुझे दो। 4 हाजीखान भला आदमी है और संकटग्रस्त है। 5 अतः हाजीखानको यह बात कहलवाना योग्य नहीं है। 6 इन ठाकुरोंको बलात् भेज दिया। 7 नर्तकी। 8 मेरी 8A. स्त्री। 9 शत्रुता उत्पन्न हो गई। 10 रवाना किया। 11 अपने। 12 दूसरे भी। 13 ये। 14 दस बड़े ठिकानोंके जागीरदार। 15 रणक्षेत्रको साफ किया। 16 सेनाके अग्रभागमें रहने वाले वीरोंका बंटवारा किया। 17 वहां हाजीखानने एक चाल चली। 18 अपनी सेनाको आगे भेज कर खड़ी कर दी। 19 आड़में। 20 सेनाके अग्रभागमें था सो पृष्ठ भागमें आ कर खड़ा रहा। 21 टूट पड़ा।

राव दुरगारो घोड़ो वढियो[1]। तद दुरगो हाथी चढियो। हाजीखांन फोज मांहे ऊभो थो, तिण दुरगारा हाथीनूं कटारो वाही[2]। तीर १ रांणा उदैसिंघरै लागो। तरै फोज भागी। तठै इतरो[3] साथ रांणारो काम आयो—१ रा० तेजसी डूंगरसीयोत, १ बालीसा सूजो, १ डोडियो भींव, १ चूंडावत छीतर अै तो सिरदार नै आदमी १०० वीजा[4] कांम आया। नै आदमी १५० हाजीखाँनरा काँम आया। नै आदमी ४० राव मालदेरा काँम आया। रावजीरै इण माँमलेमें मेड़तो आयो। तठा पछै हाजीखाँन ऊपर पातसाहरी फोज आई। पछै हाजीखाँननूं राव मारवाड़ माँहे एक वार जैतारणरै गाँव लौठीधरी[5]—नींवोळ आणियो[6]। पछै केई दिन अठै रह्यो। नै पछै हाजीखाँन गुजरात गयो। पछै पातसाहनूं हसनकुली मालम कियो। अजमेरसूं हाजीखाँन मारवाड़ गयो छै। तरै पातसाह हुकम कियो। जिण राखियो छै तिणनूं मारल्यो। तरै फौज जैतारण आइ। तरै हाजीखाँन तो नीसरियो[7]। पछै राव रतनसीनूं नै जैतारण मारी।[8]

वात—

राँणा अमरारै विखै[9], रावत नारायणदास अचलदासोत सकतारो पोतरो[10] राँणा सगरनूं जाय मिलियो। तद सगरनूं चितोड़ घणा परगनासूं थी। नाराणदासरो सगर घणो आदर कियो। गाँव ६४सूं वेघम, गाँव ६४सूं रतनपुर दियो। तठा हछै कितरेक दिनै राँणा अमरारै नै पातसाहरै मेळ हुवो। तरै सगरसूं चीतोड़ उतरी। सगर परो गयो। चीतोड़ राँणा अमरारो अमल हुवो[11]। पिण वेघम राणारा आदमी गया त्यानूं[12] रावत नाराणदास अमल दे नहीं[13]। तरै दीवाण रावत मेघनूं वेघम ऊपर विदा कियो। तरै मेघ आदमी २ मेलनै रावत नाराणदासनूं कहाड़ियो[14]-"श्री दीवाणजी आपणै[15] माइत[16] छै। आपणा

1 कटा। 2 कटारी फेंकी। 3 इतना। 4 दूसरे। 5 गांवका नाम (लोटोती-नींवोल)। । 6 ले आये। 7 निकल गया। 8 राव रतनसीको मार कर जैतारणको लूट लिया। 9 संकटमें। 10 पौत्र। 11 अधिकार हो गया। 12 उनको। 13 अधिकार करने नहीं देते। 14 कहलवाया। 15 चित्तोड़के राना (अमरसिंह)। 16 माता-पिता हैं।

जोररी ठोड़ काई नहीं[1], नै मोनूं विदा कियो छै[2], सु आपणो घर एक छै, सु थे मो[3] आवताँ पेहली गाँव छोड़ज्यो" तरै राव सही-समधोतरै[4] गाँव छोड़ बारै गूढो दियो[5], इणा गाँवमें अमल कियो[6], आ वात रांणे अमरसिंघ सुणी। तरै चहुवाँण बलूनूं वे घमरी तसलीम कराई[7]। आ बात मेघरै भाई-बंधे सुणी। तरै तुरत मेघनूं खबर पोहँचाई। मेघ वेघम बलूंनूं दीनी सुणी नै घणो बुरो माँनियो। कह्यो–मरणरी वेळा म्हानूं[8] नाराणदास ऊपर मेलिजै, नै वाघारो[9] बलूनूं दीजै, तो म्हानूं चाकर जाँणिया नहीं। वेघम कै[10] चूंडावतारी, कै[11] सकतावताँरी। चहुवाँण कुण? तरै मेघ पाधरो[12] वेघमथी[13] उदैपुर आय नै पटो छोड़ियो[14]। तरै कंवर करन बोल बाह्यो[15]–"इतरो अहंकार करो छो, तो पातसाह कनै जाय मालपुरो पटै करावजो।" पछै मेघ सामांन करनै पातसाह (जहांगीर) कनै गयो। पातसाह रांणारी विखारी वात पूछी। रावत मेघ सारी वात कही। पातसाह राजी हुवो। रावत मेघनूं मालपुरो पटै दीयो। तठा पछै[16] कितरेक दिने रांणै कंवर (करण) नूं पातसाह कांनीनूं चलायो[17]। तद कवर करननूं रांणै अमरै[18] कह्यो–"मेघनूं दावै त्यूं कर[19] मनाय लावज्यो" सु कवर करन मालपुरै आयो; तरै मेघ सांमो आयो[20]। मेहमांनी करी। पांतीयै बैठा[21]। थाळी परूसी[22]। तरै करन हाथ खांच बैठो। तरै मेघ विनती कीनी। कुण वास्तै? तरै कवर करन कह्यो–"थांनूं दीवांणजी बुलाया छै। आवो तो हूं जीमूं[23]।" तरै मेघ कह्यो–"म्हे थांरा

---

1 यह ठौर बल-परीक्षाकी नहीं है। 2 मुझे ससैन्य भेजा है। 3 मेरे आनेसे पहले ही। 4/5 तब रावने उसके कहनेके अनुसार गांवको छोड़ बाहिर आकर अपने लिये किसी रक्षित स्थानमें डेरा डाला। 6 इन्होंने गांव पर अधिकार कर लिया। 7 तब चहुआन बलूको वेघमका पट्टा कर देनेकी स्वीकृतिके उपलक्षमें मुजरा करवाया। 8 मुझको। 9 जीतमें प्राप्त की हुई जागीरी। 10/11 वेघम या तो चूंडाके वंशजोंकी अथवा सकताके वंशजोंकी 12 सीधा। 13 से 14 जागीरीका अधिकार छोड़ दिया। 15 तब कुमार करनने ताना मारा। 16 जिसके बाद। 17 बादशाहकी ओर भेजा। 18 अमर (सिंह) ने। 19 जैसे हो वैसे। 20 तब मेघ स्वागत करनेको सामने आया। 21 भोजन करनेके लिये एक पंक्तिमें बैठे। 22 थालीमें भोज्य-पदार्थ परोसे गये। 23 तुम आओ (मेरे साथ चलो) तो मैं भोजन करूं।

विसेरिया-चाकर छां[1] । ज्यूं थे कहस्यो त्यूं करस्यां[2] । पिण हूं पातसाहजीसूं सीख कर आवस्यां[3] ।" पछै मेघ जाय पातसाहजीसूं सीख करी । पछै रांणा अमरसिंघ कनै आयो । पछै रांणै घणी मया करी[4] । रावत मेघ मांगियो सु पटो दीयो । तिकां[5] गांवांरी विगत–

वेघम ६४ ।

८४ रतनपुररी चोरासी ४२ गोठोळाव ।

१२ वीनोतो १२ वांसियो-पोपळियो ।

३ गांव, उदैपुर निजीक[6] खड़-ईंधणनूं[7] ।

इसड़ो[8] पटो मेवाड़में किणहीनूं[9] हुवो नहीं । टका लाख २५००००री रेख सुणीजै छै ।

तठा पछै मांमलो १ सकतावत नै रावत मेघरै हुवो, तिणरी वात–

रावत मेघनूं वेघम पटै छै । सु वेघमरा एक गांव मांहे सीसोदियो पीथो वाघरो[10], सकतावत रहै छै । तिणरै नै रावत मेघरै क्यूंहीक अणवणत हुई[11], तरै उणनूं मेघ कहाड़ियो । तूं म्हारो गांव छाड़ दे । तरै ओ गांव छाडै नहीं । तरै मेघ पीथा वाळो वाळियो[12] । तद रावत नाराणदास अचलावतनूं पातसाहीरी दीधी भणाय पटै[13] । तरै पीथो आय रावत नाराणदास कनै पुकारियो । मांहरै[14] तूं वडैरो रावत, नै म्हां मांरे[15] मेघ अतरा[16] हवाल[17] किया । तरै नाराणदास खेड़[18] करी । राठोड़ जगमालोत, रतनसीयोत, चांदावत सीसोदियो, आपरा भाई-वंध असवार १२०० करी वेघम ऊपर चलाया । सु मेघ तो तठा पेहली दिन १ तथा २ परणीजण गयो थो । गांव वेघमथी कोस १५

1 हम आपके विसोरिया सेवक हैं । (विसेरिया चाकर-वशीवानोंका एक भेद है, जो वशीवानोंसे भी विशेपता रखता है – ये सब प्रकारके लाग और कर आदिसे मुक्त होते हैं)। 2 ज्यों आप कहेंगे त्यों ही करेंगे । 3 आज्ञा लेकर आऊंगा । 4 कृपा की । 5 उन । 6/7 उदयपुरके समीप तीन गांव घास और ईंधनके लिये । 8 ऐसा । 9 किसीको भी । 10 पीथा वाघाका पुत्र । 11 उसके और रावत मेघके कुछ अनबन हो गई । 12 राव मेघने पीथावाला गांव जला दिया । 13 उन दिनों रावत नारायणदासको वादशाहकी ओरसे दिया हुआ 'भिणाय' गांव पट्टे में । 14 मेरे । 15 मेरेमें । 16 इतने । 17 दुर्दशा । 18 अपने वीरोंको बुलाया ।

छै। तठै पिण थोड़ी बोहत जांण[1] मेघनूं हुई। वांसै[2] मेघरो बेटो नरसिंघदास घरे थो। रावत नाराणदास तो जांणै मेघो घरे छै। आदमी २ नाराणदास आगै वेघम मेलिया। कह्यो–"जाय रावत मेघनूं कहो, बारै आव।" नाराणदास आयो। सु आदमी आय देखै तो रावत परणीजण गयो छै नै नरसिंघदास थो तिणनूं जाय रावत नाराणदासरै आदमीए[3] कह्यो। तरै नरसिंघ तो बुरो हुवो[4]। कोट जड़ बैस रह्यो[5]। पछै सकतावते वेघम दोळो घोड़ो फेरियो। हाथी १ मेघरो सींव मांहे सैल गयो थो[6], सु उरो लीयो। हाथी १ ले भणाय आया। बीजो विगाड़ क्यूं ही न कियो। वडो बोल खाटियो[7]। तठा पछै रावत मेघ परणीजण गयो थो सु आयो। वात सुणी। गाहो लाजियो[8]। बेटा नरसिंघदासथी घणो बुरो मांनीयो[9]। काढ दियो[10]। कह्यो–"म्हांनूं मुंहडो मत दिखाव[11]" तिण ऊपर चूंडावतांरा साथनूं मेघ तेड़ा मेलिया[12]। वडी खेड़ करी। वड-वडा रजपूत सको ठाकुर चूंडावत आय भेळा हुवा। असवार ५००० हजार ऊपर भेळा हुवा। रावत मेघ वेघमथी चढियो। मजल एक आयो। सकतावत पिण असवार मरणीक[13] भेळा हुवा। पछै रावत मेघ हीज विचार कर दीठो। घर १ छै। गोत कदम हुसी[14]। तरै आपसूं हीज पाछो वळियो[15]। भाईबंध सिगळा[16] मानसिंघ करणोत बीजे[17] घणो ही कह्यो। सकतावत प्रवाड़ा वदसी[18]। इण आगै कठै ही फिर संका नहीं। पिण मेघ कह्यो–"जांणो सु दुनी कहो[19]। मोसूं[20] तो गोत-हत्या नहीं हुवै।" उठाथी मेघ फिर आयो। पछै पँवार केसोदाससूं क्यूं बोलाचाली हुई। तरै मेघो केसोदास ऊपर आयो। भैंसरोड़ पटै थित छै। केसोदास बेटां २ सूं सांमो आयो। बाज मूवो[21]। पछै राणै रीस कर मेघ रावतनूं छुड़ायो।

---

1 जानकारी। 2 पीछे। 3 आदमियोंने। 4 नाराज होगया। 5 कोटके किमाड़ोंको बन्द कर अन्दर बैठ गया। 6 मेघका एक हाथी यों ही फिरने चरनेके लिये जंगलमें गया हुआ था। 7 मेघके घर पर नहीं होनेसे उसने अपने वचनका पालन किया। 8 खूब लज्जित हुआ। 9 नाराज हुआ। 10 निकाल दिया। 11 मुझको मुंह मत दिखाओ। 12 बुलाया। 13 मौतसे नहीं डरने वाले। 14 गोत्र हत्या होगी। 15 पीछा लौट गया। 16 समस्त। 17 इत्यादिने। 18 सकतावत विजय कर जायंगे। 19 दुनिया चाहे सो कहो। 20 मुझसे। 21 लड़कर मर गया।

सीसोदिया चूंडावतांरी साख। संमत १७२२ पोह वदी ५ खिड़ियै खींवराज लिखाई–

१ सीसोदियो चूंडो लाखावत, २ रावत कांधळ।

२ कूंतल २ मांजो।

२ तेजसी २ रावत कांधळ चूंडावत।

३ रावत रतनसी कांधळोत।

४ रावत दूदो। हाडी करमेतीरै मांमले चीतोड़ काम आयो।

४ सतो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरै मांमले।

४ करमो। चीतोड़ काम आयो। करमेतीरै मांमले।

४ रावत सांईदासरै नुं खोळै[1] लियो।

४ रावत खंगार रतनसीरो।

५ रावत प्रतापसिंघ। वांस वाहळै काम आयो।

६ सालवाहण।

५ रावत किसनो खंगाररो।

६ रावत तेजो। ऊँटाळी कांम आयो।

७ रावत मानसिंघ।

८ रावत प्रथीराज।

८ रावत रूघनाथ। सलूंबर पटै।

९ रतनसी।

६ लाडखांन किसनावत।

७ जसू।

८ फरसराम।

५ रावत गोयंद खंगाररो। वेघम पटै। नाउवे-वाघरेड़ै कांम आयो।

६ रावत मेघ।

७ रावत नरसिंघदास।

८ रावत जैतसी। गांव २४, आठांणो पटै।

७ रावत राजसिंघ। वेघम पटै।

८ महासिंघ।

1 गोद।

६ जोध गोयंदोत ।
६ केवळदास गोयंदोत ।
६ अचळदास गोयंदोत ।
४ खेतसी रतनसीरो । जिण सगरो बालीसो मारियो ।
५ नाथू (रतनसीरो)।
६ सहंसमल ।
७ वेणीदास ।
३ सिंघ कांधळोत ।
४ नगो । करमेतीरै मांमले चीतोड़ खांडैरै[1] मूंडै कांम[2] आयो ।
५ बेटो थो सु चीतोड़ जूहरमें बळियो ।
४ जगो । मही नदी ऊपर चहुवांण करमसी सांवळदास मारियो, तठै कांम आयो ।
५ पतो जगावत । संमत १६२४ चीतोड़ कांम आयो ।
६ कलो ।
७ नराइणदास । रांणपुर कांम आयो ।
८ वाघ । नांन्हो थको मूओ ।
६ सेखो ।
७ दलपति ।
८ मोहणसिंघ ।
७ रूपसी ।
८ पंचाइण । रूपसीरो ।
८ बालो ।
६ करन पतावत ।
७ नरहरदास ।
८ जगनाथ । मानसिंघरै खोळै ।
८ जसवंत ।
८ सुजांणसिंघ ।
७ मानसिंघ ।

1/2 खड़गसे मारा गया ।

८ केसोदास
८ सूरजमल ।
८ कचरो ।
८ जगतसिंघ ।
७ माधोसिंघ ।
८ गोवरधन ।
८ डूंगरसी ।
८ जगरूप ।
८ रामसिंघ मानसिंहरो ।
८ प्रतापसिंघ ।
७ राजसिंघ करनोत ।
८ गजसिंघ ।
८ सवळसिंघ ।
४ सांगो सिंघोत ।
५ गोपाळदास । वाकारोळीरी वेढ कांम आयो ।
६ वलू । त्रिखामें मीच[1] मूवो ।
६ कचरो ।
७ इंद्रभांण ।
७ परसरांम ।
६ जीवो ।
७ अमरो ।
७ भोपाळ ।
७ कमो ।
५ दूदो साँगावत । रांणपुररी वेढ कांम आयो ।
६ अचळो । मांडळ कांम आयो ।
७ जैत ।
८ कांन ।
७ ऊदो ।

---

1 मृत्युसे मरा (युद्धमें नहीं) ।

६ ईसरदास ।
७ हमीर ।
७ गोकळदास । कैलवो पटै । टका लाख ४०००००) री रेख ।
७ प्रथीराज ।
५ जैमल सांगावत । वसीरा मगरां[1] कांम आयो । विखेमें ।
६ नराइणदास ।
७ गोइंददास ।
७ गोकळदास । वसीरो परगनो पटै । टकां लाख ३०००००) री रेख ।
६ पूरो जैमळोत ।
६ मानसिंघ जैमलोत ।
४ सूरजमल । रांणपुररी वेढ कांम आयो ।
६ मोहणदास ।
७ किसन । साहड़ां पटै । टकां २००००) री रेख ।
७ अजबसिंघ ।
६ जगनाथ ।
६ सहसमल ।
७ करन
७ भोपत
७ सुंदरदास ।
८ चत्रभुज ।
२ कूंतळ चूंडावत ।
३ नाराणदास ।
४ कमो ।
५ मांडो ।
६ जसो ।
६ लूणो ।
७ सबळसिंघ ।
७ रामसिंघ ।

1 वसीके पहाड़ोंमें ।

७ डूंगरसी ।

२ मांजो चूंडावत ।

३ नीबो ।

४ सुरतांण ।

४ सूरो ।

५ सांवळदास ।

६ करमसी ।

६ करन ।

७ राजसिंघ ।

७ सबळसिंघ ।

२ तेजसी चूंडावत ।

३ रावळ सांवळदास ।

वात सीसोदिया डूंगरपुर वांसवाहळांरा धणियांरी

अै[1] रावळ करनरै वेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहे राहप रांणारा[2] चीतोड़ धणी । रावळ माहपरा[3] वागड़ धणी । अै सदा चीतोड़रा रांणारी चाकरी करता । पछै सै दिल्लीरा पातसाहांसूं पिण रजूआत[4] राखै छै । वागड़नूं गांव ३५०० सै लागै । आधा डूंगरपुर वांसै आधा वांसवाहळा वांसै हुवा । पेहली तों ठकुराई डूंगरपुर मुदै[6] हुती । पछैसूं रावळ उदैसिंघ गांगैरै सूधी तो वागड़ एक छत्र भोगवी । नै रावळ उदैसिंघरै वेटा २ हुवा–रावळ प्रथीराज नै जगमाल हुवा । सु रावळ प्रथीराज, उदैसिंघ मूवां टीकै बैठो । जगमाल धरती वारै नीसरियो[7]। तिण ऊपर रावळ प्रथीराज काढणनूं फोज विदा कीवी । तिण माँहे सिरदार चो० मेरो वागड़ियो, राव परवत लोलाड़ियो छै । सु अै जगमाल ऊपर गया । आ धरती मांहेता[8] जगमालनूं घेंच काढियो[9]। जगमालरा गाडा लूटिया । कई रजपूत मारिया । जगमाल हाथां-पड़तां[10] नास गयो । भाखरे पैठो[11]। धरती वस करनै

1 ये । 2 राहप राणाके वंशज चित्तोड़के धणी । 3 और माहपके वंशज वागड़के धणी । ४ समस्त । 5 आनेजाने और हाजिरीका संबंध । 6 मुख्य । 7 जगमाल अपने देशसे बाहिर निकल गया । 8 में से । 9 खदेड़ दिया । 10/11 जगमाल पकड़े जानेकी स्थितिमें होते हुए भी अति त्वरासे भाग गया और पहाड़ोंमें घुस गया ।

अै पाछा डूंगरपुर आया। अै जांणै छै मन मांहे म्हे वडो कांम कर आया छां। सु म्हे क्यूंई वधारो पावस्यां[1]। मांहरो घणो मुजरो हुसी[2]। सु रावळरै कोई खवासण-धाइभाई हुतो साथे[3]। सु फोज मांहीथी[4] आगै वध नै घरै आयो थो। तिको पछै रावळ प्रथीराजरै मुजरै आयो[5]। तरै उणनुं जगमाल ऊपर फोज गई ती तिणरी हकीकत एकंत तेड़ पूछी[6]। तरै अै लोक क्यूंही मरण-मारणरी वात समझै नहीं। तद रावळ आगै कह्यो–"जगमाल मारणरी घात मांहे आयो हुतो, पिण चहुआंण मेरे, रावत परबत टाळो कीयो[7]।" इण पांणीरा पोटला सोह साचा कर बांध्या[8]। वे ठाकुर फोज ले डूंगरपुर आया। तरै रावळ प्रथीराज मांहे वैस रह्यो। इणांरो मुजरो ही लियो नहीं। अै दिलगीर हुय डेरै गया। पछै आपरा इतबारी चाकर खवास पासवांनां साथै इणांनूं घणा ओळंभा कहाड़ीया। "थे लूणहरांमी हुवा। जगमालनूं जाण दीयो। बोहत बुरी की। म्हे थांनू दोनूं वास राखां नहीं[9]।" इणे कह्यो–"म्हे तो भली चाकरी करी छै। रावळजी न जांणियो तो भली हुई।" तरै उण साथै इणांनूं तीन पांनारा बीड़ा मेलिया हुता सु दीया। तद अै रीसायनैं चढिया। सु घरै गया नहीं। जठै[10] जगमाल भाखरे थो, तठै[11] अै दोनूं कोस एक ऊपर आय उतरिया। आपरै घरमांहे वडा आदमी परधांन था, सु जगमाल कनै मेलिया। कहाड़ियो–"थांरो दिन वळियो[12]। थांरै धरतीरी चाह छै तो वेगा आय म्हांसूं मिलो" इणांरा परधांन जगमाल कनै गया। सारी वात समझाई, कही। तरै जगमाल कहण लागो। मोनूं इणां ठाकुरांरो वेसास[13] आवै नहीं। तद परधांनांसूं सपत कर[14] जगमालरी हद-भांत[15] खातर करी[16]। पछै जगमाल परधांनांनूं साथे कर चहुवांण मेरो परबत कनै वे पाधरा आया। सीलकोल[17] करड़ा हुवै छै[18]। तिसड़ा[19] करनै इणां ठाकुरांनै जगमाल

1 सो हम कुछ (पृथ्वीके रूपमें) और इनाम पायेंगे। 2 सत्कार। 3 रावलके साथमें कोई खवास-धाभाई साथमें था। 4 में से। 5 सेवामें आया। 6 एकान्तमें बुलाकर पूछा। 7 परन्तु चौहानों, मेरों और रावतने पहाड़का आश्रय लिया। 8 इसने सभी झूठी वातोंको सच्ची करके दिखादी। 10 जहाँ। 11 तहां। 12 तुम्हारे दिन फिर गये अर्थात् अच्छे दिन आगये। 13 विश्वास। 14 शपथ। 15 अत्यधिक। 16 आश्वासन दिया। 17, 18, 19 जितनी भी कड़ी प्रतिज्ञा होती है वैसी करके इन ठाकुरोंको जगमालके पास ले गये।

कनै ले गया । इण आपरा आंण जगमालरा गाडां भेळा किया[1] । भेळा हुय सारा धरती विगाड़तां हुवां थांणा ठोड़-ठोड़ मारिया । मास ४ तथा ५ मांहे धरती घणकरी[2] सारी सूनी कीवी । तरै प्रथीराज आपरा परधांन हुता[3], तिणनूं तेड़ पूछियो[4]– कासूं कियो चाहीजै ?[5] तरै उणे कह्यो—"म्हे तो क्यूं समझां नहीं[6] । जिण राजसूं आ वात वीणती करनै कढायो छै, उणरा समझणरी छै ।"[7] तरै प्रथीराज परधानांनूं कयो[8]–"हुई सु नीवड़ी[9] । म्हे थांनूं[10] विगर पूछियां विचार कियो, तिणरा फळ म्हे रूड़ा भोगवां छां ?[11] । हमै थे भलो जांणो ज्यूं करो[12] । मोसूं धरती रखै रहे नहीं[13] । तरै प्रथीराजरा परधांन रावळरै कहै वात कराय, बोलबंध ले[14], जगमाल, मेरा, परवत कनै गया । वात सारी मेरा परबतसूं कीवी । कह्यो–हमैं एक हुवो[15] । कहो त्यूं करां । कहो सु जगमालनूं दां । कहो सु थांनूं वधारो दिरावां ।"[16] तरै राठोड़ै चहुवांणै कही–वा वात व्हें गई[17] । हमैं वात बीजी[18] हुई । थांहरै वात की चाहीजै तो वागड़रा हैंसा दोय हुसी[19] । दोय रावळ हुसी । आधो-आध धरती बंटसी[20] । दूजी वात वणणरी न छै ।"[21] तरै परधांन पाछा प्रथीराज कनै गया । वात सारी मांड कही ।[22] तरै रावळ कयो–"कासूं कियो चाहीजै ?" तरै परधांन कह्यो–"माठी वात छै[23] । आज पेहली न हुई सु हुवै छै । आ वात मांहरा समझण जोग नहीं । रावळा उमरावांनूं वळे[24] इतवारी[25] चाकरांनूं बोलावो, त्यां जोगी वात छै । राज[26] पिण[27] दिन पांच–दस विचार देखो । पछै किणहीनूं ओलभो देण पावो नहीं ।" पछै रावळ प्रथीराज आपरा चाकर छा[28], तिणां सारांनूं पूछ दीठो । सको[29] कहण लागा–"धरती वसणरी नहीं ।

---

1 इन्होंने अपने गाड़ोंको लाकर जगमालके गाड़ोंके साथ कर दिया । 2 अधिकतर । 3 थे । 4 उनको बुलाकर पूछा । 5 क्या करना चाहिये ? 6 तब उन्होंने कहा–"हम तो कुछ समझते नहीं । 7 जिसने आपको इस बातकी प्रार्थना कर निकलवाया है उसके समझनेकी है । 8 कहा । 9 होनी सो हो गई । 10 तुमको । 11 जिसका फल हम अच्छा भुगत रहे हैं । 12 अब तुम अच्छा समझो वैसा करो । 13 मुझसे किसी भी प्रकार धरती रह नहीं सकती । 14 वचन लेकर । 15 अब एक हो जावें । 16 कहो जितना वधारा (और अधिक प्रदेश) दिला दें । 17 वह वात तो समाप्त हुई । 18 अब बात दूसरी होगी । 19 तुमको वात करनी ही आवश्यक है तो वागड़ के दो भाग होंगे। 20 बंटेगी। 21 दूसरी बात बननेकी नहीं । 22 सब वात अथसे इति तक कही 23 बुरी बात है 24 और पुनः 25 विश्वासपात्र 26 आप 27 भी 28 थे 29 सभी ।

जांणो त्यूंकर मेळ करो।" तरै परधांनांनूं रावळ प्रथीराज सूधो कह्यो–"जांणो सु जगमालनूं दे मेळ कर आवो।" तरै परधांन जगमाल मेरा कनै आया नै वात करी। गांव ३५०० सैरो आध जगमालनूं दियो। वांसवाहळो पग-ठोड़[1] थापी। दोय रावळ हुवा। दोयां सारीखी[2] राजधानी हुई। तरवार सांमां वासवाहळांरा धणियांरी विसेख हुई।[3]

वात वांसवाहळारा मानसिंघरी–

रावळ मांनसिंघ, रावळ परतापरै खवास पदमां विणियांणीरै पेटरो[4]। रावळ प्रतापरै और बेटो को न थो, नै मानसिंघ निपट सुलखणो[5] हुतो। पांच रजपूत देसरै मिळ मांनसिंहनूँ टीको दियो। राज करै छै। पछै चहुवांणांरो नारेळ आयो[6]। आप परणीजण उठै गयो। वांसै[7] वांसवाहळै आपरा परधान राख गयो हुतो। वांसै खुंधुरै भीले क्यूं विगाड़ कियो। तरै परधांन थोड़ा हीज साथसूं खुंधु ऊपर गया। तठै वेढ हुई। रावळ मानसिंघरै साथ नै भीलांरै। वा वेढ भीलां जीती[8]। रावळरो परधांन हारियो। उणै[9] वेइजत[10] कर घोड़ा लेनै छोड़िया। पछै रावळ परणीजनै आयो नै आ वात सुणी। सु कांकण–डोरड़ा[11] खुल्या नहीं छै। रावळ मानसिंघरै डील आग लागी[12]। खुंधु ऊपर चढ दोड़ियो। जायनै खुंधु मारी[13]। गांव चोगिरद घेर नै खुंधुरो धणी भील झालियो[14]। नै उणनूं[15] पकड़नै लेनै आयो। कोस १० आंण डेरो कियो छै। उण भीलरै पगे बेड़ी छै। हाथ छूटा छै। उणसूं आप डाकर[16] करै छै। डेरे कूचरी तयारी करै छै। चो० मांन सांवळ-दासोत, रा० सूरजमल जैतमालोत पिण निजीक छै। ओ खुंधुरो धणो भील लाजरो[17] आदमी हुतो। तिण जांणियो मोनूं रावळ वेइजत

1 रहनेका स्थान, राजधानी। 2 दोनोंके लिये एक सरीखी। 3 तलवारके सम्मुख वांसवाड़ाके स्वामियोंकी विशेषता रही। 4 प्रतापकी घरमें रक्खी हुई बनियेके स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न रावल मानसिंह। 5 मानसिंह अत्यन्त सुलक्षणों वाला था। 6 फिर चौहानोंकी ओरसे विवाह संबन्धके लिये नारियल आया। 7 पीछे। 8 उस युद्धको भीलोंने जीता। 9 उसने। 10 वेइज्जत। 11 विवाह कंकण। 12 रावल मानसिंह अत्यन्त कुपित हुआ। 13 जा करके खुंधु गांवको लूट लिया। 14 पकड़ लिया। 15 उसको। 16 डांटते हैं। 17 लज्जा (प्रतिष्ठा) वाला आदमी था।

करसी । नै कोट गयो तरै मोनूं मारसी[1] । तरै भील किणहीकरी तरवार रावळा[2] खोळा मांहे छांनैसे[3] लेनै, रावळरै वांसे आयनै, रावळ मांनसिंघरै झटकारी दीवी । सु झटको वहि गयो[4] । सोर हुवो । चो० मांन रा० सूरजमल आय भीलनूं ही मारियो ।

मांनसिंघरै वेटो को[5] न थो । पछै कोहेक[6] दिन मांन हीज वांसवाहळारो धणी हुय वैठो । तरै तिण दिनां डूंगरपुर रावळ सहसमल धणी छै । तिण मांनसूं कहाव कियो—"जु तूं कुण आदमी सु वांसवाहळारी धरती खाय ?[7]" सु आ वात मांनी नहीं मांन । तद मांहो-माह अदावद[8] हुई । तद रावळ सहसमल चढ़ मांन ऊपर आयो । वेढ हुई । चो० मांन सांवळदासोत वेढ जीती । रावळ सहसमल वेढ हारी । वैस रह्यो[9] । तठा पछै रांणै प्रताप उदैसिंघोत वात सुणी—इण भांत मांन मोट-मरद[10] थको वांसवाहळो खाइ छै । तरै वांसवाहळा ऊपर फोज, सीसोदियो रावत रायसिंघ खंगारोत नै सीसोदियो रतनसी कांधळोत नै असवार हजार ४००० दे विदा किया । चहुवांण मान यांरै सांमा आयो । आयनै वेढ करी । रावत रायसिंघ काम आयो । दीवांणरो साथ भागो । मांन चहुवांण वेढ जीती । रांणो ही बैस रह्यो । तठा पछै चहुवांण मांननूं सारां वागड़ियाँ-चहुवांणां मिलनै कह्यो—"तोनूं धणी फवी छै[11] । आंपे वासवाहळारा धणी कदे नहीं[12] । आंपे वांसवाहळांरा भड़-किवाड़ छां[13] । थंभ छां[14] । तूं कोहेक पाटवी जगमालरो पोतरो पाट[15] माथै थाप । तद उग्रसेन कल्याणरो मोसाळ[16] थो, तिणनूं तेड़नै रावळाईरो टीको दियो । रावळां मोहलां[17] मांहे आधा मोहल मांन लिया । आधा मोहल उग्रसेननूं दिया । रावळ कह वोलायो । आधो हासल[18] रावळनूं आधो हासल

1 और अपने कोट (स्थान) जाने पर मुझको मारेगा । 2 अपने । 3 गुप्त रीतिसे । 4 तलवारके झटके अपना काम किया । 5 कोई नहीं था । 6 कई । 7 तू कौन होता है जो बासवाड़ाकी धरतीका उपभोग कर रहा है । 8 परस्पर । 9 शत्रुता । 10 शान्ति करके बैठ गया । 11 बलपूर्वक । 12 तेरी बहुत फब गई (अनुकूलता मिलती रही) । 13 हम बांसवाड़ेके स्वामी कभी नहीं । 14 हम बांसवाड़ेकी रक्षा करने वाले शूरवीर हैं । 15 स्तम्भ हैं । गद्दी पर स्थापन कर । 16 ननिहाल । 17 महल । 18 राज-करा ।

माँन लियो वाँसवाहळारो । रावळरो हलण-चलण[1] वासवाहळामें नहीं। माँन निपट आगतो[2] चालै। इणरै कीयाँ ही सारै नहीं[3]। रावळरै राजलोक[4] माँहे बेअदबी माँन घणी करै। रावळ घणो ही बळै[5], पिण जोर को चालै नहीं। तिकाँ दिनाँ राव आसकरन चंद्रसेनोत इणरै परणीयो हुतो। सु आसकरन माराँणो, सु आसकरनरी ठाकुराँणी हाडी राँड थकी[6] उग्रसेनरै राजलोक भेळी छै। बाळक छै, सु वड़ी रूपवंत छै। सु माँन इणसूं बुरी निजर राखै छै। आ बडै घररी वहु ह्वै तिसड़ी[7] सीलवंत छै। सु माँननूं इण आपरी धाय मेल कहाड़ियो[8]—"तूं रावळरो घर घणो ही विगोवै[9] छै, नै तूं माँणस[10] छै तो म्हारो नाँम मत लेइ।" आ चकित थकी रहै छै[11]। माँन आँधो हुवो वहै छै[12]। सु एक दिन उरड़नै[13] इणरै घर माँहे आयो। इण दीठो[14], म्हारो धरम[15] न रहै, तद आ हाडी पेट मार मूई[16]। तिण समै रावत सूरजमल जैतमालोत रावळ उग्रसेनरै वास[17] छै। रुपिया हजार ६००० रो पटो पावै छै। सु आ वात हाड़ी इण कारण मूंई सुणी। इसी कही तद सूरजमलनूं घणी खारी लागी[18]। नै सूरजमल रावळनूं कह्यो—"माथै सूत बाँधो छो[19]। हाथे हथियार झालो छो[20]। रजपूतरो खोळियो धारियो छै[21]। मरणो एकरसूं छै[22]। ओ थाँरै घरमें किसो धूंकळ?"[23] तरै रावळ कह्यो—"सोह बात देखाँ छाँ[24]। जाँणाँ छाँ, पिण जोर कोई चालै नहीं। दाव[25] को लागै नहीं।" तरै सूरजमळ रावळनूं कह्यो—"बळ बाँध, हीमत पकड़, इणनूं दाव-घाव कर परो काढस्यां।[26]" रावळसूं बोल-कोल किया। पछै सूरजमल माँननूं कवाड़ियो[27]—रावळरै घर विगोयै न सारियो[28]। राठोड़ाँ ताँई पोहतो

1 अधिकार। 2 मर्यादारहित। 3 इसकेकुछ भी अधिकारमें नहीं। 4 अन्तःपुर। 5 क्रोध करता है। जलता है। 6 वैधव्य पालन करती हुई। 7 वैसी। 8 कहलाया। 9 कलंकित करता है। 10 मनुष्य। 11 यह सावधान रहती है। 12 मानसिंह मदान्धकी भांति चलता है। 13 बलात् साहस करके। 14 देखा। 15 पतिव्रत धर्म। 16 पेट में कटारी मार कर मर गई। 17 उन दिनों रावत सूरजमल जैतमालोत रावल उग्रसेनकी सेवामें रहता है। 18 बुरी लगी। 19 सिर पर पगड़ी बांधते हो। 20 हाथमें शस्त्र धारण करते हो। 21 क्षत्रीका शरीर धारण किया है। 22 मरना एक बार है। 23 तुम्हारे घरमें यह कैसा उत्पात। 24 सब बात देखता हूं। 25 कोई उपाय नहीं लगता। 26 छल कपट कर किसी भी प्रकार इसे निकाल देंगे। 27 कहलाया। 28 रावलका घर विगाड़नेसे काम नहीं वना।

छै[1] । भली न की छै ।" सु माँन तो गिनारै ही नहीं[2] । तद राव केसोदास भींवोत चोळी-महेसर[3] छै । वडी ठाकुराई छै । राव सूरजमल केसोदास वीच आदमी फेर वात करी[4] । कह्यो—"रावळ उग्रसेनरो ऊपर करो । रावळरी थाँनूं बैहन परणावस्याँ । इतरो दायजो देसाँ । फलाँणै दिन अजाँणजकरा[5] आवजो ।" ऊठै माँन चहुआँणनूं तो खवर ही नहीं । अदावत माथै रावळ उग्रसेन, सूरजमल नै आपरा आदमियाँनै साथ सारा हीनूं सिलै[6] कर बैठा छै । राव केसवदास आदमी १५०० सूं आँण फळसै नगारो दियो[7] । तद माँन रावळ कनै खवर करणनै आदमी मेलिया था । आगै माँनरो आदमी देखै तो रावळरो साथ सिलै कर बैठो छै । उण जाय कह्यो—"रावळरै भेदू[8] कोई आवै छै । थाँसूं चूक[9] छै । तद माँन गढरी बारी कूद नाठो[10] । चाउड़ो भोजो सायरोत और ही साथ काँम आयो । माँनरो घर भार-भरत[11] रावळरै हाथ आयो । माँन नास गयो[12] । ठाकुराई रावळरै हाथ आई । पछै सूरजमलनूं रुपिया हजार २५००० पटो दियो । माँन दरगाह[13] गयो । उठै घणा पईसा खरचनै वाँसवाहळो पटै करायो । फोज मदत ले आयो । तरै रावळ सूरजमल नीसर भाखरे पैठो[14] । सूरजमल साथ लेनै वसी माँही रह्यो । रावळनूं सासरै मेळ दीनो[15] । अै भाखर छै[16] । माँनरो थांणो भाईबंध काळजो[17] वडा २ डीळ[18] छै । सु भीलवण आठा राखिया छै । पछै भीलवणरा थाणा ऊपर एक दिन अजांणजकरा सूरजमल नै रावळरो साथ आय दोपहररा पड़िया । कोई दइवरो फेर दियो[19] । रावळरो साथ काँम नायो[20] । नै चहुवाँण मानरा भाईबंध असी आदमी वडा-वडा सोह[21] काम आया । मांनरै पातसाही फोजरो सिरदार वांसवाहळै थो, तठै

---

1 अब राठोड़ों तक पहुंचा है । 2 परवाह ही नहीं करता । 3 गांवका नाम । 4 आदमी भेजकर वातचीत की । 5 अचानक । 6 कवच धारण कर । 7 गांवके द्वार पर आकर नगाड़ा बजवाया । 8 गुप्त सहायक । 9 तुम्हारे दगा है । 10 भाग गया । 11 घर गृहस्थीका सामान । 12 भाग गया । 13 बादशाहके दरबारमें । 14 तव रावल सूरजमल निकल कर पहाड़ोंमें घुस गया । 15 रावलको ससुराल भेज दिया । 16 ये पहाड़में रहते है । 17 अपने कलेजेके अर्थात् रक्त संबन्ध वाले । 18 कुटुम्बके बड़े बड़े शूर वीर हैं । 19 भाग्यने पलटा खाया । 20 रावलके मनुष्य युद्धमें काम नहीं आये । 21 समस्त ।

खबर आई। वे चढनै भीलवण गया। खेत[1] संभाळियो। तरै सिरदार-मुगल माननं पूछियो—"तीन सै च्यार सै आदमी काम आया छै, इण मांहे थांहरा कितरा नै रावळरा कितरा[2]?" तरैमांन कह्यो—"अै तो सोह म्हांरा कांम आया[3]।" तरै तुरकां कह्यो—"थे लूण-हरामी कीवी, तिसी सभ्भा पाई।[4]" तरै तुरक ऊठ परो गयो। मांनरो बळ छूटो[5]। तरै मांन वांसवाहळो ऊभो मेळनै दरगाह गयो[6]। तद सूरजमल रावळनं खबर मेली। तद रावळ आय वांसवाहळै बैठो। धरती हाथ आई। मांन दरगाह गयो, तठा पछै कितरेक दिने रावळ उग्रसेन नै सूरजमल ही दरगाह आया। मांन पईसांरै पांण पातसाही सारी हाथ की छै। इणानूं पाखती[7] कोई बैसण न दे। मांननूं वांसवाहळो दीजै छै। तरै सूरजमल रावळनूं कह्यो—"बांमणांनूं वांसवाहळै कर लागै छै[8]। सु थे छोड़ो। म्हे अठै रहां छां[9]। सु मांन मारणी आसी तो मारस्यां[10] पछै धरती मांहे कर छोड़ाई[11]। पछै रावळ हालियो। सूरजमल वांसै रह्यो। पछै चहुवांण मांन वोच आपरो रजपूत गांगो गोड़ फिरै। पछै घात[12] देख मांनरा डेरा ऊपर आयो। ब्राहनपुर चहुवांण मांननूं मार कुसळै सूरजमल कनै गयो।

वात सीसोदिया डूंगरपुर वांसवाहळारा धणियांरी—

संमत १७०७ रै वरस मुहतो नरसिंघदास जैमलोत डूंगरपुर गयो थो। तरै रावळ पूंजारो करायोड़ो देहरो[13] छै। तिणरै थांभै[14] रावळ पूंजै आपरी पीढी[15] मंडाई छै। तठाथी लिख ल्यायो[16]। पीढियांरी विगत—

१ आदि श्रीनारायण। २ कमल। ३ ब्रह्मा। ४ मरीच।

---

1 युद्धक्षेत्रको सम्हाला। 2 कितने। 3 ये तो समस्त मेरे ही काम आ गये (मर गये)। 4 वैसी सजा पाई। 5 मानकी शक्ति टूट गई। 6 तब मान बांसवाड़के ऊपर अधिकार जमानेकी वात छोड़ कर बादशाहके दरबारमें गया। 7 इनको पासमें कोई बैठने न दे। 8 ब्रह्मणोंको बांसवाड़ेमें कर लगता है। 9 हम यहीं रहते हैं। 10 मानको मारनेका अवसर आयगा तो मार देंगे। 11 पीछे देशको करसे मुक्त किया। 12 मारनेका अवसर। 13 मंदिर। 14 स्तम्भ पर। 15 वंशावली। 16 उस स्थानसे लेखकी प्रतिलिपि करके लाया।

५ कस्यप । ६ सूरज । ७ वैवस्वतमनु । ८ (इक्ष्वाकु) इखुक । ९ (विकुक्षि) विकुथ । १० जन्हु। ११ पवन्य। १२ अनेरण(अनरण्य) १३ काकस्त (ककुत्स्थ)। १४ विश्वावसु । १५ महामति । १६ च्यवन । १७ प्रदुमन । १८ धनुर्द्धर । १९ महीदास । २० जोवनाव(युवनाश्व)। २१ सुमेधा । २२ मांनधाता । २३ कुरथ सुरथ। २४ वेन । २५ प्रिथु। २६ हरिहर । २७ त्रिसंकु । २८ रोहितास । २९ अम्बरीष । ३० ताड़जंघ । ३१ नाड़ीजंघ । ३२ धुंधमार । ३३ सगर । ३४ असमंज ३५ अंसुमान । ३६ भागीरथ । ३७ अरिमरदन । ३८ खीरथुर । ३९ खीरुज । ४० दिलीप । ४१ रघु । ४२ अज । ४३ दसरथ । ४४ रामचन्द्र । ४५ कुस । ४६ अतिथ । ४७ निखध । ४८ नील । ४९ नाभ । ५० पुडरीक । ५१ खेमधन । ५२ देवाणिक । ५३ अहिनधु । ५४ जितमंत्र । ५५ पारजात । ५६ सील । ५७ अनाभि । ५८ विजै । ५९ वज्रनाभ। ६० वज्रधर । ६१ नाभ । ६२ विनिजैधि । ६३ धिखनाश्व (धिषताश्व)। ६४ विश्वनि (विश्वाजित्)। ६५ हनु । ६६ नाभसुख (नाभमुख)। ६७ हिरन । ६८ कौसल्य (लौसल्य)। ६९ व्रहान्य (व्रह्मान्य)। ७० उदैकर पत्रनेत्र । ७१ हदनेत्र। ७२ पुधन्वा (सुधन्वा) । ७३ हावसिद्ध । ७४ सुदर्सण । ७५ सहवण (सहवर्ण)। ७६ अगिनीवरण (अग्निवर्ण)। ७७ विजैरथ । ७८ महारथ । ७९ हईहय (हैहय)। ८० महानंद । ८१ अनंदराज । ८२ अचल । ८३ अभंगमसेन (अभंगसेन)। ८४ प्रजापाल (जापाल) ८५ कंसेन (कनकसेन) ८६ जितसत्र (जितशत्रु)। ८७ सुजत । ८८ सलाजीत (सत्राजित = शत्रुजित)। ८९ सवीर। ९० सकत (सुकव = सुकृत)। ९१ संमत (सुमत) ९२ चांदसेह (चंद्रसेन)। ९३ वीरसेह (वीरसेन)। ९४ सुजय । ९५ सुजित। ९६ विलापानस । ९७ हंसनवसू । ९८ विजैनित्य । ९९ भासादित । १०० भोगादित । १०१ जोगादित । १०२ केसवादित । १०३ ग्रहादित । १०४ भोजादित । १०५ वापोरावळ । १०६ खूंमांण रावळ । १०७ गोयंदरावळ। १०८ मोहित रावळ । १०९ अजुरावळ ११० भादो रावळ । १११ सीहो रावळ ११२ सक्तिकुमार रावळ । ११३ सालवाहण रा०

(शालिवाहन) । ११४ नरवाहण रावळ । ११५ जसोब्रह्म रावळ । ११६ नरब्रह्म रावळ । ११७ अंबोपसा रावळ (अंबापसाव रावळ) । ११८ कीरत ब्रह्म रावळ । ११९ नरवीर रावळ । १२० उतम रावळ । १२१ भालो रावळ । १२२ सुरपुंज रावळ । १२३ करन रावळ। १२४ गात्रड़ रावळ । १२५ हांस रावळ (हंस रा०) । १२६ जोगराज रावळ । १२७ वीरड़ रावळ । १२८ विरसेह (वीरसेन) रावळ । १२९ राहप रावळ । १३० देदो रावळ । १३१ नस्ता (नरू) रावळ । १३२ अरहड़ रावळ । १३३ वीरसीह रावळ। १३४ अरसी रावळ। १३५ राइसी (रासो) रावळ । १३६ सांमतसी रावळ । १३७ कुमसो (कुमरसी) रावळ । १३८ मयणसी रावळ । १३९ समरसी रावळ। १४० अमरसी रावळ । १४१ रतनसी रावळ । १४२ पूंजो रावळ । १४३ करमसी रावळ । १४४ पदमसी रावळ । १४५ जैतसी रावळ । १४६ तेतसी रावळ । १४७ समरसी रावळ $\frac{2}{139}$ । १४८ रतनसी रावळ $\frac{2}{141}$ । १४९ नरब्रम रावळ । १५० भालो रावळ $\frac{2}{121}$ । १५१ केसरीसिंह रावळ। १५२ सांमतसी रावळ $\frac{2}{136}$ । १५३ सीहड़दे रावळ । १५४ देदोरावळ $\frac{2}{130}$ । १५५ वरसिंह रावळ । १५६ भड़सूर रावळ । १५७ डूंगरसी रावळ । १५८ करम (करमसी $\frac{2}{143}$) रावळ । १५९ प्रतापी रावळ। १६० गोपो रावळ । १६१ स्यांमदास रावळ । १६२ गांगो रावळ । १६३ उदैसिंघ रावळ । १६४ प्रथीराज रावळ । १६५ आसकरण रावळ । १६६ सहसमळ रावळ। १६७ करमसीरावळ $\frac{3}{143 \cdot 158}$ । १६८ पूंजोरावळ $\frac{2}{142}$ । १६९ गिरधर रावळ । १७० जसवंत रावळ । १७१ खुमाण सिंघ रावळ $\frac{2}{106}$ । १७२ रांमसिंघ रावळ । १७३ उदैसिंघ रावळ $\frac{2}{163}$ ।

इति पीढ्यांरी विगत ॥

वात सीसोदियांरी–

रावळ समरसी चीतोड़ राज करै छै । सु किणहीक भांत लोहड़ा[1]–भाईनूं कह्यो– "म्हे तोनूं चीतोड़ दीनी ।" खुसी हुय कह्यो– लोहड़ै-भाई घणी चाकरी कर रीझाया तरै आप घणूं खुसी हुइ

1. छोटा भाई ।

कह्यो–"म्हे तोनूं चीतोड़ दीनी।" तद लोहड़ै भाई कह्यो–"मोनूं चीतोड़ कुण देसी[1] ? चीतोड़रा धणी थे छो[2] ?" तरै समरसी कह्यो–"म्हारो बोल[3] छै। चीतोड़ तोनूं दी।" तरै उण कह्यो–"चीतोड़ खरी दी तो रजपूतांरो बोल ह्वै तरै[4]।" तद आप रजपूतांनूं कह्यो–"ठाकुरां! सगळा बोल दो।" तरै रजपूतां कह्यो–"थे खरै-मन दी छै ? म्हां कना बोल समभ नै दिरावज्यो[5]।"

तरै आप कह्यो–"म्हे खरै-मन दी छै। थे निसंक बोल दो।" तरै रजपूते सगळे बोल दियो। तरै ठाकुराई[6] सोह[7] भाईनै दे नै, रांणाईरो खिताब[8] देनै, आप आय गांव आहाड़ वसियो। कितरेक दिने कितराक साथसूं कहण लागो[9]–"जु आ धरती म्हे भाईनूं दीनी। इण धरती मांहे तो मोनूं रहणो धर्म नहीं। काइक वीजी धरती खाटीजै[10]"

तरै वाटवडोद डूंगरपुर कनै छै। तठै चोरासी-मिलक[11], भोमिया आदमी ५०० रो धणी छै। तिको, एक डूंम[12] इणरै छै[13], तिणरी वैरसूं चोरासी-मिलक हालै छै[14]। जोरावर थको चौड़ै-चापटै[15]। संक किण हीरी मानै न छै। डूंम घणो ही वल-बल[16] मरै छै। उण डूंमरी वैरनूं लेनै आप माळिये[17] सूवै, तठा पछै सारी रात वळे डूंमनूं ओळगाडै[18]। किण ही दिन डूंम ओळगण नावै तो मोहकम कूटाड़ै[19]। डूंम नासण मतै छै[20]। पिण ऊपर रखवाळा आदमी रहै, तिण आगै कठी ही नास न सकै। डूंम पिण सासतो घात जोवै छै[21]।

1 मुझको चित्तोड़ कौन देगा ? 2 चित्तोड़के स्वामी आप हैं। 3 मेरा वचन है। 4 तब उसने कहा—सचमुच ही दी हुई तो तब समझी जायगी जब आपके सरदारोंका वचन भी साथमें हो जाए। 5 तब क्षत्रियोंने कहा–आपने सच्चे मनसे दी है ? हमारेसे वचन समझ करके दिलवाना। 6 राज्य-सत्ता। 7 समस्त। 8 पदवी। 9 अपने साथवालोंसे कहने लगा। 10 कोई दूसरी धरती प्राप्त करनी चाहिये। 11 चौरासीमालिक। 12 गाने-बजानेका काम करने वाली जातिका एक व्यक्ति। 13 इसके पास है। 14 उसकी पत्नीसे चौरासी मालिक रमण करता है। 15 जबरदस्तीसे खुले आम। 16 डूम बहुत ही जलता है। 17 महल। 18 गायन करवाता है। 19 किसी दिन डूम गानेको नहीं आवे तो उसे खूब पिटवाता है। 20 डूम भागनेके विचारमें है। 21 डूम भी सदैव (शाश्वत) भागनेकी ताकमें रहता है।

किण[1] कनै जाऊं ? किण कनै पुकारूं ? तरै किणहीक उण डूंमनू कह्यो–"रावळ समरसी चीतोड़ छोड़नै आहाड़ आय बैठो छै। वड़ी जमियत[2] छै कनै। थारी मदत हुसी तो उठासू[3] हुसी। दूजो घर[4] तोनूं को नहीं।"

तरै एकण दिन डूंम घात देखनै उठासू उठ पाधरो[5] आहाड़ रावळ समरसी कनै आयो। डूंम रावळ समरसीनूं कहण लागो–

"अठै वैठा कासूं करो[6] ? हूं[7] कहूं सो करो। थांनूं वड़ोदतीरा[8] चोरासी माराऊं।"

आगै समरसीरो मन नवी धरती लेणनू हूतो हीज[9] सु वात दाय आई[10]। डूंमनूं हकीकत पूछी। डूंम सारी वात कही नै कह्यो–

"असवार ५०० सूं वेगा चढो।"

तद डूंमनूं साथे लेनै रावळ समरसी वडोदैनूं चढ़ियो। अजांणजकरा जाय उतरिया। वडोदरै फळसे पागड़ा छाड़ नै[11] अढाई सै आदमी जेल[12] मांहे राखिया नै आदमी २५० डूंमनूं लेनै कोटड़ीनूं चलाया। नै आदमी ४० तथा ५० प्रोळरै[13] मंूहडै बैठा था सु मारनै आघा धसीया[14]। घर मांहे चोरासी थो तठै डूंम साथै हुय वतायो। तरै चोरासीनूं पण मारियो। आपरी आंण-दांण[15] फेरी। नै कितरोहेक साथ नै ओ डूंम अठै राखियो। आप विचार दीठ, आ ठोड़ छोटी। अठै माहरो पूरो पड़ै नहीं। तद डंगरपुररी ठोड़ भील आदमी हजार पांचसूं रहै छै। डूंगरपुररी वडी ठाकुराई छै। तठै रावळ समरसीरो चाकर रहणनूं खोट[16] कर आयो। पछै डूंगरसूं मिळियो। डूंगर पूछायो–"कहो राज ! क्यूं आया ?" तरै रावळ समरसी कह्यो–

म्हे चीतोड़ तो भाईनूं दीनीनै जांणां छां कहेक रूड़ी ठोड़ मांणस च्यार मास राखै। नै पछै म्हे कठीक रोजगारसूं जावस्यां।

---

1 किसके। 2 घोड़े और और सरदारोंका एक समूह। 3 वहांसे। 4 दूसरा स्थान तेरे लिये कोई नहीं। 5 सीधा। 6 यहां बैठे क्या करते हो ? 7 मैं। 8 वड़ादका जागीरी इलाका (तुम्हारे द्वारा वड़ोदतीके चौरासियोंको मरवा दूं)। 9 थाही। 10 यह बात पसंद आई 11 वड़ोदके द्वार पर घोडोंसे उतर कर। 12 अपने साथ। 13 द्वारके। 14 आगे बढ़े। 15 अपनी आज्ञा प्रवर्त्त की। 16 दगा।

दिलीरै पातसाहरै कै मांडवरै पातसाहरै जावस्यां। जितरै[1] थे कठेक पग-ठोड़[2] दिखावो तो अठै आय रहां।" तरै उण एक वार तो कह्यो–

"थे कालै चोरासी-मिलक मारिया। अवै म्हांनू थांरो वेसास[3] न आवै।"

तरै समरसी कह्यो–

"चोरासी मारणसू म्हारै कांम को न हुतो। पिण डूंम आय पुकारियो, तरै वा वात हुई। वा धरती डूंम भोगवै छै। रावळै[4] दाय[5] आवै तो, राज रावळा आदमी मेल[6] अमल[7] करो। मांहरे उठै को न छै[8]। मांहरै उण धरतीसूं कांम कोई नहीं।"

डूंगरसूंघणी लला-पतो[9] मिळाई। तरै डूंगर रावळ समरसीनै राखियो। सु डूंगर भील भाखररी खभ[10] हीमें डूंगरपुर वसायो छै, तठै रहतो। रावळनूं डूंगर नेड़ी हीज ठोड़ पाधर[11] में वताई। तठै अै आपणा गाडा आंण वसी[12] सूधा[13] छोड़िया। वाड़ वाळिया[14]–टापरा[15] किया। घणी चाकरी करनै डूंगरनै राजी कियो। मास ५ तथा ६ हुआ, सु खरची गांठरो खाय। मांगै क्यूं ही नहीं। नै मास-खंड[16] वळे आडो-पाड़[17] नै डूंगरसूं कहाव कियो। कह्यो—

"म्हांरै वेटी ४ मोटी हुई छै। हमैं म्हेई राज कनै मास १ मांहे सीख करस्यां। पिण डावड़ियांरां हाथ पीळा[18] किया न छै। सु फिकर छै। थे कहो तो डावड़ियां परणाइ लां।"

डूंगर कह्यो–

"भली वात छै। वेटियां परणावो। म्हे ही हीड़ा[19] करस्यां।" तद समरसी व्याह थापिया। भाई-वंध सगांनूं कागद मेलाया–"फलांणै[20] दिन घणो साथ लेनै वेगा आवजो।"

---

1 जवतक। 2 पांव रखनेको स्थान। 3 विश्वास। 4 आपके। 5 पसंद। 6 भेजकर। 7 अधिकार। 8 हमारा उवर कोई नहीं है। 9 डूंगरसे वहुत सी चापलूसीकी वातें वनाई। 10 पहाड़की नाल और तलहटीमें। 11 खुला मैदान। 12 वशीवान सेवक। 13 सहित। 14 वाड़ (घेरा) वनाया। 15 झोंपड़े वनाये। 16 एक आध मास। 17 और वीचमें डालकर। 18 किन्तु अभी तक कन्याओंके विवाह नहीं किये हैं। 19 हम भी काममें मदद करेंगे। 20 अमुक।

पछै डूंगरनूं कहाड़ियो–

वडा ठाकुर ठोड़-ठोड़सूं जांनी[1] आवसी। तिणनूं उतारणनूं जोड़ २ सड़ा[2] बंधायनै करावां।"

तरै डूंगर कह्यो–"भली वात।"

तरै सड़ो १ तो निपट वडो, डूंगर रहै छै तठै भाखर कनै निजीक बंधायो। सड़ो १ रावळधरां वांसै ऊंचो निपट सबळो[3] बंधायो। सड़ो १ आपरो गुढो[4] थो तठै बंधायो। जांनांरी[5] पिण आवणरी तयारी हुई। कितरो एक साथ आप न्योतिहार[6] तेड़िया, तिके आय भेळा हुवा। व्याहरै साहा[7] पेहली आप डूंगर कनै गया। घणी हलभल[8] की। वीनती की। दिनां दोय मांहे साहो आयो छै। जांन आवसी तरै तो जांनियांरा हीड़ा करीजसी[9]। पिण मांहरै घणी वात थे छो, जिए भेळा रहां छां। सवारै राज सारा साथ सूधा अठै आरोगो[10]। डूंगर कह्यो–"भली वात।" तरै रावळ रातूं-रात मेहमांनीरी तयारी करी। तिण सारी रसोई मांहे धतूरो, वचनाग, जाभो[11] घातियो। दारूफूल उलटारो पुलटियो[12]। सारी तयारी कीवी। पछै सवारै तीजै पोररा[13] डूंगरनूं–बेटा, भायां, परधांनां सारा साथ सूधो तेड़नै आदमी ७०० साउ[14] वडा भील वडा सड़ा मांहै बैसांणिया[15]। आदमी ४०० चाकर-बाबर[16] बीजा[17] सड़ा मांहे बैसांणिया। भली भांत परूसारो[18] कियो, नै दारू पावता गया। तरै सारा लोट-पोट वेसुध हुवा। तरै सड़ा बेऊ आडा देनै लगाइ दया[19]। कितरा एक बळमुंवा [20]। बाकीरा[21] फळसारै मुंहडै आया, सु खीली-खुटका[22] विगर मारिया। और साथ डूंगररा घरां ऊपर मेलियो। सु कोई उठै हुता सुही

1 वराती। 2 एक प्रकारके वड़े पड़वे वा झोंपड़े। 3 दृढ़। 4 निजी रक्षाका स्थान। 5 बरातों। 6 वे सगे संबंधी जिनको विवाहमें नोता देना आवश्यक होता है। 7 विवाहका दिन। 8 हलचल। 9 किये ही जायंगे। 10 कल आप अपनें कुटुम्ब और नोकर चाकरों सहित मेरे यहां भोजन करिये। 11 अधिक। 12 फूल मद्यको पुन: औटा कर अधिक मादक वनवाया। 13 तीसरे प्रहर। 14 छांटे हुए अच्छे। 15 विठाया। 16 नोकर चाकर आदि। 17 दूसरे। 18 परोसगारी। 19 तव दोनों सड़ोंको ढककर आग लगादी। 20 जलकर मरगये। 21 शेष। 22 विना प्रतिकार और सरलता से मार दिये।

मारिया। माल-वित[1] सारो[2] हाथ आयो। इणविध तो डूंगरपुर ले आपरी राजधांनी उठै कीवी। वडी ठकुराई हुई। विणजारा वहण लागा[3]। नै घणो दांण आवै छै।

तिण दिन गळियो-कोट डूंगरपुरसूं कोस १२, तठै टांटळ-रजपूत भोमिया-मांणस[4] हजार दोढ-दोयसूं रहै। तिण मांहे असवार ५०० छै। सासता[5] डूंगरपुररो धरती मारै। विगाड़ करै। गळियो-कोट बड़ो कोट। तठै रहै। वाहर वांसै हुवै, तितरै कोटमें पैसै[6]। कोटसूं जोर लागै नहीं। नै कोटरी उणरै जाबताई[7] घणी। उवेचकिया रहै[8]। रावळ घात घणी ही करै, पिण दाव लागै कोई नहीं। तरै रजपूत भाई २ रावळरै इतबारी चाकर था, तिणांनूं जोगीरो भेख करायनै गळिये कोट घात जोवणनूं मेलिया। घणो खरच दियो। वे जोगी हुय गळिये कोट गया। वे आगला[9] ओपरा[10] आदमीनूं गांवमें रहण दै नहीं। सु वे चरचा सुणनै मास १ गांवरै बारे बेस रह्या तळावरी पाळ ऊपर। कठै ही भीख मांगण नै जाय नहीं। आपरो (भेद) कोई न जांणै त्यूं आधीरा पछै छांनै कर खाय[11]। किणही आवत-जावतसूं बोले नहीं। तरै उणरी वडी मांनता[12] हुई। पछै गांवरा साहूकार, परधान, कोटवाळ, वडेरा मांणस हुता तिके गांव मांहे जोगियांनूं घणो हठ करनै ले गया। अै कहै–'म्हे न हालां[13]।' पिण माडेई[14] ले गया। कोटरै मुंहडै[15] ठाकर द्वारो छै, तठै राखिया। अै किणहीरै घर मांगण न जाय। किणही सूं घणा बोलै नहीं। इणांरी वडी मांनता हुई। तरै वडेरो टांटलारो धणी थो सु वेळा ५ तथा ७ इणांरै दरसणनूं आयो। कहण लागो–

"म्हारो घर प्रवीत[16] करो। कोट मांहे पधारो।" इणां वेळा दोय च्यार उजर कियो, पिण कोट मांहे ले गया। उठै जिमाड़िया[17]।

1 धनमाल। 2 समस्त। 3 वनजारे उधर होकर चलनें लगे। 4 निजके खेतोंवाले क्षत्री लोग। 5 निरंतर। 6 वाहर (पदचिन्हों को देखकर पीछा करनेवाले) पीछे पहुंचने को होती है उतने में ये कोट में घुसजाते हैं। 7 रखवाली। 8 वे खूब सावधान रहते हैं। 9 गलिया कोटवाले। 10 अपरिचित और ऊटपटांग। 11 आधीरात को छिपकर भोजन बनाकर खाते हैं। 12 मान्यता। 13 हम नहीं चलते। 14 बलात्। 15 सामने। 16 पवित्र। 17 भोजन करवाया।

कौट मांहे हीज राखिया । श्रै कोटरा लगाव[1] देखै । पिण लगाव को कठै ही निजर नावै[2] । मास छ उणांनूं कोट मांहे रहतांनूं हुवा । प्रोळ जाबताई घणी । दाव को लागै नहीं । सूई संचार कठै ही नहीं[3] । गळियोकोट नदी ऊपर छै । सु खाई मांहे बारी १ छै । सु खाई सुरांग रुखी छै[4] । तठै छांनो[5] आवण-जावणरो राह छै । सु किणहीक परधांनरै बेटे सदभाव मांहे वात करतां जणायो । तरै जोगियां पूछियो—"वा बारो कठीनै छै ।" तरै उण वताई । फलाणी ठोड़ छै । पछै दिन ५ तथा ७ नै उठै जाय बैठा । रातरा उए बारीरी खबर ले, वाहिर जाय मांहि आवणरा भूमिया[6] हुवा । पछै उण टांटलारै कठीक व्याह-गाह[7] थो । तठी सारो साथ चढियो[8] । श्रै भाई बेउ आलोजीया ।[9] वरस १ आंपांनूं अठै आयां हुवो । आज सारीखो दाव कदै लाभस्यै नहीं ।[10] तरै भाई एक रावळ कनै डूंगरपुर गयो नै भाई एक जोगी थको गळियेकोट मांहे रह्यो । रावळनूं सारी जाय कही । कह्यो—"कोट चाहीजै तो इण घड़ी चढो । रात थकी उठै पोंहचो । म्हारो भाई बारीरै मुंहडै बैठो छै ।" रावळ तिण वेळा असवार हजार १०००, पाळा[11] ५०० सूं चढ दोड़ियो । आगै ओ बारी खोल बैठो थो । उण बारीरी तरफ हुय रावळ साथ सूधो कोटमें पैठो[12] । तितरै भाख फाटी[13] । टांटलांरो जांमो वरस बारै हुवा तासु[14] सारा वाटा काटिया[15] । बैरां पकड़ बंध कीवी[16] नै गळियोकोट हाथ आयो । गांव ३५०० मांहे रावळरी आंण-दाण फिरी । वडी धरती हाथ आई ।

डूंगरपुरथी कोस १ पछिमनूं रुद्रमाळो देहुरो[17] नवो हुवो छै ।

---

1 संध । 2 नहीं आता है । 3 सूई-प्रवेश करे उतना भी छिद्र कहीं नहीं । 4 वह खाई सुरंगके रुखमें बनी हुई है । 5 गुप्त । 6 जानकार । 7 फिर उस टांटलाके कहीं विवाह आदि था । 8 वहां सब लोग चले गये । 9 इन दोनों भाइयोंने विचार किया । 10 आज जैसा अवसर नहीं मिलेगा । 11 पैदल । 12 प्रवेश किया । 13/14 इतनेमें प्रभात हुआ । 14/15 टांटलाके समयको बारह वर्ष बीत गये थे सो उसके और आगे बढनेके सभी मार्ग मिटा दिये गये । 16 स्त्रियोंको पकड़ कर बंद कर दिया । 17 शिवका मंदिर ।

गांव १७५० से तो डूंगरपुर कदीम छै वागड़रा[1]। नै गांव १२ पवारांरा सागवाडियां कडांणांरा मारनै लिया छै[2]।

आ बात भूलै रुद्रदास भांणरै, सांइया भूलारै पोतरै कही [3]। संमत १७१९ रा चैत मांहे। जैतारण मांहे।

डूंगरपुररै देसरी सींव[4] इतरी[5] ठाड़ लागै—

गांव १७५०

उदैपुर दिसा गांव ९, सोम नदी सींव।

उत्तरनूं ईडर दिसा गांव पुजूरी। गांव ६।

भीळांरो मेवास पछिमनूं।

वांसवाहळा दिसी महो नदी। गांव १३। नदी मही डूंगरपुरसूं कोस १० छै। तिका मांडवरा भाखरांसूं आवै छै। सु सीरोही परगना हुइ नै देवळियाथी कोस ५ आय नै पाछी मुड़ी छै[6]। सु वांसवाहळा डूंगरपुर वीच हुय नै आगै गुजरातरै लूणैवाड़ा मांहे वहै।

डूंगरपुर सहरती[7] उगवण[8] नै दिखण वेउ[9] तरफ भाखर छै। खोहळ[10] मांहे सहर मगरारी खंभ[11] वसियो छै। छोटो सो कोट छै। उठै रावळरा घर छै। गांव मांहे देहुरा घणा छै। चोहटा[12] घणा। हाटै उसड़ी पीठ को नहीं।[13]

डूंगरपुरथी उत्तर दिसनूं रावळ पूंजारो करायो गोवरधननाथरो वडो देहरो छै।

गांवसूं ईसून[14] कूणमें रावळ गोपारो करायो बडो तळाव छै।

सहररै पाछै[15] भाखर छै। ऊपर सिकाररो आहुखांनो[16] पिण उणहीज[17] भाखर छै। घणी दूर आउखांनारे वास्ते भीत[18] छै।

---

1 वागड़के १७ ५० गांवोंके सहित डूंगरपुर पहलेसे है ही। 2 बारह गांव पंवारोंके जिनमें साग, फल, सब्जी आदिकी वाड़ियें हैं उन्हें भी अधिकारमें कर लिया है। 3 यह बात सांइया झूलाके पोते और भांणके पुत्र रुद्रदास झूलाने कही। 4 सीमा। 5 इतनी। 6 पीछी मुड़ गई है। 7 से। 8 पूर्वदिशा। 9 दोनों। 10 पहाड़की नाल। 11 पहाड़के नीचे 12 चौराहे। 13 दुकानों पर वैसा व्यापार नहीं। 14 ईशानकोण। 15 पीछे। 16 आखेट स्थान। 17 उसी। 18 दीवार।

सहरसूं कोस पूणरी[1] तहड़ कूणमें गांगड़ी[2] नदी छै। तिणरै ढाहै[3] रावळ पूंजारो करायो वडो राजवाग छै।

वात वांसवाहळारी—

मूळ तो कदीम ठाकुराई वागड़री डूंगरपुर हीज हुती[4]। पछै रावळ जगमाल उदैसिंघोत, रावळ प्रथीराज उदैसिंघोत कनै आध वंटायनै गांव १७५० लिया। वांसवाहळो राजथांन कियो। तठा पछै इतरा पाट हुवा[5]—

(१) रावळ जगमाल उदैसिंघरो।
(२) किसनो जगमालरो। पाट बैठो नहीं।
(३) कल्यांण किसनारो। पाट बैठो नहीं।
(४) रावळ उग्रसेन कल्यांणमलोत।
(५) रावळ उदैभांण।
(६) रावळ समरसी।
(७) राउळ कुळसिंध समरसीरो।
(८) रावळ अजवसिंध।
(९) रावळ भीमसिंघ।

आगै तो वंट डूगरपुर वांसवाहळे सारीखो हुवो थो पिण आज वांसवाहळो क्यूं डूगरपुरथी[6] सरस[7] छै। हासळ वांसवाहळै भळेरो छै। मही नदी वांसवाहळाथी कोस ३ उगवणनू[8] छै। मही नदी मांडवरा भाखरांथी आवै छै। डूंगरपुरथी कोस १० मही नदी वहै छै। डूंगरपुर वांसवाहलै मुदै[9] रजपूत चहुवांण—वांगड़िया। चहुवांण डूंगरसी वालाउतरा पोतरां माथै।[10] इणांरै वाप-दादा सदा डूंगरपुर वांसवाहळांरा धणियांनै थापै—उथापै[11] छै। नै वाहरली फोजां रांणारी, पातसाहरी आवै छै, तरै चहुवांण स्यांम नदी रांणारै मुलकरै गड़ा

1 पोन। 2 एक नदी। 3 नदीका ऊंचा किनारा। 4 प्रारम्भमें प्राचीन समयसे ही वागड़की ठकुराई डूगरपुरमें ही थी। 5 जिसके वाद इतनी राज गद्दियें हुई। 6 से। 7 अच्छा। 8 की ओर। 9 मुख्य। 10 जो वालावत डूंगरसीके पोतोंसे यह (शाखा-वागड़िया चौहानकी) प्रसिद्ध हुई। 11 स्थापन करते और हटाते हैं।

संघ[1] छै, तिण लोपतां[2] चहुवांण सदा मरै छै। स्यांम नदीरै ढाहै चहुवांण कांम आयांरी छतरियां[3] छै। वागड़रै कांठै[4] चहुवांण भड़-किवाड़[5] रजपूत वेढीला[6] छै। सु धणियांरै नै चहुवांणारै रस[7] थोड़ा दिन हुवै छै। तद मारवाड़रा रजपूतांनूं वडा-वडा पटा देनै सदा वागड़रै राजथांन वास राखै छै। राठोड़े उठै बडा-बडा प्रवाड़ा[8] किया छै। तिण राठोड़ांरो उठै वडो नांव[9] छै। बड़ो इतवाद छै।

वांसवाहळारै सींवरी[10] विगत—

सर्व गांव १७५०

डूंगरपुरसूं सींव पछिम दिसा देवळियो लागै। राजपीपळो निजीक छै।

वांसवाहळै गांव १७५० तो कदीम छै इणांरै। तठा पछै इतरी धरती वांसवाहळारा धणियां वळे[11] नवी खाटी[12] छै।

आ वात चारण-झूलै रुद्रदास भांणरै, सांईया झूलारै पोतरै कही। संमत १७१९ रा चैत मांहे। मुंहता नैणसी आगै जैतारणमें[13] भोमियांरा मार लिया, भोग पडिया[14] गांव १४० सीरोहीरा भीलांरा मेवासरा तथा देवड़ांरा, महीरै पैलै-कांठै[15] कोस ६ उगवण-दिसा[16]। गांव १२ खुंधुरा उगवणरा[17] खळ-महीड़ांरा[18]। गांव १२ पीढी मगरा-महीड़ांरा[19]।

गैहलोतां चोवीस साख भिळै—

१ गैहलोत, २ सीसोदिया, ३ आहाड़ा, ४ पीपाड़ा, ५ हुल, ६ मांगळिया, ७ आसायच, ८ कैलवा, ९ मगरोपा, १० गोधा,

1 निकट। 2 जिसको लांघने पर। 3 स्मारक। 4 सीमा पर। 5 रक्षक-शूरवीर, द्वाररक्षक। 6 युद्ध-रसिक। 7 स्वामी और चौहानोंके परस्पर प्रीति थोड़े दिन ही निभती है। 8 युद्ध, युद्ध विजयकी कीर्ति। 9 ख्याति। 10 सीमा की। 11 और पुनः। 12 प्राप्त की है। 13 यह बात भांणके पुत्र और सांइया झूलाके पोते झूले चारण रुद्रदासने वि० सं० १७१९ के चैत्रमें मुंहता नैणसीको जैतारनमें कही। 14 निम्न प्रकार गांव भोमियोंके थे जिनको ठोक कर अपने अधिकारमें ले लिये और उनको भोगमें (एक प्रकारकी कर-वसूली प्रथा) शामिल किये। 15 मही नदीके उस किनारे पर। 16 पूर्व दिशामें। 17 पूर्व दिशाकी ओर। 18 एक जाति। 19 पीढीके मगरा महीड़ोंके।

११ डाहळिया, १२ मोटसिरा, १३ गोदारा, १४ भावला, १५ मोर, १६ टीवणा, १७ मोहिल, १८ तिबड़किया, १९ बोसा, २० चंद्रावत, २१ घोरणिया, २२ वूटावाळा, २३ वूंटिया, २४ गाहमा,

अथ पंवारांरी पैंतीस[1] साख—

१ पंवार, २ सोढा, ३ सांखला, ४ भाभा, ५ भायल, ६ पेस, ७ पांणीसवळ, ८ वहिया, ९ वाहळ, १० छाहड़, ११ मोटसी, १२ हुवड़, १३ सीलारा, १४ जैपाळ, १५ कगवा, १६ काबा, १७ ऊमट, १८ धांधु, १९ धुरिया, २० भाई, २१ कछोटिया, २२ काळा, २३ काळमुहा, २४ खैरा, २५ खूंट, २६ टल, २७ टेखळ, २८ जागा, २९ छोटा, ३० गूंगा, ३१ गैहलड़ा, ३२ कलोळिया, ३३ कूंकणा ३४ पीथळीया, ३५ डोडकाग, ३६ वारड़ ।

चहुवांणांरी चौबीस[2] साख—

१ चहुवांण, २ सोनगरा, ३ खीची, ४ देवड़ा, ५ राखसिया (साखसिया), ६ गीला, ७ डेडरिया, ८ बगसरिया, ९ हाडा, १० चीवा, ११ चाहेल, १२ सैलोत, १३ वेहल, १४ बोड़ा, १५ बालोत, १६ गोलासण, १७ नहरवण, १८ बेस, १९ निरवांण, २० सेपटा, २१ ढीमड़िया, २२ हुरड़ा, २३ माल्हण, २४ वंकट ।

साख इत्ती पड़िहारां भिलै[3], भाट खंगार नीलियारै लिखाई[4]—

१पड़िहार, २ ईंदा[5], मळसिया, काळपाघड़िया, बूलणा, ३ लूलो, रामियारा पोतरा[6], ४ रांमवटा, ५ बोथा, मारवाड़ मांहे छै, पाटोदी धकै[7] छै, ६ बारी, मेवाड़ मांहे रजपूत छै, मारवाड़ में तुरक छै[8], ७ धांधिया, पावरा-रजपूत[9] घणा छै, जोधपुररी[10] में छै, ८ खरवर, मेवाड़ में

1 शीर्षकमें ३५ शाखाएं लिखी हैं कितु ३६ हैं। 2 शाखा, भेद । 3 पड़िहारों में इतनी शाखायें शामिल हैं। 4 नीलिया ग्रामके निवासी भाट खंगारने लिखवाई। 5 पडिहारों की ईंदा शाखाकी मळसिया, काळ पाघड़िया और बूलण। ये तीन अवान्तर शाखायें हैं। 6 रामियाके पोते लूनो शाखाके हैं। 7 बोथा शाखाके राजपूत मारवाड़में हैं। वे पाटोदीके परे रहते हैं। पाटोदी बालोतरासे १२ मील उत्तरमें और जोधपुरसे ६० मील पश्चिममें है। 8 बारी शाखाके राजपूत तो मेवाड़में है और जो मुसलमान हो गये हैं वे मारवाड़में रहते हैं। 9 साधारण राजपूत (बिना जागीरीके) अधिक हैं। 10 जोधपुरके प्रदेशमें रहते हैं।

सूरजमल पूरे[1] घावे पड़ियो । तिण वेढ़थी[2] गिरवो छूटो । नै सूरजमलरा दिया दहवारीरै बारै गांव वीभणो नै वांसोलो वीजा ही सांसण गाँव घणाई दिया सु अजेतांई[3] छै । इण वेढ़ ही सादड़ी छूटी नहीं । पीढ़ी ४ ईणांरै रही ।

१ रावत खींवो मोकलरो ।
२ रावत सूरजमल ।
३ रावत बाघ सूरजमलोत । चीतोड़ वहादररै मांमलै कांम आयो ।
४ रावत वीको ।

एक दिन सीसोदिया रावत सूरजमल खींमावत ऊपर अजांणजकरो[4] कवर प्रथीराज रायमलोत आयो, सु पैहलै दिन रांणो रायमल नै सूरजमल मांमलो हुवो थो, तठै रांणारी क्यू कम हुई थी[5] नै सूरजमलरी वधती हुई थी[6] । सु सूरजमलरै क्यु हेक घाव लागा था नै दूजै दिन प्रथीराज टूट पड़ियो तद सूरजमलरै घाव निपट घणा लागा । सु रजपूत सूरजमलरी डोळी[7] ले भाखरनूं नीसरिया, तरै वांसै[8] साथ प्रथीराज भाखर चाढ़ै छै । सु प्रथीराजरो वनो देवड़ो नै सूरजमलरो चाकर महियो अै दोनूं बाभिया[9] । वनै महियानूं मार लियो । अै दोनूं ठोड़ दूणेटो पावता[10] । नै महियो सीसोदियो छै ।

देवळिये रजपूत सीसोदिया सहसावत नै सोनगरा छै । सीसोदियो जोगीदास जोधरो । जोध गोपाळरो । सहसो, खींमो मोकलरो । सु आज जोगीदास भलो रजपूत छै ।

रावत वीको—वीका-रो बेटो भांनो टीके[11] हुवो । नै चीतोड धणी रांणो अमरसिंघ हुवो । नै सैदनूं जीहरण मीमच छै[12] । दीवांणरै नउवो वाघरड़ै हद छै[13] । तठै रावत गोवंद खंगाररो चूंडावत थाणै[14]

---

1 घावोंसे पूर्ण हो कर गिर पड़ा । 2 से 3 अभी तक 4 अचानक 5 (पराजित होने के कारण) न्यूनता रही । वाजी ढीली रही । 6 और सूरजमलकी वाजी वढ़तीमें रही थी । 7 सोये हुए आहत और मूर्च्छित व्यक्तिको कंधों पर उठा कर लेजानेकी एक टिकटी । 8 पीछे । 9 लड़े । 10 दोनों स्थानोंमें ये दूसरोंसे दुगुना मुआवजा पाते थे । 11 गद्दी बैठा 12 जीहरण और मीमच पर सैयदका अधिकार है । 13 अमरसिंहके राज्यकी सीमा नेउवा और वाघरड़ा गांवों तक है । 14 थाने पर स्थित हैं ।

छै। तिण ऊपर[1] सैद आयो। तद रावत गोवंद कांम आयो। तठा पछै रांणारा हुकमसूं सीसोदिये जोध सकतावत मोरवण, कराथो, कुंडळरी सादड़ी जीहरणरा गांव कितराएक मुकातै लिया[2]। जोध, वाघ बेऊ[3] भाई वसिया। जोध एक ठोड़, वाघ एक ठोड़ धरती वीच घाती[4]। उणरी[5] धरती वसण दै नहीं। आपरी वासै[6]। मीमचरै गांव चौथ[7] मांगै छै। नै रावत वीको अठाथी रांणै उदैसिंघ ठेल काढियो छै,[8] तो पिण[9] इणांरो[10] सादड़ी मांहे दखल छै। वीके जाय देवळिये गुढो कियो[11]। तद उठै वडेरी मेरांरै आसारण दादी छै[12]। उणरो कारण घणो छै[13]। वे कयो म्हे थांनूं रहण नहीं दां अठै[14]। तरै इण घणा सूंस-सपत[15] किया। पछै होळीरै दिन चूक करनै मेर सोह मारिया[16]। वीके देवळियो लियो। उण आसारणांरा बेटा-पोतरानूं गांव १ अजेस छै[17]। तिणरो वडो इतबार छै[18]। गांव ७०० देवळियानूं लागै नै देवळियारै पूठीवासै[19] गांव १०० मांहे मेर रहे छै। केई रैत[20] छै, केई मेवासी[21] छै। वडी धरती छै[22]। गोहूं, उड़द, चावळ, वाड़[23] घणो हुवै। आंबा महुड़ा घणा[24]। गांव ३०० भाखर मांहे, गांव ४०० भाखरांरै बारै छै।

इतरी धरती देवळियेरा नवी खाटी[25]—

गांव ८४, सुहागपुरो सोनगरांरो उतन[26]। रावतसिंघ आ ठोड़ लीवी। वे सोनगरा चाकर थका अजेस धरती मांहे रहे छै[27]। रामचंद[28]

---

1 जिस पर चढाई कर। 2 इजारे पर लिये। 3 दोनों। 4 जोधने एक स्थान पर और वाघेने एक दूसरे स्थान पर भूमि पर अधिकार किया। 5 उसकी (सैयद की) भूमि आबाद नहीं होने देते। 6 अपनी भूमिको बसाते हैं 7 आयका चतुर्थांश 8 और रावत वीकाको राणा उदयसिंहने यहांसे निकाल दिया है। 9 तोभी। 10 इनका। 11 रक्षास्थान बनाया। 12 वहां (देवळिये) में उस समय मेरोंकी एक आसारण पितामही रहती थी। 13 उसकी बहुत प्रतिष्ठा है। 14 उसने कहा हम तुमको यहां नहीं रहने देंगे। 15 तब इसने बहुत प्रकार सोगंध खा कर वचन दिया। 16 किन्तु होलीके दिन छल करके उसने सब मेरोंको मार दिया। 17 अभीतक एक गांव उन असारणोंके बेटे पोतोंके अधिकारमें है। 18 उनका बड़ा सम्मान और भरोसा है। 19 पीछेकी ओर 20/21 कई नियमपूर्वक प्रजाके रूपमें और कई लुटेरोंके रूपमें 22 भूमि अच्छी उपजाऊ है। 23 गन्ना। 24 आम और महुआ अधिक। 25 इतना-भूप्रदेश देवलिया वालोंने और नया प्राप्त किया। 26 जन्मभूमि। 27 वे सोनगरे नौकर की स्थितिमें अभी तक उस धरती में रहते हैं। 28 वह न्यायी और धर्मात्मा होनेके कारण भगवान् रामके आचरणोंका अनुवर्ती कहा जाता था।

घणां । ९ सीधका, मेवाड़में नै बीकानेररै देस में छै । १० चोहिल, मेवाड़में घणा । ११ फळू, सीरोही जालोर[1]री में घणा । १२ चैनिया, फलोधी दिसा[2] छै । १३ बोजरा । १४ झांगरा, मारवाड़में भाट[3] छै । धनेरियै, भू भळियै नै खीचीवाड़ै रजपूत छै । १५ वाफणा, वांणिया[4] । १६ चौपड़ा, वाणिया[5] छै । १७ पेसवाळ, रवारी[6], खोखरियावाळा । १८ गोढला । १९ टाकसिया, मेवाड़में छै । २० चांदोरा, कुंभार[7], नींवाजवाळा । २१ माहप,-रजपूत, मारवाड़में घणा । २२ डूरांणा, रजपूत छै । २३ सवर, मारवाड़में रजपूत छै । २४ खूंमोर । २५ सांमोर । २६ जेठवा, पड़िहारां भिलै ।

साख सोळंकियांरी––

१ सोळंकी, २ वाघेला, ३ खालत, ४ रहवर, ५ वीरपुरा, ६ खेराड़ा, ७ वेहळा, ८ पोथापुरा, ९ सोजतिया, १० डहर, सिंध[8] नूं, तुरक हुवा, ११ भूहड़, सिंधमें तुरक हुवा, १२ रूझा, तुरक हुवा थटा दिसी[9] ।

वात देवळियारै धणियांरी––

इण परगनारो नांम ग्यासपुर छै, तिणरो[10] देवळियो गांव छै । सु देवळियाथी कोस ५ ईशांन-कूण[11] मांहै छै, उठै गढ़ कोई न छै,

1 सिरोही और जालोर प्रदेशमें अधिक । 2 फलोदीकी ओर हैं । 3 पड़िहारोंकी झांगरा शाखा वाले राजपूत भाट हो गये जो मारवाड़में रहते हैं । 'भाट' संस्कृतके 'भट्ट' शब्द का अपभ्रंश है । विविध जातियोंकी वंशावलियें लिखना इनका धंधा है । वंशावलियां लिखने और सुनानेकी वृत्ति अंगीकार करनेके बदलेमें भेट, पूजा-सन्मान, त्याग और दानादि ग्रहण करनेके कारण यह जाति अपनेको ब्राह्मण मानती है और अब 'ब्रह्मभट्ट' नामसे इनकी प्रसिद्धि है । 4 'वाफना' शाखाके पड़िहार अब ओसवाल बनियों की एक शाखा है। 5 'चौपड़ा' शाखाके पड़िहार अब ओसवाल बनियोंकी एक शाखा है । 6 खोखरिया गांवके रहनेवाले 'पेशवाल' शाखाके पड़िहार भेड़ बकरी और ऊंट आदि रखने और चरानेका धंधा करनेके कारण ये 'रेवारी' कहलाने लग गये और भाटोंकी भांति ही अलग जाति में परिवर्तित हो गये । 7 नींवाजमें रहने वाले 'चांदोरा' शाखाके पड़िहार मिट्टीके बरतन बनानेका धंधा करनेके कारण 'कुम्हार' जातिमें परिवर्तित हो कर क्षत्रियोंसे अलग पड़ गये । 8 सोलंकी शाखाके 'डहर' राजपूत सिंधमें जा कर मुसलमान हो गये । 9 सोलंकी शाखाके 'रूझा' राजपूत सिंधमें नगर-थट्टाकी ओर जा कर मुसलमान हो गये । 10 ग्यासपुर परगनेका मुख्य गांव देवलिया है । 11 ईशान कोण ।

भोखरारी खांभ[1] मांहै ग्यासपुर छै। घर ५० वसै छै। तठै मेरांरी क़दीम ठाकुराई थी। मेर मेवासी थका[2] रहता। नै खींवो रांणा मोकलरो बेटो हुवो तिकै जाय सादड़ी तेजमालरी उदैपुरसूं कोस २५, चीतोड़सूं कोस २० दिखणनूं[3] तठै जाय रह्यो। रांणो कूंभो पाट छै[4]। मांहो मांहि भायां ग्रास-वेध लागो[5]। खींवै मांडव जाय पातसाहरी फौज आंण[6] मेवाड़नूं वडो धको दियो। वडो ग्रासियो हुवो[7]। कूंभो नै खींवो लड़ता रह्या; पिण खींवानूं काढ़ सकिया नहीं। रांणो कूंभो नै खींवो खसता-खसता[8] मूवा। चीतोड़ रांणो रायमल पाट बैठो। खींवारै टीके रावत सूरजमल बैठो। सु राणो रायमल नै सूरजमल घणी ही खसाखूंद[9]। सूरजमल घणी धरती गिरवा सूंधी लियां रहै[10]। सादड़ी थकां भोगवै[11]। तद गांव १७ सांसण[12] दिया सूरजमल। सु वे सांसण अजेस[13] छै। रावत वाघ करमेती हाडीरै मांमलै कांम आयो[14]। तद करमेती कना सही घताइ दी तकां गांवांरी विगत[15]—

१ भीमेल, १ धारता, १ गोठियो, १ वीझणो, १ वांसोलो, १ भुरखिया, १ वालिया, थाहरुनूं, १ चारणखेड़ी, १ खरदेवळो, भाटरो, १ सुआळी। इतरा गांव सासण दिया। यूं करतां पछै रायमलरै कवर पृथ्वीराज-उडणो[16] लांघां-वलाय[17] मोटो हुवो सु सूरजमलसूं पृथीराज जोर लागो[18]। घणी वेढ[19] कीवी। आखर[20] सादड़ी वडी वेढ़ हुई।

---

1 दो पहाड़ियोंके बीचका ढालू और नीचा स्थान। 2 मेरे लूटेरे थके वहां रहते थे। 3 को। 4 राणा कुंभा चित्तौड़ सिंहासन पर है। 5 भाइयोंमें परस्पर भूमि-कर विभागके लिये विरोध उत्पन्न हो गया। 6 ला कर। 7 बड़ा उपद्रवी हो गया। 8 लड़ते-लड़ते। 9 द्वेष। 10 सूरजमल गिरवा तक वहुतसी भूमि दबाये वैठा है। 11 सादड़ीका भी उपभोग करता है। 12 उस समय सूरजमलनै १७ गांव दानमें दिये थे। 13 अभी तक। 14 करमेती हाडीके सम्बन्धमें जो युद्ध हुआ उसमें रावत वाघ काम आया। 15 उस समय गांवोंके दानपत्रमें करमेतीके हस्ताक्षर करवा दिये गये जिनकी सूची इस प्रकार है। 16/17 'उडणो' और 'लांघां-वलाय' रायमलके पुत्र पृथ्वीराजके ये विशेषण हैं। उडणो = बहुत तेज गतिसे जाकर कार्य सम्पादन करने वाला। लांघां-वलाय = इस पारसे उस पार जा कर शत्रुओंमें भय उत्पन्न करने वाला, लांघने वालोंमें बला रूप। पृथ्वीराजने एक ही दिनमें टोडा और जालोर विजय किये थे। इतनी लम्बी दूरीको लांघ कर उसी दिन दोनों स्थानों पर विजय प्राप्त करनेके असाधारण कार्यके उपलक्ष्यमें पृथ्वीराजने अपने नामके साथ ये विशेषण प्राप्त किये। 18 वेगपूर्ण पीछा किया। 19 लड़ाई। 20 अंतमें।

कहावतो, राव पदवी। वडो ठाकुर हुवो। देवळियाथी कोस चवदै दिखणनूं माळवा मांहे वडी धरती। गोहूं, वाड़, मसूर, चिणा, ज्वार घणी नीपजै।

गांव १४० परगनो वसाड़रो। देवळियाथी कोस ४ उगवण[1] मांहे, वडी धरती। गोहूं, वण[2], वाड, ज्वार, चावळ नीपजै।

गांव ६४ परगनो नैणेररो। देवळियाथी कोस १० दिखणनूं सुहागपुरै लगती। दिखण दिसनूं अरणोदगौतमजी[3] वडो तीरथ छै। गोहूं, वाड, वण, ज्वार, चावळ नीपजै।

गांव १२ सेवना[4] मंदसोर रावत हरीसिंघ दवाया छै। क्युं ही मुकातो दै छै। देवळियाथी कोस १० घणा दिन मुकातो-कर[5] लियो।

इतरा गांवां परगनाँसूं देवळियारो कांकड़[6] लागै। १ दसोर, १ रतलांव[7], १ बलोररो परगनो रांणारो। सोनगरा बालावतांरो उतन। झाड़ी घणी। १ जीहरण-रांणारी, १ धीरावद-रांणारी, १ वांसवाहळो।

इतरा परगनांसूं कांकड़ लागै—

नदी २ जाखम नै जांजाळी। देवळियारा भाखरांमें नीसरै छै[8]। तिणरो पांणी निपट बुरो छै। देवळियेथी कोस ५ पछिमनूं छै। उदैपुरसूं देवळिये जाईजै तद आड़ी आवै छै[9]। पांणी पीवै तिणनै तो खेद[10] करैहीज पिण पग मांहे वोडै[11] तिणसूं ही दखळ[12] करै छै।

वात—

सीसोदियो जोध, वाघ मुकातो जीहरणरो ले रह्या छै। धरती भोग घाती[13] छै। सैदसूं पिण जोरावरी[14] करै छै। रावत भांनारै गांवांसूं लागै छै, नै अै चढ़नै देवळियेरै मेरांरा गांव मारै छै[15]। रावत भांनैनै इणांरै जोर विरस[16] छै। तद भांनै सैदनूं कह्यो—'अै

1 पूर्व दिशा। 2 रुई 3 एक तीर्थ-स्थान। 4 गांवका नाम। 5 इजाराकी स्थितिमें मिलने वाला कर 6 सीमा। 7 रतलाम नामक शहर। 8 निकलती है। 9 उदयपुरसे देवलिये जाना होता है तब बीचमें आड़ी आती है। 10 रोग, कष्ट। 11-12 किन्तु पाँव डुवानेसे भी गड़बड़ कर देता है। 13 भूमि पर अधिकार कर लिया है। 14 जबरदस्ती। 15 लूटते हैं। 16 अनबन।

बळायां[1] अठै क्यूं राखै छै। सवारै अै थांनूं[2] हीज मारसी।' तरै सैद मांखण ही वात मांनी। एक वार दीवांण अमरसिंघ कनै पुकार की 'जोध मांहरा[3] गांव मारै छै'। 'माहरै माथै चढसी' अा वात जोध सांभळी[4]। तरै मांहोमांह दरबार मांहै जोर चढ़िया[5]। वात कराड़ां बारै हुई[6]। भांनो पाछो देवळियै गयो। जोध पाछो गांव गयो। सैद मांखण मंदसोररो फोजदार नै रावत भांनो मांणस असवार १५०० जोध ऊपर आया। जोध असवार १००, पाळा दोयसैसूं चढ़ सांमो आयो। तठै चीताखेड़ैरै पैलै-कांनै[7] वड़ थो तठै वेढ़ हुई। जोध सैद मांखण नै रावत भांनैनूं मारनै जोध कांम आयो। तठापछै उणे[8] गांवे जोधरा बेटा नाहरखांन भाखरसी रह्या। सैद पिण धको खाधो[9]। देवळियैरै धणिये पिण धको खाधो। देवळियै टीकै सिंघो तेजावत भांनारो भाई बैठो। पछै मीमच राव दुरगो। रांमपुरारा धणीनूं तरै राव दुरगे कह्यो–'म्हे दीवांणरा चाकर छां। जांणै ज्यूं[10] मीमच-जीहरणरी धरतीरा गांव ले, दीवांण जाणै ज्यूं म्हांनै[11] दे। तरै जांणिया[12] सु गाँव लियां पछै देवळियैरै धणियांनै पिण दीवांण टीको मेलियो। दिलासा करी[13]। कह्यो–'रावत भाँनो पिण म्हांरो भाई मूवो' जोध पिण म्हांरो भाई मूवो। हमैं जोधरा बेटा उठै छै। थे नांव मत ल्यो।' रावत सिंघ हुकम माथै चढायो[14]। तरै धरती वसी। पछै रांणा अमरसिंघरै विखो वरस सात हुवो। धरती रांणा सगरनूं हुई। पछै रांणा अमरसिंघसूं वात हुई। तरै मीमच-जीहरण रांणाजीनूं पातसाह दीवी। देवळियैनै राणा रै मुलक कांकड़ इण गांवां[15]– जीहरण-मीमचरा गांव––

१. चीताखेड़ो–रांणारो।

१. जथलो–रावतरो। सीसोदिया जोधवाळो।

१. उगरावण–रांणारो।

---

1 ये वलाएं यहां क्यों रखता है। 2 कल तुमको ही मारेंगे। 3 हमारे। 4 सुनी 5 उग्र वादविवाद हुआ। 6 वात मर्यादाके वाहिर होगई। 7 उस ओर। 8 उन गाँवोंमें 9 सैयदको भी हानि उठानी पड़ी। 10 जिस प्रकार ठीक समझे। 11 मुझे। 12 मनवांछित 13 ढ़ाड़स बँधाया। 14 रावतसिंहने आज्ञा शिरोधार्य्य की 15 देवलियावालों और राना के देशकी सीमा इन गाँवोंसे मिलती है।

१. अंबलीरो टूंक–रावतरो ।

१. वळोर–रांणारी ।

१. वांभोतर, धमोतर रावतरी ।

१. हरवार, वघरेड़ो, वडगांव रावतरी । नै

१. भैरवी रांणारी । घाटो[1] छै ।

देवळियैरा गांव–चीताखेड़ो, उगरावण, धमोतर चाकर रावतरा ।

रावतसिंघ तेजारो मूवो[2] । पाट रावत जसवंत देवळिये हुवो । तद वसाड़रो गांव छोडी रावत जसवंत नाहररो सकतावत रांणा जगतसिंघरो मेलियो[3] थांणै रहै घणा साथसूं । रावत जसवंत सिंघावत मंदसोररो फोजदार जांनिसारखाँ थो तिणनूं भखाइ[4] दीवांणरा थांणा ऊपर आंणियो[5] । रावत आप साथे न छै । देवळियारो साथ घणो भेळो छै[6] । रावत जसवंत नरहरोत इतरा साथसूं कांम आयो––

१. रावत जसवंत नरहरोत ।

१. सीसोदियो जगमाल वाघावत ।

१. सीसोदियो पीथो वाघावत ।

२. सीसोदियो कांन, सादूळ नरहरोत ।

१. सवळसिंघ चतुरभुजोत पूरबियो ।

इतरो साथ कांम आयो । तिको गुसो मनमें राखनै रांणो जगतसिंघ उदैपुर रावत जसवंत सिंघावतनूं रांमसिंघ करमसेनोत कना[7] रावत जसवंत नै वेटो महासिंघ मराया । नै तद पैहली[8] साह अखैराजनूं देवळियारी गड़ासंघ धीरावदरो दीवांणरै परगनो छै, तठै चूक[9] माथै घणा साथसूं राखियो थो । साहनूं लिख मेलियो थो जु थे जाय देवळियो लेजो-मारजो । पिण साह गयो नहीं । उठै सीसोदियो जोध गोपाळोत रावत हरीसिंघनूं टीकै वैसांणियो[10] । पछै सीसोदियो

1 दो पहाड़ोंके बीचका वड़ा मार्ग । 2 तेजाका पुत्र रावतसिंह मरगया । 3 भेजा हुआ । 4 बहकाकर । 5 रानाके थाने पर चढाकर ले आया । 6 सामिल है । 7 से, द्वारा । 8 इससे पहले । 9 छल द्वारा मारलेनेके निमित्त । 10 गद्दी पर बिठा दिया ।

जोध गोपाळोत रावत हरीसिंघनूं दरगाह ले गयो। पछै देवळियो रांणाथी अल्हादो कियो[1]। पछै उजैण अहमदावाद चाकरी कीवी[2]।

अथ बूंदीरा धणियांरी ख्यात लिख्यते।

वार्ता--

चौवीस साख चहुआंणारी, तिण मांहै साख १ राव लाखणरा पोतरा हाडा बूंदीरा धणी।

बूंदीमें मीणा कदीम रहता। नै हाडो देवो बांगारो भैंसरोडथी विखायत थको[3] जाय बूंदी रह्यो हुतो। सु एक वात यूं सुणी[4]--बूंदी मांहे बांभण[5] रहता, तिणांरी बेटी मैणा कहे म्हांनूं परणावो[6]। तद बांभणां उजर घणो ही कियो[7]। पिण मैणा मांनै नहीं, तरै हाडा बांभणांरा जजमांन था, सु बांभण देवा कनै भैंसरोड जाय पुकारिया। तरै हाडां कह्यो--"थे बेटी द्यो[8]। व्याह थापो[9]। नै उणनूं कह राखजो। म्हे हीड़ा[10] मांहै क्यूं समझां न छां। मांहरा हाडा जजमांन छै। भैंसरोड रहै छै, सु म्है तेड़स्यां[11]।" तद मैणां कह्यो--"भली वात छै।" पछै व्याह थाप नै हाडांनूं तेड़िया। तद मैणांनूं बांभणां कह्यो--"म्हे म्हांरी रीत व्याह करस्यां[12]" तद मैणा मदंध[13] हुता किण ही खोट-चूक[14] री वात समझ्या नहीं। पछै साहां[15] पैहली सड़ा[16] सबळा बंधाया। मांहै हाडे सोर पथरायो[17]। ऊपर घास पाथरियो[18]। पछै मैणानूं बुलाय जांनीवासै[19] उतारनै दारू पायो। तरै छकिया वेसुध हुवा[20]। तरै केई घावे मारिया[21], के सड़ांमें फूंक दिया[22]। हाडै मैणा सोह[23] मारनै वळै[24] गांव ऊपर जायनै वांसै[25] को रह्यो थो सो कूट-मारनै[26] बूंदी लीवी। बीजा[27] हुता सु नास गया, तिके बूंदेला वाजै छै।

---

1 देवलियाको रानाके अधिकारसे छीन लिया। 2 देवलियाके स्वामीने उज्जैन और अहमदावादकी सेवा स्वीकार की। 3 विपदावस्थामें। 4 इस संबंधमें एक वात यों सुननेमें आई। 5 ब्राह्मण। 6 विवाह करदो। 7 तब ब्राह्मणोंने वहुतेरी आपत्ति की। 8 तुम बेटी देना स्वीकार करलो। 9 विवाहकी तिथि निश्चित करलो। 10 प्रथानुसार परिचर्या करनेमें हम कुछ नहीं समझते। 11 बुलायेंगे। 12 हम अपनी रीतिसे विवाह करेंगे। 13 मदान्ध। 14 छल-कपट। 15 विवाहसे प्रथम। 16 बड़े झोंपड़े। 17 हाडोंने उनके अन्दर बारूद बिछवा दिया। 18 बिछा दिया। 19 जनिवासा। 20 नशेमें छककर अचेत होगये। 21 तब कइयोंको तलवारके घाट उतार दिया और कइयोंको सड़े जलाकर फूंक दिया। 23। समस्त। 24 पुनः। 25 पीछे। 26 ठोक-पीट कर। 27 और थे सो भागगये।

एक वात यूं सुणी—

हाडो देवो बांगारो, बूंदी वेखरच थको आय भैंसरोडथी रह्यो हुतो[1] । कनै आपरी वसी[2] हुती । नै देवै रांणा अरसी लखमसिओतनूं वेटी दीवी थी । सु रांणो अरसी अठै जांन कर[3] वडी फोज ले परणीजण आयो । सु परणियां पछै रांणै अरसी देवानूं पूछियो—'थांरी कासूं हकीकत ?[4]' पूछी तरै देवै कही । तरै राणै कह्यो—'थे अठै काहिणनूं रहो[5] ?' उरा आवो[6] । तरै देवै कह्यो—'मांहरी एक अरज छै, एकंत मालम करसूं ।' तद रांणै एकंत पूछियो । तरै देवै कह्यो—'आ भली धरती मेणां हेठै[7] छै नै मैणा निवळा सा छै । जिकै छै सु आठ पोहर छकिया दारू मतवाळा थका रहै छै, सु दीवांण[8] साथरी[9] मदत करो तो मैणा मारनै आ धरती लूं नै दीवांणरी चाकरी करूं । तरै देवै मांगियो सु देवानूं राणै डेरो उठै (सूं) हीज दियो[10] । देवो फोज ले, वूंदी मैणां ऊपर रात थकी आयो[11] । नीसरणरा घाट[12], नास-भाजरा हुता सु भूमिया था सु सोह रोकनै मैणा सारा कूट-मारिया । वीजा जठै हुता सु सोह नास गया । देवै आपरी आंण फेरी[13] । मैणा मारनै रांणारी हजूर आयो[14] । रांणो वोहत राजी हुवो । देवानूं कह्यो—'वळै कहो सु करां[15]। तरै देवै कही—दीवांणरा ऊपरथी सारी वात भली हुई[16] । मास ४ असवार सौपांच मदत पाऊं । तरै रांणै असवार ५०० मदत देनै आप चीतोड़ चढ़ियो । पछै देवै भोमिया[17] था सु सारा कूट मारिया । वीजा धरती मांहे था सु सारा नास गया । पछै देवै आपरा भाईवंध तेड़ नै[18] ठोड-ठोड वसी[19] राखी । आपरी जमीयत[20] राखी ।

---

1 देवाके पास पैसा नहीं था अतः बूंदीसे भैंसरोड आकर रहगया था । 2 कामदार आदि वे कर-मुक्त नौकर-चाकर जिन्हें उस जागीरदारका 'चोटी-वढ़िया' और 'वसीरा लोक' भी कहते हैं । 3 वरात वनाकर । 4 तुह्मारी क्या स्थिति है ? 5 तुम यहां काहे को रहते हो ? 6 (हमारे यहां) आजावो । 7 अधीन । 8 राना । 9 सेना । 10 जितने मनुष्योंकी सहायता देवाने मांगी उतने मनुष्य रानाने अपने ऽनिवासेसे ही उसे दे दिये । 11 रात रहते मैंनों पर चढ़कर बूंदी आगया । 12 द्वार, मार्ग । 13 देवेने अपने शासनकी आज्ञा प्रवर्त्त कर दी । 14 मैंनोंको मारकर रानाके दरवारमें आया । 15 और कोई काम हो तो कहो सो वह भी कर दिया जाय । 16 रानाकी सहायतासे सव वात ठीक हुई । 17 छोटे जागीरदार । 18 बुलाकर । 19 स्थान-स्थान पर कर-मुक्त मंत्री, नौकर-चाकर आदि नियुक्त कर दिये । 20 उभट और अश्वारोही ।

धरती रस पड़ी[1]। दीवांणरा साथनूं सीख दीवी। तठा पछै आपही बडी जमीयत करनै दसरावानैं[2] रांणारै मुजरै गयो नै मेवाड़री चाकरी करण लागो।

एक वात यूं[3] सुणी—हरराज डोड[4] बूंदीरो, मैणांरो एकल असवार घणो धरतीरो विगाड़ करै। तद मैणा घणा ही खसथाका[5]। हरराजनूं पोहच[6] सकै नहीं। कितराएक रिपिया[7] मैणा कना वरसरा वरस नाळबंधीरा[8] लै नैं धरती पिण मारे। तिण समै हाडा देवा बांगावतरै घोड़ो १ थो सु मांडवरै पातसाह मंगायो। इण दियो नहीं। तरै देवो भैंसरोड़ परी छोड़नै बूंदी मैणांरो मेवास जांण अठै बूंदी आयो। तरै बूंदीरै मैणे दूड़ी-नाचणरो[9] घर थो, तठै घर-ठोड़नूं[10] जायगा दिखाई। सु दूड़ीनूं वयुं अगमरी[11] खबर पड़ती। सु दूड़ीनै देवै भेळै रहतां सुख[12] हुवो। सु दूड़ी एकंत देवानूं कहै छै–'इण धरतीरा धणी थे हुस्यो[13]।' पछै मैणे एक दिन हथाई[14] बैठां कह्यो–'इण हरराज डोड म्हां मांहै वडी लीक[15] लगाई छै। मांहरै माथै डंड कियो छै सु पिण लै नै धरती पिण मारै छै[16]।' तरै देवे कह्यो–'इणनूं कोई पालै[17] तो तिणनूं थे कासूं[18] दो।' तरै मैणै वडेरै[19] कह्यो–मांहरै धरतीरो हासल छै, तिण मांहैसूं आध म्हे थांनूं देवां। तरै इणां बोल-कोल सूंस-सपत करी[20]। नै दीवाळीरो दीवाळी हरराज डोड बूंदी आवतो, घावदेतो[21]। सु देवो तो उण अैराकी-घोड़ै चढ़नै पाखर घातनै जीनसाल पहर तयार हुवो[22]। नै पैली-कांनै

---

1 भूमि पर पूर्ण अधिकार होगया। 2 दशहरा। 3 इसप्रकार। 4 डोड जातिका क्षत्री हरराज इकल्ला घुड़सवारी करके मैणों और उनकी भूमि का बिगाड़ करता है। 5 मैणे प्रयत्न कर थक गये। 6 हरराजको नहीं पहुँच सकते। 7/8 प्रतिवर्ष नालबंधी-कर के रूपमें कितने ही रुपये भी लेलेता है और लूटपाट कर भूमिमें बिगाड़ भी करे। 9 दूड़ी नामक नर्त्तकी। 10 तब रहनेके लिये स्थान दिखाया। 11 भविष्य। 12 प्रीति। 13 इस भूमिके स्वामी तुम होवोगे। 14 वातचीत वा पंचायतकी चौकी। 15 धाक जमा रखी है। 16 हमारे पर डंड भी लगा दिया है सो भी लेता है और लूटपाट भी करता है। 17 रोकदे। 18 क्या। 19 तब बड़े और वृद्ध मैणेने कहा। 20 तब इन्होंने कौल-वचन और सौगंद शपथ की। 21 प्रहार करता। 22 देवा तो उस अरबी घोड़े पर पाखर डाल, कवच पहिन चढ़कर तैयार हुआ।

हरराज गांवरा मैणां आवतो दीठो[1]। तद मैणातो सरब नासगया न घरां मांहै पैठा[2]। नै देवो प्रोळरै बारै आयो नै देवै हरराजनै आवतो दीठो। हरराज देवैनै दीठो। देवै घोड़ैनू चढ़ कोरड़ो[3] वाह्यो[4]। तद हरराज पाछा फेरिया[5]। देवै वांसै घातिया[6]। वीच [7]वाहळो १ ऊंडो हुतो सु हरराजरो घोड़ो डाक[8] पैलै तीर जाय ऊभो। वेऊ[9] घोड़ा आमां-सांमां कर ऊभा रह्या। वात हरराज देवैनूं पूछी—"थे कुण[10] ? कठासूं आया[11] ?" तरै देवै आपरी हकीकत कही—"चहुवांण बूंदीरो देवो म्हारो नांव छै[12]।" तरै कह्यो—"थे अठै कद आया[13]।" तरै कह्यो—"मास च्यार हुवा।" कह्यो—"हमैं कासूं विचार[14] ?" तद देवै कह्यो—'म्हे थां ऊपर वीड़ो लियो छै[15]। अठै वळै आवस्यो तो थांनूं मारस्यां[16]। पछै हरराज कह्यो—"हमैं पछै हूं नहीं आवूं" तरै मांहो-मांहे सुख हुवो। नै पागड़ा छाड़िया[17], उतर मिळिया। तठा पछै कितरैएक दिनै देवै हरराजनूं आपरी वेटी दी। सु वा देवारी वेटी निपट फूटरी छै[18]। तद मैणो वडेरो छै तिको देवानूं कहै—"म्हांनूं परणावै[19]" इग घणा ही उजर किया[20]। मैणा मांनै नहीं। तद वेटी देणी करी। पछै हरराज डोड कोसीथुर सोळंकी सगा रहता तिके तेड़ मीणांनूं सड़ां मांहै घात कूट-मारिया। देवै वूंदी इण तरै लीवी।

अथ हाडांरै पीढियांरी विगत—

१. राव लाखण[21]—नाडूल धणी। २. बली।[22]

---

1 उस ओरसे मैणों ने हरराजको आते हुए देखा। 2 घरोंमें घुसगये। 3 चावुक। 4 मारा। 5 पीछा लौटाया। 6 देवा उसके पीछे हुआ। 7 वीचमें एक गहरी छोटी नदी थी। 8 कूदकर, लांघकर। 9 दोनों। 10 तुम कौन ?। 11 कहांसे आये ? 12 वूंदीका रहने वाला चौहान देवा मेरा नाम है। 13 तुम यहां कव आये ? 14 अव क्या विचार है ? 15 हमने तुमारे विरुद्ध वीड़ा उठाया है अर्थात् तुम्हें मारनेका निश्चय किया है। 16 यहां फिर कभी आवोगे तो तुम्हें मारदेंगे। 17 घोड़ोंसे उतरे और परस्पर अंक भरकर मिले। 18 अत्यन्त रुपवती है। 19 मुझको व्याह दे। 20 उसने वहुत ही एतराज किया। 21 राव लाखण वड़ा वीर और नीतिज्ञ था। इसने नाडोलको अपने अधिकार में कर लिया था। यह सांभर नरेश वाक्पतिराजका छोटा पुत्र था। 22 कई प्रतियोंमें लाखणके वाद 'गोहित' वा 'सोही' नाम लिखा है और 'सोहितके' वाद 'वली' वा 'वलराज' मिलता है। यही शुद्ध है।

३. सोहित ।
४. महदराव ।
५. अणहल ।
६. जिंदराव ।
७. आसराव ।
८. माणकराव ।
९. संभरांण ।
१०. जैंतराव ।
११. अनंगराव ।
१२. कुंतसीह ।
१३. विजैपाल ।
१४. हाडो[1] ।
१५. बांगो ।
१६. देवो बांगारो, जिण बूंदी मैणां कना लीवी।

हाडो देवो बांगारो परवार—

२. समरसी ।

२. जीतमल–तिणरी बेटी जसमादे[2] हाडी रावजोधारै पटरांणी राव सूजारी मा। २ भागचंद । २ रायचंद । २ राव रामचंद ।

समरसी देवारो आंक २—

३ नापो । ३ हरराज । ३ हाथी ।

नापो समरसीरो आंक ३—

४ हांमो टीकायत[3] । ५ लालो, तिणरी ओलादरा नव-ब्रह्म[4] लखांनखेड़ैवाळा हाडा छै । ५ वरसिंघ । ६ वैरो । ६ लोहट – लोहट-वाळीरा[5] हाडा छै । ६ जब । जबदूरा वांसला मियांरै-गुढै रहै छै[6]।

जबदू हांमारो आंक ६ ।

७ वछो । ८ साहरण । ९ मीयां । ९ सांवळदास ।

साहरणरो आंक ८ ।

९ सांवत । १० बळकरण । ११ जोध । १२ दुरगो । १० तेजो । ११ मांन । ११ नारण । १० दोलतखांन । ११ रूपसिंघ । १० खींवो । १० ऊदो । ११ रार्यासिंघ । ११ तुलछीदास । १० कलो ।

---

1 कोटा बूंदी आदिके चौहानोंकी 'हाडा' संज्ञा इन्हींके नामसे हुई। 2 जीतमलकी पुत्री जसमादे हाडी जोधपुर बसानेवाले राव जोधाकी पटरानी और रावसूजाकी माता थी। 3 राज्यगद्दीका अधिकारी। 4 लखानखेड़ा वाले लालाके वंशज नव-ब्रह्म-हाडा कहलाते हैं। 5 लोहटके नामसे प्रसिद्ध 'लोहटवाळी' प्रदेशके हाडा इसी नामसे प्रसिद्ध हैं। 6 जवदू के पीछेके (वंशज) 'मियां-रो-गुढो' नामक गांवमें रहते हैं।

वैरो वरसिंघरो आंक ६—

७ भांडो। ८ नारणदास भांडारो। बूंदी धणी। रावसूजारी वेटी खेतूबाई परणियो हुतो[1]। अमल[2] निपट घणो खावतो। सु नारणदास पैसाव करण वैठो हुतो सु यूंहीज ऊंघियो[3]। सु खेतूवाई राव ऊपर साड़ीरो छेह नांखनै ऊभी रही[4]। यूं करतां सवार हुवो, रावरी आंख खुली[5]। देखे तो खेतू ऊभी छै। तरै राव राजी हुवो। कह्यो–"मांहरा घर-सारू[6] थे जांणोसु[7] मांगो। तरै वाई कह्यो–"मांहरै तो थांरी सलांमतीसू[8] सोह थोक[9] छै, पिण रावळो[10] अमलरो पोतो[11] मो कनै[12] रहै।" तरै पोतो खेतूनूं सांपियो। खेतू अमल दिन २ वटायो। तठा पछै वाईरै[13] सूरजमल बेटो हुवो। पछै नारणदास एक वार रांणा सांगारी वार पातसाह मांडवरो झालियो छै[14]। ९ सूरजमल वडो आखाड़सिध[15] रजपूत हुवो। रांणा रतनसी सांगावतनूं मरतो ले मूवो[16]।

हाडो मींयो[17] वछारो, आंक ८।

९ सांवळदास। १० चंद्रभांण। ११ नरहरदास। भावसिंघ रै परधांन। मींयारै खैड़ै सादियाहेड़ै रहै छै[18]।

वात हाडै सूरजमल नारणदासोतरी नै रांणा रतनसी सांगावत मांमलो हुवो तिण समैरी[19]।

रांणो सांगो रायमलोत चीतोड़ राज करै छै। टीकायत बेटो रतनसी राठोड़ धनाईरै[20] पेटरो छै। रांणो सांगो पछै हाडी करमेती, हाडा नरवदरी वेटी परणियो थो। सु रांणो करमेतीसूं घणी मया

1 जोधपुरके राव सूजाकी पुत्री खेतूवाईको व्याहा था। 2 अफीम। 3 पैशाव करते हुएको ही नींद आगई। 4 खेतूवाई पैशाव करते हुए निद्रित नारायणदासके ऊपर अपनी साड़ीका छोर डालकर खड़ी रही। 5 इसी प्रकार प्रातःकाल होगया तव राव नारायणदास की नींद उडी। 6 हमारे घरकी सामर्थ्यानुसार। 7 चाहे जो। 8/9 मेरे तो आपकी कुशलपूर्वक विद्यमानतासे सभी वस्तुएं हैं। 10 आपका। 11 अफीमका वटुआ। 12 मेरे पास। 13 जिसके वाद खेतूवाईके सूरजमल नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। 14 पकड़ा है। आश्रय लिया है। 15 महावली। 16 सूरजमल मरता हुआ रतनसीको भी ले मरा। 17 वछाका पुत्र हाडा मींया। 18 मींयाका गाँव सादियाहेड़े रहता है। 19 नारायणदासका पुत्र हाडा सूरजमल और सांगाका पुत्र रतनसीके परस्पर युद्ध हुआ उस समयका वर्णन। 20 राव सूजाका पुत्र वाघाकी कन्या राठोड़ धनाईकी कोखसे रतनसीका जन्म हुआ।

करै छै[1]। पछै करमेतीरै बेटा २ हुवा—विक्रमादित, उदैसिंघ। तिणांसूं रांणो घणी मया करै छै। सु एक दिन दीवांणसूं करमेती अरज कीवी—"दीवांण घणा दिन सलांमत रहै, पिण विक्रमादित उदैसिंघ नान्हा[2] छै। रावळै टीकाइत साहबीरो धणी रतनसी छै। राज बैठां कांइक इणांरो सूं'ल[3] करो तो भलो छै।" तरै रांणै पूछियो—"थे किण भांत अरज करो छो।" तरै करमेती हाडी कह्यो—"इणांनूं रिणथंभोर सारीखी ठोड़ रतनसी नै पूछनै दीजै नै हाडा सूरजमल सारीखा रजपूतनूं बांह झलाईजै[4]। आ वात दीवांण ही कबूल करी। सवारै दीवांण जुड़ियो[5], तरै कवर रतनसीनूं रांणै सांगै कह्यो—"विक्रमादित उदैसिंघ थारा लोहड़ा[6] भाइ छै। तिणांनूं एक पग-ठोड़[7] दीनी चाहीजै।" सु रांणो वडो दूठ[8] ठाकुर छो, सु रतनसी क्युं[9] फेर कही सक्यो नहीं। कह्यो—"रावळै विचार आवै सु ठोड़ दीजै।" तरै रांणै रतनसीनूं कह्यो—"रिणथंभोर इणांनूं[10] दो।" तरै रतनसी कह्यो—"भलां।" तरै रांणै विक्रमादित उदैसिंघनूं कह्यो—"म्हे थांनूं रिणथंभोर दियो। थे ऊठ तसलीम करो[11]।" तरै इणे तसलीम करी। तरै हाडो सूरजमल दरबार बैठो थो। तरै रांणै सांगै सूरजमलनूं कह्यो—"म्हे विक्रमादित उदैसिंघनूं रिणथंभोर दां छां[12] सु थे इणांरी बांह झालो। अै म्हें थांहरै खोळै घातां छां[13]।" तरै सूरजमल कह्यो—"म्हांरै इण वातसूं कांम कोई नहीं। हूं चीतोड़ टीके बैसै जिणरो चाकर छूं। म्हारै इणसूं कोई तलो[14] नहीं।" तरै रांणै सांगै वळै घणो हठ कर कह्यो—"अै डावड़ा[15] नान्हा छै। थांहरा भांणेज छै। बूंदीसूं रिणथंभोर निजीक छै। तूं भलो रजपूत छै। तद इणांरी बांह तोनूं झलावां छां।" सूरजमल अरज कीवी—"दीवांण फुरमावो सो तो सिर-माथा ऊपर[16]। म्हे हुकमरा चाकर छां[17]। पिण दीवांणनूं सौ वरस पोहचै[18] तरै म्हांनूं रतनसी मारणनूं तयार हुवै,

---

1 राना करमेतीके ऊपर बड़ी कृपा रखता है। 2 छोटे हैं। 3 आपके बैठे इनका भी कुछ प्रबंध करदें तो भली वात है। 4 सुपुर्द करदें। 5 सवेरे दरबार जुड़ा। 6 छोटे। 7 रहनेका स्थान। 8 जबरदस्त। 9 कुछ भी। 10 इनको। 11 प्रणाम करो। 12 देते हैं। 13 तुमारी गोदीमें रखते हैं। 14 मतलब। 15 बच्चे। 16 शिरोधार्य। 17 हमतो आज्ञाका पालन करनेवाले सेवक हैं। 18 सौ वरस पोहँचे मरजाना।

तिणवास्तै म्हांसूं आ वात दीवांणरै कहै ह्वै नहीं। नै रतनसीजी फुरमावै तो वात अलादी[1] छै।" तरै रांणै रतनसी सांमो जोयो। रतनसी कह्यो सूरजमलनूं–"थे दीवांण हुकम करै सु करो। अै म्हांरा भाई छै। थे म्हांरा सगा छो। रजपूत छो। म्हे थांसूं[2] बुरो मांनां नहीं।" तरै सूरजमल दीवांण कह्यो त्यूं कियो। रांणै सांगै रिणथंभोर विक्रमादित उदैसिंघनूं दियो। इणे जाय अमल[3] कियो।

हाडो नाराइणदास मूवो तरै रांणै सांगै सूरजमलनूं टीको मेलियो। लाल-लसकर-घोड़ो अैराकी कीमत रु० २००००), हाथी मेघनाद कीमत रु० ६००००) री, रो दियो। रांणो सांगो हाडा सूरजमलथी[4] बेटांथी[5] इधको प्यार करै छै। आ वात अठै ही रही।

तठा पछै कितराएक दिने रांणै सांगै काळ-कियो[6]। टीके रतनसी वैठो। हाडी करमेती आपरा बेटांनूं ले रिणथंभोर गई। रतनसीरी छाती मांहै रिणथंभोर भावै नहीं[7]। पूरविया पूरणमलनूं रिणथंभोर मेलियो। कह्यो–"थूं विक्रमादित उदैसिंघनूं तेड़ लाव[8]।" तरै ओ रिणथंभोर गयो। तरै हाडी करमेती कह्यो–"अै तो डावड़ा नांह्वा छै। इणांरो जवाब सूरजमलजी करसी। तरै ओ बूंदी सूरजमलजी कनै गयो। जायनै कह्यो–"रांणै रतनसी विक्रमादित उदैसिंघनूं तेड़ाया[9] छै। सु वे कहै छै–"मांहरो जवाब सूरजमलजी करसी।" तरै सूरजमल कह्यो–म्हे ही आवां छां, तरै दीवांणसूं हकीकत[10] मालम करस्यां।"

तरै पूरणमल चीतोड़ आयो। रांणै हकीकत पूछी तरै इण कह्यो–"वे तो घणूं ही आवै पिण सूरजमल आवण दै नहीं[11]।" तरै रतनसीरै डील आग लागी[12]। आगै पिण टीकारो सूरजमल हाथी १ घोड़ो १ ले आयो थो, सु रतनसी राखिया नहीं। कह्यो–"रांणै सांगै तोनूं

1 और रतनसी कहदें तो वात दूसरी है। 2 आपसे। 3 अधिकार। 4 के साथ। 5 से। 6 मर गया। 7 विक्रमादित्य और उदयसिंहके अधिकारमें रणथंभोरका रहना रतनसीको सहन नहीं होरहा है। 8 बुलाकर ले आ। 9 बुलाया है। 10 तब रानाको वृत्तान्त निवेदन करूंगा। 11 करमेती तो भेजनेके लिये तैयार है परन्तु सूरजमल आने नहीं देता। 12 तब रतनसीके शरीरमें क्रोधाग्नि उठ गई।

लाल-लसकर-घोड़ो, मेघनाद हाथी टीके दिया सु मोनूं दै[1] ।" इण कह्यो—"हूं क्यूं जाट पटेल थो नहीं, सु चारण दिया था, सु हमैं पाछा मांगिया दूं[2] ?" वात कराड़ां[3] बारै हुई ।

रांणो रतनसी सूरजमलनूं मारणरा दाव-घाव[4] करै छै । तिण समै चारण भांणो, मीसण जातरो, मोड़ारो वारहठ, चीतोड़रै गांव राठ-कोदमिये रहै छै । सु नावजादी[5] चारण छै । वडो आखरांरो कहणहार छै[6] । सु भांणारा जजमांन[7] गोड़ छै । बूंदीरा चाकर छै । तिणां कनै जाय छै । मास १ दुय मास उठै रहै । तरै भांणो हाडा सूरजमलरै पिण उठै जावै, तरै मुजरो करै । गुणे गीतां गावै[8] । तद सूरजमल घणी मया करै छै । एक दिन सूरजमलजी कह्यो—"भांणाजी ! हालो[9] ! सूरांरी सिकार जावां !" भांणो नै सूरजमल सिकार सूरांरी गया । बीजो साथ हाके मेलियो[10] । भांणो नै सूरजमल दोय जणा हीज हुता । सूर तो हाथ नाया[11] नै दोय रीछ आजाजीत[12] आगै पाछै आया । इसड़ा कदै आंखियां ही दीठा नहीं[13] । जिणां दीठां मरीजै । सु सूरजमल उणसूं बाथां हुवो[14] । एक कटारीसूं मार पाड़ियो । तितरै दूजो आयो । उणनूं ही उणहीज भांत मारियो । भांणनूं वडो इचरज आयो[15] । सु भांणै कह्यो—"थे कांसू कियो[16] ?"

तरै कह्यो—"कासूं करां[17], मांडां गळै पड़िया[18] ।" पछै पाछा आया । भांणै गीते-गुणे सूरजमलनूं रीझावियो[19] । तरै सूरजमल जांणियो—लाल लसकर-घोड़ो नै मेघनाद हाथी लारे रांणो पड़ियो छै । सु माहरा परधांन रजपूत मोनूं दबायने रांणानूं दिरावसी, तो

---

1 मुझको दे । 2 मैं कोई जाट पटेल तो था नहीं जिसको चरानेके लिये दिये हों सो अब मांगने पर मैं वापस करदूं । 3 बात सीमा बाहर हो गई । 4 मारनेका अवसर और उपाय । 5 विख्यात । 6 वड़ी चमत्कारी कविता करने वाला है । 7 यजमान । 8 गुणोंकी कविता बना कर सुनाता है । 9 चलें । 10 साथके दूसरे मनुष्योंको शिकार खोज कर घेर लानेके लिये भेज दिया । 11 सूअर तो हाथ नहीं आये । 12 जो किसीसे भी जीते नहीं जा सकें । 13 ऐसे कभी आंखोंसे देखे नहीं । 14 सूरजमल उससे बाहु-युद्ध करने लगा । 15 आश्चर्य हुआ । 16 आपने यह क्या ही आश्चर्यजनक काम किया ? 17 क्या करें । 18 बलात आकर ऊपर पड़ गये । 19 भाणाने सूरजमलके गुणोंके गीत गाकर प्रसन्न किया ।

हूं भांणा सरीखा पात्रनैं[1] दे नै अमर करूं। घोड़ो हाथी दोनूं भांणानूं दिया। भांणानूं वड़ी मोज दे[2], लाख[3] दे विदा कियो। सु रांणारो डेरो चीतोड़थी कोस १० सिकार रमणरे मिस कियो छै। मन मांहै सूरजमल मारणरो मतो छै। रांणी पंवार रावत करमचंदरी बेटी साथै छै। सु भांणो उठै आयो दीवांणरै मुजरै[4]। तरै दीवांण पूछी—"कठै हुता[5] ?" भांणै अरज कीवी—"वूंदी हुतो।" तरै रतनसी कह्यो—"सूरजमलरी वात कहो।" तरै घणा सूरजमलरा वखांण[6] किया। तरै रांणानूं सुहांणौ नहीं। भांणो समझ्यो नहीं। जु रांणो इणसूं इतरी कुमया[7] करै छै। तरै रांणै पुछियो—"इतरा सूरजमलरा वखांण करो छो सु इतरो सूरजमलमें कासूं दीठो[8] ?" तरै भांणै रीछांरी वात मांड कही नै कह्यो[9]—"दिवांण ! सूरजमल इसड़ो रजपूत छै सु जिको उणनूं मारै सु कुसळै न जाय।" तरै रांणै इण वात ऊपर बोहत भांणासूं वुरो मांनियो। तितरै किणी एक भांणनूं पूछियो—"थे इतरो सूरजमलरो जस करो सु हमार थांनूं कासूं दियो ?" तरै कह्यो—"मोनूं लाल लसकर-घोड़ो, मेघनाद हाथी नै लखपसाव दियो।" तरै रांणारे वळै जोर आग लागी[10]। भांणनूं कह्यो—"थे मांहरी हदमें मत रहो, थे वूंदी जावो।" तरै भांणौ पूंछ-झाटक[11] ऊठियो। पाछो वूंदीनै हालियो[12] तठा पैहलो आ खवर सूरजमलनूं पोहती[13]। सूरजमल सामां आदमी भांणरै मेलिया। घणो आदर कर तेड़ हिरणांमो गांव सांसण कियो[14]। घोड़ा, हाथी, लाखपसाव घणोई द्रव्य दियो। कह्यो—"म्हारो भाग ! दीवांण मोसौं वडी मया करी। भांण सरीखो पात[15] दियो।" सु रांणो सिकार खेलतो-खेलतो वूंदी दिसा आवै छै। सूरजमल कनै

1 भाणाके समान सुपात्र चारणको दानमें दे अपना नाम अमर करदूं। 2 सुख पहुंचाया। 3 लाख-पसाव नामक दान देकर विदा किया। 4 भाणा वहां पर राणाकी सेवामें प्रणाम करनेको आया। 5 कहां थे ? 6 प्रशंसा। 7 अच्छा नहीं लगा। 8 अवकृपा रखता है। 9 क्या देखा ? 10 तव भांणने रीछोंको मारनेकी वात विस्तारपूर्वक कही और फिर कहा। 11 रानाके और अधिक क्रोधाग्नि भभक उठी। 12 एकदम। 13 चल दिया। 14 पहुँची। 15 हिरणामो गांव शासन-दानमें दिया।

आदमियां ऊपर आदमी आवै छै—"सताव[1] आवो।" सूरजमल जांणै छै—"जाऊं क न जाऊं?" तरै एक दिन माजी खेतू राठोड़नै पूछियो—"मोनूं राणारा आदमियां ऊपर आदमी तेड़ा[2] आवै छै। मोसूं रांणो बुरो छै। मोनूं मारसी। कहो तो विखो कर रांणानूं हाथ दिखाऊं।" तरै मा कह्यो—"इसड़ी वात क्यूं कीजै? आंपै इणांरा सदा चाकर छां। इसड़ी[3] तो आज पैहली आंपांसूं बुरी कोई हुई नहीं। जो रांणो तोनूं मारसी तोही सताव रांणा कनै जावो। घणी चाकरी करो।" तरै सूरजमल रांणा कनै गयो। गोकह्नरै[4] तीरथ वाळो वाजणो गांव वूंदी चीतोड़री गड़ासंध[5] छै, तठै आय मिळियो। रांणो मनमें घणी खोट[6] राखै छै। नै सूरजमलरो आदर घणो कियो। 'सूरजमल भाई!' कह वतळायो। पछै एकण दिन कह्यो—"म्हे एक हाथी लियो छै, तिण म्हे भेळी[7] असवारी करां।" पछै उण हाथी रांणो चढ़ियो। सूरजमल ही घोड़ै चढ़ आयो। एकण ठोड़ सांकड़ी दिसी[8] सूरजमल ऊपर हाथी वहतो थो। रतनसी आप चढ़ियो थो। सूरजमल ऊपर हाथी झोकियो[9], सु सूरजमल घोड़ो लात मार काढ़ दियो[10]। दाव टाळियो। सूरजमल रीस करी। रांणै कह्यो—"हाथी माडां[11] आयो। घणी हळभळ की[12]।" दिन एक आडो घातनै कह्यो—"आंपै सिकार सुअरांरी मूळांरी[13] खेलस्यां।" तरै सूरजमल कह्यो—"भली वात।"

एक दिनरी वात छै। रांणो पंवार रांणी आगै कहै छै[14]—"एक म्हे सासतो सूअर—एकल मारस्यां[15]। थांनूं तमासो दिखावस्यां।"

तीरथ गोकह्नरै पंवार रांणी सिनांन करण गई थी। तथा पैहली सूरजमल सिनांन करण गयो थो। सु पंवार आई तरै सूरजमल

1 शीघ्र। 2 बुलावे पर बुलावे आते हैं। 3 ऐसी। 4 'गोकर्ण' नामक तीर्थ-स्थान जो टोडारायसिंहके पास है। 5 निकट। 6 दगा। 7 साथमें सवारी करें। 8 सँकड़े मार्गकी ओर। 9 डाल दिया। 10 किन्तु सूरजमलने घोड़ेको लात मार कर आगे निकाल दिया। 11 हाथी बलात् आ गया। 12 प्रसन्न करनेके लिये खुशामदकी बातें की। 13 किसी बड़े वृक्ष आदिकी खोहमें दबकर शिकारकी टोहमें बैठे रहनेका स्थान। 14 राना अपनी पंवार जातिकी रानीसे कह रहे हैं। 15 आज हम एक बहुत बलवान् सूअरको मारेंगे।

धोतियो हीज पैहर कनै हुय नीसरियो तरै पंवार सूरजमलनूं दीठो। किणहीनूं पूछियो–"ओ कुण ?" तरै कह्यो–"ओ सूरजमल हाडो बूंदीरो धणी, जिणसूं दीवांण कुमया करै छै।" तरै पंवार समधी[1]–"रांणो सूअर-सूअर करै छै सु इणनूं मारण मतै छै।" रातै पंवार गई तरै रांणै वळै वात सूअररी चलाई। तरै पंवार कह्यो–"ओ सूअर म्हे दीठो[2]। उणरौ नांव थे मत ल्यो।" तरै रांणो कह्यो–"थें कासूं[3] दीठो ?" तरै इण सूरजमलरी वात कही। तरै रांणै कह्यो–"तूं कासूं जांणै ?" तरै पंवार कह्यो–"उणनूं छेड़सी सु कुसळै न आवै।" तद रांणै वुरो मानियो। पछै सवारै रांणो सूरजमलनै ले सिकार गयो। मूळै बैठा। दूजो साथ आपरो, पारको दूरो कियो[5]। रांणो नै पूरणमल पूरवियो छै। सूरजमल नै सूरजमलरो एक खवास छै। तिण समै रांणै पूरणमलनूं कह्यो–"तू सूरजमलनै लोह कर[6]।" सु इणसूं लोह कियो न गयो। तरै रांणै घोड़ै चढ़ सूरजमलनूं झटको वायो[7]। सु माथारी खोपरी ले गयो। सूरजमल ऊभो[8] छै। तितरै[9] पूरणमल तीछेर[10] वाह्यो सु सूरजमलरी साथळ[11] लागो। सूरजमल दोड़ नै पूरणमलनूं पाड़ियो[12]। उण कूकवा किया[13]। तरै रांणो उणरा ऊपरनूं वळै आयो। सूरजमलनूं लोह वाह्यो। सूरजमल वागरी[14] जेह[15] झालनै[16] कटारी गळा नीचासूं वाही सु रांणारी सूंटी[17] आवतां रही। रांणो घोड़ासूं हेठो पड़ियो[18]। पड़तेहीज पांणी मांगियो। तरै सूरजमल कह्यो–"काळरा-खाधा[19] हमें पांणी पी सकै नहीं।" पछै सूरजमल रांणो वेहूं मुंवा। पंवार सती हुई। रांणारो दाग पाटण हुवो। रतनसीरै वेटो कोई न हुतो[20]। तरै रजपूते सारै मिळनै करमेती हाडी नै विक्रमादित उदैसिंघनूं रिणथंभोरसूं तेड़ लिया[21]। अै आया।

---

1 समझ गई। 2 इस सूअरको हमने देखा। 3 तुमने कैसे देखा ? 4 आश्रय-स्थानमें दवकर बैठ गये। 5 अपने और पराये मनुष्योंको दूर भेज दिया। 6 उस समय राणाने पूर्णमलको कहा कि—तू सूरजमल पर तलवारसे प्रहार कर। 7 तलवारसे प्रहार किया। 8 खड़ा है। 9 इतनेमें। 10 एक प्रकारका छोटा भाला। 11 जांघ। 12 गिरा दिया। 13 चिल्लाया। 14 घोड़ेकी वाग। 15 सिरा। 16 पकड़कर। 17 नाभिमें पार हो गई। 18 नीचे गिर गया। 19 काल-कवलित। 20 न था। 21 वुला लिये।

विक्रमादितनूं टीको हुवो । विक्रमादित उदैसिंघ सूरजमलरा बेटा । सुरतांणनूं बूंदीरो टीको दियो ।

भांडो वैरारो आंक ७ ।

८. नरवद भांडारो ।

९. उरजण नरवदरो । रांणा उदेसिंघरो नांनो । उरजण चीतोड़ कांम आयो । भुरजनूं सावात[1] लागी तरै सुणीजै छै–तीन जणा उडिया । तिणां उड़तां तरवार काढ़ी सु तिकांमें एक उरजण ।

९. भीमरा वंसरा लाठी कर लें[2] । गांव बूंदीसूं कोस ६ तठै छै ।

९. पंचाइण ।

१०. पूरो ।

११. मांन पूरारो ।

१२. केसोदास मांनरो ।

१३. प्रताप हींडोळ[3] वसै ।

९. हरराज नरवदरो ।

९. मोकल ।

९. अखैराज ।

हाडी करमेती रांणा उदैसिंघरी मा, नरवदरी बेटी ।

वात

हाडो सूरजमल, रांणो रतनसी बेहू[4] कांम आया । रतनसीरै बेटो हुवो नहीं । तठा पछै टीकै विक्रमादित बैठो सु थोड़ाही दिन जीवियो । नै विक्रमादितरै फेर चीतोड़ पातसाह बहादर तोड़ियो[5] ।

---

1 सुरंग । 2 भीमके वंशज लाठीमें कर लेते हैं । 3 प्रताप हींडोले नामक गाँवमें बसता है । 4 दोनों । 5 विक्रमादित्यके समयमें गुजरातके बादशाह बहादुरने चित्तौड़को तोड़ा ।

उरजण कांम आयो। तठा पछै चीतोड़ उदैसिंघ टीकै वैठो, तरै सूरजमलरा बेटा सुरतांणनूं तेड़ बूंदीरो टीको दियो। सु सुरतांण कुलखणो[1] ठाकुर हुवो। हाडो सहसमल, सातळ बूंदी वडा उमराव हुता। तिणांरी सुरतांण रीसाय नै आंख काढ़ी[2]। और ही उपाध करै[3]। तरै बूंदीरा उमराव सारा रांणा उदैसिंघ कनै आया। कह्यो–"ओ धरती लायक नहीं[4]।" तरै उरजन आगै थोड़ो सो पटो पावतो। चीतोड़ कांम आयो हुतो। नै सुरजण रांणारो चाकर हुतो. गांव १२ पटो पावतो। पछै वार एक जगनेर कांम दीवांणरै पड़ियो थो तठै सुरजन घावै पड़ियो हुतो[5], तरै दीवांण फूलियारो परगनो दियो हुतो। पछै फूलियो तागीर कर बधनोर दी हुती। तिण समै सुरतांणरी आ ख़बर बुरी आई तरै रांणै उदैसिंघ सुरजननूं बूंदी दीवी। टीको काढ़ियो। रजपूत सारा आय मिळिया। सुरजन दिन-दिन वधतो गयो। रांणै वडो इतबार कर इतरा गढ़ पटै देनै रिणथंभोररी कूंची सूंपी।

१ बूंदी गांव ३६०।
१ पाटण।
१ कोटो।
१ कटखड़ो।
१ लाखेरो गांव।
१ नैणवाय।
१ आंरतदो।
१ खैरावद–गांव ८४। बूंदीसूं कोस ३५।

राव उरजण नरवदरो आंक ९—

१० राव सुरजण।
१० रांम।

---

1 कुलक्षणों वाला। 2 सुरतानने क्रोध करके जिनकी आंखें निकलवा दीं। 3 और भी कई उपद्रव करता रहता है। 4 पृथ्वी पर राज्य करने योग्य नहीं। 5 वहां सुरजन घावोंसे जर्जरित होकर गिर गया था।

११ दूदो–लकड़खांनरो । जैसा भैरवदासरी बेटी जसोदारो ।

११ जीतमल ।

११ नरहरदास ।

१२ सांईदास । बूंदीरै वणखेड़ै ।

१३ रूपसी ।

१३ प्रतापसी ।

१३ सकतसिंघ ।

११ रायमल ।

१२ रांमचंद । तिणरै वंसवाळा पीपळू छै ।

११ राव भोज सुरजणरो । आहाड़ा हिंगोलारी बेटी कनकावतीरा पेटरो[1] । कोई कहै जगमाल लाखावत आहाड़ारी बेटीरो[2] ।

हाडा सुरजनरो वडो इतबार रांणै ऊदै कनै[3] परगना ७ पटै दीना । गढ़ रिणथंभोररी कूंची देनै थांणादार कर राखियो । रांणै उदैसिंघ सांदू रांमारै मांमलै सीसोदियो भांणो गोती[4] हाथसूं मारियो । तरै आप द्वारकाजी जात पधारिया तरै सुरजन साथै हुतो । तद रिणछोड़जी द्वारो इसड़ो न हुतो[5] । पछै सुरजन दीवांण कना हुकम मांगियो, कह्यो–"कहो तो हूं रिणछोड़जीरो देहुरो फेर कराऊं ?" दीवांण कह्यो–"भली वात ।" तरै सुरजन रिणछोड़जीरो देहुरो हमार विराजै छै सु करायो[6] । पछै संमत १६२४ अकबर पातसाह चितोड़ तोड़ियो । रा० जैमल, ईसर सीसोदियो, पतो जगावत कांम आया । पाछा वळतां रिणथंभोर घेरियो । वरस १४ सुरजननूं

---

1 कनकावतीकी कोखसे उत्पन्न । 2 कोई कहते हैं कि लाखाके पुत्र जगमालकी पुत्रीसे उत्पन्न । 3 हाडा सुरजनका राना उदयसिंहके निकट बड़ा भरोसा । 4 सांदू रामाचरणके लिये अपने गोत्री भांणाको रानाने अपने हाथसे मार दिया था । 5 तब श्री द्वारकाके रणछोड़जीका मंदिर ऐसा नहीं था । 6 तब सुरजनने श्री रणछोड़जी का मंदिर जैसाकि अबतक बना हुआ है—नया बनवाया ।

गढ़में रहतां हुवा था । पछै सुरजनरो वळ छूटो । तरै कछवाहै भगवंतदाससूं वात करायनै संमत १६२५, चैत सुद ६ पातसाहसूं मिळियो । इतरी वातरो कौल कियो–"हूं रांणारी दुहाई खाईस[1] । रांणा ऊपर विदा नहीं हुवां[2] ।" गढ़ पातसाहनूं दियो । सुरजन पातसाहसूं आय मिळियो । परगना ४ चरणां ७ वांणारसी दिसला[3] दिया । पातसाह आगरै जायनै सीसोदियो पतो जगावत, रावत जैमल वीरमदेओत आगरारी पोळ हाथियां चढ़ाय मांडिया[4] । सुरजननूं कूकररी भांत मंडायो[5] । तरै सुरजन गाढ़ो लाजियो[6] । पछै वांणारसी गयो । उठै सुरजनरा कराया मोहळ[7] छै । सु सुरजनरो छोटो वेटो थो, पातसाहरै पावै रह्यो । नै वडो बेटो दूदो रिणथंभोर थो हीज । रांणा उदैसिंघ कनै गयो । रांणै क्युं रोजीनो कर दीनो[8] । पछै सुरजन वेगो हीज मूंवो । तरै पातसाह टीको दे नै बूंदी भोजनूं दीवी । दूदै वूंदी थी ग्रासवेध मांडियो[9] । सासतो धूंकळ करै[10] । धरती वसण दै नहीं । वेळा १० आगरै अंवखास मांहै आय भोजसूं मांमलो कियो[11] । तद रतन दूदा कनै रहतो । पछै दूदानूं विस हुवो[12] । पछै भोज बूंदी आयो । खराब हुई धरती भौज वसाई । धरती दिन-दिन रस पड़ती गई[13] ।

++

---

1 मैं शपथ राणाकी उठाऊंगा। 2 राणाके ऊपर चढ़ाई करके नहीं जाऊंगा। 3 तरफके। 4 पत्ता और जैमल बड़े वीर थे । चित्तौड़में बड़ी वीरतासे लड़कर काम आये इसलिये बादशाह अकबरने प्रसन्न होकर आगरेके किलेके द्वार पर इन दोनोंके चित्र हाथी पर बैठाकर चित्रित करवाये । तभीसे यह रिवाज राजमहलों और मंदिरों आदिके द्वारों पर इनके चित्र मँडवानेका चालू हुआ । 5 अपने हाथसे रणथंभोरका किला सुपुर्द कर देनेके कारण सुरजनका चित्र कुत्तेकी भांति बनवाया । 6 खूब लज्जित हुआ । 7 महल । 8 राणाने दैनिक वेतन नियत कर दिया। 9 दूदेने बूंदीके साथ (कर-वसूलीके सम्बन्ध में) लूट-खसोट करना शुरू कर दिया । 10 निरन्तर उत्पात मचाता रहता है । 11 दस वार आगराके आम और खास दरबारमें आकर भोजसे बखेड़ा किया । 12 दूदा विष देकर मार दिया गया । 13 दिन प्रतिदिन भूमि बसने लगी ।

बूंदीरा देसरी हकीकत

संमत १७२१ रा जेठ मांहै रा० रांमचंद जगनाथोत[1] मंडाई। बूंदी सहर भाखर लगती[2] वसै छै। रावळा-घर[3] भाखरके आधोफरै[4] छै। पिण मांहै पांणी मांमूर[5] नहीं। सहर आयो पीजै[6]। भाखर वाळारो सहर लगतो[7]। झाड़[8] घणा। वळारै भाखरमें पांणी घणो। सहर मांहै पाखती[9] पांणी घणो। वडो तळाव सूरसागर, तिणरी मोरी[10] छूटै छै, तिणसूं वाघ-वाड़ी घणा पीवै[11]। वागे[12] आंबा फूलाद[13] चंपा घणा। सहर वस्ती उनमांन[14] घर ५०० वांणियांरा, घर १०० बांभण-विणजांरारा[15], घर सो पांच भईया-हीड़ागरांरा[16]।

राव भावसिंघनूं हमार[17] जागीरमें इतरा[18] परगना छै। तिणांरा गांव–

३१६ प्र० बूंदी।

३६० खटखड़ बूंदीसूं कोस ६।

८४ पाटण बूंदीसूं कोस १२।

४२ लाखेरी गोडां वाळी, बूंदीसूं कोस ६।

बूंदीरी पाखती हाडोतीरा परगना–

१ परगनो मऊ खीचियांरो। उतन मऊरा परगना मां है। सिंध भली नदी सदा बहती रहै छै। मऊसूं कोस ७ गांव धूळकोट छै तठै नीसरै छै[19]। पांणी मूळ घुंडवांणरो आवै छै[20]। आहीज[21] नदी गढ़ गांगुरणरै हेठै[22] नीसरै छै। तिको मऊरो परगनो राव रतन

---

1 जगन्नाथके पुत्र राव रामचंदने संवत् १७२१ के ज्येष्ठ मासमें लिखवाई। 2 पास। 3 जागीरदारके घर। 4 मध्यमें। 5 सर्वथा। 6 शहरमें आने पर पानी पीनेको मिलता है। 7 अरावली पहाड़ शहरके निकट। 8 वृक्ष। 9 पास। 10 मोरी वहती है। 11 जिससे वाग और बाड़ियोंको वहुत पानी सींचा जाता है। 12 बागोंमें। 13 पुष्पों वाले वृक्ष और पौधे। 14 अनुमान। 15 ब्राह्मण-बनजारे, बैलों पर माल इधरसे उधर ला-लेजा कर क्रय-विक्रय करने वाली एक प्रसिद्ध व्यापार करने वाली जाति। 16 पांच सौ घर छुट भाई नौकरोंके। 17 अभी। 18 इतने। 19 मऊसे। 20 कोस पर धूलकोट गांवके पासमें होकर निकलती है। 21 गुंडगांवके श्रोतका पानी ही मुख्यकर इसमें आता है। 22 यही।

मार लियौ[1]। वूंदीथी कोस ३० गांव १४४० लागै । मऊ छोटो सो सहर पिण छै। पीपाड़ सारीखो रड़ी[2] ऊपर वसै छै। भाखर छै। अगवारै[3] गांव ७०० चौड़ै छै। पछवारै[4] गांव ७४० भाखर झाड़ छै। मऊरा कोटरा पठा[5] हेठै नदी उतार सदा वहतो रहै। सेझो[6] को नहीं। सेवज गोहूं चिणा घणा[7]। धरती काळी, वाड[8] चावळ घणा। रैत लोधा, किराड़, मीणा वसै[9]। हाडा भगवंतसिंघरी जागीरीमें पाई छै[10]। सु भगवंतसिंघ वडा-वडा मोहळ[11], तळाव नवा संवराया छै। घर हजार दोय २००० वसै छै।

१ कोटो, वूंदीथी कोस १२, गांव ३६० लागै। निपट वडी ठोड़। जोधपुररा धणीरै सोझत ग्रासवेंधरी[12] ठोड़ त्यूं वूंदी दूजी ठोड़ कोटो। नदी चंवल ऊपर हाड़ै मुकन्दसिंघरा कराया वड़ा मोहळ छै।

१ खैरावद, वूंदीथी कोस ४०, मऊथी कोस १४। दूजो नांन[13] मिलकी-अभिरांमपुर। गांव ८४ लागै।

१ पैळाइतो, वूंदीथी कोस १४, कोटाथी कोस ८ गांव ८४।
१ सांगोद, वूंदीथी कोस २५, गांव ८४।
१ वाटी, खीचियांरो उतन। वूंदीथी कोस २५। कोटासूं कोस ७, गांव ५१।
१ घाटोली, खीचियांरो उतन। वूंदीसूं कोस २५, कोटासूं कोस ६, गांव ३१।

---

1 खोस कर उस पर अधिकार कर लिया। 2 छोटी पहाड़ी परका (वा ऊंचा उठा हुआ) समतल मैदान। 3 आगेकी ओरके ७०० गांव तो चोड़े-मैदानमें हैं। 4 और पीछेकी ओरके ७४० गांव पहाड़ों पर वृक्षोंसे घिरे हुए हैं। 5 पानीको रोकनेके लिए बांधके रूपमें बनाई हुई एक दृढ़ दीवार अथवा दीवारकी नींवमें पानीकी टक्करको रोकनेके लिये बनाई हुई पुष्टि। 6 नदी-नालों आदिका पानी सोखनेसे कूओं आदिमें पानीका बढ़ाव। 7 (अतः ऊपरकी भूमिमें नमी बनी रहनेके कारण) सेवज (बिना सिंचाईके उत्पन्न होने वाले) गेहूँ चने अधिक। 8 ईख। 9 लोधा, किराड़ और मीणे—यह प्रजा बसती है। 10 प्राप्त हुई है। 11 महल। 12 (१) अधिक कर प्राप्त होने वाली उपजाऊ भूमि, (२) संकटके समय रक्षाका स्थान। 13 नाम।

१ गागुरण, बूंदीथी कोस ३०, मऊसूं कोस ४, कोटासूं कोस १० खीची अचलदास वाळी । भाखर ऊपर वडो गढ़ छै। निपट चोड़ौ, जिण मांहै मांणस[1] हजार १०००० रहै। गढ़ वासै[2] नदी सिंध वहती सदा रहै छै। तिणरो पांणी गढ़ मांहै वाळियो छै[3]। आगै तो गढ़ सूनो-ठमठेर सो थो[4]। हमार हाडै मुकंदसिंघरी जागीरमें मुकंदसिंघगढ़ जोर संवरायो[5]। वडा मोहल कराया। गांगुरण सहर घर ७०० तथा ८०० वसै छै। नदी सिंध-आ मऊरा परगना मांहै वहै छै। मूल आ गुंडवांणथी आवै छै।

मऊथी निजीक[6] सहर इतराएक कोस छै--

एवारो परगनो गांव १२। सदा हाडांरो उतन[7] थो। हमें पातसाहजी और जागीरदारनूं दियो छै। मऊ कोटा वीच छै।

गूंगोर, खीचियांरो उतन। मऊसूं ऊगवण[8] कोस २५, गांव ३६० लागै छै। छोटोसो गढ़ छै। सहरमें घर १००० वसै छै।

खातखेड़ी मऊथी कोस २०, भील चक्रसेणीरी ठोड़[9]। हाडा भगवंतसिंघनूं छै[10]। मारली[11] गांव ७००।

चाचरणी, खीची वाधरी[12]। खीचियांरो उतन। मऊथी कोस १५। खाताखेड़ीथी कोस ५। गांव ८४।

बेहु[13] सिंधलवाली, गोपलदे भगवंतसिंघनूं जागीरमें।

चाचरड़ो, खीची सांवलदासरो। गांव ४२। खाताखेड़ीसूं कोस ७। मऊरै परगनै वडेररा[14] गांव नांवजादीक छै[15]।

१ देवीखेड़ो।

---

1 मनुष्य। 2 पीछे। 3 जिसका पानी गढ़में घेरकर लाया गया है। 4 पहले यह गढ़ सूना और खाली था। 5 अभी मुकुन्दसिंहने अपनी जागीरीमें गढ़को खूब सुधरवाया। 6 पास। 7 जन्मस्थान 8 पूर्व दिशामें। 9 भील चक्रसेनकी जागीरी। 10 जो अभी हाडा भगवंतसिंहके अधिकारमें है। 11 जिसको भील चक्रसेन पर आक्रमण करके अपने अधिकारमें कर लिया। 12 चाचरणी गांव खीची वाधकी जागीरका। 13 दोनों। 14 पुरखाओंके। 16 ख्याति प्राप्त।

१ हरीगढ़ ।

१ जोलपो ।

१ मोही ।

१ मोटपुर ।

१ कूड़ी ।

१ बंभोरीरो परगनो । गांव ८४ ।

१ जरगो ।

१ अटरोह । गांव ८४ ।

१ धूळोप ।

१ जीलवाढ़ो । गांव ८४ ।

धरती रैतरो हैंसों[1]—

वाड़[2] वीघे १ रु. ५)

आवळ[3] वीघे १ रु. ५)

वण[4] वीघे १ रु. १।।)

ऊनाली पीयल नहीं[5] । सैंवज[6] घणा । साळ[7], गोहूं, वाड़, चिणा घणा । रैत देस मांहै[8]—

बांभण[9]—गूजरगोड । पारीख ।

मीणा ।

धाकड़ । किराड़ ।

अहीर ।

नदी ४ हाडोती मांहै---

१ चांवळ[10] ।

१ सिंध ।

---

1 प्रजासे भूमिका कररूपमें प्राप्त किया जाने वाला भाग इस प्रकार है। 2 ईख प्रति वीघे रु. ५) । 3 आंवल प्रति वीघे रु. ५) । 4 रूई प्रति वीघे रु. १।।) । 5 सिंचाई द्वारा की जाने वाली ग्रीष्मकालीन-कृषि यहां नहीं होती । 6 परिमाणसे अधिक वर्षा होनेके कारण भूमिमें आर्द्रता बनी रहनेसे विना सिंचाईके होने वाली शरत्कालीन कृषि । 7 शालि—साठी चावल । 8 देशमें इस भांति प्रजा बसती है । 9 ब्राह्मण । 10 चम्बल ।

१ पार ।
१ पुडण ।

बात

बूंदीरा देसरा रजपूतांरी विगत--
मुदै[1] हाडा सांवंतरा असवार ५०० जोड़[2] ।
हाडो लिखमीदास मांनसिंघरो, गांव नांदणै ।
हाडो प्रथीराज केसोदासरो, भोजनेर ।
हाडो रायभांण रायसिंघरो, तलावस मींयांरै गुढ़ै ।
हींडोळारा हाडा, परतापरा पोतरा[3] ।
हाडा खजूरीरा, तिलोकरांमरो लखमण ।
दहियो हमीर, जैमालरो पोतरो ।
दहियो सांवळदास, गोवरधन सुंदरदासोतरांरै पटो रु. २००००) ।
दहिया आसांमी ३० चाकर छै । आदमी ३०० ।
सोळंकी आदमी ४०० सौ ।
हरीसिंघ राघवदासरो ।
सूर नाहरखांनरो ।
रावत जगतसिंघ मांनसिंघरो ।

गोड़ सांगावत—
रावत आसकरण ।
गोड़ सुंदरदास ।
गोड़ गैपावत ।
बालणोत सोळंकी, आसांमी दस तथा पनरै, आदमी १०० ।
नवब्रह्मरा हाडा, आसांमी दस तथा १५, आदमी १०० ।
राठोड़ ऊदावत, कछवाहा, आसांमी १०, आदमी १०० ।
वीकावत-सादूळरा बेटा-पोतरा[4], आदमी १०० ।

---

1 मुख्य । 2 पांचसो जोड़ अर्थात् एक हजार । 3 पोता । 4 बेटे-पोते ।

राजावत आदमी १०० ।

हाडा रांमरा रांमोत कहावै छै । आज वडै वाधै छै[1] मुदै आदमी २०० ।

इतिश्री बूंदीरा धणियां हाडांरी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।

लिखतं वीडू पना, वांचै जिकण सिरदारसूं मुजरो मालम हुसी ।

1 आज ये बड़ी उन्नति पर हैं ।

वागड़िया चहुवांणारी पीढ़ी

श्रै मुंधपाळरा पोतरा कहावै छै[1] । पीढियांरी विगत---

१ ब्रह्मा ।	१४ सिघराय	२७ मुंधपाळ ।
२ वैवस्वत ।	१५ राव लाखण ।	२८ वीसळदे ।
३ रावण ।	१६ बळ ।	२९ वरसिंघदे ।
४ धुंध ।	१७ सोही ।	३० भोजो ।
५ तपेसरी ।	१८ जिंदराव ।	३१ बालो ।
६ तप ।	१९ श्रासराव ।	३२ डूंगरसी ।
७ चाय ।	२० सोहड़ ।	३३ लालसिंह ।
८ चहुवांण ।	२१ मुंध ।	३४ वीरभांण ।
९ तपेसरी ।	२२ हापो ।	३५ सूजो ।
१० श्रंपराय ।	२३ महिपो ।	३६ फरसो ।
११ सोम । सैंभर वसाई ।	२४ पतो ।	३७ केसरीसिंघ ।
१२ साहिल ।	२५ देदो ।	३८ माहिसिंघ ।
१३ श्रंबराय ।	२६ सेहराव ।	३९ लालसिंह ।

वार्ता

चहुवांण डूंगरसी बालावत वडो रजपूत हुवो । वागड़ पिण को[2] दिन रह्यो छै । रांणा सांगारै पिण वास थो[3] । वडो कायदो[4] बडो पटो[5] पायो । वधनोर रांणै सांगै पटै दी थी । घणा दिन वधनोर रही । वधनोर डूंगरसीरा कराया वडा-वडा तळाव छै, वावड़ियां मोहळ छै । रांणो सांगो नै श्रहमदनगर मुदाफर पातसाहसूं वेढ़[6] हुई, तठै डूंगरसी श्राप धावै पड़ियो[7] । बेटा, भाई, भतीजा इण वेढ़ सारा

1 ये मुन्धपालके पोते कहलाते हैं, सं० २७ पर मुंधपाल है । इसके पूर्वकी वंशावली अशुद्ध है । मुंधपालके बादमें जो हैं वे ही वागड़िया चौहान मुंधपालके पोते कहलाते हैं । वागड़ प्रान्त (डूंगरपुर-बांसवाड़ा) में रहनेके कारण वागड़िया-चौहान कहलाये । 2 कुछ । 3 राना सांगाके पास भी रहा था । 4 प्रतिष्ठा । 5 जागीरी । 6 लड़ाई । 7 जहां डूंगरसी स्वयं आहत होकर गिर पड़ा ।

कांम आया । कान्है डूंगरसीरै वडो पराक्रम कियो । किवाड़ लोहरा अहमदनगररी पोळरा तापिया[1] था । तठै हाथी लाग न सकै, तरै कान्ह महावतनूं[2] कह्यो—"हूं वीच आऊं छूं, मोनूं वीच देनै हाथी कनां किवाड़ भंजाय नांख[3] ।" तरै कान्ह किवाड़ां आडो आयो[4] । हाथी कान्हरै मोरै दांत टेकनै किवाड़ तोड़ नांखिया[5] ।

२ कान्ह डूंगरसीरो ।
२ सूरो डूंगरसीरो ।
३ भांण ।
३ करमसी ।
४ जसवंत ।
५ केसोदास ।
६ सांवळ ।
७ गोपीनाथ ।
८ सूरतसिंघ । मही ऊपर कांम आयो[6] ।
९ सिरदारसिंघ । रांणै जैसिंघरै वारै[7] ।
३३ अखैराज डूंगरसीरो ।
३३ लाल डूंगरसीरो । चीतोड़ कांम आयो ।
३४ सांवळदास ।
३४ वीरभांण । रावळ करमसी उग्रसेन लड़िया तद कांम आयो ।
३५ मांन । संमत १६५१ मांन नै रावळ उग्रसेन विरस[8] हुवो, तद मांन पातसाहरै वसियो[9] । पछै संमत १६५८ व्रहानपुरमें रा० सुरजमल मांननूं मारियो । रावळ उग्रसेन कनां[10] रा० सूरजमल वांभणांनूं कर लागतो सु छुड़ायो ।
३६ सत्रसाल ।

1 अहमद नगरकी पोलके किवाड़ अग्निसे तपाये हुए थे । 2 को । 3 मैं वीचमें आता हूं, मुझको वीचमें देकर हाथीके द्वारा किवाड़ोंको तुड़वा डाल । 4 तव कान्ह किवाड़ोंके पास आकर खड़ा रहा । 5 हाथीने कान्हकी पीठमें अपने दोनों दांतोंको टिका कर, टक्कर मार कर किवाड़ोंको तोड़ डाला । 6 मही नदी परकी लड़ाईमें काम आया । 7 समयमें । 8 वैर, शत्रुता । 9 तव मान वादशाहके पास जाकर रहा । 10 द्वारा ।

३५ सूजो—रांणा जगतसिंघरी फोज साथै अखैराज डूंगरपुर मारियो[1] तद कांम आयो ।

३६ फरसो ।

३३ लाखो डूंगरसीरो ।

३४ नाथो ।

३५ वेळावळ ।

३५ संकरदास ।

३६ रिणमल ।

३५ हाथी वाळारो ।

१ किसन हाथीरो

२ कपूर किसनरो ।

३ ईसर कपूररो ।

४ भीम ईसररो ।

५ जसकरण भीमरो ।

६ प्रतापसिंघ जसकरणरो ।

७ सिरदारसिंघ प्रतापसिंघरो ।

८ गुलालसिंघ सिरदारसिंघरो । वांसवाहळै रहै छै ।

इति वागड़िया-चहुवांणांरी ख्यात संपूर्ण ।

लिखतं वीठू पना ।

1 विजय किया ।

अत वात दहियांरी

(परवतसर मांहै लिखी । संमत् १७२२ आसोज मांहै)

दहियांरो उतन मूळ सुणियो छै। दिखणनूं नासक त्रंबक गोदावरी कनै, गढ़ थाळनेर थो[1]। इतरी ठोड़ दहियांरै अजमेर मांहै हुती[2]—

१ देरावर—परवतसर गांव ५२ ।

१ सावर—घाटियाळी ।

१ हरसोर । विल्हणरो वेटो हरधवळ धणी ।

१ माहरोटरो विल्हणवटी नांव[3] ।

१ परवतसर साह परवत मांडवरै पातसाहरो करोड़ी आयो तिण आपरै नांवै वसायो । पंवार करमचंदरी वार मांहै संमत १५७६ सांह परवत जुहर[4] ।

दहियांरै पीढ्यांरी विगत—

१ आदनारायण ।
२ कमल ।
३ ब्रह्मा ।
४ पित्रावरण ।
५ अगस्त ।
६ पोलस्त ।
७ पारासिर ।
८ दुरवासा ।
९ जैमिन ।
१० निकुंभ ।
११ नागरिख ।

---

1 मूलमें आया है कि दहियोंकी आदि जन्म-भूमि दक्षिणमें गोदावरीके पास नासिक-त्र्यम्बकके [illegible] गढ़ थी। 2 इनके स्थान दहियोंके अजमेर प्रान्तमें थे। 3 [illegible] गांवके अन्यका नाम बिल्हणवाटी। 4 मांडूके बादशाहकी ओरसे [illegible] हुआ 'परवत' नामक [illegible] माहेश्वरीने सं० १५७६में पंवार करमचंदके [illegible] अपने नामसे 'परवतसर' नामक गांव बसाया।

१२ दधीच[1] ।
१३ विमलराजा ।
१४ सिवर ।
१५ कुलखत ।
१६ अतर ।
१७ अजैवाह ।
१८ विजैवाह ।
१९ सुमल ।
२० सालवाहन । हंसावली रानी ।
२१ नरवाहण ।
२२ देहड़, मंडळीक देरावर[2] ।
२३ बूहड़, मंडळीक ।
२४ गुणरंग, मंडळीक ।
२५ दोराव रांणो ।
२६ भरह रांणो । भदियावद वासो
२७ रोह रांणो । रोहड़ो वसियो ।
२८ कड़वराव रांणो ।
२९ कीरतसी रांणो ।
३० वैरसी रांणो ।
३१ चाच रांणो । देवी केवायरो देहुरो करायो । भाखरी ऊपर गांव सिण हड़ियै[3] ।
३२ अनवी[4] उधरण । परबतसर माहरोट धणी । वडो रजपूत हुवो । तिणरै बेटांरा पिंड[5] २ ।

---

1 दधीचि ऋषिके वंशज दहिया क्षत्री हैं। मारवाड़के किणसरिया गांवके केवायदेवीके मंदिरके सं० १०५६ के शिलालेखमें दहियोंका दधीचि ऋषिके वंशज होनेका उल्लेख है। दाहिमा ब्राह्मण भी दधीचिके वंशज कहे जाते हैं। 2 देरावरका मांडलिक राजा देहड़। 3 चाच रानाने सिणहड़िया (अब इसका नाम किणसरिया) गाँवके पास पहाड़ी पर केवाय देवीका मंदिर बनवाया। 4 किसीके सम्मुख नहीं झुकने और अपने नामसे प्रख्यात होने वाला तेजस्वी और महाबली। 5 जिसके दो पुत्र।

३३ जगधर रावत उधरणरो । परबतसर धणी तिकै मांडल, परबतसरथी कोस १ छै तठै ठाकुराई । उठै देहुरा, बावड़ी, कूआ अजैस छै[1] ।

३४ दूदो रावत जगधररो ।

३५ रावत मालौ दूदारो ।

३६ रावत कुंतल मालारो ।

३७ रावत मोडो कुंतलरो ।

३८ रावत सूजो नै जोगो मोडारा ।

३९ पेरजखांन जोगारो ।

४० हरीदास ।

४१ रांमदास, सिणहड़ियै छै ।

३३ विल्हण अनवी उधरणरो । तिणरै सारी माहरोठ हुती । गांव देपारो, माहरोटथी कोस २ भाखरमें छै तठै वसता । तठै कोट छै, तळाव छै । तठै ठाकुराई हुई । वे देपारा दहिया कहावै ।

३४ बीबो, तिणरो करायो परबतसर बीबासर तळाव छै । इणरी बैर कंवळावती रांणा ईहड़री बेटी । तिणरो करायो राणोळाव तळाव छै । जेळूरी बैहन[2] ।

३५ पोहपसेन बीबारो । राजा कुंतरी बेटी रतनावती परणियो हुतो । कुंतल गांव १२ सूं पीपळू दीवी थी । छतीसपवन दीवी थी । खेजड़ली दीवी थी[3] ।

३६ कंवळसी ।

३७ जैसिंघ ।

३८ कील ।

---

1 अभी तक हैं । 2 बीवा—जिसने परवतसर गाँवमें बीवासर नामक तलाव बनवाया था । इसकी स्त्री राना ईहड़की पुत्री और जेलूकी बहिन कमलावती थी जिसने राणोलाव तलाव बनवाया था । 3 बीवाका पुत्र पुहपसेन, जो राजा कुन्तकी कन्या रत्नावतीसे व्याहा था । कुंतलने रत्नावतीको बारह गाँवोंके साथ पीपळू गाँव दहेजमें दिया था और उसके साथ छत्तीसपवन और खेजड़ली भी । (छत्तीसपवनसे तात्पर्य ३६ जातियोंका दहेजमें देनाभी हो सकता है) ।

३९ नरबद । कहै छै–नागोर मारी हुती[1] ।

४० लखो ।

४१ आसो ।

४२ सूरज ।

४३ प्रथीराज, चीतोड़ कांम आयो । हाडांरो चाकर ।

४४ जैमल ।

४५ हमीर, निपट वडो रजपूत हुवो ।

४६ विहारी, ४६ रांमदास, ४६ मुकंददास, ४६ नरहरदास

४५ विजैरांम जैमलरो ।

४६ मोहणदास ।

४७ सुंदरदास ।

४८ सांवळदास ।

४८ स्यांम ।

४८ गोवरधन ।

४७ महासिंघ ।

गीत[2] दहिया हमीररो

महाकाळ जमजाळ जोधार जैमल्लरो,
कळहरो कथन संसार कहियो ।

---

1 कहा जाता है कि नरवदने नागोरको विजय किया था। 2 दहिया हमीरके सम्बन्धके गीतका अर्थ—

जयमलका पुत्र वीर हमीर महाकाल और यमपाशके समान हो गया है । संसारमें युद्ध करने वालोंमें वह कथनरूप (प्रशंसा करने योग्य) कहा गया है। दुरात्मा बादशाहके लिये हाडा दूदा शल्यरूप हुआ किन्तु दहिया हमीर उसी दूदाके हृदयमें शल्यरूप हुआ ॥ १ ॥

नृपति नरवदका वंशज दहिया हमीर अत्यन्त निर्भय वीर हुआ । अपने स्वामीका काम सिद्धकरने वालोंमें वह बड़ा वीर और धीर पुरुष हुआ । हाडा दूदा तो बादशाहके हृदयका शल्य हुआ परन्तु उस हाड़ाके हृदयका शल्य तो हमीर ही हुआ ॥ २ ॥

अत्याचारोंसे मुक्ति दिलाने वाले रण-कुशल हमीरने, सदा सजा हुआ रहकर अपने स्वामीके कामोंको सिद्ध अर्थात् विजय करके उनपर उसकी ओरसे अधिकार किया । जिस प्रकार पराक्रमी दूदाने बादशाहको चैन नहीं लेने दिया उसी प्रकार दुरात्मा दूदाके हृदयमें भी हमीर शल्यकी भांति खटकता रहा ॥ ३ ॥

दुरत पतसाहरै सालव्हो दूदड़ो,
दूदड़ा तणै उर साल दहियो ॥१॥

निवड़ भड़ निडर नरनाह नरबद्दरो,
सकज भड़ स्यांमरो कांम सधीर ।
हियै पतसाहरै साल हाडो हुवो,
हियै हाडा तणै साल हमीर ॥२॥

आवरत-कहर असवार आखाड़ सिध,
कांम पह चाड इधकार कियो ।
दूदड़ै दूह पतसाह ओसुख दियौ,
दुरत दूदा उर साल दइयो ॥३॥

इति दहियां परवतसररांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।
लिखतं वीठू पना । वाचै जिण सिरदारसूं मुजरो[1] मालम हुसी ।

**

1 प्रणाम ।

अथ बूंदेलांरी[1] वात लिखंते

राजा वरसिंघ बूंदेलारै इतरा[2] गढ़ हुंता[3] । बूंदेला सुभकरणरै चाकर चक्रसेन मंडाया[4] संमत १७१०—

१ जगहरो परगनो, तिणरो गांव उड़छो तिणनूं गांव १७०० लागै । रु० ७००००)

१ भाडेररो परगनो, गांव ३६० । उड़छाथो कोस १२, रु० ५०००००)

१ एलछरो परगनो, गांव ३६० । उड़छाथी कोस १२, रु० ७०००००)

१ परगनो राड, गांव ७०० । उड़छासूं कोस ३०, रु० ६०००००)

१ परगनो खोटोलो, गांव १७०० । उड़छाथी कोस २०, रु० ३०००००)

१ परगनो पबई, गांव १४०० । उड़छाथी कोस ४०, रु० १५००००)

प्र० पांडवारी, गांव १४०० । उड़छाथो कोस २०, रु० ७०००००)

१ प्र० धमांणी, गांव ६०० । उड़छासूं कोस ४०, रु० ७०००००)

१ प्र० दमोई, गांव ३५०, उड़छासूं कोस ५०, रु० १०००००)

१ प्र० सीलवनी । धांमणी, चवरागढ़ वीच ।

१ गढ़ पाहरांद गीराजरी ठोड़ ।

१ चोकीगढ़, गूंडांरो ।

१ गुनोर, गूंडांरो ।

१ उदैपुर सिरवाजरै मैड़ै[5] ।

१ कछउवा उड़छाथी कोस १२ ।

---

1 राष्ट्रकूटों (राठोड़ों) की गहरवार शाखाके जिन क्षत्रियोंका बूंदेलखंडसे सम्बन्ध रहा वे बूंदेला कहाये । 2 इतने । 3 थे । ४ लिखवाये । 5 आगे की ओर । उस ओर पासमें ।

१ करहर, उड़छाथी कोस २० ।

१ दिहायलो नरवररै मैड़ै ।

१ खुटहररै मैड़ै अरणोद ।

१ वुडूण ।

१ पवउवा, उड़छासूं कोस २० ग्वालेररै मैड़ै ।

१ वेड़छो ग्वालेर निजीक ।

१ दभोड़ वेड़छै कनै[1] ।

१ कुंच आलमपुररै मैड़ै ।

१ मोहनी, गांव ८४, इंद्ररुखी[2] ।

१ गोओद भदावररै मैड़ै ।

१ अवाइनो ।

१ साहरो लांगरपुर घाघेड़ो गांव १५००

१ चवरागढ़ गूंड़रो जुगराज लियोथो, तिणनूं गढ़ बावन लागता ।

बूंदेलांरी वात

कविप्रिया ग्रंथ केसोदासरो कियो[4]–तिण मांहै बूंदेलां रै वंसरी इण भांत वात कही छै—

अै सूर्यवंसी । सूर्यवंसरै विषै श्रीरांमचन्द्ररो अवतार । तिणथी[5] कितरेहेक पीढ़ियां इणांरो गहरवार गोत्र कहांणो ।

१ राजा वीरू गहरवाररो ।

२ राजा करन महाराजा हुवो तिण वाणारसी[6] वास कियो ।

३ राजा अर्जुनपाळ तिण मोहनी गांव वसायो ।

४ राजा सहजपाळ ।

५ राजा सहजइंद्र ।

---

1 पास । 2 इन्द्रदिशाकी ओर । 3 गूंडा जिलेका चवरागढ़ वरसिंहके पुत्र जुगराजने जीत लिया था जिसमें ५२ किलेथे । 4 कवि केशवदास रचित 'कविप्रिया' नामक ग्रन्थ । 5 जिनसे कितनीहीक पीढ़ियोंके पीछे इनका गहरवार गोत्र कहलाया । 6 काशी ।

६ राजा नागदे ।

७ राजा प्रथीराज ।

८ राजा रांमचंद्र ।

९ राजा राजचंद्र ।

१० राजा मेदनीमल ।

११ राजा अर्जुनदे । तिण षोडस महादांन कीना[1] ।

१२ राजा प्रतापरुद्र ।

१३ राजा भारथचंद्र हुवो, तिणरै बेटो न हुवो तरै भाई मधुकरसाहनूं राज आयो ।

१४ राजा मधुकरसाह प्रतापरुद्ररो । तिण उड़छो[2] वसायो । तिण मधुकरसाहरै इग्यारै ११ बेटा हुवा ।

१३ दुलहरांम टीकै मधुकरसाहरै हुवो ।

१३ संग्रामसाह ।

१२ होरलराउ ।

१२ नरसिंघ ।

१२ रतनसेन ।

१२ इंद्रजीत ।

१२ रनजीत ।

१२ सत्रजीत ।

१२ बलवीर ।

१२ हरसिंघदे ।

१२ रनधीर । संग्रामसाह, दुलहरांम आंक १३ ।

१४ भारथसाह ।

१५ देवीसाह ।

१६ किसोरसाह ।

१४ किसनसाह ।

---

1 जिसने सोलह महादान किये । 2 ओड़छा – जो बूंदेलोंकी राजधानी है ।

१५ जगतमिण । श्रीजोरै[1] कावलमें चाकर रह्यो हुतो । एकण ठोड़ पीढ़ियां यूं पिण मांडी छै[2]–

१ राजा वीरू ।

२ गहनपाळ ।

३ राजा सहजग ।

४ राजारांम ।

५ राजा नांनगदे

६ राजा प्रथीराज ।

७ राजा रांमसिंघ

८ राजा चंद्र ।

९ राजा मेदनीमल

१० राजा अर्जुनदे ।

११ राजा मलूखां ।

१२ राजा प्रतापरुद्र ।

१३ राजा मधुकरसाह ।

१४ राजा वरसिंघदे ।

राजा वरसिंघदे मधुकर साहरो । वडो भाग्यवांन हुवो । पातसाह जहांगीररा हुकमसूं खोजो अवलफजल मारियो । पातसाह घणो निवाजियो[3] ।

१३ राजा जुगराज ।

१४ राजा विक्रमाजीत ।

१३ राजा पाहड़सिंघ ।

१४ सुजांणसिंघ राजा । तीन हजारी असवार ।

१३ चंद्रमिण ।

१३ भगवांनदास ।

---

1 जगत्मणि – जोधपुरके महाराजा जसवंतसिंह जब काबुल गये थे तो उनके पास नौकर रहा था । 2 एक स्थान पर वंशावली इस प्रकार भी लिखी है । 3 प्रसन्न हुवा, पुरस्कार दिया ।

१४ सुभकरन। श्रीजीरै वास रु० ३५०००) पटो।

१४ सकतसिंघ।

१३ प्रेमसाह।

१४ भगवंतराय।

१५ चंपतराय। वडो रजपूत हुवो। जुगराज मारियां पछै धरती मांहे वडो विखो कियो[1]।

१६ सालवाहन।

१५ सुजांणराय।

१५ भींवराय।

१६ राजा वरसिंघ दे। धरमातमा हुवो। मुथराजीमें श्री केसोरांयजीरो देहरो करायो। पातसाहरी चाकरी अखंड कीवी नै मुवां पछै टीकै जुगराज बैठो। सु बैठा पछै केई दिन तो घणो ही तपियो[2] पछै श्रीठाकुरजी वीच देनै चवरांगढ़ गूंडांरो लियो[3]। पछै संमत १६६६ रा काती मांहै पातसाहसूं विरस[4] हुवो तरै पातसाह फोज की[5]। खांनदोरा अबदूलाखांन और हिंदू मुसलमांन विदा किया। पातसाह चढ़ ग्वालेर आयो। फोजां देस मांहै दखल कियो[6]। इणसूं घणी लड़ाई-वेढ़ कोई हुई नहीं[7]। पारपखै[8] पातसाहरै माल आयो। जुगराज देस छोड़ नाठो[9]। आगै जातां आप बैठां विक्रमाजीत माराणो[10]। पछै पातसाहजी उड़छै पधारिया। वीरसमंद वडो तळाव छै, तठै पातसाहजी को[11] दिन रह्या। पछै पातसाहजी सिरिवाज मांहै हुय व्रहांनपुर पधारिया। पछै दोलतावाद पधारिया।

इति बूंदेलांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण।

---

1 चंपराय—बड़ा वीर राजपूत हुआ। जुगराजको मारनेके पीछे इसने पृथ्वी पर वड़ा भय उत्पन्न कर दिया। 2 गद्दी वैठनेके वाद कई दिन तक तो धर्मपूर्वक निष्कंटक राज्य किया। 3 फिर श्री ठाकुरजीकी शपथ खाकर धोखेसे गूंडा जिलेके चँवरागढ़ पर अधिकार कर लिया। 4 शत्रुता। 5 सेना भेजनेकी तैयारीकी। 6 देशमें सेनाने अधिकार कर लिया। 7 इससे युद्ध नहीं हो सका। 8 अपार धन। 9 भाग गया। 10 आगे जाकर उसके जीते जी उसका पुत्र विक्रमाजीत मारा गया। 11 कई।

वारता गढ़बंधवरा धणियांरी

बांधवरो मुलक आद करणा—डहरियारो। नवलाख-डहर कहावै[1]।

करणो-डहरियो मारै पेट थो[2]। दिन पूरा हुआ तरै करणारी मा कस्टी[3]। तरै जोतखियै कह्यो[4]—"हमार वेळा बुरी वहै छै[5]। अै दोय घड़ी टळै, पछै छोरू हुवै तो महाराजा-प्रथीपत हुवै[6]।" आ वात करणारी मा सुणी, तरै उण आपरा पग ऊंचा बंधाया[7]। सु वा तो मर गई[8], नै करणो घड़ी दोय पछै जीवतो जायो[9]। मोटो हुवो[10]। करणो वडो महाराजा हुवो। गंगा-जमुना वीच्च घणी धरती करणारै हुई। करणै आपरी[11] मांरी वात सुणी—"म्हारै वास्तै म्हारी मा इतरो कस्ट सह्यो। इण भांत देह त्यागी।" तरै करणै चोरासी तळाव नवा खिणायनै[12] एक दिन आपरी मारी वांसै तर्पण[13] किया। और ही घणा धरम किया[14]। करणारो राजथांन गढ़ कालंजर, प्रयागजीसूं कोस ४० छै तठै हुतो।

वाघेल-धरती वसी-लेनै[15] बंधवगढ़ राजथांन कियो। वरसिंघदे वाघेलो गुजरातसूं गंगाजीरी जात आयो हुतो। तद अठै बंधवरी ठोड़ निवळासा[16] लोधा[17] रजपूत रहता। ठोड़[18] खाली दीठी। तरै गंगाजीरा पुलण[19] मनोहर देखनै अठै रहणरी कीवी। लोधांनूं मारनै

---

1 आदिमें बांधवदेशका अधिपति करना डहरिया था। डहरियोंकी संख्या वहां पर नौ लाख होनेके कारण वह प्रदेश 'नौ लाख डहर' कहलाता है। 2 करना डहरिया जब गर्भस्थ था। 3 गर्भके दिन पूरे हुए तब करनाकी माताको प्रसव-पीड़ा हुई। 4 तब ज्योतिषियोंने कहा। 5 इस समय लग्न-ग्रहादि अशुभ चल रहे हैं। 6 ये दो घड़ी निकल जांय और बादमें पुत्र उत्पन्न हो तो वह महाराजा और पृथ्वीपति होवे। 7 इस बातको करनाकी माताने सुना तब उसने उस लग्नमें प्रसव नहीं होने देनेके लिए अपने पांवोंको ऊपर बंधवा लिये। 8 सो वह तो इस कष्टसे मर गई। 9 किन्तु करना दो घड़ी पश्चात जीवित उत्पन्न हुआ। 10 वयस्क हुआ। 11 अपनी। 12 खुदवाकर। 13 पितरोंकी संतुष्टिके लिये अंजलिमें पानीके साथ यव तिल आदि भर कर जलदान देनेकी एक मृतक-क्रिया। पितृ-यज्ञ। 14 और भी बहुतसा पुण्य-दान किया। 15 वाघेल वरसिंहदेने किसी भी प्रकार का कर नहीं लिये जानेकी छूट दी गई हो ऐसी वसी (प्रजा) को वसा कर बांधवगढ़ स्थानमें अपनी राजधानी बनाई। 16 निर्बल जैसे। 17 लोधा राजपूतोंका एक वंश। 18 स्थान। 19 सुन्दर तट-प्रदेश देख कर।

वरसिंघदे आ धरती लीवी । बंधवगढ़ वसियो ।

१ राजा वरसिंघदे ।

२ राजा वीरभांण । २ जांमणीभांण ।

३ राजा रामचंद–वीरभांणरो वडो दातार हुवो, दांन च्यार कोड़[1] दिया ।

१ कोड़ नरहर महापात्रनूं ।

१ कोड़ चत्रभुज दसौंधीनूं[2]

१ कोड़ भइया मधुसूदननूं ।

१ कोड़ तानसेन कलावंतनूं ।

४ वीरभद्र रामचंद्ररो ।

५ दुरजोधन ।

६ प्रतापादीत ।

५ राजा विक्रमाजीत मुकंदपुर रहतो । राजा मानसिंघरो जमाई ।

६ बाबू इंद्रसिंघ मानसिंघरो दोहितो ।

६ सरूपसिंघ ।

६ राजा अमरसिंघ, जिणनूं संमत १६९० में राजा श्रीगजसिंघजी बेटी चांदजी[3] परणाई । बंधव उरै[4] कोस २० गांव रैयां वसतो । संमत १७०७ अमरसिंघ काळ कियो[5] ।

७ राजा अनोपसिंघ ।

७ फतैसिंघ ।

७ मुंगदराय ।

इति बंधवरा धणियांरी ख्यात वार्ता संपूर्ण ।

++

---

1 राजा रामचन्द्रने एक-एक करोड़के चार कोड़पसाव दान किये । 2 भाटको । 3 महाराजा गजसिंहजीकी कन्या चांदजी राजा अमरसिंहजीको व्याही थी । 4 यह गढ़-बंधवसे उरली तरफ गांव रीवांमें रहता था । रीवां आज पूर्वमें वाघेलोंकी राजधानी है । 5 मर गया ।

वात सीरोहीरा धणियांरी

आद चहुवांण अनळकुंडरी[1] उतपत । वसिस्ठ-रिखीस्वर आबू ऊपर राकस निकंदणनूं[2] खत्री ४ उपाया—

१ पँवार । २ चहुवांण ।

३ सोळंकी । ४ डाभी ।

चहुवांण घणकरा[3] सारा राव लाखण नाडूळ धणी । तिणरी पीढ़ी आसराव हुवो । तिणरै घरै वाचाछळ[4] देवीजी आया छै । तिणरै पेटरा बेटा ३ हुवा । देवड़ा कहांणा छै । आबू पंवारांरी ठाकुराई हुती । तद आबूथी कोस ५ ऊमरणो छै तठै सहर वसतो । पछै वीजड़रा बेटा ५ महणसी, आल्हणसी, ... [†] ऐ लोग गूढ़ो कर रह्या था[5] । पछै पंवारांसूं सगाई देणी कीवी[6] । २५ साँवठी दी[7] । एक भाई ओळ रह्यो[8] । पछै वै जांन कर आया[9] । सगळांनूं डेरा देराया[10] । परणीजणनूं जुदा बुलाया । भला रजपूतांनूं वैरांरा वेस पहराया[11] । पछै परणाय सुवण मेलिया[12] । तठै के चँवरियां मांहीं पचीस सिरदार मारिया[13] । नै जांनीवासै साथ उतरियो उणनूं अमलपांणियां[14] मांहै काई वळाई[15] दी सु वे छकिया तरै कूट-मारिया[16] । ओळ दियो थो उण उठै वांसै[17] सिरदार थो तिणनूं मारियो । आबू ऊपर चढ़ दौड़ियो । आबू हाथ आयो । सं१२१६ रा माह वद १ पंवारांसूं गयो ।

---

1 चौहानोंकी उत्पत्ति अग्नि-कुण्डसे । 2 वशिष्ठ ऋषिश्वरने आबू पर राक्षसोंका नाश करनेके लिये चार क्षत्रियोंको उत्पन्न किया । 3 बहुतसे । 4 वाचा-वचन, छल-अभिलापा इच्छा-पूर्त्तिका वचन देने वाली देवी । 5 ये लोग छिपकर रह-रहे थे । 6 पीछे पंवारोंको अपनी पुत्रियाँ देनेका वचन दिया । 7 एक साथ २५ दीं । 8 वनकी एवजमें एक भाईको उनकी चाकरीमें रखा । 9 पीछे वे बरात लेकर आये । 10 समस्तको रहनेके लिये जनिवासे दिलवाये । 11 चुनिंदा राजपूतोंको स्त्रियोंका वेश पहिनाया । 12 फिर उनका पाणिग्रहण कर सौभाग्य-रात्रि मनानेको भेजा । 13 वहां कई विवाह-मंडपोंमें २५ सरदारोंको मार डाला । 14 अफीम-शराब आदिमें । 15 बला । 16 ठोक-पीट कर मार दिया । 17 पीछे ।

---

† श्री रामनारायण दूगड़ इसी ख्यातके अपने हिंदी अनुवादमें पृ. १२१ में वीजड़के छः पुत्रोंके नाम जसवंत, समरा, लूणा, लूंभा, लखा और तेजस्वी लिखते हैं सो ठीक प्रतीत होते हैं । महणसी, आल्हणसी वीजड़के पुत्र नहीं हैं ।

पीढ़ी सीरोहीरा धणियांरी, संमत १७२१ रा मोह मांहै आढ़ै महेसदास लिख मेली।

संमत १४५२ वैसाख वद २, गुरुवार राव सहसमल सोभारै सरणुवारै भाखररी खंभ[1] नवो सहर आबूथी कोस १० वसायो। आबूनै सरणुवारो भाखर एक लगती डाक[2] छै। सरणुवारो भाखर एढो[3] क्युं न छै।

पीढियांरी विगत—

१ सालवाहन	२ जैवराव
३ अंबराव नै गोगो भाई	४ दळराव
५ सिंघराव	६ राव लाखण[4]
७ बळ	८ सोही
९ महीराव	१० अणहल
११ जिंदराव	१२ आसराव
१३ आल्हण	१४ कीतू
१५ महणसी	१६ पतो
१७ बिजड़। अठै तो महणसीरो मंडियोड़ो छै नै केई विजड़ कीतूरो कहै छै।	१७ लुंभो
१८ सळखो	१९ रिणमल
२० सोभो	२१ राव सहसमल[6]
२२ राव लाखो	२३ राव जगमाल
२४ राव अखैराज जगमालरो	२५ राव रायसिंघ अखैराजरो
२५ राव दूदो अखैराजरो	२६ राव उदैसिंघ रायसिंघरो
२६ राव मांनसिंघ दूदारो	२६ राव सुरतांण

---

1 सोभा और सरणुवा दोनों पहाड़ोंके बीचमें। 2 आबू और सरणुवाके दोनों पहाड़ एकल मिले हुए हैं। 3 दुर्गम। 4 लाखणके समयका एक शिलालेख सं० १०३९ का नाडोलसे प्राप्त है। 5 कीतूने जालोर पर अधिकार कर लिया था। सं. १२१८ का इसका एक ताम्रपत्र नाडोलसे प्राप्त हुआ है। 6 सहसमलने चन्द्रावतीकी राजधानीको छोड़कर अपने पिताके स्मारक-स्वरूप सिरोही नगर वसाया था।

२७ राव राजसिंघ सुरतांणरो　　　२८ राव अखैराज राजसिंघरो

देवड़ो रिणमल सलखारो आंक १९—

२० सोभो　　　२१ सहसमल, जिण सीरोही वास कियो।

२२ राव लाखो, जिण लाखेळाव तळाव करायो।

२० गजो रिणमलरो, जिणरो परवार—

२१ डूंगर, तिणरा सीरोही देस डूंगरोत-देवड़ा।

राव लाखारा वेटा आंक २२—

२३ राव जगमाल　　२३ हमीर

२३ संकर　　२३ ऊदो

राव जगमाल कना[1] भाई हमीर धरती आध वंटाय लियो थो। पछै माहोमाहि लड़िया। जगमाल हमीरनूं मारियो। राव जगमालरो अखैराज राव सीरोही हुवो, आंक २३,२४। राव अखैराज वडो[2] रजपूत हुवो। तिण एक वार जालोररो खान पकड़ि बंदीखाने दियो[3]।

२५ राव रायसिंघ महाराज हुवो छै। घणा दान-पुन्य किया। मेवाड़रा धणियांसूं, जोधपुररा धणियांसूं वडा उपगार किया। माला आसियानूं कोड़ दी[4], तिण मांहे गांव खांण सांसण कर दीवी छै[5]। सुकाळ-दुकाळ अरहट ३०० हुवै छै। पता कलहटनूं कोड़ दी[6]। तिण मांहे माटासण गुजरातरै पैंडै नजीक छै[7]। वड गांव कनै[8]। तिण अरहट ५० हुवै छै। रायसिंघ भीनमाळ पर आयो थो[9]। विहारियांरा थांणारो साथ कावो गढोकोट मांहे थो[10]। कोट घेरियो हुतो। सु तीर १ मांहिले वाह्यो[11]। सु रावरै वगतरी बांह मांहे हुय काखमें लागो। राव काळ कियो[12]। दाग काळंधरी रावरै चाकरे दियो[13]।

---

1 से। 2 वड़ा वीर। 3 इसने एक वार जालोरके खान मलिक मजाहिदखांको पकड़ कर कैद कर लिया था। 4 आसिया-शाखाके चारण मालाको करोड़-पसाव दिया। 5 उसमें खांण नामक गांव शासनमें दे दिया है। 6 कलहट शाखाके चारण पत्ताको करोड़-पसाव दिया। 7 माटासण गांव गुजरातके मार्गके समीप आया हुआ है। 8 वड़गांवके पास। 9 रायसिंह भीनमाल पर चढ़ कर आया था। 10 विहारी पठानोंके आदमी और कावा गढा, ये कोटके अंदर थे। 11 अंदर वालोंने एक वाण चलाया। 12 राव मर गया। 13 रावके चाकरोंने कालंदी गांवमें उसकी दाहक्रिया की।

सती उठै हुई । राव रायसिंघ राव गांगारी बेटी चांपाबाई परणाई हुती ।

२५ राव दूदो अखैराजरो । वडो ठाकुर हुवो । रायसिंघ मरते हुकम कियो "माहरो बेटो लोहड़ो[1] छै । पांच रजपूतां टीको भाई दूदानूं देजो । बेटो उदैसिंघ छै, तिणनूं दूदो मोटो करसी[2] ।" तरै दूदो पाट तो बैठो छै, पिण साहबीरो धणी[3] उदैसिंघनूं राखतो नै आपरा बेटा मांनसिंघनूं नजीक न आवण देतो । राव दूदै अदो वाघेलां गांवड़ो एक मारियो[4] । तिणरा वडा छंद छै, कळहट पातारा कह्या । पछै राव दूदो मुवो । मरते कह्यौ–"म्हारा बेटानूं टीको मत दो । टीको रायसिंघरा बेटा उदैसिंघनूं देजो ।" तरै उदैसिंघनूं तेड़नै कह्यो– "थारी दाय[5] आवे तौ म्हारा बेटा मानसिंघनूं लोहियांणौ गांव देजो ।" पछै दूदो मुवो । पांचे रजपूते परधांने उदेसिंघनूं पाट थापियो[6] । मानसिंघनूं लोहियांणो दियो । वरस एक तो रूड़ो-भलो नीसरियो[7], नै पछै उदैसिंघ दूसण चीतारियो[8]–"मोनूं मानसिंघ तुको १ वाह्यो थो[9] ।" तरै रजपूते तो वरजियो[10] । इणरै बाप तोसूं निपट भली कीवी छै[11]। आपरा बेटानूं टीको न दिरायो नै थांनूं भातीजनूं दिरायो । कह्यो–"मानसिंघ थारो हुकमी-चाकर[12] छै ।" पिण उदैसिंघ कहै– "लोहियांणाथी परो काढ़ीस[13] ।" पछै फोज मेल परो काढ़ियो[14] । रांणांरै मेवाड़ गयो[15] । मांनसिंघनूं गांव १८ वरकांणो वीझैवासूं पटै दियो[16] । पछै मांनसिंघ दोय-च्यार सिकार मांहे मुजरो कियो[17], सु रांणो मया करै छै[18] । तितरै वरस१ राव उदैसिंघनूं सीयळ नीसरी न थी,

---

1 मेरा पुत्र छोटा है । 2 उसको दूदा पाल-पोष कर बड़ा करेगा । 3 राज्यका स्वामी । 4 राव दूदाने अदा वाघेलाको मार दिया और उसका गांव लूट लिया । 5 तेरी इच्छा हो तो । 6 पांच प्रधान राजपूतोंने मिल कर उदयसिंघको गद्दी बिठाया । 7 एक वर्ष तो ठीक निकल गया । 8 पीछे उदयसिंहको मानसिंहका एक दूषण याद आया । 9 मानसिंहने मुझे एक उलहना दिया था । 10 मना किया । 11 इसके पिताने तेरा बहुत उपकार किया है । 12 आज्ञाकारी सेवक । 13 निकाल दूंगा । 14 निकाल दिया । 15 राना उदयसिंहके पास मेवाड़ चला गया । 16 रानाने मानसिंहको वरकानेका ठिकाना वींझेवाके साथ १८ गांवोंका पट्टा करके दे दिया । 17 मानसिंहने दो-चार शिकारोंमें साथ रह कर अभिवादन किया अर्थात् अपने कौशल और सेवाका परिचय दिया । 18 अतः राना बड़ी कृपा रखता है ।

सु सीयळ नीसरी थी[1]। आ खबर मांनसिंघ दूदावतनूं सीरोहीथा को एक[2] आयो हुतो तिण कही हुंती। रांणो सिकार चढ़ियो छै, कुंभळमेर दिसी[3]। नै रांणानूं आ खबर न छै, नै मांनसिंघनूं को एक सीरोहीसूं वळे[4] आयो तिण कह्यो–'उदैसिंघ दवाव मांहे छै[5]।' पछै राव उदैसिंघ सीयळसूं मुवो[6]। तरै रजपूते दीठो[7], इणरै तो वेटो को न छै। मांनसिंघ दूदावत रांणा कना छै। रांणो आ खबर सुणनै उठै मांनसिंघनूं मारनै कुंभळमेरसूं आघो-हीज आवै[8] तो आज देवड़ांरा घरसूं आवू जाय। तरै पांच ठाकुरे[9] रावनूं मुवो पोहर २ किणहीनूं सुणायो नहीं नै सांहणी जैमल निपट वडो आदमी हुतो। इतवारी लायक[10], तिणनूं मांनसिंघ दिसा[11] कागळ लिख सारी वात कहि–समझायनै चलायो। नै पाछै रावनूं दाग दियो[12]। सांहणी जैमल सारी रात खड़ि[13] दिन पोहर एक चढ़तां पहैली कुंभळमेर मांनसिंघरै डेरै आयो। चीवो[14] सांवतसी थो, तिणनूं कांन मांहे वात सारी समझायनै कही। तरै कह्यो–"मांनसिंघ रांणां कनै छै। दरबार कुंभळमेर जुड़ियो छै[15], तठै गयो। मांनसिंघ आवतो दीठो जांणियो[16]। जु जैमळ अठै आयो सु उठै कुसळ नहीं।" मांनसिंह मिस कर ऊठियो। आपरै साथ मांहे आयो[17]। सांमां जैमलसूं मिळियो। जैमल वात थी सु निजरांमांहे[18] समझाई। भेळा हुय डेरै आयनै चीवा सांवतसीनूं सारी वात समझाय कह्यो–"म्हे नासां छां[19]। रांणारा आदमी आवै तिणांनूं कहिजो, मांनसिंघ सूअर २ हेरिया[20] छै, तठै गयो छै।" नै मांनसिंघनूं लेनै उडाया असवार ५ सूं[21], सु रात पोहर एक जातां सीरोही नजीक

---

1 उदयसिंहको पहले चेचक नहीं निकलीथी सो अब निकल आई। 2 सिरोहीसे कोई आया था उसने कहा था। 3 की ओर। 4 पुनः। 5 उदयसिंह बीमारीसे दबता जा रहा है। 6 फिर राव उदयसिंह तो चेचकसे मर गया। 7 तब सरदारोंने विचार किया। 8 आगे चलाही आवे। 9 तब पांच प्रधान ठाकुरोंने रावके मर जानेकी बात दो पहर तक किसीको नहीं सुनाई। 10 साहनी जयमल जो बड़ा चतुर, योग्य और विश्वासपात्र था। 11 को। 12 दाह-संस्कार किया। 13 चलकर। 14 चौहान क्षत्रियोंकी एक जाति। 15 जुड़ा हुआ है। 16 मानसिंहने जयमलको आता देखा जाना। 17 अपने मनुष्योंके पास आया। 18 संकेतमें। 19 हम भागते हैं। 20 तलाश किये हैं। 21 और मानसिंहको ले कर जयमल ५ सवारोंसे उड़ा।

आया । वाग मांहे आय उतरिया । सांहणी जैमल रजपूतांनूं खबर दी । रजपूत सारा राते हीज मांनसिंघ कनै आया, मिळिया । वांसै[1] रांणै डेरै खबर कराई—मांनसिंघ कठै ? तरै चीबै सांवतसी कह्यो—"आहेड़िए[2] सूअर दोय हेरिया था तठै गयो, हमार आवै छै।" सु यूं करतां आथण हुवो[3] । तरै रांणै वळै मांनसिंघनूं याद कियो । तरै कोस १०एक ऊपर मांनसिंघ नाठो जातो[4] मिळियो थो सो उणै कह्यो—"मांनसिंघ तो दूपहर दिन चढ़ियो थो तरै म्हानूं सीरोहीनूं नाठो जातो असवार ५ सूं मिळियो हुतो," तरै रांणै कह्यो—"कासूं जांणीजै[5] ?" तरै किणहीक कह्यो[6]—"सीरोहीथा आदमी एक म्हारै आयो तिण कह्यो–"राव उदैसिंघनूं सीयळ नीसरी छै नै गाढ़ो[7] दुखी छै।" तरै रांणै कह्यो—"जांणीजै छै के उदैसिंघ मुवो[8] ।" औरै पिण कह्यो[9]—"आ वात मिळती दीसै छै।" तरै रांणै कह्यो—"मानसिंघरै डेरै रजपूत छै तिणानूं तेड आंवो[10] ।" तरै देवड़ो जगमाल वडेरो रंजपूत हुंतो सु रांणांरी हजूर आयो[11], तरै जगमालनूं रांणै कह्यो–"यूं मांनसिंघ कांय नाठो, म्हे कासूं करता था[12] ?" तरै जगमाल कह्यो–"सु तो वात मांनसिंघ जांणै ।" तरै रांणै जगमालसूं कहाव कियो[13]—"परगना ४ सीरोहीरा म्हानूं लिख दो ।" तरां जगमाल दीठो[14]–"हूं उजर करूं, रांणो वांसै साथ चाढ़ै, वे कठै ही उतरिया होय तो कोई कबाइत[15] होय ।" तरै जगमाल घणा विनासूं[16] बोलियो–"मांनसिंघ दीवांणरो चाकर छै, म्हांनूं किसो उजर छै । जांणो[17] सु धरती दीवांण ले, जांणो सु मांनसिंघनूं दे ।" तरै परगना ४ रो कागळ रांणै लिखायो । तितरै[18] वात करतां रात घणी गई, कह्यो–"सवारे मतो घताय देसां[19] ।" दीवांण ही सोय रह्या । मानसिंघरो चाकर

---

1 पीछे। 2 शिकारियोंने । 3 ऐसा करते-करते सूर्यास्त हो गया । 4 भागता जाता । 5 इससे क्या समझना चाहिये ? 6 तब किसीने कहा । 7 खूब । 8 ज्ञात होता है कि उदयसिंह मर गया । 9 औरोंने भी कहा । 10 बुला लाओ । 11 दरबारमें आया, सेवामें आया । 12 मानसिंह इस प्रकार क्यों भाग गया, हम उसके विरुद्ध कुछ करते नहीं रहे थे ? 13 तब रानाने जगमालसे कहा । 14 तब जगमालने विचार किया । 15 कोई अनर्थ हो जाय । 16 विनय । 17 चाहे सो । 18 तब, इतनेमें । 19 प्रातःकाल हस्ताक्षर करवा देंगे ।

देवड़ो जगमाल सोइ रह्यो। सवारे हथियार बांध तयार हुय सीख मांगण जाता हुता, तितरै रांणारा पिण आदमी सांमां तेड़ा आया[1]। जगमालनूं रांणै कह्यो–"राते परगना ४ देणा किया छै, तिण कागळमें मतो घातदो[2], तरै देवड़ै जगमाल कह्यो–"मांहरा दिया परगना न आवै[3]। मांनसिंघ उठै छै, धरतीरा सारा रजपूत उठै छै[4]।" इण जवाब मता दिसा यूं कह्यो[5]–तरै रांणै कह्यो–"रजपूतां भलो आपरो दाव कियो[6]।" तरै रजपूतांसूं रांणै कह्यो–"म्हे चार परगना मांगां छां, तिणनूं थां साथै थांणानूं विदा करां छां[7]। थे थांणो वैसांण नै आवा जाज्यो[8]।" तरै देवड़े जगमाल कह्यो–'सीरोहीरा धणी रावळा[9] चाकर छै, सगा छै[10]। अठाताऊं[11] दीवांण वात कहणनूं[12] करै? अेक म्हां साथै[13] प्रोहित भलो आदमी मेलोजै[14]। राव जवाव करसी सु दीवांणसूं आय मालम[15] करसी। तरै दीवांण ही वात कवूल करी[16]। इणां साथै प्रोहित मेलियो[17]। आगै रजपूते सीरोहीरा मिळनै राव मांनसिंघनूं टीको दियो[18]। नै रावरो रजपूत पिण रांणारा प्रोहितनूं[19] ले सीरोही आयो। प्रोहितरो घणो आदर-भाव कियो। हाथी १, घोड़ा ४ दीवांणनूं प्रोहित साथै आपरा आदमी दे पेसकस मेलिया[20]। कागद मांहे घणी मनुहार लिखी नै कह्यो— 'च्यार परगनांरी कासूं वात छै[21] ? सीरोही सारो दीवांणरी छै। हूं दीवांणरो रजपूत छूं।" तरै दीवांण पिण राजी हुवा।

२७ राव मांनसिंघ दूदारो। वडो दूठ[22] ठाकुर हुवो। सीरोही

---

1 इतनेमें रानाके मनुष्य भी बुलानेके लिए सामने आ गये। 2 उस पत्रमें हस्ताक्षर कर दो। 3 मेरे देनेसे परगने आपको नहीं मिल सकते। 4 मानसिंह उधर है, देशके सव सरदार वहां हैं। 5 इसने हस्ताक्षर करनेके सम्बन्धमें यह उत्तर दिया। 6 राजपूतोंने अपना अच्छा दाव खेला। 7 जिसके लिए तुम्हारे साथ गारद भेज रहा हूँ। 8 तुम वहां पर थाना लगवा कर आगे जाना। 9 आपके। 10 सम्बन्धी हैं। 11 यहां तक। 12 किसलिये 13 मेरे साथ। 14 भेजिये। 15 विदित करा देगा। 16 स्वीकार कर दी। 17 भेज दिया। 18 राजतिलक किया। 19 को। 20 रावने पुरोहितके साथ हाथी १, घोड़े ४ और अपने कुछ आदमी पेशकशीमें भेजे। 21 चार परगनोंकी कौनसी वात है ? 22 पराक्रमी, जवरदस्त।

घणो तपियो[1]। पातसाही फोजांसूं घणी वेढ कीवी[2]। सीरोही पाखती निपट वडा मेवास कोळियांरा छै[3]। आज पैहली किणही सिरोहीरै धणी कदै[4] अै[5] मेवास अमल कियो न थो। सु मांनसिंघ एकण दिन फोज बावीसां ठोड़ै ऊपर विदा कीवी[7]। तिण फोजां बावीस ही ठोड़ै गांव भेळ उणांनूं परा काढ़नै उवै ठोड़ां लीवी[8]। रावरा थांणा मेवासे बैठा। मास ६ रह्या। पछै कोळीसारा रावरै पगे आय लागा। राव हुकम कियो सु हुकम माथै चढ़ाय लियो। पछै राव कोळियांनूं खुसी हुय धरती पाछी दी। आपरा थांणा बुलाइ लिया[9]।

राव रायसिंघरी बैर[10]–राव उदयसिंघरी मा--चांपाबाई। राव गांगारी बेटी सु निपट दाढ़ीक-आदमी[11]। सु उदैसिंघरी बैरनूं आधांन[12] छै। सु चांपा बाई केहवै--"सवारै मांहरै पोतरो हुसी[13]। मांनसिंघ कुण आदमी जिको टीको भोगवै छै?" पछै मांनसिंघ चांपाबाईनै उदैसिंघरी बैर गरभवंतीनूं ऊजळै लोहड़ै मारी[14]।

मानसिंघ, सुरतांणरी वसीरी-वरकसोरै लिया पंचाइण पंवार परधांन हुतो तिणनूं विस दियो[15]। तिणरो भतीज कलो पंवार थो सु रावरै खवास हुतो[16]। सु राव आबू चढ़िया था उठै कलानूं क्यूं धकोसो दिरायो[17]। पछै आथणरा[18] राव आरोगता था तरै कले पँवार रावनूं कटारी वाही[19], नै कुसळै गयो[20]। राव कटारी लागां पछै पोहरेक जीवियो[21]। तरै रजपूते पूछियो--"रावळो तो ओ सूळ छै[22]। रावळै बेटो न छै। टीकारो किणनै हुकम छै?" तरै राव

1 सीरोही पर बहुत समय तक कुशलतासे शासन किया। 2 बादशाही फौजोंसे अनेक लड़ाइयां लड़ीं। 3 सिरोहीके पास कोलियोंके बहुत बड़े मेवासे थे (मेवासा = लुटेरोंके रहनेका स्थान)। 4 कभी। 5 इन। 6 बाईस। 7 भेजी। 8 उन फौजोंने बाईस ही स्थानोंके निकटके गांवोंसे उनको निकाल उन गांवों पर अधिकार कर लिया। 9 अपने थानोंको वापिस बुला लिया। 10 स्त्री, पत्नी। 11 बुद्धिमान और दृढ़ता वाली स्त्री। 12 गर्भ। 13 कल मेरे पौत्र होगा। 14 फिर मांनसिंहने चम्पाबाई और उदयसिंहकी गर्भवती पत्नीको तेज धार वाले शस्त्रसे मार डाला। 15 भाणके पुत्र सुरतानकी कर-मुक्त प्रजासे बलात् कर प्राप्त करनेके कारण पँवार पंचायणको मानसिंहने विष देकर मरवा डाला। 16 प्रीतिपात्र सेवक। 17 वहाँ कलाको कुछ धक्कासा दिया। 18 संध्याके समय। 19 कटारी मारी। 20 और कुशलपूर्वक चला गया। 21 एक पहर तक जीवित रहा। 22 आपका तो यह हाल है।

मांनसिंघ कह्यो–"टीको सुरतांण भांणरानूं[1] देजो।" पछै सारै रजपूते नै देवड़े विजै हरराजोत मिळनै राव सुरतांणनूं टीको दियो। सुरतांण राव हुवो।

राव सुरतांण भांणरो। तिणरै पीढ़ियांरी वात—

राव लाखो आंक २२।
२३ ऊदो लाखारो। टीकै वैठो नहीं
२४ रणधीर।
२५ भांण रिणधीररो।
२५ सूजो रिणधीररो। देवड़े विजै मरायो।
२५ प्रताप रिणधीररो।
२६ राव सुरतांण[2]।
२७ नाहरखांन[3]।
२७ चंदो।
२७ जैसिंघदे।
२७ वाघ।
२७ करन।
२६ सांईदास। मोटै राजा मारियो[4]।
२७ रायसिंघ।
२७ रांम।
२८ भोपत।

वात राव सुरतांणरी

राव मांनसिंघ मुवो तरै राव सुरतांणनै सारै रजपूते मिळ टीके वैसांणियो[5]। देवड़ा विजारो घणो कारण छै[6]। विजोराव सुरतांण

1 राज्य तिलक भाणके पुत्र सुरतानको करना। 2 राव लाखाका पुत्र। 3 खानान्तनाम सिरोही और उत्तर गुजरात आदिमें पाये जाते हैं। 4 जोधपुरके मोटा-राजा उदयसिंहने सांईदासको मारा था। 5 गद्दी पर वैठा दिया, राज्यतिलक कर दिया। (सुरतान १२ वर्षकी अवस्थामें वि.सं. १६२८में गद्दी वैठा)। 6 देवड़ा विजयका वहुत मान और प्रभाव है।

कनै धणी-धोरी छै[1]। राव मांनसिंघरै बैर बाहड़मेरी थी[2], तिणरै पेट आधांन थो[3]। राव मानो मुवो तद पछै बेटो जायो[4]। नै राव सुरतांण विजो कहै छै त्यूं करै छै। पिण देवड़ो सूजो रिणधीरोत-रावरै काको, तिको भला २ रजपूत, भला २ घोड़ा राखै छै, सु विजानूं सुहावै नहीं। विजो जांणै छै मांनारो बेटो तेड़ाऊं[5]। सुरतांणनै परो काढूं[6]। तो सूजो मारियो चाहीजै[7]। तरै आपरानूं कह्यो[8]–"सूजो मारो[9]" तरै सिगळै[10] कह्यो–"आ वात मत करो। सीरोहीरो धणी सुरतांण हुय निवड़ियो[11]। थे रावरो काको मा मारो[12]।" पिण विजो किणरो कह्यो मांनै[13]? देवड़ा रावत सेखावतनूं कह्यो। रावत बालीसा जगमालरै डेरे सूजानूं मरायो। देवड़ो गोयंददास देवीदासरो डेरा कनारे थो[14]। विजो सूजारै डेरे घोड़ा असबाब लूटणनूं आयो, तरै गोयंददासही बाज मुवो[15]। राव मांनारो बेटो बाहमेर थो, तिणनूं देवड़े विजै तेड़ायो थो[16], सु निजीक आयो। विजो सांमी चढ़ियो[17] नै राव सुरतांणनूं सैहर-बंद करी काळंधरी गयो[18] नै आपरा रजपूत कनै राख गयो। कह गयो–"सुरतांणनूं इण ओरा मांहेथी बारै नीसरण मत देजो[19]।" पछै राव जांणियो–विजो पाछो आयो हुवो मोनूं मारसी[20]। तरै एक देवड़ो डूंगरोत भलो रजपूत थो, एक चीबो हुतो। तरै उण डूंगरोतनूं समझायो। कह्यो–"तूं मोनूं काढ़ि, तोनूं ढबावणवाळो हूंई छूं[21]।" उण कह्यो—"राव ! जांणूं छूं, सको सु सहु करो[22]।" कह्यो--

1 राव सुरतानके पास विजय कर्त्ता-धर्त्ता है। 2 राव मानकी पत्नी वाहड़मेरी थी। (राव मानसिंहकी पत्नी वाड़मेरके रावकी कन्याथी)। 3 उसके गर्भ था। 4 राव मानके मरनेके वाद उसके पुत्र हुआ। 5 मानाके पुत्रको वुला लूं। 6 सुरतानको निकाल दूं। 7 किन्तु इसके लिये सूजाको मरवा देना चाहिये। 8 तव अपने वालों को (अपने मनुष्योंको) कहा। 9 सूजाको मार दो। 10 तव सवने कहा। 11 सिरोहीका स्वामी सुरतान हो चुका। 12 आप राव सुरतानके चचा सूजाको मत मारो। 13 परन्तु विजय किसकी सुने? 14 देवीदासका पुत्र गोविंददास उस समय सूजाके डेरेके पास था। 15 तव गोविंददास भी लड़कर मर गया। 16 वुलवाया था। 17 स्वागत करनेके लिये सामने गया। 18 और राव सुरतानका सैर (घूमना-फिरना) वंदकर कालंद्री चला गया। 19 और यह कह गया कि सुरतानको इस कोठरीसे वाहर नहीं निकलने देना। 20 रावने यह जान लिया कि विजय लौट कर आते ही मुझे मार देगा। 21 तू मुझको वाहर निकाल, तुझको शरण देकर रखने वाला मैं ही हूं। 22 उसने कहा, राव! यह मैं जानता हूं, आप जो कर सको वह सव करो।

"मेवाड़, जोधपुर हूं वसीस तो पिण रु० २००००) रो पटो मोनूं कोकोई देणोइज करसी[1] । उणसूं सील-कवल किया[2] । वीचमें महादेवजी दिया[3] । तरै सिकाररो मिस कर नीसरिया[4] । चीवासूं भेद भागो नहीं[5]; तरै कोसे २ गयां चीवो कहै–"हूं इण वातमें जांणू नहीं, जांण न दां[6] ।" तरै डूंगरोत थो, तिण कह्यो चीवानूं–"तूं उरो आव, हूं तोनूं मारीस[7] ।" तरै चीवो झख मार रह्यो । राव सुरतांण नासनै रांमसेण गयो[8] ।

वीचली वात छै[9]

देवड़े विजै सूजानै मारनै सूजारी वसी ऊपर साथ मेलियो[10] । उठै मालो सूजावत[11] मरियो । वसी सारी लूंटी । प्रथीराज नै स्यामदासरी मा इणांनूं द्रैहड़ १ मांहे ऊपर पला नांखनै रही[12] । वे परा गया तरै द्रैहड़ मांहेथी रातरा नीसरनै आवूरी गोढै वार गया[13] । राव सुरतांण रांमसेण आयो । तरै अेही सूजारा वेटा इणांरा गाडा रांमसेण ले आया[14] । देवड़ो विजो राव मांनारा वेटा साम्हो गयो थो, तरै उणै विजारै खोळै डावड़ो आंण मेलियो[15] । डावड़ानूं कांई वलाइ हुई सु जीव नीसर गयो[16] । विजो पाछो आयो, नै देवड़ा समरानूं कह्यो–"मोनूं टीको दो ।" घणी ही कही पिण इणै कह्यो–"राव लाखारै पेटरा तो वीस जणा छै[17] । जठा सूधो एक डावड़ो

---

1 रावने कहा, मेवाड़ या जोधपुर जहां भी मैं जाकर रहूँगा, इनमेंसे कोई न कोई मुझे रु० २००००) के पट्टेकी जागीरी दे ही देंगे। 2 उससे शपथकी और वचन दिया। 3 कोई प्रतिज्ञा-भंग नहीं करे अतः वीचमें महादेवजीको रख कर प्रतिज्ञाको दृढ़ किया। 4 तव शिकारका वहाना करके वहांसे निकल गये। 5 चीवाको इस भेदका पता नहीं लगा। 6 जाने नहीं दूंगा। 7 मैं तुझको मार दूंगा। 8 राव सुरतान भाग कर रामसीन चला गया। 9 वीचका छूटा हुआ प्रसंग है। 10 सूजाकी प्रजाके ऊपर सेना भेजी। 11 सूजाका पुत्र। 12 पृथ्वीराज और श्यामदासकी माता, इन दोनों वच्चोंको एक खड्डेमें उन पर कपड़ा डालकर छिपकर रही। 13 आवूकी सीमासे वाहर चले गये। 14 तव यहही सूजाके इन पुत्रोंके गाड़ोंको रामसीन ले आया। 15 तव उसने अपने वच्चेको लाकर विजयकी गोदमें रख दिया। 16 वच्चे को न जाने क्या वला हुई कि उसके प्राण निकल गये। 17 राव लाखा के वंशमें २० व्यक्ति हैं।

वरस १रो हुवै तठा सूधो थारी कुण मजाल, तूं टीको लै[1] ?" इणे-उणे विरस हुवो[2] । अै रीसाय परा गया[3] । विजो मास चार हुवा सीरोही भोगवै छै[4] । आ वात रांणै सांभळी, तरै राव कलो मेहाजलोतनूं[5]—दीवांणरो भांणेज थो, इणनूं टीको दे, साथै फौज दे सीरोहीनूं विदा कियो । अै सीरोही आया । विजो नीसर ईडर गयो । कलो सीरोही धणी हुवो । राव कलो सीरोही साहिबीरो धणी । मदार चीबा खींवा भारमलोत ऊपर छै[6] । देवड़ो सूरो, हरराज पिण चाकर छै । पिण दिलगीर तो गाढ़ा छै[7] । नै सुरतांण पिण आंण कलानूं जुहार कियो छै[8] । गांव केइक पटै दिया छै. तठै रहै छै । करैक[9] चाकरी पिण करै छै । एकण दिन राव कलो दरबारथी[10] ऊठियो छै । देवड़ो समरो, सूरो हरराज दुलीचे बैठा छै. तरै चीबै पाता फरासनूं कह्यो—"दुलीचो उरो ल्याव[11] ।" फरास आय देखै तो अै ठाकुर बैठा छै । तरै पाछो गयो । चीबे पातै पूछियो—"दुलीचो लायो ?" तरै फरास कह्यो—"सूरोजी,समरोजी, हरराज बैठा छै ।" तरै चीबै कह्यो—"थारा बाप लागै छै[12]? दुलीचो उरो ल्याव ।" तरै फरास वळै[13] आयो, तरै इणे दीठो[14] । ओ फिर-फिर जाय । तरै इणे कह्यो—"दुलीचो चीबो पातो मंगावै छै ?" तरै इण कह्यो—"राज[15] सारीही बात समझो छो ।" तरै अै परा ऊठिया,कह्यो—"परमेस्वर कियो तो कलारी जाजम नहीं बैसां[16] ।" अै रीसायनै घरै गया[17] । सुरतांणसूं इणे वात कराई—तूं आव, म्हां भेळो होय[18] ।" तरै राव नासनै समरा, सूरारा गाडा

---

1 जहां तक इस वंशमें एक भी बच्चा एक वर्षकी आयुका मौजूद है, तेरी क्या मजाल कि तू राज्यका अधिकारी बने? 2 इनके और उनके परस्पर विरोध हुआ। 3 ये रुष्ट हो कर चले गये। 4 विजय चार माससे सिरोहीका राज्य कर रहा है। 5 मेहाजलका पुत्र। 6 सब कामका आधार भारमलका पुत्र चीबा खींवाके ऊपर है। 7 परंतु मनमें बहुत नाराज हैं। 8 सुरतानने भी आकर कलाको (राज्याधिकारी होनेका) प्रणाम किया। 9 कभी-कभी। 10 से। 11 कालीन उठाकर ले आव। 12 क्या ये तेरे बाप लगते हैं ? 13 फिर। 14 तब इन्होंने देखा। 15 श्रीमान् आप। 16 परमेश्वरने चाहा तो अब हम कलाकी जाजम पर (कलाके दरबारमें) नहीं बैठेंगे। 17 ये रुष्ट होकर घर चले गये। 18 सुरतानसे इन्होंने कहलवाया कि तू आकर हमारे शामिल हो।

था तठै आयो[1]। इणे भेळा हुय टीको राव सुरतांणरै काढ़ियो[2]। देवड़ो विजो ईडर चाकरी करै थो सु विजानूं राव सुरतांण तेड़ायो[3]। विजो रोह, सरोतरे होय आय उतरियो[4]। तरै आ खबर राव कलैनूं नै चीवा पातैनूं पोहती[5]। विजो आवै छै। तरै कलै देवड़े रावत हामावतनूं असवार ५०० देनै घाटारै मूंडै विजै सांमां मेलियो[6]। रावत हामावत गांव माळ आय ऊतरियो नै विजो गांव ब्रहमांण आय ऊतरियो[7]। ब्रहमांणथी कोस १ माथै वेढ[8] हुई। असवार १५० विजै कनै था। रावत कनै तो साथ घणो थो, पिण विजो जीतो[9]। आदमी ४० कलारा कांम आया। आदमी ६० घावै-पड़िया[10]। रावत हांमावत कलारी फोजमें सिरदार तिको पूरे-घावै पड़ियो[11]। आदमी १३ विजारा कांम आया। विजो वेढ़ जीतनै रांमसेण राव सुरतांण भेळो हुवो[12]। विजो आवतां सांमां सुरतांणरो घणो बळ वधियो[13]। विजो राह-वेधी[14] रजपूत थो। सु रावजीनूं कह्यो–"मिलकखांनजी जाळोररो धणी छै। इणनूं आंपणी भीर[15] करो।" तरै मिलकखांन विचै आदमी फेरियो[16]। कह्यो–"म्हे रुपिया लाख १ थांनूं दां छां[17]। थे मांहरी मदत आवो।" तरै मिलकखांन कह्यो–"लाख रुपियां वासतै भाईवंध मराया न जाय। सीरोहीरा परगना ४ मोनूं दो तो थांहरी मदत आऊं। परगनांरी विगत—१ स्यांणो, १ वडगांव, १ लोहियांणो,

---

1 तब राव सुरताण जहाँ समरा और सूराके गाड़े इसकी प्रतीक्षामें खड़े थे, दौड़ कर वहां आया। 2 इन्होंने सम्मिलित होकर राव सुरतानको राज्य-तिलक कर दिया। (यह राज्यतिलक रामसीनमें हुआ था)। 3 देवड़ा विजय ईडरमें चाकरी करता था उसे सुरतानने बुला लिया। 4 विजय सिरोआं गांव होता हुआ रोहुआ गांवमें आ पहुँचा। 5 तब यह समाचार राव कला और चीवा पातेको पहुँचा। 6 तब देवड़ा कलाने हामाके पुत्र रावतको ५०० सवारोंके साथ गिरवरकी घाटीके द्वार पर विजयको रोकनेके लिए भेजा। 7 हामाका पुत्र रावत माल गांवमें ठहरा और विजय वरमांण गांवमें आकर ठहरा। 8 लड़ाई। 9 परन्तु विजयकी जीत हुई। 10 आहत हुए। 11 सम्पूर्ण आहत होकर गिर गया। 12 राव सुरतानके शामिल हुआ। 13 विजयके आ जानेसे सुरतानका बल बहुत बढ़ गया। 14 दूरदर्शी। 15 इसको अपना सहायक बनाओ। 16 तब इसके लिए मिलकखांके बीच आदमीका आना-जाना किया गया। 17 हम एक लाख रुपये तुमको देते हैं।

१ डोडियाळ[1] । किणही कह्यो—"अै परगना दीजै । किणही कह्यो—अै परगना न दीजै ।" तरै विजै कह्यो—"अै तो परगना माथै सटै मांगै छै[2], नचींत दो[3] ।" तरै परगना ४ मिलकखांनजीनूं दिया । तरै असवार १५०० खांनजी लेनै राव सुरतांण, विजै भेळो हुवो[4] । राव कलो सीरोहीथा[5] चलायनै आदमी हजार ४००० था[6] सामा काळधरी आय ऊतरियो । मोरचा मंडियो । नाळां मांडी[7] । अठै इण काळधरीरा डेरा निपट गाढ़ा सझाया[8] । नै राव सुरतांण कनै आदमी हजार तीन ३००० भेळा हुवा छै । राव सुरतांणनूं खबर हुई—"काळधरी कले इण भांत सझी छै । काळधरी जाइजै तो धको खाइजै[9] । तरै राव सुरतांणरै समरो, सूरो, विजो देवड़ो वडा राह-वेधी[10] रजपूत था, त्यां कह्यो[11]—"आंपणै काळधरीथा कासूं कांम छै[12] ? आंपै तो पाधरा सीरोहीनूं चलावस्यां[13] । कलारै लड़ियो जोइजसी तो आय लड़सी[1] । तरै इणां तीन फोज करी नै सीरोहीनूं चलाया । काळधरीसूं कोस १ नीसरिया[15] तठै राव कलो आडो आय लड़ियो[16] । वेढ़ हुई[17] । वेढ राव सुरतांण जीती[18] । कलै हारी[19] । इण वेढ़ मांहे विहारियै[20] निपट घणो बळ कियो । राव सुरतांणरी तरफ आदमी वीस कांम आया । त्यां मांहे[21] मुदायत[22] देवड़ो सूरो नरसिंघोत समरारो भाई कांम आयो । राव कलारो अतरो साथ कांम आयो[23] ।

---

1 विहारी-पठानोंका आधिपत्य हट कर जब जालोर जोधपुरके अधिकारमें आ गया, तब सिरोहीके ये चारों परगने भी स्वतः मारवाड़-राज्यमें मिल गये थे। आज समस्त राजस्थान भारतका एक प्रान्त बन जाने पर मारवाड़ और जैसलमेर राज्यके साथ सिरोही राज्य भी राजस्थानके जोधपुर-डिवीजनका एक अंगमात्र रह गया है। 2 ये परगनेतो वह सिरके बदलेमें मांगता है। 3 निश्चिन्त होकर दें। 4 सम्मिलित हुआ। 5 सिरोही से। 6 चार हजार सहित। 7 मोरचे पर तोपें रखी गईं। 8 इधर इसने कालंद्रीके मोरचेको अत्यन्त दृढ़ रखा। 9 कालंद्री चले जायें तो हानि उठाना पड़े। 10 दुरदर्शी, युद्धानुभवी, अनुभवी। 11 उन्होंने कहा। 12 अपनेको कालंद्रीसे क्या काम है ? 13 अपन तो सीधे सिरोहीकी ओर चलावेंगे। 12 कलाको लड़नेकी आवश्यकता है तो वहां आकर लड़ेगा। 15 निकल गये। 16 जहां पर राव कला आडा आकर लड़ा। 17 लड़ाई हुई। 18 राव सुरतानने लड़ाई जीतली। 19 कलैकी हार हुई। 20 विहारी पठानोंने। 21 उनमें। 22 मुख्य। 23 राव कलाके इतने मनुष्य काम आये।

१ चीबो पतो ।

१ सीसोदियो मुकंददास ।

१ सीसोदियो स्यांमदास ।

१ सीसोदियो दलपत ।

४ कांम आया । राव सुरतांण वेढ़ जीती । कलो नास गयो[1] । सुरतांण खेत सोधियो[2] । पछै राव सुरतांण सीरोही आय बैठो । राव कलारा मांणस[3] सीरोही था । राव सुरतांण सेझवाळै बैसांण, राव कलो थो तठै पोहचता किया[4] । राव सुरतांण सीरोही धणी हुवो । सीरोही मुदो देवड़ा विजै माथै छै[5] । पछै विजो दिन-दिन जोर चढ़तो गयो छै । सुरतांण नै विजै गाढ़ो विरस छै[6], पिण राव पूज सकै नहीं[7] । तिण टांणै राव सुरतांण बाहड़मेरी परणियो, तिका वहू सीरोही आई[8] । बहू बाहड़मेरी ठाकुराईरो नै विजारो घाट[9] देखनै रावनूं कह्यो–"ओ ठाकुराईरो किसो सूल[10] ? धणी थे कना विजो धणी[11]?" तरै राव सुरतांण कह्यो–"धरती मांहे रजपूत नहीं, विजासों बलाय सांमां मांडै[12] । तरै बाहड़मेरी कह्यो–"पेट भरस्यो तो धरती मांहे रजपूत घणाई छै[13] ।" तरै राव कह्यो–"थे दस मांणस तेड़ावो[14] ।" तरै बाहड़मेरी आपरा पीहरसूं आदमी २० तेड़ाया[15] सु आदमी २० वीस निपट प्रवळ आया । आदमी रावरा पासवांन[16] हुवा । रावरी दछा रूड़ी दीठी[17], तरै केई धरतीरा भला रजपूत पिण

1 कला भाग गया। 2 सुरतानने रणक्षेत्रका निरीक्षण किया। 3 अंतःपुर, जनाना। 4 राव सुरतानने उनको पालकीमें विठाकर जहां राव कलाथा वहां पहुँचा दिया। 5 विजय सिरोहीका सर्वेसर्वा वना हुआहै। 6 सुरतान और विजयके आपसमें खूब विरोध है। 7 किन्तु रावका वश नहीं चलता। 8 उस समय राव सुरतानने (वाहड़मेरके जागीरदारकी कन्या) वाहड़मेरीसे विवाह किया। वह वधू सिरोही आई। 9 ढंग। 10 जागीरदार होनेका और जागीरीका यह कैसा ढंग ? 11 जागीरीके स्वामी आप हैं अथवा उसका स्वामी विजय है? 12 पृथ्वी पर राजपूत नहीं जो विजय जैसी वलासे सामना करें। 13 उदरपूर्ति कर दोगे तो पृथ्वी पर राजपूत वहुत हैं। 14 तुम दस मनुष्योंको वुला लो। 15 तव वाहड़मेरीने अपने नैहरसे वीस आदमी वुलवाये। 16 वाहड़मेरसे आये हुए आदमी रावके अंगरक्षक वने। 17 रावकी दशा अच्छी देखी।

राव कनै आय रहण लागा । विजे नै राव माथा पड़िया लीजै छै[1] । तिण समै वीजारा भाई २ लूणो, मांनो वडा रजपूत था सु रावथी जुदा विजाथी फाटनै आय मिळिया[2] । रावरो चेळो दिन-दिन भारी हुतो गयो[3] । एक वार सीरोही मांहेसूं देवड़ा विजानूं परो काढ़ियो[4] । तरै विजो आपरी वसीरै गांव गयो छै[5] । तिण टांणै[6] महाराजा रायसिंघजी बीकानेररा सोरठनूं जावता सु सीरोही निजीक आया[7] । तरै राव सुरतांण सांमों जाय मिळियो । रावरो राजा घणो आदर कियो[8] । पछै देवड़ो विजोही घणो साथ लेनै महाराज रायसिंघजीसूं आय मिळियो । घणोही लालच दिखायो, पिण राजा विजानूं कबूल न कियो[9] । राव सुरतांणसूं वात कीवी । आधी धरती पातसाहरै कीधी । आधी धरती रावरी कीधी, नै विजो काढ़णरी कबूल राखी[10]। पछै महाराज रायसिंघ विजानूं परो काढ़ियो । आधी धरती पातसाहरै कीवी[11] । तिण मांहे राव मदनो पातावत असवार ५०० दे वाव कन्है राखियो नै आप सोरठ गया[12] । तिको आधो वंट पातसाहरै कियो, तरै राजा रायसिंघ दरगाहनूं लिखियो कियो--"जु राव सुरतांण सीरोहीरो धणी, तिणनूं इण भांत ग्रासिया[13] विजै दबायो हुतो सु राव

1 'माथापड़िया लीजै छै' मुहावरा है–यहां पूरे वाक्यका अर्थ है—विजय और राव सुरतानके परस्पर शत्रुता यहां तक बढ़ गई कि एक-दूसरे का सिर काट लेनेकी ताकमें लगे रहते हैं। 2 उस समय विजयके दो भाई लूणा और माना, जो बड़े वीर राजपूत थे और पहले रावसे जुदा थे सो विजयके विरुद्ध होकर रावसे आकर मिल गये। 3 'चेळो भारी होणो' मुहावरा है। शब्दार्थ है—ताकड़ीका पलड़ा भारी होना लाक्षणिक अर्थ है—पक्षका समर्थ होना। वाक्यार्थ रावका पक्ष दिनप्रतिदिन समर्थ बनता गया। 4 निकाल दिया। 5 तब विजय अपनी जागीरीके गांवमें चला गया है। 6 उस समय। 7 सौराष्ट्रको जाते हुए सिरोहीके नजदीक आये। 8 'रावरो राजा घणो आदर कियो।' यह वाक्य अशुद्ध लिखा गया प्रतीत होता है। होना चाहिये था—'राजारो राव घणो आदर कियो।' आदर-भाजन अतिथि होता है न कि आतिथ्यकर्त्ता। 9 किन्तु महाराजा रायसिंहने विजयको सिरोहीका राव बनाया जाना स्वीकार नहीं किया। 10 और विजयको देशसे निकाल देनेकी शर्त मान्य रखी। 11 सिरोही राज्यकी आधी भूमि बादशाहके अधीन रखनेका निश्चय किया। 12 उसमें पाताके पुत्र राठोड़ मदनको ५०० सवार देकर वावके पास रखा और (रायसिंह) स्वयं सौराष्ट्रको चले गये। वाव, एक गांव है जो मारवाड़ और सिरोहीकी सीमाओंके निकट उत्तर गुजरातमें है। 13 ग्रास—एक प्रकारकी जागीरी है जो वँटमें गुजारेके लिये अथवा भोजन आदिके खर्चेके लिये दी जाती है और उसका भोगने वाला ग्रासिया कहलाता है।

सुरतांण मोनूं आय मिळियो । आधी सीरोही देणी कबूल की, तरै म्हे रावरो ऊपर कियो[1] । विजै हरराजोतनूं परो काढ़ियो, नै असवार ५०० सूं म्हैं, म्हारो लोक आधो मुलक सीरोहीरो पातसाही खालसै कियो छै[2], तठै थांणो राखियो छै। हजरतरै दाय आवै जिण जागीर-दारनूं दीजै, भावै करोड़ी भेजीजै[3] । राव हुकमी-चाकर छै[4] ।"

तिण समै दीवांण-बगसी सीरोहीरा आधरी तजवीज करै छै[5], सु सीसोदियो जगमाल, उदैसिंघ रांणारो बेटो दरगाह[6] गयो छै । सु ओ राव मांनसिंघरी बेटी परणियो हुतो, सु उठारो भोमियो छै[7] । इण मुनसबमें सीरोहीरो आध मांगियो[8] । दीवांण-बगसीये पातसाह अकबरसूं मालम कीवी[9] । तरै पातसाहजी कह्यो—"रांणारो बेटो छै, लायक छै, दो । तरै तालिको लिख दियो[10] । जगमाल तालीको ले आयो । तरै राव सांम्हो आय मिळियो । विजो देवड़ो पिण दरगाह गयो हुतो सु विजानूं किणही सीरोही दी नहीं, तरै विजो पिण जगमाल साथै आयो । धरती तो राव सुरतांण आधी जगमालनूं दी, नै पाटरा-घरां[11] मांहे राव सुरतांण रहै छै, नै बीजा घरां[12] मांहे सीसोदिया जगमाल आय रह्यो छै । सु राव मानसिंघरी बेटी जगमालरी बैर[13] तिका कहै—"म्हारै बापरा घर, तिकां मांहे म्हां थकां दूजा क्यूं रहै[14] ?" घरां-पाटरी दिसा अणवणत हीज छै[15] । तिण समै राव सुरतांण एकण दिन कठीके[16] गयो हुतो, वांसै[17] जगमाल, विजो दाव[18] करनै घरां ऊपर गया । सोळंकी सांगो, आसियो, दूदो, खंगार,

1 तव रावकी सहायता की । 2 और ५०० सवारोंके साथ मैंने और मेरे मनुष्योंने आधे सिरोही देशको बादशाही खालसेमें कर लिया है। 3 हजरतकी इच्छा हो उस जागीर-दारको देदें और चाहे अपना करोड़ी भेजदें (करोड़ी=कर उगाहनेवाला अध्यक्ष) । 4 राव आपका आज्ञाकारी सेवक है। 5 उस समय दीवान और वक्सी सिरोहीके आधे भागको बाँटनेकी तजवीज कर रहे हैं। 6 बादशाही दरबारमें। 7 यह राव मानसिंहकी बेटीको व्याहा था अतः वह वहांका जानकार है। 8 इसने मनसबके साथ सिरोहीका आधा भाग मांगा। 9 दीवान और वक्सी लोगोंने बादशाह अकबरसे निवेदन किया । 10 तव अधिकार-पत्र लिख दिया । 11 राजाके रहनेके महल । 12 दूसरे घरोंमें। 13 पत्नी । 14 मेरे बापके घर, जिनमें हमारे होते हुए दूसरा कोई क्यों रहे ? 15 पट्टघरों (मुख्य प्रासाद) के संबंधमें अनबन चल ही रही है। 16 कहीं। 17 पीछेसे। 18 अवसर देख करके; ताक लगा कर।

रावरा चाकर सुरतांणरै घरां मांहे हुता, तिणै घर झालिया[1]; वेढ़ की[2]; घर हाथ नाया[3]। पछै खिसांण[4] हुय फेर जगमाल विजो साथै ले दरगाह गयो। उठै जाय पुकार की। पछै पातसाह जगमालरी भीर[5] राव रायसिंघ चंद्रसेनोत, कोळीसिंघ दांतीवाड़ारो धणी, के[6] तुरक मदत दे विदा कियो। जगमाल फोज ले सीरोही आयो। राव सुरतांण सीरोही छोड़ दी। भाखररी खंभ झाली[7]। जगमाल आय सीरोही मोहल[8] बैठो।

कितराहेक[9] दिन हुवा तरै जगमाल जांणियो—सैहर[10] तो लियो, हमैं चढ़ने रावनूं आबूरी तळक ही छोड़ावूं[11]। सु जगमाल असवार हुवो। राव पिण आंण मुकांम कोस २ बाकी छोड़ कियो[12]। सु जगमालरै कटकै[13] विचारियो—"जु राव सुरतांणरै वसीरा रजपूतांरा गांव छै तिण ऊपर फोज १ मेलीजै[14], ज्यूं रजपूत जुदा-जुदा बिखर जाय। पछै सुरतांणनूं कूट मारिस्यां[15]।" तरै देवड़ै विजै हरराजोतनूं रा' खींवो मांडणोत, रा' रांम रतनसियोत, के तुरक भीतरोट ऊपर विदा करणरो विचार कियो[16]। तरै देवड़ै विजै, जगमाल रायसिंघनूं कह्यो—"मोनूं थांसूं अळगो करस्यो तो राव थां ऊपर आवसी[17]।" तरै राठोड़ै ठाकुरै कह्यो—"जिण गांव कूकड़ो न हुवै तठै पिण रात विहावै छै[18]।" आ वात कही तरै विजो भीतरोटरी तरफ गयो। वांसै राव सुरतांण देवड़ा समरानूं खबर दीवी--"विजो भीतरोटनूं साथ ले गयो।" तरै राव सुरतांणनूं देवड़ै समरै कह्यो—

1 जिन्होंने घर पकड़ लिये। घरोंसे नहीं निकलनेके निश्चय पर दृढ़ रहे। 2 लड़ाई की। 3 घर हाथ नहीं आये। 4 लज्जित होकर। 5 सहायतार्थ। 6 कई। 7 पहाड़की गालको पकड़ा। पहाड़की गालमें शरण ली। खंभ = दो पहाड़ोंके बीचका सँकड़ा और ढालू गुप्त स्थान। 8 महल। 9 कितनेक। 10 शहर। 11 अब चढ़ाई करके रावको आबूकी तलहटी भी छुड़वादूं। 12 रावने भी दो कोश शेष छोड़ कर अपना मुकाम किया। 13 सेनाने। 14 जिसके ऊपर सेनाकी एक टुकड़ी भेजी जाय। 15 पीछे सुरतानको मार देंगे। 16 कई तुर्कोंको भीतरोट पर भेजनेका विचार किया। 17 मुझको तुम्हारेसे अलग कर देंगे तो राव तुम्हारे ऊपर चढ़ आयेगा। 18जिस गांवमें मुर्गा नहीं होता है वहां भी रात वीत कर दिन निकलता है। व्यंग्योक्ति कहावत है। भावार्थ यह है कि—तुम्हारे विना भी हम अपनी रक्षा कर सकते हैं।

"हमैं ढील न कीजै[1] ।" गांव दतांणी सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघरो डेरो छै, तिण ऊपर राव सुरतांण नगारो देनै आयो[2] । इणांरै खबर काई[3] नहीं । कोस १ तथा २ रो वीच[4] छै । अै जांणै राव विजो भीतरोटनूं गयो छै तठी जाय छै[5] । संमत १६४० रा काती सुद ११ नै राव सुरतांण इणां ऊपर आयो[6] । वेढ़ हुई[7] । इतरो साथ[8]—सीसोदियो जगमाल, राव रायसिंघ, कोळीसिंघ तीनै सरदार काम आया—

१ राव रायसिंघ चंद्रसेणोत ।
१ सीसोदियो जगमाल उदैसिंघोत ।
१ कोळीसिंघ, दांतीवाड़ारो धणी ।
१ राव गोपाळदास किसनदासोत गांगावत ।
१ राव सादूळ महेसोत कूंपावत ।
१ राव पूरणमल मांडणोत कूंपावत ।
१ राव लूणकरण सुरतांणोत गांगावत ।
१ राव केसोदास ईसरदासोत ।
१ चहुवांण सेखो झांझणोत ।
१ पड़िहार गोरो राघावत ।
१ पड़िहार भांण अभाउत ।
१ देवो ऊदावत ।
१ भा नेतसी ।
१ भा जैमल ।
१ वारहठ ईसर ।
१ मांगळियो किसनो ।
१ धांधू खेतसी ।

1 अब देर नहीं कीजिये । 2 राव सुरतान अपनी चढ़ाईका नगारा बजाता हुआ आया । 3 कुछ भी । 4 अंतर । 5 ये जानते हैं कि राव विजय भीतरोटको गया है इसलिये यह भी उधर जा रहा हैं । 6 राव सुरतान इनके ऊपर चढ़ आया । 7 लड़ाई हुई । 8 इतने मनुष्य ।

१ सेलहथ[1] बालो ।

मु।। राजसी राघावत ।

१ भाटी कांन आंबावत ।

१ मांगळियो गोपाळ भोजउत ।

१ रा।। खींवो रायसलोत ।

१ ईंदो ।

तठा पछै[2] वळै[3] देवड़ो विजो हरराजोत दरगाह पुकारू[4] गयो नै मोटे राजानूं जोधपुर हुवो[5] तरै[6] इणांरो पिण दावो हुतो[7] नै पातसाह जांमवेग नै मोटा राजानूं सीरोही ऊपर विदा किया । पछै सीरोही ऊपर आया[8] । धरती विगाड़ी[9] ।

देवड़ो पतो सांवतसियोत ।

तोगो सूरावत ।

सूर नरसिंघोत ।

चीबो जेतो खींवावत । चूक कर मारिया[10] ।

राठोड़ वैरसल प्रथीराजोत पेट मार मुवो[11] । तिण समै देवड़ो विजो नै जामवेग मोटा राजाथी[12] जुदी फोज ले दौड़िया हुता[13] । तठै देवड़ो विजो राव सुरतांण मारियो[14] नै संमत १६६७रा आसोज वद ६ राव सुरतांण काळ प्रापत हुवो[15] ।

राव राजसिंघ सुरतांणरो[16] । राव सुरतांण काळ कियो तरै टीके बैठो[17] । भोळो सो ठाकुर हुवो[18] । एक वार राव सुरतांणरो दूजो बेटो सूरसिंघ ग्रास-वेध कियो थो[19] । सूरसिंघरी भीड़[20] देवड़ो भैरवदास,

---

1 शेलधारी । 2 जिसके बाद । 3 फिर । 4 पुकारू बन कर गया । 5 राव मालदेवके पुत्र मोटा-राजा उदयसिंहको जब जोधपुर प्राप्त हुआ । 6 तब । 7 इनकी (विजाकी) भी यह मांग थी । 8 सिरोही पर चढ़ कर आये । 9 सिरोहीकी धरती (देश) का नाश किया । 10 दगा करके मार दिया । 11 पृथ्वीराजका पुत्र राठौर वैरसल पेटमें कटारी मार कर मर गया । 12 से । 13 दौड़े थे । 14 जहां पर राव सुरतानने देवड़ा विजाको मार डाला । 15 राव सुरतान मर गया । 16 सुरतानका पुत्र । 17 राव सुरतान मर गया तब गद्दी पर बैठा । 18 यह ठाकुर भोला सा था । 19 एक बार राव सुरतानके दूसरे पुत्र सूरसिंहने राजद्रोह किया था । 20 सहायता ।

समरावत, डूंगरोत सारा[1] हुवा। रावरी भीड़ देवड़ो प्रथीराज सूजावत हुवो। वेढ़ हुई। राव राजसिंघ वेढ़ जीती। सूरै वेढ़ हारी।

तठा पछै कितरेक[2] दिनै राव राजसिंघ नै देवड़ै प्रथीराज सूजावतसूं ग्रणवरणात[3] हुई। प्रथीराज ग्रास-वेध विजै वाळो मांडियो[4]। प्रथीराजरा वेटा-भतीजा ग्राग खाय ऊठिया[5]। इणरै डीलांरी निपट जोड़[6]। रजपूत निपट भला उण कांठारा वास राखिया[7]। एक वार राव राजसिंघ नै देवड़ा प्रथीराजनूं राणै करन समभावणनूं[8] उदैपुर तेड़िया[9]। पछै ग्रै उटै गया। रांणै कहाव-कथीना[10] किया सु देवड़ो प्रथीराज, रांम, रायसिंघ, नाहरखांन, चांदो—एकण भांतरा ग्रादमी[11]। रांणासूं बुराई करां[12], इसड़ी ग्रांगवण मन मांहे धरै[13]। सु रांणारा ग्रादमी वीच फिरिया[14]। तिणां[15] रांणानूं वात समभाई। कह्यो–"इण परधांनगी मांहे सवाद को नहीं[16]।" तरै रांणा ही गई कीवी[17]। इणांनूं सीख दीवी[18]। राव नै प्रथीराज पाछा सीरोही ग्राया। माहोमाह यूं हीज वहै छै[19]। देवड़ो प्रथीराज जोरावर थको वहै छै[20]। राव राजसिंघ देवड़ो भैरवदास समरावतनूं डूंगरोतनूं सहल सो पटो दे इणरै हीज ग्रांटै राखियो हुतो[21]। सु राव राजसिंघ महादेव गया हुता। देवड़ो भैरव समरावत वांसै[22] रह्यो हुतो। ग्रै सासता घात देखता हुता[23]। पछै देवड़ै प्रथीराज बेटां भतीजांनूं समभाय राखिया हुता। इणां वांसे रेहनै भैरवनूं मारियो। राव

---

1 सव। 2 कितनेक। 3 ग्रनवन। 4 जिस प्रकारकी वगावत विजयने की थी, उसी प्रकारकी वगावत पृथ्वीराजने करनी प्रारंभ की। 5 पृथ्वीराजके वेटे-भतीजे क्रोध से तिलमिला उठे। 6 इसके कुटुंव वालोंके वड़े ग्रच्छे जोड़े। 7 उन्होंने उस ग्रोरकी वस्तीकी रक्षा की। 8 समभानेके लिये। 9 वुलाये। 10 कहना-सुनना। 11 एक प्रकारकी प्रकृति वाले मनुष्य; खरे मनुष्य। 12 रानासे विगाड़ करें। 13 ऐसी ग्रांट मनमें रखते हैं। 14 ग्रतः रानाके ग्रादमी वीच-वचाव करते रहे। 15 जिन्होंने रानाको वास्तविकतासे ग्रवगत किया। 16 इस सन्धि-प्रयासकी प्रधानता करनेमें कोई फल नहीं है। 17 तव रानाने भी वात छोड़ दी। 18 इनको रवाना किया। 19 परस्पर यों ही चलता है। 20 देवड़ा पृथ्वीराज जोरावर (सिरजोर) होकर चल रहा है। 21 थोड़ासा पट्टा देकर इसीलिये इसे रखा था। 22 पीछे। 23 ये निरंतर घात ताक रहे थे।

सांभळ रह्या[1] । गई कीवी[2] । भैरवरा पटारो गांव पाडीव राव रांमा भैरवोतनूं दियो । तठा पछै वरस अेक प्रथीराज, रांम, रायसिंघ, नाहरखांन, चांदो घात देखता हुता । एक दिन रावनूं[3] मारणनूं[4] गया । सीसोदियो परबतसिंघ ऊपर गयो । देवड़ो रांमो ऊपर गयो । राव आदमियां थोड़ांसूं हीज बैठो हुतो । अै मांहे गया । रावनूं मारियो । सीसोदिया परबतसिंघनूं मारणनूं घणो ही कियो[5], पिण दिन ऊभा, घात लागी नहीं[6] । सोर हुवो । राव अखैराज वरस २ रो हुतो सु धाय कोटड़ी मांहे ले पैठी[7], ऊपर गूदड़ा दिया[8] । प्रथीराजरै साथ घणोई सोझियो[9] । अखैराज प्रतापबळी सु उणरै हाथ लागो नहीं[10] । तितरै रावरो साथ भेळो हुवो[11] । सीसोदियो परबतसिंघ, देवड़ो रांमो और साथ खंगार भेळो हुवो[12] । इणांनूं रावळा-घरां मांहे घेरिया[13] । गोळियां, सरांरी मार पड़ण लागी[14] । इणां अखैराजरी खबर की, कठै छै[15] ? तरै राज-लोग खबर पोहचाई[16]—"अजेस कुसळ छै, फलांणी कोटड़ी मांहे छै[17] । इणांरो साथ मुंहडै बैठो छै[18] । वडा-वडानूं पांणी पियांनै पोहर २ हुवा छै[19] । कोटड़ीरी फलांणी बाजू निराळी छै[20] । उठीनूं सिलावट तेड़ायनै अखैराजनूं काढ़ लो[21] ।" पछै सीसोदियो परबतसिंघ, देवडै रांमै सिलावट तेड़ाय हळवै-हळवै[22] भींत खोलायनै[23] अखैराजनै काढ़ लियो । इणांरो बळ वधियो[24] । इणां सोर कियो—"धीरा ! हरांमखोरां ! अखैराज मांहरै हाथ आयो छै[25] ।" तरै इणांरो बळ घटियो । रात पड़ी । च्यारूं तरफथी

1 राव सुन करके रह गये । 2 हुई, नहीं हुई करदी । 3 को । 4 के लिये । 5 सिसोदिया पर्वतसिंहको मारनेके लिये बहुत प्रयत्न किया । 6 लेकिन दिन था इसलिये कोई घात नहीं लगी । 7 घुस गई । 8 ऊपर बिस्तरे डाल दिये । 9 तलाश किया । 10 अखैराज भाग्यशाली सो उनके हाथ नहीं लगा । 11 इतनेमें रावका सैनिक समाज इकट्ठा हुवा । 12 देवड़ा रामा और दूसरा साथ खंगारसे मिले । 13 इनको राज-महलोंमें घेर लिया । 14 गोलियें और बाणोंकी मार पड़ने लगी । 15 कहाँ है ? 16 तब रानियोंने संदेश भेजा । 17 अभी तक तो कुशल-पूर्वक है, अमुक कोठरीमें है । 18 इनका सैनिक-समाज द्वार पर बैठा हुआ है । 19 बड़े-बड़ोंको पानी पिये दो पहर बीत गई है । 20 कोठरीकी अमुक बाजू एकान्तमें है । 21 उस ओर सिलावटको बुलाकर अखैराजको निकाल लो । 22 धीरे-धीरे । 23 दीवारको तुड़वा कर । 24 इनका बल बढ़ गया । 25 अखैराज हमारे हाथ आ गया है ।

रावरै चाकरै मार दी[1] । देवड़ै प्रथीराज दीठो[2], रातरा अठै रहां तो मारिया जावां[3] । तद इणांरै भला-भला रजपूत हुता तिकै आगै हुवा[4] । केई पाछै हुवा, के दोनूं बाजुवां हुवा[5] । गरट करनै हुड़ी कीवी[6] । इणांनूं ले नीसरिया[7] । वांसै साथ रावरो लूंबियो[8] । तिणसूं पाछा वळ-वळ रजपूते वेढ़ की[9] । कांम आवता गया । घणों साथ मरतां सिरदार कुसळै आया । डेरै आय घोड़ै चढ़ नीसरिया । कितराहेक साथसूं पालड़ी आया । वांसै सीसोदियो परवतसिंघ, देवड़ो रांमो, चीवो दूदो, करमसी, साह तेजपाळ भेळा हुय राव अखैराजनूं संमत १६७५ टीको दियो । पछै पाखती[10] चीतोड़रै धणियै, ईडर राव कल्यांणमल वडो ठाकुर थो तिणै वात सुणी । सिगळां राव अखैराजरो ऊपर राखियो[11] । प्रथीराजनै गांव गयां पछै परवतसिंघ देवड़ै रांमै, चीवै दूदै, करमसी, साह तेजपाळ घणो बळ वांधियो[12] । प्रथीराजनूं ठेल देस मांहेथी काढ़ियो[13] । प्रथीराज देवळांरै परणियो हुतो, सु देवळां धारै, मांनै इणनूं चेखळा-भाखर मांहे बांकी ठोड़ थी तिका दीनी[14] । प्रथीराज मांणसां सूधो उठै जाय रह्यो[15] । बेटो चांदो आंवाव दिसा जाय रह्यो[16] । धरतीनूं दौड़-धाव घणी ही कीवी[17] । कितराहेक गांव विभोगा किया[18] । चांदै दांण सीरोही लीजै तिणसूं आधो लियो[19] । पिण अै हरांमखोर था सु दिन-दिन गळता गया[20] । दौड़णरी तकसीर काई न की[21] । पछै रायसिंघ भतीज गांव १ मारण

1 रावके अनुचरोंने चारों ओरसे मार मारी । 2 देखा । 3 रातको यहां रहें तो मारे जांय । 4 तब इनके जो अच्छे-अच्छे राजपूत पासमें थे वे आगे हुए । 5 कई पीछे हुए और कई दोनों बाजू हुए । 6 अपना-अपना समूह बना करके जल्दी-जल्दी चले । 7 इनको ले निकले । 8 रावका साथ पीछे लगा । 9 राजपूतोंने जिससे पीछे लौट-लौट कर लड़ाई की । 10 पास । 11 सबने राव अखैराजकी सहायता की । 12 बहुत जोर पकड़ लिया । 13 पृथ्वीराजको धक्के मारकर देशमें से निकाल दिया । 14 पृथ्वीराज देवलोंके यहां व्याहा था सो देवल धारे और मानेने चेखला पहाड़में जो बाकी जगह थी वह उनको रहनेके लिये दी । 15 पृथ्वीराज अपने मनुष्यों सहित वहां जाकर रहा । 16 बेटा चांदा आंवावकी ओर जाकर रहा । 17 धरतीके लिये दौड़-धूप बहुत ही की । 18 कितनेही गांवोंको कर-प्राप्त नहीं हो सकें वैसा बना दिया । 19 सिरोहीमें जितना कर लिया जाता था, चांदाने उससे आधा लिया । 20 किन्तु ये हरामखोर थे इसलिए दिन-दिन निर्वंश होते गये । 21 दौड़नेकी कोई तजवीज नहीं की ।

गयो हुतो तठै माराणो[1]। पछै देवड़ो राजसी, जीवो–देवराजरा बेटा डूंगरोत अठाथी[2] कपट करनै प्रथीराज कनै गया। प्रथीराज इणांरो वेसास कियो[3]। पछै इणां रातरा प्रथीराजनूं मार सीरोही आया। देवड़ा प्रथीराजनूं डूंगरोते मारियो तठा पछै[4] और बेटा तो सोह[5] मर गया, केई गळ गया[6]। पछै सारो मुद्दो चांदा ऊपर मंडियो[7]। चांदो वडो आखाड़सिध[8] रजपूत हुवो। चांदारै प्रवाड़[9] पार को नहीं[9]। सीरोही मांहे तिको रजपूत को नहीं जिको चांदा आगै च्यार वार भागो न छै[10]। चांदै दांण लियो[11]। सीरोहीरा गांव १२०रो विभोगो लियो[12]। संमत १७११रै टांणै[13] चांदो सीरोहीरै गांव नींवाज वसियो। राव अखैराजरो साथ सारो[14] संमत १७१३ रै काती वद १४ रै दिन नींबाज ऊपर सीसोदियो परबतसिंघ, देवड़ो रांमो, चीबो करमसी, खवास केसर सारी सीरोही ले आया। चांदै वेढ़ कीवी। पोहर २ वेढ़ हुई। चांदै वेढ़ जीती। रावरै साथरा पग छूटा[15]। रावरै साथरा आदमी ५० कांम आया। मांणस १०० घायल हुआ। देवड़ो राघोदास जोगावत लाखावत सारी मदाररो धणी[16] हुतो सु कांम आयो। संमत १७२१ मांहे राव अखैराजसूं कंवर उदैसिंघ डूंगरोते[17] मिळ सारै[18] रजपुते[19] मांमलो कियो[20]। पछै देवड़ै रांमै भैरवोत, सीसोदियो साहिबखांन पंचे मिळ वळै[21] रावनूं कैद मांहेसूं काढ़ियो। पछै राव बेटा उदैभांणनूं बेटा सूधो[22] मारियो। तठा पछै देवड़ा अमरानूं पटो देनै राव मनायो[23]। पटो देनै धरती मांहे आंणियो[24]। गांवां पटारी विगत[25]—

---

1 पीछे भतीज रायसिंघ एक गांव लूटने गया था वहां मारा गया। 2 यहांसे। 3 पृथ्वीराजने इनका विश्वास किया। 4 जिसके बाद। 5 सब। 6 कई निर्वंश हो गये। 7 पीछे सब भार चांदे ऊपर रहा। 8 रणकुशल। 9 चांदाके युद्ध-पराक्रमोंका कोई अंत नहीं। 10 सिरोहीमें ऐसा राजपूत कोई नहीं जो चांदाके आगे चार वार भागा न हो। 11 चांदेने कर प्राप्त किया। 12 सिरोहीके १२० विभोगे गांवोंका कर लिया। 13 समय। 14 सब। 15 रावके सैनिक मोरचा छोड़ कर पीछे हटने लगे। 16 दारमदारका धनी। 17 डूंगरोतने। 18 सब। 19 राजपूतोंने। 20 गड़बड़ किया। 21 पुनः। 22 सहित। 23 जिसके बाद देवड़ा अमराको पट्टा देकर राव मनवाया। 24 पट्टा देकर देशमें ले आये। 25 पट्टाके गांवोंकी सूची।

१ पालड़ी । १ जैतवाड़ो । १ देदपुर ।
१ मकरोड़ो । १ वापला । १ पीथापुर ।
१ टोकला । १ मेडो । १ गिरवर ।
१ मूंड़थळ । १ काळधरी । १ मूंसावळ ।
१ धनेरी । १ ग्रावळ ।

१ देलवाड़ो–विभोगो । लेतो सु नहीं ले । दांण लेतो सु लेसी[1] ।

राव लाखारो पेट[2]—

सोभो । सहसमल । लाखो ।

२ ऊदो लखारो । टीकै[3] न हुवो ।

३ रिणधीर ।

४ भांण ।

५ सुरतांण ।

६ राव राजसिंघ । सीसोदणीरो ।

७ राव ग्रखैराज । वीरपुरीरो ।

८ उदैसिंघ ।

९ उदैभांण ।

६ सूर सुरतांणरो । जोधपुर वसियो[4] । भाद्राजण गांव २५ सूं पटै । संमत १६७५ मुवो ।

७ सवळो ।

८ गरीवदास ।

४ सूजो, रिणधीररो । देवड़ै विजै रावत सेखावत कनै मरायो[5] ।

५ देवड़ो प्रथीराज । सीरोहीनूं वडो ग्रासियो[6] हुवो । राव राजसिंघनूं संमत १६७५ मारियो । संमत १६८१ प्रथीराजनूं देवड़ै जीवै मारियो ।

५ देवड़ो नाहरखांन ।

---

1 देलवाड़ा भूमि-कर रहित । पहले लिया जाता था किन्तु ग्रब नहीं लिया जाता । चुंगी ली जाती थी वह ग्रबभी ली जायगी । 2 वंश । 3 ऊदा लाखाका पुत्र । गद्दी नहीं बैठा । 4 जोधपुर जा रहा । 5 सूजा रिणधीरका पुत्र । इसको देवड़ा विजयने रावल सेखावतसे मरवाया । 6 (उपद्रव करने वाला) जागीरदार ।

६ देवड़ो चांदो ।
७ अमरो ।
७ कमो ।
६ जैसिंघ ।
६ वाघ ।
६ करन ।
५ स्यांमदास सूजारो ।
६ रायसिंघ ।
७ भोपत ।
६ रांम ।
४ प्रताप रिणधीररो ।
५ तेजो प्रतापरो ।
६ मेघराज । तिणनूं राव अखैराज चूक कर मारियो[1] ।
७ नाटो ।
७ भाखरसो ।
७ डूंगरसी ।
७ नरहरदास ।
७ कांन ।
५ गोयंददास प्रतापरो । देवड़ो सूजानूं विजै देवड़ै मारियो तद कांम आयो ।
६ सांगो वडवज । नींबाज वसतो[2] । वडो राहवेधी[3] रजपूत थो ।
७ रांमसिंघनूं राव अखैराज चूक करने मारियो संमत १७०५ ।
८ करमसी ।
८ अमरो ।
५ सलखो प्रतापरो ।
६ भारमल
७ गांगो ।
८ भींव ।

---

1 धोखा देकर मारा । 2 रहता था । 3 दूरदर्शी । रणानुभवी ।

५ किसनदास ।

६ खींवो ।

६ सिवो ।

६ जोगो ।

७ कांन ।

७ राघोदास ।

७ मांनसिंघ ।

२ राव जगमाल लाखारो ।

३ मेहाजळ जगमालरो ।

४ राव कलो मेहाजळरो । एक वार सीरोही रांणै उदैसिंघ ऊपर कर वैसांणियो[1] । पछै डूंगरोतांसूं विरस[2] हुवो । पछै राव सुरतांणसूं वेढ़ हुई । भागो । जोधपुर वसियो । संमत १६४६ मोटो राजा[3] भाद्राजण[4] पटै दी सं० १६६१ काळ कियो ।

५ आसकरण कलारो । जोधपुर वास । नवसरो पटै ।

६ दलपत ।

५ पतो राव कलारो । रांणारै कांम आयो ।

कला-पतारा बेटा—

६ हरीदास । जोधपुर वास । भाद्राजण पटै ।

७ भावसिंघ ।

७ भगवांनदास ।

७ ईसरदास ।

६ गोवरधन । सींधले[5] मारियो ।

७ अमरसिंघ ।

४ द्वारकादास मेहाजळरो । संमत १६८० जोधपुर वास । नवसरा पटै ।

---

1 एक वार राणा उदयसिहने सहायता करके कलाको सिरोहीकी गद्दी बिठाया । 2 अनबन । 3 उदयसिंह । 4 भाद्राजुन ठिकाना । 5 सींधल-राठोड़ोंने मारा ।

५ केसोदास ।
४ पंचाइरण मेहाजळरो ।
५ लखमण ।
४ जैतो मेहाजळरो ।
५ कांन ।
६ केसरीसिंघ ।
५ करन ।
४ परबतसिंघ मेहाजळरो ।
५ सूजो ।
६ लूंणो ।
३ राव अखैराज जगमालरो ।
४ राव दूदो ।
५ राव मांनसिंघ ।
४ राव रायसिंघ अखैराजरो ।
५ राव उदैसिंघ ।
३ रतनसी जगमालरो ।
४ गोपाळदास ।
५ नरहरदास । राव अखैराज चूक कर मारियो ।
५ हरीदास ।
२ हमीर लखारो । राव जगमाल[1] आध वंटायो हुतो । पछै जगमालसूं विरस हुवो । पछै राव जगमाल मारियो[2] संमत १६७४ भाद्रवा सुदि ६ ।

कंवर गजसिंघ[3] जाळोर फतै करी । भाटी गोपाळदास आसावत भाटी दयाळदास जाळोर थांणै राखिया, तिणसूं[4] राव राजसिंघ वात की "देवड़ो प्रथीराज काढ़ दो तो गांव १४ थांनूं दां[5] ।" तरै यां कंवरजीसूं मालम कियो[6] । वात कबूल की । भाटी दयाळदास साथ ले

1 जगमालने आधे राज्यका वंट करवाया था । 2 राव जगमालने हमीरको मार डाला । 3 जोधपुरके महाराजा सूरसिंहके पुत्र गजसिंहने जालोर मुसलमानोंसे विजय किया था । 4 जिनसे । 5 देवड़ा पृथ्वीराजको निकाल दो तो १४ गांव तुमको दें । 6 तब इन्होंने कँवरजीसे निवेदन किया ।

मदत गयो। प्रथीराजनूं परो काढ़ियो। तरै गांव १४ जाळोर वांसै दिया। वरस १ पेरोजी[1] ६०००, गोहूं मण १३००० एक वरस आया। तठा आगै न दिया[2]।

गांवांरी विगत—

१ कोरटो।
१ नांमी।
१ मंचलो।
१ पोसांणो।
१ वाघार।
१ भव।
१ नारदणो।
१ पालड़ी।
१ रहवाड़ो।
१ आलोपो।
१ वासड़ो।
१ खेजड़ियो।
१ अणदोर।
१ अरटवाड़ो।

वात

सीरोहीरै देस डूंगरोत देवड़ा वडा रजपूत छै। देसरी आगळ, भड़-किंवाड़[3]। सदा अै सीरोहीरा धणियांनूं थापै-उथापै[4]।

डूंगररा पोतरा[5]—

डूंगर रिणमलरो। रिणमल सलखारो। सलखो लूंभारो। लूंभो विजड़रो।

१ डूंगर।
२ झांझो।
३ गजो।
४ भींदो।
५ आलण।
६ तेजसी।
७ रूदो।

---

1 पिरोजशाही सिक्का। 2 उसके आगे नहीं दिया। 3 देशकी रक्षाके लिये रणक्षेत्रमें एक स्थान पर दृढ़तापूर्वक खड़ा रहकर शत्रुकी सेनाको आगे बढ़नेसे रोकनेमें दृढ़ किवाड़ और उसकी आगल रूप। 4 सिरोहीके स्वामियोंको सदा ये स्थापित और उत्थापित करते हैं। 5 पौत्र।

७ नरसिंघ ।

७ केलण ।

७ रूदो तेजसीरो । आंक ७ ।

८ हरराज ।

९ विजो ।

९ लूणो ।

९ मांनो ।

९ अजैसी ।

९ वणवीर ।

९ धनराज ।

९ जैमल ।

८ सेखो रूदारो ।

९ रावत । ९ करमो । ९ मालो । ९ रूपसी ।

विजो हरराजरो । आंक ९ ।

१० भोजराज ।

११ भगवांनदास ।

१० खींवराज ।

११ केसोदास । राव राजसिंघ भेळो मारांणो[1] ।

१० रांमसिंघ ।

११ देवीदास ।

१० जसवंत । जोधपुर वास । कुळथांणे पटै ।

११ तेजमाल । राव राजसिंघ साथै मारांणो ।

११ उगरो ।

१२ कांन। जोधपुर वास।

११ दासो ।

१२ भाखरसी ।

११ रायसिंघ ।

---

1 राव राजसिंहके साथ मारा गया ।

१२ गोयंददास ।

१० अमरो ।

११ किसनदास ।

११ कांन ।

११ उरजन ।

लूणो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरतांण मारियो । आंक ६ ।

१० महेस ।

११ भोपत ।

मांनो हरराजरो । वडो रजपूत । राव सुरतांण मारियो । आंक ६ ।

१० सादूळ । राजसिंघ साथै मारांणो ।

अजैसी । हरराजरो । आंक ६ ।

१० सुरतांण । जोधपुर वास । समूझो पटै ।

१० वाघ ।

११ पीथो ।

११ उदैसिंघ ।

१२ करन ।

वणवीर हरराजरो । आंक ६ ।

१० चांदो ।

१० रांमदास ।

धनराज हरराजरो । आंक ६ ।

जैमल हरराजरो । आंक ६ ।

सेखो रूदारो । आंक ८ ।

६ रावत सेखारो । वडो रजपूत । देवड़ै विजैरै वास[1] थो । देवड़ै सूजै[2] रिणधीरोतनूं विजैरै कहै मारियो । पछै संमत १६५८ जोधपुर वसियो । सिवांणरो[3] गांव देवळियाळी पटै दी । सं० ६६३ काळ कियो ।

---

1 देवड़ा विजयके पास रहता था । 2 इसने देवड़ा विजयके कहनेसे देवड़ा सूजाको मारा था । 3 मारवाड़का सिवाना नगर ।

१० पंचाइण । जोधपुर वास । खाडाळो, नींबली पटै ।

१० अचलदास । जोधपुर वास । रु० १००००) री रेखरो नवसरो पटै । संमत १७०३ काबिल काळ कियो[1] ।

११ जगनाथ ।

११ नरहरदास ।

देवड़ो जगनाथ अचलदासोत । जोधपुर वास । नवसरो पटै । संमत १७२१ चैत सुद ७ काळ कियो देसमें[2] ।

बेटांरा नांव—

१२ डूंगरसी । १२ जैतसी । १२ मोहण । १२ वाघ ।

१२ ठाकुरसी ।

९ करमो सेखावत ।

बेटांरा नांव—

१० रायमल । १० सांगो । १० राजसी । १० रतनसी ।

१० भींव । देवड़ा प्रथीराजरी वेढ़ कांम आयो ।

१० हमीर ।

११ मनोहरदास ।

१० गोयंददास ।

११ वीठल ।

१० जसवंत ।

१० नाराणदास ।

१० सांवळ ।

९ मालो सेखारो । राव मांनसिंघ देवड़ो हांमो रतनावत मरायो तद कांम आयो[3] ।

९ रूपसी सेखारो ।

देवड़ो नरसिंघ तेजारो । आंक ७ ।

८ समरो ।

८ सूरो ।

---

1 काबुलमें मरा । 2 स्वदेश (मारवाड़में) मरा । 3 राव मानसिंहने रतनाके पुत्र देवड़ा हांमाको मरवाया तव माला सेखावत लड़ कर मरा ।

८ कुंभो ।

८ अरजन ।

समरो नरसिंघरो । रांणा जगमाल, रायसिंघ राव सुरतांण मारियो तद दतांणीरी वेढ़ संमत १६४० काती सुद ११ कांम आयो[1] । वडो स्यांमधरमी ।

९ भैरव ।

९ नेतसी ।

९ भांण ।

९ नगो ।

देवड़ो भैरव, सं० १६७२ देवड़ो प्रथीराज मारियो[2] । आंक ९ ।

१० देवड़ो रांमो ।

१० करन ।

११ केसरीसिंघ ।

१२ माधो ।

१० अमरो भैरवरो । सूरारै कांम आयो[3] ।

१० सांगो भैरवरो । जोधपुर वास । करमावस पटै ।

११ मनोहर ।

११ भींव ।

१० कमो भैरवरो ।

११ दुजणसल ।

११ हरिदास ।

११ रतनसी ।

१० महेस भैरवरो ।

९ नेतसी सवरारो । राव जैसिंघ साथै कांम आयो ।

९ भांण सवरारो ।

---

1 राव सुरतांणने सिसोदिया जगमाल और जोधपुरके राव रायमलको मारा था तब दताणीकी लड़ाईमें सं० १६४० की काती सुद ११ को उनके साथ नरसिंघका पुत्र समरा भी मारा गया । 2 भैरवको देवड़ा पृथ्वीराजने मारा । 3 सूर समराका भाई था इसलिये उसके लिए लड़ कर मरा ।

१० रूपो ।

९ नगो सवरारो ।

१० आसकरण ।

११ गोयंददास ।

१२ राघोदास ।

१२ भगवांनदास ।

११ जैसिंघ । ११ वाघ । ११ किसनो ।

१० पांचो नगारो ।

सूरो नरसिंघरो । वडो रजपूत । काळंधरीरी[1] वेढ़ राव सुरतांणनै कलै हुई तद राव सुरतांणरै कांम आयो । आंक ८ ।

९ सांवतसी, किसनबाई राठोड़री बेटो । संमत १६४६ मोटै राजा चूक कर मारियो ।

१० करन । १० दलपत । १० कांन । १० डूंगरसी ।

९ कलो ।

१० मेरो ।

११ ठाकुरसी ।

११ मोहणदास ।

११ वीरमदे ।

११ धनराज ।

१० अमरो ।

१० सकतो ।

१० नारायण ।

९ तोगो सूरारो । मोटै राजा संमत १६४६ चूक कर मारियो ।

९ पतो सूरारो । मोटै राजा चूक कर मारियो ।

कुंभो नरसिंघरो । आंक ८ ।

---

1 कालंद्री मुकाम पर राव सुरतान और कलाके युद्ध हुआ तब राव सुरतानके पक्षमें रह कर लड़ मरा ।

९ वरजांग ।

१० केसोदास ।

१० सांवळदास ।

११ वाघ ।

९ जैमल ।

१० करन ।

१० मैंगळ ।

९ खींवो ।

१० मालो । चांदै मारियो ।

अरजन नरसिंघरो । आंक ८ ।

९ जसवंत ।

१० लाधो ।

९ सुरजन ।

१० देवराज ।

११ जीवो ।

११ राजसी ।

१२ ईसर । सलास पटै ।

११ लाधो ।

केलण तेजसीरो । आंक ७ ।

८ देदो । पालड़ी वसतो । जिणनूं देवड़ै हांमै रतनावत मारियो ।

९ पतो ।

१० उगरो ।

सीरोहीरै देस डूंगरोतां उतरता चीवा भला रजपूत छै[1] ! इणांरो ही वडो धड़ो[2] छै । सदा सांमधरमी वडा इतवारी छै । अै ही देवड़ा-हीज छै । तिणां मांहे एक साख चीवांरी कहावै छै ।

दूदो मेहरावत वडो, निपट भलो रजपूत, दातार हुवो । वडो आदमी थो । चीवो करमसी वडो रजपूत हुवो ।

---

1 सिरोही देशमें डूंगरोतोंसे उतरते हुए चीवे अच्छे राजपूत हैं । 2 पक्ष ।

गीत चीवा जैतारो[1]

आढ़ा दुरसारो कह्यो[2]

श्रीमोटै राजा, सूरै देवड़ारा वेटा—सांवतसी, तोगो, पतो मारिया, तद कांम आयो[3]।

गीत[4]

सोमाहर-तिलक सींचतो-सावळ,
करतो-खग दांती कहर।
रिण रोहियो घणो राठोड़ै,
चीवोळ एकलवा वर ॥ १ ॥

भाजै छांळ खरड़कै भाला,
पड़ै न पिंड देतो पसर।
एकल जैत सलख आहेड़ी,
सकै न पाड़ै भड़ सिहर ॥ २ ॥

---

1 देवड़ा राजपूतोंकी चीवा शाखाके जैताके संबंधका गीत। (गीत डिंगल-काव्यका एक प्रसिद्ध छंद है)। 2 आढ़ा जातिके प्रसिद्ध चारण कवि दुरसाका कहा हुआ। 3 जोधपुरके मोटे-राजा उदयसिंहने सूरा देवड़ाके वेटे—सांवतसी, तोगा और पताको मारा तब चीवा जैता काम आया। 4 इस गीतमें सोमाके वंशज चीवा जैताको दांत वाले वड़े वाराह और उसके शत्रुओंको शिकारियोंके रूपमें वर्णन किया है।

गीतका भावार्थ—

श्रेष्ठ एकलगिड़-वाराहकी भांति सोमाके वंशमें तिलक रूप जैता चीवाको कई राठोड़ोंने घेर लिया है। जैता उनमें दांती रूप अपने खड़गसे शत्रुओंमें कहर मचाता हुआ और भालेसे रक्त सींचता हुआ युद्ध कर रहा है ॥ १ ॥

जैता रूप एकल-सूकरके ऊपर सलखा रूप शिकारीके भाले चल रहे हैं और उनके दांत टूट रहे हैं। किन्तु जैता नहीं गिर कर आगे ही वढ़ रहा है। वड़े-वड़े शूरवीर योद्धा उसको गिरा नहीं सके ॥ २ ॥

रणक्षेत्रमें आधी दूर पहुँच जाने पर ज्योंही वह ललकारा गया त्योंही वह अधिक भीषण रूपसे होकार करता हुआ शत्रुओं पर टूट पड़ा और जन-जनको अलग-अलग पहुँच गया ॥ ३ ॥

ऊपाड़ियै लूट आधंतर,
जण - जण पूगो जुवो - जुवो ।
खींवर हा कलियो खीमावत,
होकर जाड़ विहाड़ हुवो ॥ ३ ॥

गीत चीवा खीमां भारमलोतरो[1]

आसिया दलारो कह्यो[2]

खीमो राव कलारो चाकर। सुरतांण कलै वेढ़ हुई, कांम आयो[3]।

गीत[4]

विडरी आस, विजो थियो वांसै,
वाजै हाक थई विकराळ ।
चालां चालणहार न चूको,
खत्रवट खग-वाहो खेमाळ ॥ १ ॥

एकण खेम ऊपरै आयो,
सोह - आवगो डूंगरां साथ ।
मिटै न घणै नरे मंडाणो,
भारमलोत सरस भाराथ ॥ २ ॥

---

1 भारमलके पुत्र खीमा चीवाका गीत । 2 आसिया शाखा के चारण दलाका कहा हुआ । 3 खीमा राव कलाका चाकर । सुरतान और कलाके युद्ध हुआ तब खीमा काम आया । 4 गीतका भावार्थ—

विकराल रूपसे रणवाद्यों का शोर हो रहा है । क्षात्रधर्म पर आरूढ़ खड्ग चलाने वाला खीमा युद्धमें चालें चलने वालों से किसीसे नहीं चूका । पीछे पड़े हुए वीरोंकी विजयकी आशाएं घबराहटमें परिणत हो गईं ॥ १ ॥

तब पहाड़ोंमेंसे निकल कर समस्त सेना खीमाके ऊपर आगई । भारमलके पुत्र वीर खीमाने उस समय जो युद्ध किया वह कई मनुष्योंके हृदयोंमें अंकित है,मिट नहीं रहा है ॥ २ ॥

वात

थिरादरै[1] परगनै वाव, सुईगांव चहवांण छै । तिकेही राव लाखणरा पोतरा[2] ।

१ राव लाखण ।
२ बलसोही ।
३ महंदराव ।
४ अणहल ।
५ महंदराव
६ जींदराव ।
७ आसराव ।
८ मांणकराव ।
९ आल्हण ।
१० देदो ।
११ रतनसी ।
१२ धुंधल ।
१३ महियो ।
१४ भरमो ।
१५ पातो ।
१६ पूंजो ।
१७ विजो ।
१८ सिवो ।
१९ रांम, रूदो भाई
२० सीहो रूदारो ।
२१ मेर ।
२२ वणवीर ।
२३ सांगो, तिण[3] सांगारो परवार ।
२४ पातो । वावरो धणी[4] ।
२५ कलो ।
२६ रांणो भोजराज ।
२७ पंचाइण । सुईगांव[5] ।
२८ हींगोल ।
२९ राजसी ।

वात

संमत १७१७ रा भाद्रवारै मांस मांहे मुं० नैणसी गुजरात श्रीजीरी हजूर गयो[6] । आसोज मांहे पाछो आयो, तरै देवड़ा अमरा चंदावतरो प्रधांन वाघेलो रांमसिघनूं अमरै नैणसी कनै मेलियो हुंतो[7] । ओ[8] जाळोर आयो तरै सीरोहीरी हकीकत पूछी । उण कही[9]—

1 थराद, वाव और सुईगांव आदि उत्तर गुजरातके गांवोंके नाम हैं । 2 वे ही राव लाखनके पोते हैं । 3 उस । 4 पाता वावका स्वामी । 5 पंचायण सूईगांवमें । 6 मुहणोत नैणसी गुजरातको महाराजा श्री जसवन्तसिंहके दरबार (सेवा) में गया । 7 वाघेला रामसिंघको अमराने नैणसीके पास भेजा था । 8 यह । 9 उसने कहा ।

"सीरोही जाळोर गांव बराबर लागै छै। दांण रावरै घणो आवतो तद रु० ५००००) तथा ६००००) आवतो[1]। इणां दिनां तो घाट आवै छै[2]। सीरोहीरो आध चंदा, अमरारै लीजै छै। विभोगैरा गांव १०० तथा १२५ छै[3]।"

प्र० सीरोहीरी फिरसत मुं० सुंदरदास जाळोर थकां इण भांत लिख मेली हुती[4]।

गांवांरी विगत[5]—

१६ रोहाई-भीतरोटरा कहावै
२३ भीतरोटरो पथग कहावै।
४० बाहरोटरो पथग।
४८ साठ-मंडाहड़।
७२ मगरारा गांव तथा भोररा गांव।
१२ आबू ऊपर।
६ श्रीमहादेवजी सारणेसरजीरा गांव।
७७ सांसण, चारणां-बांभणांरा।
३० तीसरा वागड़ियां देवड़ांरो उतन।
२४ सोळंकियांरो उतन।

सीरोहीरा गांवांरी तफसील[6]—

१६ गांव रोहाई-भीतरोटरा कहावै छै[7]—

१ बाळधो।
१ लोदरी।
१ सीहणवाड़ो।
१ तेलपुरो।
१ वीरवाड़ो।
१ उदरा।
१ सीवेर।
१ झाड़ोली।

---

1 रावके ज्यादा कर आता तो वह ५००००) तथा ६००००) तक आता था। 2 इन दिनोंमें तो कम आता है। 3 विभोगे कर वाले १०० तथा १२५ गांव हैं। 4 सिरोहीके परगनोंकी सूची मुंहता सुंदरदासने जब वह जालोरमें था, इस प्रकार लिख भेजी थी। 5 गाँवोंकी सूची। 6 सिरोहीके गाँवोंकी तफसील (ब्योरा)। 7 सिरोहीके ये १६ गाँव रोहाई-भीतरोट (रोही-भीतरोट) पट्टीके कहे जाते हैं।

१ पिंडरवाड़ो, परवतसिंघरो ।

१ वीराळियो, सांसण भाटांरो, सहसमलरो[1] ।

१ आभारी वांभणांरी, सांसण चीवा रांमसिंघ[2] ।

१ चाचरड़ी ।

१ नंदियो ।

१ काछोली ।

१ नीतोड़ो, वीरपुरा, सूजानूं ।

१ लोटांणो ।

१ भाहरू ।

१ धनारी ।

१ खाखरवाड़ो ।

२३ भीतरोटरो पथग कहावै छै[3]—

८ सांगवाड़ो ।

१ रोहीड़ो, खालसारो ।

१ वासो । खालसै, विभोगै[4] ।

१ वाटेरो । रांमानूं ।

१ मुंदरड़ो ।

१ भीमांणो । चीबा करमसीनूं ।

१ सिणवाड़ो ।

१ आंवथळो ।

१ तड़ूगी ।

१ भाहरजो ।

१ चूनांणी ।

१ फिरसूळी ।

१ मांनपुरो ।

१ संतपुरो ।

१ गिरवर ।

१ मूंडथळो ।

१ उड़ ।

१ कैर ।

१ मांडवाड़ो ।

१ घांणत ।

१ मोकरड़ो ।

१ चनार ।

४० वाहरोटरो पथग[5]—

१ सीधणोतो ।

१ सुरतांणपुर ।

१ मोडो ।

१ मेलांगरी ।

१ पांचड़ो ।

१ सिणवाड़ो ।

१ सीरोड़ी ।

१ पमांणा ।

---

1 विरोलिया गाँव, भाटोंका शासन, सहसमलका । (शासन = दानमें दी हुई कर-मुक्त भूमि या गाँव) 2 आभारी गाँव चीवा रामसिंहका, ब्राह्मणोंके शासनमें । 3 सिरोहीके ये २३ गाँव 'भीतरोट-रो-पथग' कहलाते हैं । 4 वासा गाँव कर-मुक्त और खालसेका । 5 'वाहरोटरो पथग' में ४० गांव हैं ।

१ पोसतरा ।	१ चांपोल ।
१ टाकरो ।	१ व्रमांण ।
१ उंडवायिड़ो ।	१ मकावल ।
१ हमीरपुर ।	१ नीबोड़ो ।
१ पालड़ी ।	१ करहुटी ।
१ मालागांव ।	१ जोतपुर ।
१ डमांणी ।	१ धीवली ।
१ धांधपुर ।	१ दतांणी ।
१ हणाद्रो ।	१ मारेल ।
१ डाक ।	१ कपासियो ।
१ थळी ।	१ भाटांणी ।
१ नीलेर ।	१ सांडूड़ो ।
१ सोहलवाड़ो ।	१ पेथापुर ।
१ रिवद्र ।	१ सेरुवो ।
१ रांणकवाड़ो ।	१ नींबूड़ो ।
१ लाडेलो ।	१ मकवाल ।

४८ साठरो पथग, मुदो इणां गांवां मांहे[1]—

१ मांडाहड़ो ।	१ हणवंतियो ।
१ बड़ोदो ।	१ बांट ।
१ रोहुवो ।	१ जैतवाड़ो ।
१ जीरावल ।	१ रीवी ।
१ देदापुर ।	१ आलवाड़ो ।
१ गूंडसवाड़ो ।	१ खीमत ।
१ सोळसभा ।	१ वाचडोल ।
१ वाचेल ।	१ बूराल ।
१ वडवज ।	१ भाटरांम ।
१ रायपुरियो ।	१ धनियावाड़ो ।

1 'साठरो पथग' में ये मुख्य ४८ गाँव हैं ।

१ सूहड़लो ।	१ कूंजावाड़ो ।
१ भांडोतर ।	१ जावाळ ।
१ वाघोर ।	१ गींगोल ।
१ झात ।	१ अटाळ, चारणांरी ।
१ मवड़ी, भाटांरी ।	१ धनेरी ।
१ अटाळ, भाटांरी ।	१ चेलावस ।
१ पांसूवाळा ।	१ सोहड़ापुर ।
१ आरखी ।	१ रोजेड़ ।
१ भाडली ।	१ गोयंदपुर ।
१ सांतरवाड़ो।	१ पांथावाड़ो ।
१ भीलडामो ।	१ टमटमो ।
१ सातसेण ।	१ पीथोली ।
१ भीलड़ो न्हानो ।	१ गूंडसवाड़ो ।
१ झांवठो ।	१ अकेली ।

७२ मगरारा तथा झोररा[1]—

१ गुहीली ।	१ वग ।
१ खांभळ ।	१ सिवरटो ।
१ अणधार।	१ महेसरी। चीवा करमसीनूं।
१ डेडुवा ।	१ पाधोर ।
१ मकावली ।	१ बूचाड़ो ।
१ तीतरी ।	१ वाहुल ।
१ कलाधी ।	१ नूंहन ।
१ जसोळाव ।	१ मांडल ।
१ पाडीव । रांमानूं ।	१ फागूणी ।
१ सांणपुर ।	१ नोहर ।
१ सकर ।	१ हाळीवाड़ो ।
१ सीरोड़ी ।	१ आखूना ।

1 झोरा-मगरा पट्टीके ७२ गांव ।

१ मांडवाड़ा ।
१ फळवध ।
१ भूतगांव ।
१ जावाळ ।
१ देळोद्र ।
१ चरहाड़ो ।
१ मणोहरो ।
१ मूंडेड़ी ।
१ आंबेलो ।
१ सतापुर ।
१ चीवली ।
१ मांडरणी ।
१ ओड़ू ।
१ जामोतर ।
१ नारदरो ।
१ लोटीवाड़ो ।
१ लास ।
१ मूंणावद्र ।
१ झाड़ोली ।
१ अणदोर ।
१ वासरण ।
१ मारोली ।
१ पालड़ी माहेली ।
१ वाघसरणो ।
१ भेवो ।
१ अरटवाड़ो ।
१ पोसाळियो ।
१ आळियो ।
१ मांचाळो ।
१ लिखमीवास ।
१ कोरटो ।
१ नांमी ।
१ उपमरणो ।
१ चीबा गांव ।
१ पालड़ी बाहरली ।
१ राड़वरा ।
१ वड़गांव ।
१ वाचड़ा ।
१ डीघाड़ी ।
१ सीरोड़ी द्रगडांरी ।
१ आपुरी ।
१ नागांणी ।
१ डीडलोद्र ।
१ अवेळ ।
१ वाचड़ा बीजो ।
१ मांडावाड़ियो ।
१ बळदुरो ।

१२ आबू ऊपरला गांव[1]—

१ अचलगढ़ ।
१ उतोसा ।
१ देलवाड़ो ।
१ हेठामाटी ।
१ सेहुरो ।
१ साळ ।

---

1 आबू पर्वतके ऊपर १२ गांव ।

१ ओरीसो ।   १ वासथांन ।
१ वासुदेव ।   १ उमरणी ।
१ नाहरळाव ।   १ रिषीकेस ।

९ श्रीमहादेवजी सारणेसरजीरा गांव[1]—

१ दंतारखो ।   १ भांमरा ।   १ मांडावाड़ो ।
१ इकुदरड़ा ।   १ वाचाहड़ा ।   १ कोटड़ो ।
१ घांणा ।   १ पालसी ।   १ सोलोई ।

३० गांव तीसरा कहीजै[2]—

१ वागड़ियो । देवड़ारो उतन[3] । जाळोररा परगना – वडगांव, गूंदाउरासूं कांकड़[4] । सांचोरसूं कोस १० । सूर । आउवा पांचला सांचोररासूं एक सींव[5] छै । देवड़ा आपमल गोपाळदास नरहरदासरो उतन ।

१ थावर ।
१ चीहरड़ा ।
१ वीचवाड़ो ।
१ कवरला ।
१ वूसियो ।
१ मगराउवो ।

गांव एक साखिया[6]—

१ धांनेरा ।   १ सातवाड़ो ।
१ धारवा ।   १ नांनाउओ ।
१ सांमळवाड़ो ।

२४ गांव सीरोहीरा । सोळंकियांरो उतन । अैही वडगांव, सांचोररै कांकड़[7]—

१ सीहो ७००)   १ राजोड़ो
१ सिरोहणी   १ जांणावाड़ो ।

---

1 श्री सारणेश्वर महादेवजीके ९ गांव । 2 इन तीस गांवोंका समूह 'तीस-रा' कहलाते हैं । 3 निवासस्थान (जागीरी) । 4 सीमा । 5 सीमा । 6 खरीफकी फसलके गांव 'इकसाखिया' अर्थात् एक साख (फसल) वाले कहलाते हैं । 7 ये भी वडगांव और सांचोरकी सीमा पर स्थित हैं ।

१ जड़ियो ।
१ भूकांणो ।
१ आंनापुर ।
१ गळथळू ।
१ जाहड़ैदेटो ।
१ मेवड़ो ।
१ रिवियो ।
१ माटपरणां ।
१ रोहुरो ।
१ बेहड़ो ।
१ पींगियो ।
१ दुणोद्र ।

७७ गांव सांसण—बांभण, चारणां, भाटांरा[1]—

१ पेसवा । चारणांरो ।
१ झांखर । आढांरो ।
१ कोजड़ो ।
१ लखमेर ।
१ पुनपुरी ।
१ धांधपुर ।
१ लाज ।
१ फूलसरेड़ ।
१ रीछड़ी ।
१ बांभणहेड़ो ।
१ मोलेसरी ।
१ कूचमो ।
१ सोनाणी ।
१ सोलावास ।
१ मोरवड़ा ।
१ माटासण ।
१ बांभणवाड़ ।
१ वाचड़ा ।
१ वडोद्रो ।
१ सीझोतरो ।
१ चुड़ियालो ।
१ धाचरियो ।
१ वराहील ।
१ मांडवा ।
१ उड़ । महेसदासनूं ।
१ जाल्हकड़ी ।
१ कुळदड़ो ।
१ डूंगरी ।
१ बाटियो ।
१ साकदड़ो ।
१ टमटमो ।
१ आझारी ।
१ वीरोळी । भाटांरी ।
१ वीरोळी । बांभणांरी ।
१ वासणड़ो ।
१ आहिचावो ।
१ देवखेत ।
१ हाथळ ।
१ जसोदर ।
१ पेरवा ।
१ बूटड़ी ।
१ खोगड़ी ।

1 ये ७७ गाँव ब्राह्मण, चारण और भाटोंके शासनके हैं ।

१ मीटांण ।
१ वीजवा ।
१ आसावाड़ो ।
१ अहिचावो खुरदा ।
१ जाखवर ।
१ गोवील ।
१ औवड़ी । भाटांरी ।
१ सेसू । त्रिवाड़ियांरी ।
१ खोड़ादरो ।
१ जायल ।
१ नेनरवाडो ।
१ पातंवर । चारणांरो ।
१ ओडवाड़िया । चारणांरो ।
१ कासधरा । धधवाडिया । खींवराजनूं ।
१ मोरथलो ।
१ आसादस ।
१ खांणां ।
१ मालावास ।
१ मांडली ।
१ जुवादरो ।
१ वासडेसो । भाटांरो ।
१ धुंवावस ।
१ देलांणो । भाटांरो ।
१ खुराड़ी । भाटांरी ।
१ ताड़तोली । वांभणांरी ।
१ खांडायत । वांभणांरी ।
१ कारोली । भाटांरी ।
१ गणकी । भाटांरी ।
१ पांडरी । भाटांरी ।
१ पालड़ी । रावळांरी ।
१ पीपळी । रावळांरो ।
१ वाढेल । वांभणांरी ।
१ पालडी । रावळांरी ।
१ खड़वळोदो ।
१ तिथमी ।

वात सीरोहीरा धणियां-पाटवियांरी, आबू लियांरी[1]

आवू पंवारांरै छै, सो तो घणा दिनांरो छै । राजा प्रथीराज चहुवांणरै जैत पंवार वड़ो सांवत हुवो छै[2], जिण वेढ़ मांहे प्रथीराजनूं साहवी दी[3] । गोरी झालियो[4], तद जोसी जगजोत आय कह्यो—"दिल्ली छत्रभंग होय तिसड़ो जोग छै[5] ।" तरै जैत पंवार कह्यो—"आज वेढ़रै दिन म्हारै माथै छत्र मांडो[6]" । आ अलाइ-वलाइ मोनूं

1 सिरोहीके स्वामी और उनके पाटवियोंकी (राजकुमारोंकी) आवू पर अविकार किये जाने संवंवकी वात । 2 राजा पृथ्वीराज चौहानके पास जैत पंवार वड़ा वीर सामंत हुआ है । 3 जिसने युद्धमें पृथ्वीराजको राज्य-वैभवसे सम्पन्न किया । 4 शहाबुद्दीन गौरीको पकड़ा । 5 दिल्ली राज्यका छत्रभंग हो ऐसा योग वन रहा है । 6 आजके युद्धके दिन छत्र मेरे पर रख दो ।

प्रथीराजरी लागो[1] ।" पछै जेत पंवार कांम आयो, तिणरा पोतरा[2] आबू छै । रावळ कान्हड़दे तिण दिन जाळोर धणी छै । तिण समै देवड़ा विजड़रा बेटा–जसवंत, समरो, लूणो, लूंभो, लखो, तेजसी सरणुवारा भाखर सीरोहीरीमां[3] छै, तिणांरी गड़ासंध[4] आय रह्या छै । इणांरै पग-ठांम काय न छै[5] । भाई पांचे ही आलोच करै छै[6]– "आंपै तो सपूत छां । ज्यूं त्यूं कर पेट भरां छां. पिण काइक ठोड़ छोरवांनूं खाटीजै[7] । सु अै आबू लेणरो विचार करै छै[8] । तितरै[9] चारण १ पंवारांरो इणां तीरै[10] आयो । तिण चारण आगै दिलगीरी करण लागा–"जु एक तो मांहरै धरती नहीं, नै भूखा[11], नै पांचेई भायांरै पांच-पांच बेटियां, त्यांनूं वींद जुड़ै नहीं[12] ।" तरै चारण कह्यो–"इण वातरो किसो सोच करो । अै आबू वडा पंवार-रजपूत । इणांनूं परणावो ।" तरै इणे कह्यो–"म्हे आज भूखा, पंवार आबूरा धणी । मांहरै परणीजै क न परणीजै[13] ।" तरै चारण कह्यो–"हूं खबर करीस[14] ।" उठै आबू पाल्हण पंवार राज करै तठै चारण गयो । कह्यो–"चहुवांणांरै वींदणी[15] २५ छै । पचीस पंवारांनूं दै छै ।" तरै पंवारै कह्यो–"रूड़ां ! परणीजस्यां[16] ।" तरै किणहेक डाहे मांणस कह्यो[17]–"जु अै काळपूंछिया धरती नाडूळथा लेता आवै छै[18] । इणांरै ना जाइजै[19] ।" तरै पंवारै कह्यो–"म्हे पहलां कह्यो, हमैं ना कहां नहीं[20] ।" नै उण चारणनै कह्यो–"उणां चहुवांणांरो एक जणो भाई आबू ओळ[21] रहै तो म्हे परणीजण आवां ।" चारण आयनै चहुवांणांनूं कह्यो–"ओळ दो तो परणीजै ।" तरै यां एकरसूं[22] तो कह्यो–"ओळ

---

1 पृथ्वीराजकी यह आधि-व्याधि मुझे प्राप्त हो । 2 पोते । 3 सिरोही प्रदेश । 4 पास । 5 इनके पास रहनेको कोई जगह नहीं है । 6 पांचों ही भाई विचार करते हैं । 7 किन्तु कोई एक जगह लड़कोंके लिये प्राप्त की जानी चाहिये । 8 अतः ये आबू लेनेका विचार करते हैं । 9 इतनेमें । 10 पास । 11 गरीब । 12 उनको वर नहीं मिलते । 13 हमारे यहां वे विवाह करें या न करें । 14 मैं इसका पता लगाऊंगा । 15 चौहानोंके २५ दुलहिनें(कन्याएं) हैं । 16 अच्छी बात है, विवाह करेंगे । 17 तब किसी एक समझदार व्यक्तिने कहा । 18 ये दुष्ट नाडोलसे धरती लेते आ रहे हैं । 19 इनके यहां नहीं जाना चाहिये । 20 हमने पहले स्वीकार कर लिया, अब नाहीं नहीं करें । 21 बंधक रूपमें । 22 एक बार ।

किसी मेलां ।" पछै भाई एक वोलियो–"जु वीजूं तो काहे कां[1], मूंवां विगर ग्रावू नहीं ग्रावै । एकै ग्रोळ साटै ग्रावै तो ढील मतां करो[2] ।" तरै लूंणै कह्यो–"हूं जाइस[3] ।" तरै चारणानूं कह्यो–"म्हे भूखिया नै मांहरै वेटी जरूर परणावणी[4] । वे ठाकुर ग्राज म्हांनूं निवळा देखै छै तो म्हे ग्रोळ पिण देस्यां[5] ।" यूं थाप करनै[6] लूंणानूं ग्रोळ मेलियो । उठै पंवार १ वडो ठाकुर नै ग्रो लूंणो ग्रावू रयो[7] । नै पंवार २५ वींद छेड़ावड़ै साथसूं ग्राया[8] । ग्रठै सांमेळो करायनै ग्रांण जांनीवासै उतारिया[9] । घणी महमांनी करी । भांग, ग्रमल, दारू गाढ़ा सहोरा किया[10] । साहांरी[11] वेळा हुई तरै इणां रजपूतां २५ मोटियारां छोकरांनूं[12] वैरांरा वागा पहराया[13] । वींदणी कर वैसांणिया[14] । पटलीरी पाखती कटारियां छांनी सीक राखी[15] । कह्यो–"म्हे फेरा लेणरी कहां तरै हुसियार हुईजो । कटारियां मार पाड़जो ।" यूं केहनै जांनीवासै जाय कह्यो–"साहेरी वेळा हुई छै, वींद हालो[16] ।" जांनी दारूथी विकळ हुवा था, थोड़ासा ग्रादमियांसूं परणीजण ग्राया । डोढ़ीरै मुंहडै ऊभा रहनै कह्यो[17]–"वीजा ऊभा रहो[18] । मांहे मांणस छै[19] । छां भूखा, पिण मांहरै ठाकुराई छै[20] । यूं कहि सारा वारै राखिया । वींदांनूं मांहे लिया[21] । चंवरियां मांहे वैसांणिया । हथळेवा वांभण जोड़िया[22] । मोटियारै हाथ पींडा झालिया[23] । तरै वांभण

---

1 दूसरी वात तो क्या कहूँ । 2 एक ही मनुष्य-वन्धकके वदलेमें ग्रावू ग्राता है तो देरी नहीं करो । 3 मैं जाऊंगा । 4 हम गरीव हैं लेकिन क्या करें हमको लड़कियोंका विवाह करना है । 5 वे ठाकुर ग्राज हमको निर्वल समझते हैं तो हम 'ग्रोळ' भी देंगे । 6 इस प्रकार निश्चय करके । 7 वहां एक वड़ा पंवार ठाकुर जिसके पास यह लूणा 'ग्रोळ' रूपमें ग्रावू जा कर रहा । 8 ग्रौर पंवारोंके २५ मनुष्य दुल्होंके रूपमें वरातियोंके साथ ग्राये । 9 यहां साम्हेला (ग्रगवानी) करा कर जनिवासेमें ला कर ठहरा दिये । 10 भंग, ग्रफीम, शराव ग्रादिसे वहुत खातिरदारी की । 11 पाणिग्रहण । 12/13 जवान छोकरोंको स्त्रियोंके वस्त्र पहिनाये । 14 दुलहिनें वना करके विठा दिया । 15 ग्रोढ़नेकी पटली वाघरेमें खोसनेकी जगहमें गुप्त रूपसे रख दी । 16 दूल्हे चलें । 17 ड्योढ़ीके द्वार पर खड़े रह कर कहा । 18 दूसरे यहां ही खड़े रहें । 19 ग्रन्दर जनाना है । 20 हम ग्रसमर्थ हैं किन्तु हमारे ठकुराई तो है । 21 दुल्होंको ग्रंदर लिया । 22 व्राह्मणोंने पाणिग्रहण करवाया । 23 युवकोंने मेंहदी-पिंड वाले हाथोंको पकड़ा ।

कह्यो– 'उठो ! फेरा ल्यो ।" तरै लोह कियो[1] । पचीसांनूं ही कूट मारिया । जांनीवासै ऊपर जायनै जांनियांनूं कूट मारिया । जांनी सोह मारिया[2] । आबू भाई लूंणो थो तठै खबर मेलणी । तितरै एकण मांहेरै रजपूत कह्यो--"हूं जाईस ।" तरै कह्यो--"तूं क्यूंकर जाईस ?" तरै कह्यो--"जाचक हुइ जाईस ।" तरै ओ रजपूत जाचक होयनै उठै गयो । ओ ठाकुर चहुवांण नै पंवार वातां करता था उठै आय कह्यो— "वधाई, व्याह हुवो ।" तरै लूंणो बोलियो--"व्याह हुवो ?" वळै पूछियो[3]--"व्याह हुवो ? जस किणनूं हुवो[4] ?" तरै कह्यो--"जस चहुवांणांनूं हुवो नै पंवारांरी वडी भगत हुई[5] ।" तरै चहुवांण लूंणै कह्यो पंवार दलपतनूं--"जु आबू मांहरो छै[6] । वे मारिया[7] । जिसड़ो तूं व्है तिसड़ो हूं ई[8] ।" माहोमांहि दलपत नै लूंणो लड़ मूवा । तितरै वे पिण वांनूं मारनै चढ़िया था सु आय आबू चढ़िया[9] । दुहाई फेरी[10]। चहुवांणै कहै छै इण तरै आबू खाटियो[11] । संमत १२१६ माह वदि १, चहुवांण तेजसी विजड़रो बेटो पाट वैठो[12] ।

तरै पंवार केएक तो कठीही गया[13] । केएक तेजसीरै चाकर रह्या[14] । सु सिरदार पंवार हुतो, तिणरो बेटो मेरो हुतो, सु आबूरी धरती मांहे हीज तेजसीरो चाकर हुय रह्यो थो । तिण मेरारो बहन लजसी तेजसी परणियो हुतो[15] सु उणनूं गांव ४ तथा ५ पटै दिया । सु ओ मेरो तेजसीरो साळो । तेजसी कनै आवै तरै तेजसी मेरानूं पूछै "मेरा ! आबू म्हारी क थारी ?" तरै मेरो कहै--"आबू राजरी[16]।"

---

1 तव कटारियोंसे वार किये । 2 समस्त वरातियोंको मार दिया । 3 पुनः पूछा । 4 यश किनको मिला ? (सांकेतिक प्रश्न है । तात्पर्य विजय किसकी हुई ?) 5 तव कहा– यश चौहानोंको मिला और पँवारोंकी वड़ी खातिरदारी हुई अर्थात्—विजय चौहानोंकी हुई और पँवार सव मारे गये । 6 आबू हमारा है । 7 वे (पँवार) मारे गये । 8 अव जैसा तूं मेरेसे व्यवहार करेगा वैसा मैं भी । 9 इतनेमें वे भी उनको (पँवारोंको) मार कर चढ़े थे सो आवू आ पहुँचे । 10 अपने शासनकी घोषणा की । 11 कहा जाता है कि चौहानोंने इस प्रकार आवू प्राप्त किया । 12 वि. सं. १२१६ माघ कृ.१को चौहान विजड़का पुत्र तेजसी सिंहासन पर वैठा । 13 तव पँवार कई तो कहीं चले गये ।' 14 और कई तेजसीके सेवक वन कर रहे । 15 उस मेराकी वहन लजसी तेजसीको व्याही गई थी । 16 आवू आपकी ।

सु तेजसी पांचे-दसे दिन मेरानूं आ वात विगर पूछियां नहीं रहे । सु मेरो मुंहडै तो क्यूं फेर कहै नहीं[1], पिण मनमांहे आवटै[2] । वळै घणो[3] । ऊणो जाय[4] । डील दूबळो हूतो जाय । तिण समै मेरारै काको एक आंधो सु मिलणनूं आयो छै । तिणरै मेरो पगां लागो । तरै उण आंधै काकै मेरारै मुंहडै, छाती, हाथां हाथ फेरियो । तरै उण डील दूवळो जांणियो । तरै आंधै काकै मेरानूं कह्यो–"मेरा ! न्याय पंवारांसूं आवू गयो, वांसै तो सारीखा भींव हुवा[5] ?" तरै मेरे कह्यो–"काका ! रजपूत तो रूड़ो[6] छूं, पिण मोनूं सासतो दगध घणो छै, तिणसूं हूं हेठो-हेठो जाऊं छूं[7] ।" तरै काकै पूछियो–तोनूं किसो दगध छै ?" तरै मेरै कह्यो–"हूं जरैही तेजसी रावळ कनै जाऊं तरै मोनूं कहै–"मेरा ! आबू थारो किना[8] म्हारो ?" तरै हूं मुंहडै तो कहूं–"आबू राजरो" पिण हूं मन मांहे घणो आवटूं । तरै काकै कह्यो–"फिट मेरा ! जायै जीवनूं मरणो छै[9] । हमरकै भेळा हुय जास्यां[10] । देखां, गोविंद कासूं करै[11] । पिण एक भलो देवड़ांरो सिरदार कनै मोनूं बैसांणै[12] नै तोनूं तेजसी कहै–"मेरा ! आवू कुणरो[13] ?" तरै तूं कहै[14]–"आवू म्हारो, म्हारा वापरो, म्हारा दादारो । तूं ऊपरवाड़ारो सांड पैठो[15] ।"

कवित्त छप्पय सीरोहीरा टीकायतांरा परयावलीरो आसियो मालो कहै[16]

कवित्त

आदि अनादि असंभव आप मुद्रा ऊपाए ।
ओंकार अप्पार पार प्रमही नहिं पाए ॥

---

1 सो मेरा उसके मुंह पर तो कुछ कहता नहीं । 2 किन्तु मनमें घुटता है । 3 बहुत जलता है । 4 कम होता जा रहा है । 5 मेरा ! पँवारोंसे आवू गया यह न्यायकी बात है क्योंकि पीछे तो तेरे जैसे भीम (भीम जैसा पराक्रमी) ही तो रहे हैं ? 6 अच्छा । 7 किन्तु मुझको निरन्तर जलन बहुत है जिससे मैं दुर्बल होता जा रहा हूं । 8 किम्वा । 9 धिक्कार मेरा ! जन्मे हुए जीवको मरना है । 10 अबकी साथ हो कर जायेंगे । 11 देखें भगवान गोविन्द क्या करते हैं । 12 बिठावें । 13 आवू किसका ? 14 तव । 15 तू उलटे मार्गका सांड घुस गया । 16 परयावली गांवके चारण आसिया मालाके कहे हुये सिरोहीके टीकायतोंके कवित्त छप्पय ।

कालिका जग कृतो कंधरूढ़ा कौमारी।
कमळा चपळा कळा पळा प्रमहंस पियारी ।।
देवांण विद्या दत्तावरी देवी धनदाता वरी।
चहुवांण वंस रूपक[1] चवां[2] सारसत्त भुवनेश्वरी ।। १

वंस चहुवांण वखांण आंण[3] सुरतांणां ऊपर।
अनळकुंड[4] उतपत्त मुद्राकी चंद महेसुर ।।
मार मार वित्थार वार ऊठियो विकासै।
खुरासांणां खळभळै निहंग सावच्चा नासै ।।
सवाळख सिंध सागर सतर जिणे खंड जीतां चड़ी।
त्यै वंस समो नह को[5] तियग को संग्रांम न समवड़ी[6]।। २

जेण[7] वंस जिंदराव जेण गोगो जगमग्गो।
जेण वंस जैतराव जेण सोमेसर जग्गो ।।
तेण[8] वंस प्रथिमल्ल साल[9] हूवो सत्रांणां[10]।
गढ़ चौरासी ग्रहे साझि बंधै सुरतांणां ।।
कैवास सूर सारखि क्रियंत जास मोहल्ल न पांमता।
चौतीस लाख चतुरंग दळ हुयां आयससह[11] हालता[12]।। ३

तेण डंडे पंडुवां खांण त्रंबमें ऊलाळै।
माळवो मलवटै पैज[13] दक्षिणहूं पाळै ।।
गूजरवै पोह[14] ग्रहे सिंध समुहो नीहट्टै।
देतो परदक्षणा आव दिल्ली अरहट्टे ।।
अन-अन्न देस धर गिर अवर संकोड़ै संसार सहि।
चहुवांण पिथमसूं चापड़ै गज्जणवै[15] सुरतांण गहि ।। ४

गज्जनवै सुग्रहै लीध भंडार पहल्ली।
दूजै गयंद तुरंग गोरियां[16] नींद-गहल्ली[17] ।।
तीजै साह महंत लेय नव लाख वसावै।

1 वर्णन, काव्य। 2 कहता हूं। 3 दुहाई, घोषणा, शासन। 4 अग्निकुण्ड। 5 समान। 6 समान। 7 जिस। 8 उस। 9 शल्यरूप। 10 शत्रुओंके लिए। 11 आज्ञा। 12 चलते। 13 प्रतिज्ञा। 14 गुजरातके स्वामियोंको। 15 नाश करने वाला। 16 स्त्रियां। 17 निद्रावश, नींदमें मस्त।

चौथे मारग माल भोग[1] संजुगत भरावै ॥
पंचमै इंड प्रथिमल्लरै एह वात मांनी असुर ।
दस सहस लाद अल्लावदी पूरुवै अजमेरपुर ॥ ५

प्रथीमाल परमांण वधै चहुवांण तणै[2] वळ ।
तेण वंस बहन्नाल दांन दीपियो दसावळ[3] ॥
वळ वाहड़ दे जेण जेण पंडवो प्रजाळै ।
चाहड़दे अस चढ़ै वैर गंजै चौवाळै ॥
अजमेर हुवा नर एतला[4] नवलक्खी उग्रह लिया ।
सीलंत[5] पांण सुरतांणसूं कंदळ[6] सुरतांणी किया ॥ ६

रायसिंघ तिण पाट रहै सेवै तुरकांणौ ।
लाखणसी धर छाड़ हुवो नाडूलो रांणौ ॥
सेवा कीध सकत्त वधै वरदांन वड़ाई ।
चीतोड़गढ़ वधनोर हुवो चहुं मांन सवाई ॥
चहुवांण वंस रूपक[7] वडो रावां गंजन वैरड़ै[8] ।
वरदांन आसल लीधौ वडै खुरासांणां ऊपर खड़ै ॥ ७

तेरैह सहस तुरंग सकत[9] वरदांन समप्पै ।
नाडूलो नाडूल थांन आसावर थप्पै ॥
पाटण ऊली प्रोळ[10] दांण चहुवांण उग्राहै ।
पंच लक्ख पोकरण वरस वरसै निरबाहै ॥
मेवाड़ मंडळ लाखो डंडै पसरै पूरव ही परै ।
त्रिहुं राय सीस लाखण तपै ज्यौं आरंभै त्यौं करै ॥ ८

अग लाखण संपनो[11] पाट सोही परगट्टे ।
सोहीरै महेंद्रराव जेण खत्र दूणो खट्टे ॥
महेंद्र वंस मछरीक[12] सुवन आलण संपन्नो[13] ।
आलणरै असराव आस जिंदराव उपन्नो[14] ॥

---

1 कर, मालगुजारी। 2 के। 3 दसों दिशाओंमें। 4 इतने। 5 प्राप्त करता है। 6 नाश। 7 यश। 8 वैरके बदलेमें। 9 शक्ति, देवी। 10 पाटनकी मुख्य पौल पर। 11 लाखन जब स्वर्ग चला गया। 12 जोरावर। 13 सम्पन्न हुआ। 14 उत्पन्न हुआ।

जींदराव तरणै कीतू जिसा[1] जे लीधो जाळोर जुड़ि ।
कर त्यूं समो पूजै न को त्यैस कूंण पूजंत तुड़ि[2] ॥ ९
सिवियांणो[3] गिरसोन[4] जेण एकण दिन जीता ।
वीरनरायण वंस वहै वेसास वदीता ॥
दहियावत[5] ढुंढ़ार मार संग्रांम मनावै ।
कर सह वरस कटक्क पछै नाडूळ पजावै ॥
सुरतांण सरसबळ सांमहा आप प्रांण अवरज्जिया ।
कीतू कंधार मछरीक कुळ गह एवड़ै[6] गरज्जिया ॥ १०
विवनै कीतू वसुह सुतन ऊठिया सवाई ।
सांवतसी महणसी वेध वीजाड़ वडाई ॥
वीजड़ तरणै बिग्राव पांच पांचेही पांडव पर[7] ।
एकैके आगाह आभ गह राखै असमर[8] ॥
जसवंत समर लूंणो जिसा लोहगढ़ लूंभा लखा ।
इक एक विरद-गह[9] ऊठिया मार मार करता मुखा ॥ ११
अरबद्दह[10] परमार कान्ह[11] ऐका कणियागिर[12] ।
सीह पंच सद्दूणवै सहै कोटां ताकै सिर ॥
वीजड़रा धर वेध[13] वसै बिन लोप विचाळै ।
क्रांमत[14] हेकां[15] करै चक्र हेकां हू चाळै ॥
मावै नहीं बीहै न मन पोहव[16] प्रमांण प्रगट्टिया ।
देवड़ा दूट[17] देसां दहण आग खाय कर ऊठिया ॥ १२
पंचवीस पंमार तेड़ जांनां तिड़ तोड़ै ।
थांणै गूजरखंड मुगल मुंडाहड़ मोड़ै ॥
लूंणो सांमो लोह मुवो दळ दळपत मारै ।

1 जैसा । 2 उसके समान कौन हो सकता है । 3 मारवाड़का इतिहास-प्रसिद्ध सिवाना नगर । 4 गिरसोन = सोनगिरि = स्वर्णगिरि, जालोरके किलेका नाम । 5 दहिया राजपूतोंका प्रदेश । 6 इस प्रकार । 7 समान । 8 तलवार । 9 कीर्तिमान् । 10 अर्बुद (आबू) । 11 कान्हड़दे । 12 जालोरका किला कनकगिरि । 13 युद्ध । 14 पौरुष । 15 एक बार । 16 पृथ्वी । 17 प्रबल ।

तेजसीह अरबद्द सेस पीतियै वधारै ॥
पग आंण धरा गिर पालटै घणूं विरद आव्रत घणा ।
सुरथांन गयां राखै सको[1] तपै तुंग वींजड़ तणा ॥ १३
तेजसीह पंमार ऊभैचूकै[2] आवट्टै ।
दसमो ग्राह लूंभेण पुत्रते सलख प्रगट्टै ॥
सलख सूर संग्राम सलख सुरतांणां सहल्लै[3] ।
सलखतणौ रिणमाल भूझ भर दूणो झल्लै ॥
सरणियै वसै रिड़मल सुहड़ खंडांडंडां खड़खड़ै ।
चहुवांण जिकण[4] ऊपर वडै घण नरिंद धायै घड़ै ॥ १४
अरवदही रिणमाल अनैवी[5] कळका चोळै ।
सोळ कियां सहाय बोल हुय भारी बोलै ॥
करै कटक अरजक्क[6] निवह देवड़ो निहट्टै ।
वोड़ो विरद पगार आव वीसर आहट्टै ॥
पळ खंड चंड भुवडंड पिड़ खित[7] कारण खळ[8] खुट्टिया[9] ।
चापड़ै वीस चवदह चडै आरोपण आवट्टिया ॥ १५
दळ बोड़ां देवड़ां सहित विकळत संघारै ।
रहै हेक रजपूत तेण रिणमल्लह मारै ॥
तेण पाट तुडतांण वधै सोभ्रम्म वडाई ।
सोभ्रम्मरै सहसमल सूररै क्रन्न सवाई ॥
चहुवांण देस च्यारह चरै पग हि न हल्लै पाधरै[10] ।
अरवद्द राव वळ आपरै, जां आरंभै तां करै ॥ १६
कुंभक्रन्न अरबद्द, लियो सरणुओ सहेतो ।
सहसमल्ल सुरतांण, जाय अगवास[11] पहूंतो[12] ॥
कर ऊपर कुतबदी, इतो क्यूं वेगो आवै ।
गयो रांण ओ घाट, घाट परगह पाड़ावै ॥
वीटेव दुरंग थांणै वहै, पनरै ती पालट्टिया ।

1 सवको । 2 उसी समय, एकदम । 3 शल्य रूप लगता है । 4 जिसके । 5 अपने मतसे चलने वाला । 6 शत्रु । 7 पृथ्वी । 8 शत्रु । 9 नाश किया । 10 सीधे । 11 स्वर्गवास । 12 पहुंचा ।

मछरीक सुकर मेवाड़रा, असंख सेर आहुट्टिया[1]।। १७
पग आंणै धर प्रांण, मरण साहसमल मग्गै ।
तेण पाट लख धीर, मयंक ऊगै जगमग्गै ।।
जे बालोतो सीह, नला आकासह नांखै ।
ओबासै ऊससै, ढांण कोटांनूं धांखै ।।
सिवपुरी वसै ग्रह सरणुवो, देसां ऊपर देखियो ।
बळ सबळ महाबळ बोलियो,परगह[2]आप न पेखियो[3]।। १८
सोळंकां संग्रांम, सात फेरा[4] संघारै ।
गोखू वर गाहटै[5], मछर चड डूंगर मारै ।।
डोडियाळ काचैल, सहत डंडै बालीसां ।
कोळीया कड़जकाढ़, चांप तीसां चोबीसां ।।
जिण सयल[6] तणा नद नोर जिम,जीता सेन असंख जिण ।
लखधीर तणै सुरतांण लग,ताप न खिम्मै[7]रोद्रतिण ।। १६
धर खाटै[8] लखधीर, दीध जगमाल हमीरां ।
बिनै[9] पाट पत वेध, हुवै बेहू[10] वर वीरां ।।
एक राव अरबद्द, बियो[11] सरणुवै बयट्ठो[12] ।
एकाएक अगाह[13], एक एकाह अपुट्ठो[14] ।।
राय भांण अनै सत नथ राय,द्रोखै आरख वेधियो ।
भुय तणो ग्रास बिहुं भाइयां, आधोआध निमंधियो[15]।। २०
दळ मेळै जगमाल, पीड़ हम्मीर पहारै ।
विह[16] लिखियो धरवेध, तांम सहवर संघारै ।।
रसतर संघण लील राज, बक लाल विवन्नो ।
तेण[17] पाट तुड़तांण, पछै अखई उतपन्नो ।।
अखैराज अरक ओहासियो,नर नरंद भंजेव निस ।
कळकळै किरण दीपै कमळ,दस ही दिस चत्वार दिस ।। २१

1 भिड़े । 2 सेना । 3 देखा । 4 वार, दफा । 5 नाश करता है । 6 पहाड़ । 7 सहन करता है । 8 प्राप्त करता है । 9 दोनों । 10 दोनों । 11 दूसरा । 12 बैठा । 13 एक एकसे आगे । 14 एक एकसे विरुद्ध । 15 बाँट लिया । 16 विधाता । 17 जिसके ।

जिकै इंदु फणइंद कंदतां लगै निकासै।
जुध प्रवीण रढ़रांण[1] पांण त्यां दूरि पिनासै॥
जिकै छत्र गज गत्त जत्र त्यां हुये अलग्गा।
जिकै काळ लंकाळ[2] लुळै लुळ पाये लग्गा॥
पूरव पछिम उत्तर दखिण कीती रेणे खळभळै।
अखैराज अरक ओहासियो हुय नरंद हालोहळै॥ २२
वंध खांन आप वळ मांण मेजे[3] मिलकांणो।
धरा राज धर धूण, लियो चांपै लोईयांणो॥
डोडियाळकी वेल, वास गोखंभ वसावै।
चांपै तोस चोंवीस, मार धर सत्र[4] मनावै॥
पतसाह मूर दसवार पिड़, जे ढंढोळै गो दळां।
अखैराज साल इळ[5] अंतरै, उरह निमंधै एतळां[6]॥ २३
कोड प्रवाड़ा[7] करै, सरग[8] आखई[9] सांप्रंतो[10]।
रायसिंघ तिण पाट, अरक वेधै ऊगंतो॥
किरण झाळ झळहळै, अंब अंवर[11] ओहासै।
सपतदीप सारीख वदन उद्योत विकासै॥
नव मेक[12] छत्र छाया निजर, वरन अठारह विळकुळै।
पह[13] सिंघ प्रतप्पै[14] सिवपुरी, जोत विंव[15] जिम जळहळै॥ २४
काय[16] भोज कीकम्म[17], काय रुद्रनाग अरज्जन।
काय रांमण[18] वळराज[19], काय जुजठळ[20] अरगंजन॥
क्रन्नकाय[21] हरचंद[22] क्रन्न कळजुग्ग[23] कहंता।
काय समर दाधीच काय जीवाहन जंता॥
सुजसिंघ सही सुजसिंघ सत एह न आरख[24] आवरां[25]।
काय वात न मांनै पर किणी, क्रग्ग[26] दीध जळतो करां॥ २५

---

1 प्रतिज्ञा पालनके लिये प्राणोंको न्योछावर करने वाला वीर। 2 जोरावर। 3 मिटा दिये। 4 शत्रु। 5 पृथ्वी। 6 इतने। 7 युद्ध। 8 स्वर्ग। 9 कहता है। 10 प्रत्यक्ष। 11 आकाश। 12 एक। 13 स्वामी। 14 प्रतापवान् हो रहा है। 15 सूर्य। 16 क्या तो। 17 विक्रम। 18 रावण। 19 राजा वलि। 20 युधिष्ठिर। 21 राजा कर्ण। 22 हरिश्चन्द्र। 23 कलियुग। 24 समानता। 25 दूसरोंमें। 26 (१) खड़्ग, (२) हाथ।

कवित्त राव रायसिंघ सीरोहियारा, आसियो करमसी खींवसरोत कहै—

कवित्त

जे ऊपररो तमर, सुवर वैहवार लहंतो ।
जिण थू आ ऊपरी, फाड फड़वक फाड़ंतो ॥
जिण समपै सोव्रन्न[1], जेण बदरा[2] बंधावै ।
जिण सोभावै हाट, जेण लासां लूसावै ॥
सुनिभ्करस संभार सदन, [घणां] कृपणां तणो विरांमियो[3]।
कर सुपर कीति[4]कवि करमसी, रायसिंघ विसरांमियो[5]॥ १

जहां अंब फळ बछस[6],तहां नींब फळ न पामस[7] ।
जहां चिणी पकवांन, तहां को कसरय मांनस ॥
जहां जायसूं जंपै, तहां आदर न पायस ।
जहां उपायस[8] बोहत, तहां बोहतेरो खायस[9] ॥
ओखद दांन देसी कवण, दन[10]हीणां विदोषियै ।
हय हय सरीर छूटो नहीं, रायसिंघ अवरोखियै ॥ २

राव राय रखपाळ[11],राव रहड़ण[12]रिम[13]राहां ।
राव रूप रायहरां, राव वैरी पतसाहां ॥
राव रोर विड्डार, राव संसार उधारै ।
राव ध्रम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै ॥
तण जास पास नय कुळ तणी,सिवै भोर आचार सही ।
अभिनमो ऋन्न दानेसवर, रायसिंघ विवनोम कही ॥ ३
केहिज राव राखिया, भोम निगमी[14] आमंता ।
केहिज राव राखिया, भये खुरसांण पुळंता[15] ॥
केहिज लोभ राखिया, तणा पतसाह उदाळै ।
केहिज रजकर[16] राखिया महारोर वै दुकाळै ॥

---

1 सुवर्ण । 2 सम्पत्ति, धन । 3 मृत्युको प्राप्त हुआ, मर गया । 4 कीर्ति । 5 मर गया । 6 वृक्ष । 7 प्राप्त होता है । 8 उत्पत्ति, पैदाइश । 9 खाया जाता है, ख्वाहिश । 10 (१) दिन, (२) दान । 11 रक्षा करने वाला । 12 रोकने वाला, मारने वाला । 13 शत्रु । 14 दे दी । 15 भागते हुओंको । 16 दीन, गरीव ।

रिण खेत पिसण[1] केहि राखिया कह्नि काय कवि पात्र कहि।
अभिनमो क्रन्न दानेसवर, रायसिंघ विवनोम कहि ।। ४

कुण चारण कुण चंड, कवण वंभण[2] वंभेसुर।
कुण जोगी कुण जती, कवण दरवेस दिगंवर ।।
कुण पंडित कुण पात्र, कवण खंखी[3] परदेसी।
जाचेवा जेतल नट्टनीय, भटनीय निवेसी ।।
रिण हुवौ सीस दुहिला रहै,रळियो नह चूकै रिणां।
हिंदवै[4] राव विवनै हुवै, मोटो छैहो मांगणां ।। ५

क हिम[5] मेर[6] डोल है, क हिम जळहळ है सायर[7]।
क हिम चंद लुक्कि है, क हिम छळहळ देवायर[8] ।।
क हिम वीस ब्रहमंड, गाढ़[9] छांडै हेकागळ[10]।
क हिम सपत पाताळ.चळी जय हूंत अणच्चळ[11] ।।
खड़हड़ै इंद्र काळ तरै[12], पड़ै रुद्र ब्रहमा पड़ै।
रूपक[13] नांम रायसिंघरो, तोही जरा नह आमड़ै[14]।। ६

वित्त सु मारग खरचियो,चित्त लीणै[15] हर पाए[16]।
जिसो वेद वाचियो, तिसी परसिद्धी पाए ।।
सुरापांन नहीं कियो, कदै परनार न रत्तो।
सयल धरम साचवै, परम दएहि संप्रत्तो[17] ।।
आखंत[18] व्रद्द[19] तुंवर अधिक अपछर[20] आरत्ती करै।
सुर भुवण राव प्रवाड़मल[21],जयजयकार उवच्चरै[22]।। ७

।। इति सीरोहीरा धणियां देवड़ांरी ख्यात संपूर्णम् ।।
लिखतं वीठू पनोसीह थळिरो[23] ।। वाचै जिण सिरदारसूं
जैश्रीरुघनाथजीरी वंचावसी[24]।

1 शत्रु। 2 ब्राह्मण। 3 साधु। 4 हिन्दुस्थान। 5 (१) कभी, (२) यदि। 6 सुमेरु पर्वत। 7 सागर। 8 सूर्य, दिवाकर। 9 शक्ति। 10 एक वार। 11 पर्वत। 12 समय पा कर। 13 काव्य-कीर्ति। 14 मिटना, नाश होना। 15 लीन। 16 पांव। 17 प्राप्त हुआ। 18 कहता है। 19 विरुद्ध। 20 अप्सराएं। 21 जोरावर, प्रवाड़े करने वाला वीर। 22 उच्चारण करते हैं। 23 सीहथलके वीठू पन्ना द्वारा लिखित। 24 जो महानुभाव इसको पढ़ें उनको 'जयश्री रघुनाथजीकी' मालूम हो।

अथ भायलां रजपूतांरी ख्यात लिख्यते

पंवारांरी पैंतीस साख, त्यां मांहे एक साख भायलांरी । भायलांरो माथासरो गांव रोहोसी मगरा नींचैवळी छै तठै नै सिवांणचीनूं[1] ।

१ महारिख रिखेस्वर ।
२ साचर महारिखरो ।
३ उत्तमरिख ।
४ पदमसी ।
५ सजन भायल ।

१ सजन भायल पदमसीरो, वडो रजपूत हुवो । सजनरै आंपा सींधलरी बैर देवड़ी चांपानूं छोड़ सजनरै घरै आय पैठी[2] । वांसाथी चांपो आयो[3] । सजन देवड़ी सूतां ऊपर, तरै देवड़ीरी चोटी नै छुरी सजनरी छाती ऊपर मेल गयो[4] । सवारे सजन वांसै चढ़नै आपड़ियो[5] । माहोमाह लड़ मुवा । दोनो ही अमल[6] खायनै, सजन चांपानूं लोह कियो, चांपै सजननूं लोह कियो । बेऊं मुवा[7] । देवड़ी बेवांहो वांसै वळी[8] । सिवांणै सजनरी गिड़ी छै[9]। सजन, राव सातळरो दोहीतरो[10]अलावदी पातसाहसूं मिळ सिवांणो लेरायो ।

२ रांणो रावळो सजनरो, राव सोमरो दोहीतरो[11] । तिण अलावदीननूं मिळनै गढ़ लियो । पछै पातसाहजी सिवांणो रावळानूं हीज दियो । पछै वळे पातसाह रावळानूं मारियो[12]।

---

1 भायलोंका मुख्य गाँव रोहीसी पहाड़ीकी नीचांईमें है वहां और मारवाड़की सिवानची पट्टीमें । 2 चांपा सीधलीकी स्त्री चाँपाको छोड़ कर सजनके घरमें आ घुसी । 3 पीछेसे चांपा आया । 4 रख गया । 5 प्रातः सजनने उसके पीछे चढ़ कर उसे पकड़ लिया । 6 अफीम । 7 दोनों मर गये । 8 देवड़ी दोनोंहीके पीछे जल कर सती हुई । 9 सिवानामें सजनकी गढ़ी है । 10 दोहिता । 11 राणा रावळा सजनका बेटा और राव सोमका दोहिता । 12 जिसने अल्लाउद्दीनसे मिल कर सिवानेका गढ़ लिया, जिसको बादमें बादशाहने सिवाने रावळेको ही दे दिया किन्तु पीछे बादशाहने रावळेको मरवा डाला ।

नोट—यहां सजन भायल से भायल राजपूतोंकी वंशावली दी गई है। नामोंके पूर्वकी संख्या, सजनके पीछेकी वंशानुक्रम संख्या है ।

३ सिलार रावळारो[1] ।

४ जैसिंघ सिलाररो ।

५ वीको जयसिंघरो ।

६ वीरम वीकारो ।

७ रतनो वीरमरो ।

८ भृजबळ रतनारो ।

९ सांकर भुजबळरो ।

१० सादूळ सांकररो । गांव मौड़ी पटै[2] ।

११ सांवळो ।

१२ देईदास ।

११ सांवतसी, सादूळरो ।

११ रायसिंघ सादूळरो ।

१० दुरगो सांकररो । रेवड़ै कांम आयो[3] ।

११ जैतो ।

१२ रांमसिंघ ।

१२ रायसिंघ ।

१० राव वणवीर सांकररो राव चंद्रसेणरै राज सोनिगरा थलूंड़ै भूंविया तठै कांम आयो[4] ।

१० वैरसल सांकररो । घुंघरोट ऊपर जाळोररो साथ आयो तठै कांम आयो[5] ।

१० डूंगरसी सांकररो ।

९ कलो भुजबळरो ।

१० गोयंद ।

११ ठाकुरसी ।

---

1 सिलार रावळका पुत्र । 2 सिवानेके पासका मवड़ी गांव सांकरके वेटे सादूलके पट्टेमें । 3 सांकरका वेटा दुर्गा रतवड़ेकी लड़ाईमें काम आया । 4 सांकरका वेटा राव वणवीर, राव चन्द्रसेनके राज्य-कालमें जव सोनिगरा चौहानोंने थलूंडे गांव पर आक्रमण किया उसमें काम आ गया । 5 सांकरका वेटा वैरसल, जालोरकी सेना घूंघरोट ऊपर चढ़ आई तव काम आया ।

११ खींवो ।

११ रामसिंघ ।

६ दलो भुजबळरो । मौड़ी कांम आयो ।

६ सिखरो भुजबळरो । जाळोर कांम आयो ।

११ पतो सिखरारो । आसकरण उग्रसेन मारियो तठै कांम आयो[1] ।

११ मानो ।

६ कांधळ भुजबळरो ।

६ सूजो भुजबळरो ।

४ मालो सिलाररो । मालानूं खोहराव (खोह) रै भाई मारियो[2] ।

५ अमरो मालावत । माला साथै मारियो ।

६ साहुर अमरारो ।

७ वरसिंघ । जैतमालोतांसूं वेढ़ हुई तठै मारांणो[3] ।

८ गोयंद । मादड़ी सीरोहीरो साथ जैतमालोतां ऊपर आयो तठै कांम आयो[4] ।

६ खींदो गोयंदरो । जाळोररो खांन घूंघरोट ऊपर आयो तठै कांम आयो[5] ।

१० जैसो खींदारो ।

११ कचरो जैसारो । अरजियांणै वसै[6] ।

१२ कांधळ कचरारौ । अरजियांणै[7] ।

१२ रामसिंघ कचरारो । मूंठली वसै[8] ।

१२ तोगो कचरारो ।

१२ पंचाइण कचरारो ।

---

1 आसकरणने उग्रसेनको मारा वहां सिखराका बेटा पत्ता भी काम आ गया । 2 माला सिलारका बेटा । मालाको खोहरा (?) के भाईने मारा । 3 वरसिंह, जैतमालोतोंसे लड़ाई हुई वहां मारा गया । 4 गोयंद, मादड़ीमें सिरोहीकी सेना जैतमालोतों पर चढ़ कर आई उसमें काम आया । 5 गोयंदका बेटा खींदा, जालोरका खान घूंघरोट पर चढ़ कर आया उस लड़ाईमें काम आया । 6 जैसाका बेटा कचरा अरजियाणेमें रहता है । 7 कचराका बेटा कांधल अरजियाणे गांवमें रहता है । 8 रामसिंह कचरेका बेटा, मूंठली गांवमें रहता है ।

१२ जसो कचरारो ।

१२ ठाकुर कचरारो ।

१२ मेघो कचरारो ।

११ ऊदो जैसारो ।

१२ केसो ।

११ सूजो जैसारो ।

१२ नारायण ।

१२ दूदो (देदो) ।

११ जीवो जैसारो ।

१२ रायसिंह ।

११ ईसर जैसारो ।

१० हेमराज खींदावत । गूढ़ा ऊपर तुरक आया तठै मारांणो[1] ।

९ सकतो गोयंदरो ।

५ वीरम मालारो । घूंघरोट मांहे भायां मारियो[2] ।

६ रावत सोभो । कुंडळरै पंवारै घूंघरोट मारियो[3] ।

७ राजधर । रावत सोभा साथ कांम आयो[4] ।

८ वैणो राजधररो ।

९ रतनो वैणारो । घूंघरोट पटै थी । मुं० नारायणरा वेटा मारिया था तिण वैर मांहे करण पीथावत मारियो । राजा भींव राणावतनूं जाळोर, तद रतनो जाळोर दिसी जाइ रह्यो थो तटै करन जाय मारियो[5] ।

१० डूंगरसी सं० १६८० सेवटै मारियो[6] ।

---

1 खींदेका वेटा हेमराज, गुढे ऊपर तुर्क चढ़ कर आये तव मारा गया । 2 मालाके पुत्र वीरमको भाइयोंने घूंघरोट गाँवमें मार दिया । 3 रावत सोभाको कुंडल गाँवके पँवारोंने घूंघरोट गाँवमें मारा । 4 राजधर अपने पिता सोभाके साथ काम आया । 5 वैणाका वेटा रतना, जिसके पट्टेमें घूंघरोट गाँव था । मुहणोत नारायणके वेटोंको इसने मारा था, उस वैरके वदलेमें पीथाके पुत्र करणने इसको मार दिया । राजा भीम राणावतका जव जालोर पर अधिकार था, तव रतना जालोरकी ओर जा कर रह गया तो वहां जा कर करणने इसको मारा । 6 सेवटे राजपूतोंने डूंगरसीको सं० १६८० में मारा ।

१० जैमल रतनावतनूं मुं० सुंदरदास मारियो[1] ।

११ अमरो जैमलरो ।

११ दूदो जैमलरो ।

१० सिखरो रतनारो । सं० १६८२ ब्रहांनपुर मुवो[2] ।

१० अमरो रतनारो । तिमरणीरी मुहिममें चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायो[3] ।

४ सूजो सिलाररो । तिणरो बैसणो गांव पीपलोण[4] ।

५ कूंभो सूजारो ।

६ वीरम कूंभारो । वीरम चांपा चहुवांणरी बैर सवेरी आंणी तिणमें मारियो[5] ।

७ नाथो वीरमरो ।

८ राजसी नाथारो । भायां परो काढ़ियो, तरै रांणारै देसमें गयो थो तठै मारियो[6] ।

९ रांमदास राजसीरो ।

१० मदो रामदासरो । गांव पीपलोण[7] ।

११ किसनो

१२ स्यांमसिंघ ।

११ पतो मदारो ।

१२ जसो ।

१२ उरजन ।

११ कमो मदारो ।

१२ सिवो ।

१२ माधो ।

---

1 रतनाके पुत्र जयमलको मुहणोत सुन्दरदासने मारा । 2 रतनेका बेटा सिखरा, सं० १६८२में बुरहानपुरमें मरा । 3 रतनेका बेटा अमरा, इसने तिमरणीकी मुहिममें चोरी कर ली तब राजा गजसिंहने इसकी गर्दन कटवा कर मरवा दिया । 4 सिलारका बेटा सूजा, इसका बैठना (जागीर) पीपलूण गाँवमें । 5 कुंभाका बेटा वीरम । वीरम चांपा चौहानकी विवाहित स्त्रीको ले आया जिसमें मारा गया । 6 नाथेका बेटा राजसी, भाइयोंने इसको निकाल दिया, तब राणाके देश (मेवाड़) में चला गया, वहां मारा गया । 7 रामदासका बेटा मद्दा, गाँव पीपलूणमें रहता है ।

११ मांनो मदारो । मुं० सुंदरदास मारियो[1] ।

१२ पांचो मांनारो ।

७ वीसो वीरमरो ।

८ केलग्ग वीसारो । राव मालदेरो चाकर थो । भूंडूंथी पाछो छांडै नैं जाळोर गयो थो । जाळोर ऊपरं रावजीरी फोज आई तठै प्रोळ हाथो दे लड़ मुवो[2] ।

९ कमो केलग्गरो । माहोमांहि मारियो[3] ।

८ देवो वीसारो । वेटा ३ कमै मारिया[4] ।

९ सिवो ।

९ रायसल ।

९ वीदो ।

९ रांमदास देवारो । रा० पतो नगावतरै कांम आयो नाडूल[5]।

८ करन वीसावत ।

९ सूजो करग्गरो । कमै मारियो[6] ।

६ भागस सकतारो ।

७ मेहो भागसरो ।

८ रांमदास मेहारो । राव चंद्रसेणरा विखा मांहे गढ़ रह्यो । रा० दासाजीरो चाकर थो[7] ।

९ सेखो रामावत ।

१० परवत सेखारो । गैर चाकर थको । अजमेर देईदासजीरो चाकर थको कांम आयो[8] ।

---

1 मद्देका वेटा माना, मुहणोत सुंदरदासने मारा । 2 वीसाका वेटा केलग्ग । यह राव मालदेवका चाकर था । भूंडूको छोड़ कर यह जालोर चला गया था । जालोर पर रावजीकी फौज चढ़ कर आई तब वहां पौलमें हाथ मार कर (जूझ कर) लड़ मरा । 3 केलग्गका वेटा कम्मा, जो परस्परकी लड़ाईमें मारा गया । 4 वीसाका वेटा देवा, इसके तीन वेटोंको कम्माने मार दिया । 5 देवाका वेटा रामदास, नाडोलमें नागाके वेटे पत्ताके लिये काम आया । 6 करग्गका वेटा सूजा, जिसको कम्मेने मारा । 7 मेहाका वेटा रामदास, यह राव दासाजीका चाकर था । राव चन्द्रसेनके आपत्कालमें गढ़में (रक्षक) रहा था । 8 पर्वत सेखाका वेटा, किसीका चाकर नहीं होते हुए भी अजमेरमें देवीदासजीका चाकर रह कर काम आया ।

११ वीरम ।

९ सतो रांमावत ।

१० पीथो, मीठोड़ै वसै ।

९ कलो रांमावत ।

१० सूरो कलावत । कल्यांणदास भाखरसीयोतरै[1] ।

९ सादूळ रांमावत । भाकरसी दासावतरै[2] ।

९ ऊदो रांमावत । बाळक थको मुवो[3] ।

३ मारू रांणा रावळरो ।

४ वैरसल मारूरो ।

५ करण वैरसलरो ।

६ त्रिभणो करणरो ।

७ पूनो त्रिभणारो ।

८ वीसो पूनारो । जाळोर कांम आयो[4] ।

९ देवराज वीसारो ।

१० जैमल ।

१० तेजमाल ।

११ पूरौ ।

११ मांनो ।

९ पांचो वीसारो । कल्यांणदासजी साथै कांम आयो[5] ।

१० वैणो ।

११ जोगोदास । ११ पीथो । ११ आसो । ११ केसो ।

९ रतनो वीसारो ।

९ धनो वीसारो ।

९ कुंभो वीसारो । घांणसेचा जूंझिया तठै कांम आयो[6] ।

१० डूंगरसी ।

---

1 सूरा कल्लेका बेटा, भाखरसीके बेटे कल्याणदासके पास था । 2 सादूल रामदासका बेटा, दासाके बेटे भाखरसीके पास था । 3 रामदासका बेटा ऊदा, बचपनहीमें मर गया । 4 पूनाका बेटा वीसा, जालोरके युद्धमें काम आया । 5 वीसाका बेटा पांचा, कल्याणदासजीके साथ काम आया । 6 वीसाका बेटा कुंभा, घाणसेचा जूझ कर मरे वहाँ काम आया ।

८ सिवो पूनावत । कुंडळ भायले चूक कर मारियो[1] ।

८ आसो पूनारो । भायले चूक कर मारियो[2] ।

८ चांपो पूनारो ।

९ सांकर चांपारो ।

१० नरसिंघ ।

११ रामसिंघ ।

७ देवो त्रिभणारो ।

७ जसो त्रिभणारो ।

८ चोहथ, कुंडळ रह्यो[3] ।

४ आपमल सूरारो ।

५ वीसो आपमलरो ।

६ सांवतसी वीसारो ।

७ भदो सांवतसीरो ।

८ वीको भदारो ।

९ भारमल वीकावत । पांचलै ऊपर फौजां आई तठै कांम आयो[4] ।

१० सूजो भारमलोत । भागवै रहै ।

११ तोगो । ११ विजो । ११ कचरो ।

१० सुरतांण भारमलरो ।

११ कांनो । ११ मेहरो । ११ झांझो ।

७ सेखो सांवतरो ।

८ ठाकुर सेखारो । तिणनूं उधरण गैहलोत मारियो[5] ।

९ वीसळ ठाकुररो । दहियां मारियो[6] ।

१० मांनो वीसळरो । रावळ चाकर थो । ब्रहांनपुरमें मुवो[7] ।

---

1 पूनाका बेटा सिवा, जिसको कुंडलके भायलोंने दगा करके मारा । 2 पूनाका बेटा आसा, जिसको भायलोंने दगा करके मारा । 3 चोहथ कुंडलमें जाकर रहा । 4 वीकाका बेटा भारमल, पांचले गांव पर फौजें चढ़ कर आई वहां मारा गया । 5 सेखाका बेटा ठाकुर, उसको उधरण गहलोतने मारा । 6 ठाकुरका बेटा वीसल, इसे दहिया राजपूतोंने मारा । 7 वीसलका बेटा माना, यह रावले चाकर था और बुरहानपुरमें मरा ।

११ डूंगर मांनारो । राघोदास महेसोत मारियो भागवै[1] ।

११ दुदो मांनारो ।

११ जसो ।

११ महेस ।

१० सहसमल वीसळरो ।

१० कलो वीसळरो ।

१० वीदो विसळरो ।

१० रूपो ।

८ तेजसी सेखारो ।

।। इति भायलांरी ख्यात सम्पूर्णम् । लिखतं पना ।।

++

1 मानाका बेटा डूंगर, इसे महेशके बेटे राघोदासने भागवे गाँवमें मारा ।

वात चहुवांणां सोनगरांरी राव लाखणोतरांरी[1]

१ राव लाखणनूं नाडूल देवी आसापुरी तूठी[2]। नाडूलरो राज दियो। तरै देवीसूं अरज की, "म्हारै घोड़ा नहीं।" तरै देवी कह्यो-"फलांणै दिन सोवतरा घोड़ा छूटनै आपथी आप आवसी[3]।" पछै घोड़ा १३००० ढळनै नाडूळ आया[4]। वांसै घोड़ांरा धणी आया; तरै देवी घोड़ांरा रंग फेरिया[5]। पछै वे देखनै पाछा फिरिया[6]।

राव लाखणरा वेटा—

२ वीसळ लाखणरो। तिणरा हाडोतीनूं छै[7]।

२ आसल लाखणरो। जिण आसल कोट करायो।
आसिल समुद्र मारै पुन्य हेत तळाव करायो[8]।

२ जोजल लाखणरो। जिण जोजावर वसाई[9]।

२ जैत लाखणरो। जिण जैतकोट करायो[10]।

१ वलसोही।

३ महिंद्रराव।

४ आलण।

५ जींदराव।

६ आसराव। नाडूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हूवो[11]। तिणनूं देवी वीहाड़ण लागी, सु आसराव वीहै नहीं[12] नै वांण हिरणनूं सांधियो हुतो सु वाह्यो[13]; तरै देवी खुसी हुई नै आसारावनूं कहण लागी—"तोनूं हूं

---

1 राव लाखणके वंशज सोनगरा चौहानोंकी वात। 2 नाडोलकी देवी आशापुरी राव लाखण पर प्रसन्न हुई। 3 अमुक दिन जमैयतके घोड़े छूट कर अपने आप आ जायेंगे। 4 फिर १३००० घोड़े छूट कर नाडोल आ गये। 5 घोड़ोंके मालिक पीछे आये तो देवीने घोड़ोंके रंग बदल दिये। 6 वे लोग देख कर वापिस लौट गये। 7 वीसलका वेटा लाखण, जिसके वंशज हाडोतीमें हैं। 8 लाखणका वेटा आसल, जिसने नाडोलमें आसलकोट बनवाया और अपनी माताके पुण्यार्थ आसिलसमुद्र नामका तलाव बनवाया। 9 लाखणका वेटा जोजल, जिसने जोजावर नामका गाँव वसाया। 10 लाखणका वेटा जैत, जिसने जैतकोट बनवाया। 11 आसराव बड़ा जबरदस्त राजा हुआ। वह एक दिन नाडोलमें शिकार खेलता था। 12 उसको देवी डराने लगी, परंतु आसराव डरे नहीं। 13 चलाना।

तूठी; तूं जांणै सु मांग[1]।" तरै आसराव देवीरो रूप देखनै जांणियो[2], "इसड़ी बैर व्है तो भली[3]।" तरै देवीनूं कह्यो–"तूं म्हारै बैर हुय घरे रहि[4]।" तरै वाचा छळ आई[5]। तरै कह्यो–"अतरी वात हूं पहली कहूं छूं, कोई मोनूं जांणसी तरै हूं परी जाईस[6]" यूं कहिनै देवो घरे आई। तिणरै पेट, कहै छै च्यार बेटा हुवा[7]—

७ मांणकराव। ७ मोकळ। ७ आल्हण। ७ ' ' ' हुवा।

८ तिणरो बेटो केलण हुवो॥ ८॥

९ तिणरे कीतू वडो रजपूत हुवो। तद जाळोर पंवार कुंतपाळ धणी हुतो। नै सिवांणै पिण पंवार वीरनारायण हुंतो। नै कुंतपाळरै प्रधांन दहिया हुता। तिणरै भेद कीतू जाळोर लियो। सिवांणो ही लियो[8]।

१० समरसी रावळ हुवो।

११ अरिसीह समरसीरो, जाळोर धणी हुवो।

१२ उदैसीह अरसीरो जाळोर पाट। तिण ऊपर संवत् १२९८ माह सुदि ५ जलालदी सुरतांण जाळोर ऊपर आयो हुतो सु भागो[9], तिण साखरो दूहो फूंदै कांचड़रो कह्यो[10]—

"सुंदर सर असुरह दळै, जळ पीयो वैणेह।
ऊदै नरयंद काढ़ियो, तस नारी नयणेह॥ १॥"

१३ जसवीर उदयसीरो।

१४ करमसी जसवीररो।

१५ रावळ चाचगदे करमसीरो। चाचगदे सूंधारै भाखरे देहुरो

---

1 तेरे पर मैं प्रसन्न हुई, तेरी इच्छा हो सो मांग ले। 2 जाना, विचार किया। 3 ऐसी पत्नी हो तो ठीक। 4 तू मेरी पत्नी हो कर मेरे घरमें रह। 5 तब वचनबद्ध हो गई। 6 कोई मुझे पहचान लेगा तो मैं चली जाऊंगी। 7 कहा जाता है कि उसके चार बेटे हुए। 8 उसके भेद बता देनेसे कीतूने जालोर और सिवाना दोनों ले लिये। 9 जिस पर सं० १२९८के माघ शु० ५को सुलतान जलालुद्दीन जालोर पर चढ़ कर आ गया पर हार कर भाग गया। 10 फूंदे कांचड़का कहा हुआ उसकी साक्षीका यह दोहा है।

चावंडाजीरो करायो । संमत १३१२[1] ।

१६ सांवतसी रावळ चाचगदेरो ।

१६ चंद्ररावळ सांवतसी चाचगदेरो ।

२ राव कानड़दे सांवतसीरो, जाळोर धणी हुवो । दसमों साळगरांम गोकळीनाथ कहांणो । संमत १३६८ जाळोररै गढ़रोहै अलोप हुवो[2] ।

३ कँवरांगुर वीरमदे, पातसाहसूं रावळ कांनड़दे वांसै दिन ३ वाज मुवो[3] ।

२ मालदे मूंछाळो सांवतसीरो वेटो गढ़रो है । जाळोररै रावळ कांनड़दे बीज राखण वास्तै काढ़ियो[4] । पछै पातसाह रावळ कांनड़दे वीरमदेनै मारनै गढ़ लियो । पछै मालदे घणा विगाड़ किया । फोजां वांसै सिवांणै खांन लागो रह्यो[5] । पछै देवी सैणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयो । पछै देवी सैणी विमर मांहै पैठी तठै मालदे ही विमर मांहै साथै पैठो[6] । आगै वहुळी जोगणी[6] बैठी हुती तिण आपरा गळारो कांठलो १ जड़ावरो मालदेनूं दियो । पतर १ लोहीरो भर दियो[7] सु मालदे पियो नहीं । जांणियो लोही छै । नै ओ अमृत हुतो सु थोड़ो सो मुंहड़ै लगायो थो सु मूंछे लागो, तिणसूं मूंछ वधी, तिणथी मूंछाळो मालदे कहांणो । पछै कांनड़देजी हुकम दियो, तरै

---

1 रावल चाचगदेवने सूंवा पहाड़ पर सं० १३१२में चामुंडादेवीका मंदिर बनवाया । (मारवाड़ राज्यके जालोर परगनेमें जसवंतपुराके पहाड़को सूंधा पहाड़ कहा जाता है, जिस पर पहाड़ काट कर यह मंदिर बनवाया गया है) । 2 राव कान्हड़दे सं० १३६८में जालोर गढ़रोहेके समय अलोप हो गया । यह दसवां सालिग्राम—गोकुलनाथ प्रसिद्ध हुआ । (कानड़दे बड़ा वीर हुआ । पं० पद्मनाभ कविने जालोर और सिवानेके इस युद्धके संबंधमें 'कान्हड़दे प्रबंध' नामक एक प्रसिद्ध काव्यकी रचना की है) । 3 रावल कान्हड़देके बाद कुंवरागुरु वीरमदे बादशाहसे तीन दिन लड़ाई करके मर गया । 4 मालदे मूंछाळेको जालोरके गढ़रोहे परसे कान्हड़देने अपना वंश कायम रखनेके लिये अन्यत्र भेज दिया । 5 फौजोंके पीछे सिवानेका खान लगा रहा । 6 फिर देवी सैणीने गुफामें प्रवेश किया वहां मालदेव भी साथमें घुस गया । 7 रक्तका पात्र १ भर कर दिया । 8 इससे 'मूंछाळा मालदे' कहा जाने लगा ।

पातसाहजीसूं मिळियो । पातसाह माथै वीज पड़ी सु मालदे झटकासूं टाळी[1] । पछै पातसाह गढ़ चीतोड़ मालदेनूं दियो । वरस ७ मालदे भोगवियो । पछै मालदे चीतोड़ काळ प्राप्त हुवो[2] ।

मालदेरा बेटा ३—

३ जैसो । ३ कीतपाळ । ३ वणवीर ।

४ रिणधीर[3]

५ केलण । ५ राजधर ।

६ डूँगो । ६ जैसो ।

७ कांन । ७ वीसो । ७ देभो । ७ रायमल ।

७ भोज । ७ भारमल । ७ नरो । ७ नगो ।

राजधर रिणधीररो आंक ५, संवत १४८२ राव रिणमलसूं लड़ मुवौ[4] ।

७ अरड़कमल । ७ नाथु । ७ हरदास ।

६ खींवो राजधररो ।

६ दूदो राजधररो ।

६ दलो ।

६ भीखो ।

६ राघो ।

केलण रिणधीररो आंक ५ ।

६ करमचंद वडो दातार हुवो । सं० १४७९ राव रिणमलसूं लड़ मुवो ।

७ सांवत करमचंदरो ।

७ जैसिंघ करमचंदरो ।

७ संसारचंद ।

७ मेथो ।

---

1 बादशाहके ऊपर गिरती हुई बिजलीको मालदेने तलवारके झटकेसे दूर कर दिया । 2 फिर मालदे चित्तौड़में मृत्यु प्राप्त हुआ । 3 रणधीर जैसाका बेटा । 4 रणधीरका बेटा राजधर सं० १४८२में राव रिणमलसे लड़ कर मर गया ।

४ रांणो वणवीररो । वडो रजपूत हुवो । जिणनूं कंवर वीरमदे ओळ पातसाह कनै राखनै आप आयो[1] । पछै वीरमदे वादासिर[2] आयो नहीं तरै पातसाहरै तोगो दीवांण थो तिणनूं कह्यो—"रांणानूं वेड़ी पहरावो ।" पछै रांणो तोगानूं दरगाहमें कटारीसूं मारनै घोड़े झाफै चढ़ कुसळै आयो[3] ।

५ लोलो रांणारो । जद राव रिणमल धणले रहै तद सोनगरै नाडूल परणियो[4] । पछै सोनगरै चूक कियो । राव रिणमल बैररो वेस कर सोनगरी काढ़ियो । पछै राव रिणमल सोनगरा १४० नाडूल मारनै कूवा मांहै नांखिया[5] । पछै तिण दावै घणा सोनगरा जठै हुता तठै मारिया[6] । एक लोलो भाटियांरै मूंमांणै हुतो[7] । गरभसूं उगरियो हुतो[8] । पछै राव रिणमलनै भाटियां वैर भागो, राव जेसळमेर परणीजण गया हुता । पछै उठै रावळ नै राव सिकार रमण गया । तठै लोलो साथै वरस १२ डावड़ो थको हुतो[9] । तठै नाहरसूं धको हुवो । तठै और साथ सारो पाछो हुवो[10] । लोलै छोटीसी वरछी थी सु नाहरनूं इण छळ वाही, दांत ४ चौकैरा पाड़नै गुदड़ीमें उकसी[11] । तरै राव रिणमल कह्यो—"ओ सोनगरो होय तिसड़ो छै[12] ।" तरै रावळ कह्यो—"और तो सोनगरा थे सोह[13] मारिया । ओ एक डावड़ो नांनांणै

1 जिसको कुंवर वीरमदे, वादशाहके पास अपने वदलेमें जामिन रख कर आप चला आया। 2 कौल ऊपर। 3 फिर राणा, तोगा दीवानको वादशाहके दरवारमें कटारीसे मार कर और झटपट अपने घोड़े पर चढ़ सकुशल आ गया। 4 जब राव रिणमल धणलेमें रहता था तब नाडोलके सोनगरोंके यहाँ विवाह किया था। 5 राव रिणमलको, उसकी पत्नी सोनगरीने स्त्रीका वेष पहना कर निकाल दिया। फिर राव रिणमलने नाडोलके १४० सोनगरोंको मार कर कूएमें डाल दिया। 6 फिर इस वैरके वदलेमें वहुतसे सोनगरोंको जहां वे थे वहीं मार दिया। 7 एक लोला भाटियोंके यहां ननसालमें रह गया था। 8 उस समय गर्भमें था इसलिये वच गया। 9 वहां साथमें वारह वर्षका लड़का लोला भी था। 10 वहां और साथ वाले सव पीछे हट गये। 11 लोलेके पास एक छोटी वरछी थी जिससे नाहर पर इस प्रकार प्रहार किया कि नाहरके चौकेके चारों दांत उखाड़ती हुई गुद्दीमें पार हो गई। 12 यह सोनगरा हो ऐसा प्रतीत होता है। 13 सव।

आधांन हुतो सु वचियो छै[1]। पछै राव जेसळमेरथा[2] विदा हुआ, तरै लोलानूं रावळ कनांसूं मांगनै साथै ले आया। पछै अठै आंणनै राव जोधारी बेटो सुंदर परणायनै सींधळ नींबावतरी पाली उतारनै पटै दी[3]। तदसूं जोधपुररो चाकर हुवो। तठा पछै जोधपुररा धणियांरै वड़ै वड़ै कांमे सोनगरा आया[4]।

६ सतो लोलारो।

७ खींवो सतारो।

८ रिणधीर खींवारो।

९ अखैराज रिणधीररो। वडो दातार, वडो जूझार, वडो आखाड़सिध[5]। अखैराज सारीखां रजपूत थोड़ा हुसी। संमत १६०० पोस मांहै राव मालदे सूर पातसाहसूं समेळ वेढ़[6] हुई तठै कांम आयो। राव मालदेरो दियो पालीरो पटो। रांणा उदैसिंघनूं अखैराज बेटी परणाई हुती[7]। एक वार उदैसिंघनूं वणवीर जोर दबायो, तरै रांणै उदैसिंघ लिख अखै-राजनूं मेलियो, कह्यो--"म्हारी मदत करजो।" तरै अखैराज रा० कूंपो मेहराजोत, भदो, कान्हो पंचाइणोत, रा० जैसो भैरवदासोत और ही घणो साथ ले मारवाड़रो, अखैराज उठै गयौ। पछै गांव माहोली वेढ़ की। वेढ़ अखैराज जीती। पछै उदैसिंघनूं कुंभळमेर बैसांणियो[8]।

सोनगरा अखैराज रिणधीरोतरो परवार—

१० मांनसिंघ अखैराजरो।

१० भांण अखैराजरो।

१० उदैसिंघ अखैराजरो।

---

1 यह एक लड़का अपनी ननसालमें गर्भमें था अतः बच गया है। 2 से। 3 फिर यहां ला कर राव जोधाकी बेटी सुंदरको व्याह करके सिंधल नींबावतसे पाली खोस कर उसके नाम पट्टा कर दिया। 4 जिसके बाद सोनगरे जोधपुरके राजाओंके बड़े काम आये। 5 बहुत बलवान, रणक्षेत्रमें अपने स्थानसे पीछे पाँव नहीं देने वाला, युद्ध विशारद। 6 लड़ाई। 7 व्याही थी। 8 फिर उदयसिंहको कुंभलमेरमें पाट बिठाया।

१० भोजराज अखैराजरो ।

१० जैमल अखैराजरो ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

मांनसिंघ अखैराजरो आंक १० तिणरो परवार जोधपुररै मांहे हुतो[1] । राव चंद्रसेणरै गढ़रोहै घणा हीड़ा किया[2] । संमत १६२१ चैत्र मांहे । पछै रांणैरै जाय वसियो[3] । पछै रांणै प्रतापनै कांम पड़ियो । मांनसिंघ संमत १६३२ हळदीरी घाटी वेढ़ हुई तठै कांम आयो[4] ।

११ जसवंत मानसिंघरो वडो दातार सिरदार हुवो । मोटा राजा रांणाजी कनासूं बुलायनै जसवंतनूं पाली पटै दीवी । संमत १६४४ गांव २७सूं पाली दीवी । पछै गांव ३० पटै दिया । सं० १६६५ अैहमदाबाद मांहे । जसवंतजी गांव देवीखेड़ो पालीरा पटारो थो सु मांगियो थो, सु गांव धनराज मांगळियानूं थो; तरै कह्यो–"इणरै वदळै देस्यां ।" तरै जसवंतजी छांडनै रांणारै गया, उठै मुवा[5] ।

१२ वीरमदे जसवंतरो ।

१३ हरीसिंघ वीरमदेरो ।

१३ सांवळदास ।

१२ वाघ जसवंतरो ।

१३ भींव वाघरो ।

१२ माधोसिंह जसवंतरो ।

१३ तेजसिंह । १३ विहारीदास । १३ कुसळसिंह ।

१२ केसरसिंह जसवंतरो ।

१२ भाखरसी जसवंतरो ।

१३ गोकळदास ।

---

1 था । 2 राव चन्द्रसेनके गढ़रोहेके समय वहुत सेवा की । 3 वसा । 4 मानसिंह सम्वत् १६३२ में हल्दीघाटीकी लड़ाई हुई वहां काम आया । 5 तव जसवंत छोड़ कर राणाके पास चला गया और वहीं मरा ।

१४ नाहरखांन गोकळदासरो ।

१५ सबळो । १५ सत्रसाळ ।

१२ रांमचंद जसवंतरो ।

१२ जगनाथ जसवंतोत । संमत १६६७ रांणाजीरैसूं आयो, तरै सिणगारी गांव १२ सूं वसी नै दी[1] । पछै सं० १६७७ पालीरो पटौ दियौ थो । पछै सं० १६९१ कँवर अमरसिंघजी साथै गयो तरै पाली उतरी[2] ।

१३ दलपत जगनाथोत ।

१४ प्रथीराज ।

१३ भोजराज जगनाथोत ।

१२ स्यांमसिंघ जसवंतरो । सं० १६७९ जोधपुररो गुढ़ो पटै थो । सं० १६९७में भाद्राजणरो पटो थो । वरस १ रह्यो ।

१३ सुजांणसिंघ । १३ जोध । १३ करन ।

१२ राजसिंघ जसवंतोत । सं० १६६६ रांणाजीरैसूं आयो तरै कूडणो गांव ५सूं पटै दियो[3] । सं० १६७२ पालीरो पटो सूरजमल छांडियो तरै[4] दियो । पछै सं० १६७७ पालीरो पटो उतारनै जगनाथनूं दियो । पछै छांडिनै रायसिंघ सीसोदियारै रह्यो । पछै सं० १६९२ कछवाहै मारियो ।

१३ महासिंघ राजसिंघोत ।

१३ जगतसिंघ सोनेही पटै । उजेण घावे पड़ियो[5] । धोलपुर कांम आयो ।

१३ दूरजणसिंघ ।

१३ सुजांणसिंघ । सोनेही पटै । पूनै मोत मुवो[6] ।

१० भांण अखैराजरो । रांणा उदैसिंघरै वास थो[7]; पछै

---

1 जसवंतका बेटा जगन्नाथ सं० १६६७ राणाजीके पाससे मारवाड़ चला आया तब बारह गांवोंके साथ सिणगारी गांव वसीमें दिया । (वसी = एक प्रकारकी कर-मुक्त जागीरी) । 2 कुंवर अमरसिंहके साथ चले जानेके कारण पाली उतार दी गई । 3 सं० १६६६ में राणाजीके यहांसे चला आया तब पाँच गाँवोंके साथ कूडणा पट्टेमें दिया । 4 तब । 5 उज्जैनमें आहत हुआ । 6 पूनामें अपनी मौत मरा । 7 राणा उदयसिंहके यहां रहता था ।

सहबाजखां कंबो कुंभळमेर ऊपर आयो, तद भांण कुंभळमेर कांम आयो। मोटो राजाजी भांणरी बेटी परणियो थो[1]।

११ नाराइणदास भांणोत। पैंहली पातसाही चाकर थो। पछै मोटै राजाजी बुलायनै भाद्राजणरो पटो सं० १६४१ दियो। पछै सं १६४५ सिरोही ऊपर गया तरै नाराइणदास राव सुरतांणनूं खबर मेली[2], तिण वास्तै पटो छुड़ायो। पछै रांणारै वसियो। खोड़रो पटो दियो[3]।

१२ सांवतसी नाराइणदासोत।

१३ भींव रांणाजीरै कांम आयो।

१३ उरजण सांवतसीरो।

१३ प्रताप सांवतसीरो।

१३ सुजांणसिंघ सांवतसीरो।

१२ सातल नारायणदासोत। सं० १६८२ भाद्राजण गांव २१थी[4] पटै थो। सं० १६८३ नवसररो पटो गांव १० सूं दियो। सं० १६८८ छांडियो।

१३ जैतसी सातलोत। सं० १६८६ जोधपुर आयो। नींवावत साथै साथ देनै देसमें मेलियो तठै कांम आयो[5]।

१३ जैसिंघ सातलोत।

१३ सूरसिंघ सातलोत।

१३ किसनसिंघ सातलोत।

१३ नाथो सातलोत।

१२ चत्रभुज नाराइणदासोत। वडो ठाकुर हुवो। पातसाही चाकर। पूरवमें जागीरी की। पखैरीगढ़ पटै[6]।

१३ गरीबदास चत्रभुजोत।

१२ प्रथीराज नाराइणदासोत। सं० १६७८ एहनळा पटै हुतो[7]।

---

1 मोटा राजा उदयसिंहने भाणकी बेटीसे विवाह किया था। 2 खबर भेजी। 3 खोड़ गांवका पट्टा कर दिया। 4 से, के साथ। 5 नींवावतके साथ सेना दे कर देशमें भेजा था, वहां काम आ गया। 6 नारायणदासका बेटा चतुर्भुज बड़ा ठाकुर हुआ। बादशाही चाकर, पूर्व (उत्तर प्रदेश) में जागीरी भोगी। पखैरीगढ़ (खैरीगढ़?) पट्टेमें था। 7 सं० १६७८ में अहनला गांव पट्टेमें था।

पछै सं० १६८८ कुंडणो गांव पटै हुतो ।

१३ रांमसिंघ ।

१२ मालदे नाराइणदासोत ।

११ केसोदास भांणोत ।

१२ माधवदास केसवदासोत । वडो रजपूत । सं० १६८४ भवरांणी पटै थी गांव १०[1] । पछै मुं० जैमलसूं पंवार जैसै खांनाजंगी, माधोदासरो चाकर मुं० जैमल मारियो, तरै उठासूं छाड़ियो[2] । सं० १७०० वळै श्रीजीरैं वसियो[3] । गूंदवच पटै, रेख रु० १६०००)री[4] । सं० १७१४ रा वैसाखमें उजेण कांम आयो ।

१३ मुकुंददासनूं गलणियो पटै । रेख रु० १६०००)[5] ।

१३ हरिसिंघ ।

११ कल्यांणदास भांणोत ।

१० उदैसिंघ अखैराजोत ।

११ सूरजमल सं० १६५७ पालीरो पटो सकतसिंघ भेळो हुतो[6] । सं० १६६५ सकतसिंघ मुवो तरै देवीदास भेळी दी[7] । पछै सं० १६७१ छांडियो । रांणारै वसियो[8] । सं० १६७३ वळै वसियो[9] । गांव ७ नवसरो पटै[10] । पछै सं० १६७४ देछू गांव ६ सूं पटै ।

१२ देवीदासनूं आधी पाली हुती ।

१२ वणवीर सं० १६७७ भंवरी गांव २ पटै ।

---

1 सं० १६८४में १० गांवोंके साथ भवराणी गांव पट्टेमें था। 2 माधोदासका चाकर पँवार जैसा जिसके साथ मुंहता जैमलकी आपसी लड़ाई (शत्रुता) थी जिससे जैमलने उसको मार दिया, तब माधोदास जागीर छोड़ कर चला आया। 3 सं० १७००में पुनः श्री जीके (महाराजा जसवंतसिंहके) पास आकर रहा। 4 रु० १६०००) की रेखका गूंदोज पट्टेमें दिया। 5 मुकंददासको रु० १६०००) की रेखका गलणिया गांव पट्टेमें दिया। 6 सं० १६५७में सूरजमलको सकतसिंहके शामिल पालीका पट्टा था। 7 सं० १६६५में सकतसिंह मर गया तब देवीदासके शामिल कर दी। 8 राणाके यहां आ कर रह गया। 9 सं० १६७३ में पुनः यहां (मारवाड़में) आ कर रह गया। 10 सात गांवोंके साथ नवसरा गांव पट्टेमें दिया।

११ सकतसिंघ उदैसिंघोत । आधी पाली सूरजमल भेळी पटै हुती । सं० १६६२ मुवो ।

१२ मुकंददास, धींगांणो सो सं० १६८५ भाद्राजणरो, दांमण जाळोररो पटै[1] ।

१० भोजराज अखैराजोत रा० कूंपा मैहराजोतरै वास हुतो । पछै कूंपाजीरै साथै कांम आयो[2] ।

११ सिंघ ।

१२ जसवंत, रा० दलपत राजसिंघोतरै वास हुतो । पछै भटनेर राखियो हुतो । पछै भटनेर पातसाही फौजां घेरियो हुतो तठै कांम आयो[3] ।

१० जैमल अखैराजोत । वीकानेर वास । वाप, गांव रिणी निजीक पटै[4] ।

११ अचळदास ।

१२ केसोदास जाटवै मारियो ।

१२ प्रागदास । १२ वळभद्र । १२ अनिरुध ।

१३ जूंझारसिंघ ।

११ सारंगदे जैमलरो ।

१२ नरहरदास ।

१० रतनसी अखैराजरो ।

११ कान्ह ।

१२ रांम राव, जसवंत मांनसिंघोतरै वास ।

१२ अमरो कान्हावत ।

वात सोनगरांरी

चौवोस साख चहुवांणांरी । तिण मांहै एक साख सोनगरा

---

1 मुकंददास वड़ा जवरदस्त, सं० १६८५ भाद्राजुन और जालोरका दामण पट्टेमें । 2 अखैराजका वेटा भोजराज, महाराजके वेटे राव कूंपाके यहां रहता था और कूंपाके साथ काम आया । 3 जसवंत रायसिंहके वेटे राव दलपतके यहां जा कर रहाथा । पीछे उसको भटनेर रखा था । वादशाही फौजोंने जव भटनेरको घेरा था तव वहां काम आया । 4 अखैराजका वेटा जैमल, जिसका निवास वीकानेर, रिणी गांवके पास वाप गाँव पट्टेमें था ।

जाळोररा धणी । इणै पंवारांनूं मारनै जाळोर लियो। रावळ कांनड़दे सांवतसीरो जाळोर धणी हुवो। वडो महाराजा हुवो। गोकुळीनाथ श्रीठाकुरजीरो अवतार हुवो[1] । सु अलावदी पातसाह गुजरात ऊपर आयो[2] । गुजरातरो घणो लोग कैद कियो। सोरठ मांहै देवरो पाटण छै[3] । तठै सोमइयो[4] महादेव जोतलिंग[5] थो सु उपाड़नै[6] आला[7] चांबां[8] मांहै बांधनैं गाडै मांही घातियो[9] सु महादेव ठोड़थी[10] खिसै नहीं, तरै पातसाह आरंभरांम हठी पड़ियो[11] । पांच सौ जोड़ी बळदांरी गाडी बैलै रुखी करनै जोती[12] । महादेवरा लिंग मांहैथी आग भभक-भभक नीसरै छै[13] सु पांचसै सिका पांणीसूं लिंगनूं छांटता जाय छै[14] । बळद जूपै छै तिकै मरता जाय छै[15] । महादेव घणो ही करामात करै छै; पिण देवां ऊपरला दांणव[16], सु इतरै हठसूं कोस १ रोजीना महादेव सोमइयो नीठ खिसै छै[17] । सु यूं पातसाह लियां जाळोररै गांव सकरांणै डेरो हुवो[18] । महादेवरै किस्तरी वात सारी कानड़देजी सुणी छै[19] ।

वात सिंघावलोकिनी[20]

एक बांभण तापस कोई एक गंगाजीसूं कावड़[21] एक गंगोदकरी आंणनै[22] सोमइयै लिंग ऊपर चाढ़ै। यूं करतां उण बांभणनूं कावड़ां

---

1 रावळ कानड़दे श्री ठाकुरजी गोकुलनाथजीका अवतार हुआ। 2 बादशाह अल्ला-उद्दीन गुजरात पर चढ़ कर आया। 3 सौराष्ट्रमें देवरो पाटण शहर है। ('देवरो पाटण' अर्थात् 'देव पट्टन', सोमनाथ पट्टन, प्रभास पट्टन, शिव पट्टन, आदि नामोंके साथ 'देव पट्टन' नाम भी इस नगरका विख्यात है।) 4 सोमनाथ। 5 ज्योतिर्लिंग। 6 उठा कर। 7 गीला। 8 चमड़ा। 9 डाला,रखा। 10 स्थानसे। 11 तब अपने निश्चय पर दृढ़ बादशाहने भी हठ पकड़ ली। 12 बहलीके रूपमें बना कर पाँचसौ बैलोंकी जोड़ियें गाड़ीमें जोती। 13 निकलती है। 14 अतः पांचसौ सबके शिवलिंगको पानीसे छिड़कते जाते हैं। 15 जो बैल गाड़ीमें जुतते हैं वे मरते जाते हैं। 16 परंतु देवोंके ऊपरके दानव। 17 सो इतने हटसे भी नित्य एक कोस सोमनाथ महादेव बड़ी मुश्किलसे आगे खिसकते हैं। 18 सो इस प्रकार लाते हुए बादशाहका डेरा जालोर परगनेके गांव सकरानेमें हुआ। 19 कानड़देजीने-महादेवजीकी आपत्तिकी सब बात सुनी है। 20 इससे पूर्व, इससे संबधित घटी घटनाकी एक बात, सिंहावलोकन। 21 काँवर। 22 लाकर।

चाढ़तां वार ६ हुई; जु सोरंभजीरै घाटथी गंगोदक आंणनै देवरै पाटण सोमइयै ऊपर चाढ़ै[1], सु सातमी वार गंगोदक कावड़ भरी नै आंणतो हुतो[2] सु किणहेक सहर वटाउ थको[3] किणहेकरै चौंतरै[4] उतरियो हुतो सु उणरी बैर[5] किणीहेक जिंदासूं हालती हुती[6], सु वा सासती[7] जिंदारै जाती; सु उण दिन उणरो मांटी[8] कठैक हाळी[9] हुतो सु घरे आयो, सु तिण दिन जिंदारै मोड़ेरो जांणी आयो[10], तरै जिंदो उणसूं रीसांणो[11], उणनूं नैड़ी नावण दै[12], तरै उण कह्यो—"आज म्हारै मांटी घरे आयो, तिणहूं आज मोड़ेरी आई[13]।" तरै जिंदे कह्यो—"तोनूं मांटीरो इतरो[14] प्यार छै तो तूं घरे जाय। थारो प्रेम थारा मांटीसूं कर।" तरै इण कह्यो—"मोनूं थे किणही सूल आवण दो[15]।" तरै जिंदै कह्यो—"थारा मांटीरो माथो वाढ़नै मोनूं आंण दै तो तोनूं आवण दूं[16]।" तरै इण कह्यो—"मोनूं क्यूंहेक हथियार दो, ज्यूं हूं माथो वाढ़ लाऊं[17]।" तरै जिंदारै छुरो १ मोटो छो सु जिंदै दियो। इण साचांणी मांटी सूतारो माथो वाढ़नै जिंदानूं आंण दियो[18]। तरै जिंदै माथो देखनै कह्यो—"फिट रांड! थारो काळो मुंहड़ो; हूं तो थारो मन जोवतो थो; तूं रांड इसड़ा कांम करै[19]?" तरै रांडनै दुरकारी[20]। तरै पाछी आई; आयनै वांभण बारणै सूतो हुतो तिणरा लूगड़ा[21] मांहै छुरो नांखियो; नै वांभण सूता थकारैई उठारो लोही[22] लगायो। लूगड़ा पड़िया हुता त्यां ऊपर लोहीरा छांटा नांखिया; पछै घर मांहै पैस कूकवो कियो[23], जु म्हारो मांटी चोर मारियो

1 सौरों घाटसे गंगोदक ला कर देवपट्टनमें सोमनाथ पर चढ़ावे। 2 लाता था। 3 पथिकके रूपमें। 4 चबूतरे पर। 5 पत्नी। 6 किसी एक व्यभिचारीसे अनुचित संबंध था। 7 निरंतर। 8 पति। 9 खेतीके काममें नौकर, हल चलाने वाला। 10 सो उस दिन जारके पास देरसे जाना हुआ। 11 तब जार उससे नाराज हो गया। 12 उसको पास नहीं आने दे। 13 जिससे आज देरीसे आई। 14 इतना। 15 मुझे तुम किसी प्रकार आने दो। 16 तब जिनाकारने कहा—'तेरे पतिका सिर काट कर मुझे ला कर दे तो मैं तुझे आने दूं'। 17 जिससे मैं सिर काट कर लाऊं। 18 इसने सचमुच ही सोते हुए अपने पतिका सिर काट कर जिंदेको ला कर दे दिया। 19 रांड! तू ऐसा काम करती है? 20 तब रांडको धिक्कार करके निकाल दिया। 21 कपड़े। 22 रक्त। 23 पीछे घरमें घुस कर जोरसे रोने लगी।

जाय छै। कूकवो हुवो। सको लोक हाबो सुणनै आयो[1]। रावळा चोकीदार तलार पिण आया[2]। पग जोया[3]। तरै चोकीदारै जोवतै-जोवतै ओ कावड़ वाळो बांभण लाधो[4]। ओ निचिंत सूतो हुतो। इणै लोहीरा छांटा दीठा[5], तरै उणनूं झालियो[6]। पछै गुदड़ी मांहै छुरी नीसरी[7]। त्यां वळै गाढ़ो झालियो[8]। तलार जाय राजानूं गुदरायो[9]। इण इसड़ो कांम कियो, कासूं सझारो हुकम हुवै छै[10] ? तरै राजा कह्यो—"इणरा हाथ दोनूं वाढ़ो।" उण बांभणनूं न क्यूं उणै पूछियो, न क्यूं इण कह्यो। चोकीदारै हाथ वाढ़िया[11]। ओ तो वळै वा कावड़ लेनै हालियो[12]। इणनूं महादेव ऊपर ब्रह्मतेज चढ़ियो[13]। मन मांहै विचारण लागो, "मैं इण भांत सेवा की, महादेव ओ फळ दियो। हमरकै[14] देहरा मांहै कावड़रै मिस जाऊं। जायनै ऊपर एक भाटो नांखूं[15]। पींडी भांजू[16]।" सु सोमइयारै देहुरै निजीक आयो[17]। त्यां महादेव पैली पूजारानूं कह्यो—"फलांणियो बांभण क्रोध भरियो आवै छै[18] थे मांहि मत आवण दो।" तितरै ओ आयो[19]। उणै वरजियो[20], तरै उण बांभण महादेवरा पूजारानूं कह्यो—"मोनूं क्यूं वरजो छो[21]?" तरै कह्यो—"महादेवजी वरजियो छै।" तरै उण कह्यो—"थे महादेवनूं पूछो, इसड़ी सेवा करतां म्हारा हाथ क्यूं वढ़ाया[22]?" तरै महादेव कहायो—"पैलै भव तूं रजपूत थो[23],

---

1 सभी लोग हल्ला सुन करके आये। 2 राज्यके चौकीदार और कोतवाल भी आये। 3 खोज देखे। 4 तब चौकीदारोंको खोज करते-करते यह कावर वाला ब्राह्मण मिला। 5 इन्होंने खूनके छींटे देखे। 6 तब उसको पकड़ा। 7 फिर उसकी गुदड़ीमें छुरी मिल गई। 8 उन्होंने फिर उसे मजबूत पकड़ा। 9 कोतवालने जा कर राजासे अर्ज की। 10 इसने ऐसा काम किया है, किस दंडकी आज्ञा होती है ? 11 चौकीदारोंने हाथ काट लिये। 12 यह तो फिर उस कावरको ले कर चल दिया। 13 महादेव पर ब्रह्मकोप चढ़ा। 14 इस बार। 15 पत्थर पटक दूं। 16 शिवलिंगको तोड़ दूं। 17 सो वह सोमनाथके मंदिरके निकट आया। (पंद्रहवीं शतीके आस पास सोमनाथ महादेवको 'सोमईया महादेव' कहा जाता था।—"ताहरां देस मांहि सोमईउ असपति लीधइ जाइ", "गुजराति सोरठ सोमईआ वाहरि विसमूं वीतूं" दे०—कवि पद्मनाभ कृत 'कान्हड़दे प्रबंध' प्रथम खण्ड। 'सोमईया' शब्द 'सोमनाथ' का अपभ्रंश रूप है।) 18 अमुक ब्राह्मण क्रोधसे भरा हुआ आ रहा है। 19 इतनेमें यह आया। 20 उन्होंने उसे मंदिरमें जानेसे रोका। 21 मुझे क्यों रोकते हो ? 22 ऐसी सेवा करते रहने पर भी मेरे हाथ क्यों कटवाये ? 23 पूर्व जन्ममें तू राजपूत था।

नै जिणरो गळो वाढ़ियो सू ही रजपूत थो; दोनूं थे गोठिया था[1]। किणीहेक दिन थे एक छाळी मारी[2]। तरै उण छाळीरा कांन तैं हाथसूं साह्या[3] नै गळै छुरी उण दीधी। सु वा छाळी मरनैं वा वैर हुई, नै ओ थारो गोठियो उणरो मांटी हुवो, सु उणै वैर मांगियो[4], सु उणरो गळो वाढ़ियो, नै थूं उणरा कांन झालिया था सु थारा हाथ वढ़ाया[5]। म्हारो किसो दोस ?" तोही उण बांभणरो महादेव ऊपर कोप मिटियो नहीं। पछै फिरनैं कासी गयो। उठै सिनांन गंगाजीमें करनै कासी करोत लेण लागो। तरै करवतरै दैणहारै कह्यो—"कांसूं मांगै छै[6] ?" तरै कह्यो—"अठारो मांगियो लाभै छै[7] ?" तरै इण कह्यो—"मांगियो लाभै छै, तो हूं तिको अवतार पाऊं, जिको सोमइया महादेवरा लिंगनै उपाड़नै आला चांवा मांहे वांधूं[8]।" तरै पाखती सगळा मांणस ऊभा था, तिकां कह्यो[9]—"फिट ! फिट !! कासी करवत लेनै इसड़ो कांसूं मांगै छै[9] ?" तरै कह्यो—"क्यूं फेर विचारनै मांग[10]।" तरै इण कह्यो—"एक म्हारो आधा धड़रो तिकांहूँ त्यां सोमइया महादेवनूं वांध्यानूं छोड़ावै[11]। इण यूं कहे करवत लीधी[12]। सु आधा धड़रो अलावदी पातसाह हुवो। आधा धड़रो रावळ कांनड़दे हुवो सोनगरो[13]।

वात

पातसाहरो डेरो सकरांणै जाळोररै गांव जाळोरसूं कोस ६ हुवो। आ खवर कानड़देनूं हुई, "जु महादेव सोमइयानूं वांधनै पातसाह

---

1 तुम दोनों मित्र थे। 2 किसी दिन तुमने एक बकरीको मारा था। 3 पकड़े रहा। 4 सो उसने अपने वैरका बदला मांगा। 5 इसलिये उसका गला काटा गया और तैंने उसके कान पकड़े थे, इसलिए तेरे हाथ काटे गये। 6 क्या मांगता है ? 7 यहांका मांगा हुआ (क्या अगले जन्ममें) मिलता है ? 8 तो मैं जो जन्म पाऊं, उसमें सोमनाथ महादेवके लिंगको उठा करके गीले (कच्चे) चमड़ेमें बांधूं। 9 तब पासमें, जो सब मनुष्य खड़े थे, उन्होंने कहा कि काशीमें करवत ले कर ऐसा क्या मांगता है ? 10 कुछ फिर विचार करके मांग। 11 तब इसने कहा—"मेरे इस आधे धड़के द्वारा एक ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो जो उस प्रकार बंधे हुए महादेवको छुड़ा दे। 12 इसने यों कह करके करवत लेली। 13 सो उसके आधे धड़का अलाउद्दीन बादशाह हुआ और आधे धड़का रावळ कान्हड़दे सोनगरा हुआ।

सकरांणै आय उतरियो; तरै पातसाह कनै कांधळ आलेचो रजपूत ४ बीजा भेळा मेलिया[1]। थे पातसाहजीनूं जाय कहनै आवो—"जु अतरा हिंदुस्थांन मार बंदकर महादेव सोमइयो बांधनै म्हारै गढ़ निजीक म्हारै गांव उतरिया सु भली न की[2]। मोनूं रजपूत न जांणियो" तरै अै जाळोरथी चालिया, लसकर गया[3]। आगै पातसाहरै प्रधांन सीहपातळो भांणेज छै सु ई प्रधांन छै[4]। तिणरै डेरै कनै डेरो कियो[5]। सीहपातळासूं अै मिळिया। कांनड़दे कहिया तासु समाचार इण सीहपातळानूं कह्या[6]। सीहपातळै कह्यो—"पातसाहजी थांहरो विगाड़ियो क्यूं न छै[7]; अै सुरतांण सुभियांण छै[8]। इणांनूं को इसड़ी वात कहाड़ै छै[9] ?" तरै इणै कह्यो—"सु तो कांनड़देजी जांणै। थे निचंत कहो। नै कांधळनूं, बीजा रजपूतांनूं देखनै सीहपातळो घणो खुसी हुवो। पछै पातसाहजी कनै सीहपातळो गयो, कानड़दे कहाड़ियो सु कह्यो। नै सीहपातळौ पातसाहजीनूं कह्यो—"कांनड़देरो रजपूत कांधळ देखण सरीखो छै।" तरै पातसाहजी कह्यो—"बुलावो।" तरै सीहपातळै कह्यो—"अै ओनाड़ छै, कोई खून करसी[10]। कांनड़दे छूटी बीजानूं जुहार न करै छै[11]। जै पातसाह उणरा खून माफ करै तो हजरतरी हजूर बुलाऊँ।" तरै सीहपातळै पातसाहजीरो कवल[12] लेनै कांधळनूं पातसाहजीरी हजूर बुलायो। हजूर आयो। एकण तरफ ऊभो राखियो[13]। तरै पातसाह कहण लागो—"कांनड़दे तो म्हांनूं सांमो डाकर दिखावै छै[14], नै पातसाहनूं

---

1 तब बादशाहके पास चार अन्य राजपूतोंके साथ कांधल आलेचाको भेजा। 2 आप इतने हिन्दुस्थान (हिन्दुओं) को मार कर और कैद कर, सोमनाथ महादेवको बाँध कर के मेरे गढ़के निकट मेरे ही गांवमें आकर ठहरे, यह अच्छा नहीं किया। 3 तब ये जालोरसे चल कर बादशाहकी सेनाका जहां पड़ाव था वहां गये। 4 आगे बादशाहका भानजा सीहपातला है, जो उसका प्रधान भी है। 5 उसके डेरेके पास डेरा डाला। 6 कान्हड़देने जो समाचार कहे थे सो उन्होंने सीहपातलासे कहे। 7 बादशाहने तुम्हारा बिगाड़ा तो कुछ नहीं है। 8 ये सुल्तान शुभाशुभ चाहे जो करने वाले हैं। 9 इनको कोई क्या ऐसी बात कहलाता है ? 10 ये बहुत ही जोरावर हैं, कोई खून कर देंगे। 11 कान्हड़देके अतिरिक्त किसीको जुहार नहीं करते हैं। 12 कौल, वचन। 13 खड़ा रखा। 14 कान्हड़दे मुझे उलटा डर दिखाता है।

तलाक छै जु वीच गढ़ मेल[1], विगर लियां यूंही आघो[2] न जाय; सु हूं जातो हुतो सु कांनड़दे ग्रै वात कहाड़ै छै तो हूं विगर जाळोर लियां हमैं हूं आघो न जाऊं, मोनूं तलाक छै।" तितरै एक सांवळी[3] भंवती-भंवती पातसाह वैठो थो तठै ऊपर आई, तिणरै पातसाह आप तुकारी[4] दी सु लागो। सांवळी पड़ण लागी, सु पातसाह पाखतीरा[5] तीरंदाजांनूं हुकम कियो, जु पड़ण न पावै[6]। सु तीरंदाजां कवांणां संभाई, तीर चलावणा मांडिया[7], सु तीरां करनै सांवळी पड़ण न पावै[8]। तरै कांधळ वोलियो—"जु ग्रा तीरंदाजी मोनूं दिखाईजै छै।" सु भैंसो १ साहुलो जिणरा सींग पूंछ तांई हुवै[9], तिण ऊपर पखाल १ पांणीरी हुती सु नैड़ो ग्रायो[10]। तरै कांधळ भैंसारै झटकारी दी सु सींग वढ़, पखाल वढ़नै भैंसारा दोय टूक किया[11]। तरवार धरती जाती रही। तितरै[12] ग्रा सांवळी पड़ी सु भैंसारा लोही मांहै नै पखालरा पांणी मांहै सांवळी वही गई[13]। तरै कांधळ सवण विचारियो[14]—पातसाहरो कटक म्हां ग्रागै यूं वह जासी[15] तरै तीरंदाजै कवांणांरी मूठ कांधळ सांमी करी। तरै सीहपातळो विचै ग्रायो। कह्यो—"मैं तो हजरतसूं पैली ग्ररज की थो" तरै वां तीरंदाजांनूं मनै किया। पछै कांधळ उठासूं वारै ग्रायनै जिण गाडा ऊपर महादेवजी था तठै ग्रायो नै कह्यो—"पांणी तो विगर पियै सरै नहीं नै धांन राज छूटां खासां[16]।" उठै ग्रा वात कहिनै गढ़नूं वळिया[17]। पातसाहरी हजूर ग्रमराव ममूसाह मीर गाभरूसूं, हरमरी खुटक छै नै गुरगाव्यां पगां उठांणती तीजै भाईनूं ग्रापड़ियो थो, सु ग्रा घणी वात छै[18]।

---

1 छोड़ कर। 2 ग्रागे, दूर। 3 चील पक्षी। 4 तीर। 5 पास वाले। 6 यह गिरने न पाये। 7 तीर चलाने शुरू किये। 8 सो तीरोंके सतत चलते रहनेसे चील नीचे नहीं गिर रही है। 9 एक साहूला भैंसा जिसके सींग पूंछ तक होते हैं। 10 वह निकट ग्राया। 11 तव कांधलने तलवारसे ऐसा झटका मारा जिसने सींग ग्रौर पखाल काट करके भैंसेके दो टुकड़े कर दिये। 12 इतनेमें। 13 वह गई। 14 तव कांधलने शकुन विचारे। 15 वादशाहकी सेना हमारे ग्रागे इस प्रकार वह जायगी। 16 पानी पिये विना तो चलेगा नहीं परंतु ग्रन्न ग्रापके छूट जाने पर ही खाऊंगा। 17 गढ़की ग्रोर लौटे। 18 वादशाहके दरवारमें मम्मूशाह ग्रौर मीरगाभरू ये दो उमराव थे, जिनके साथ एक तो हरमकी नाराजगी थी, दूसरा पैरोंकी जूतियां उठवाई जाती थीं, ग्रौर तीसरा उनके भाईको पकड़ रखा था, यह वड़ी ग्रापत्तिजनक वात उनके लिये थी।

सु अै पचीस हजार घोड़ांरा धणी दिलगीर थका बैठा था, सु आ वात यूं सुणी, तरै बेहू चढ़नै पैंडा मांहे कांधळनूं मिळिया[1] । कह्यो—"म्हे थांरा कांमनूं छां, थां भेळा छां[2]।" सील कोल किया[3]। म्हे रातीवाहो देसां[4] । कह्यो—"एक तरफसूं म्हे आवसां, एक तरफसूं थे आजो।" यूं कहिनै सीख कीवी[5] । कांनड़देजी कनैं आयनै सोह वात कही[6] । पछै बीजै दिन साथ सारोही भेळो करनै रातीवाहो दियो[7] । एक तरफसूं मंमूसाह नै मीरगाभरू आपरो साथ लेनै आया, नै एक तरफसूं कांनड़देजीरी फौज आई । रातीवाहो दियो । तठै पातसाही लोक घणो कांम आयो । पातसाह नीसरियो[8], फौज भागी । कहै छै–कांनड़देजीरै साथ घणी पातसाही फौजांनूं घेचियां, साथ मारता गया[9] । पातसाहनै भांजनै कांनड़देजी सोमइया कनै आया[10] । महादेवजीरी पींडी हाथ घातनै उपाड़िया सु तुरत उपड़िया सु महादेवजीरो लिंग सकरांणै थापियो[11] । ऊपर देहुरो करायो । कांनड़देजी हिन्दुस्थांनरी बड़ी मरजाद राखी[12] । ममूंसाह मीरगभरू रावळ कांनड़देजी कनै रह्या । ठाकुराई सारू घणो रोजगार दियो। पिण पातसाहीरा रैहणहारा सु गायां मारै, सु हिंदवांरै खटावै नहीं[13] । तरै रावळजी कह्यो—"इणांनूं किणहेक वात कर सीख देणी[14]; तरै क्यूंहेक कह्यो—"इणांरै धारू वारू पात्रियां छै सु मांगो, सु अै देसी नहीं; तरै अै आपै परा जासी[15] । तिण ऊपर रावळजी दोय मांणस मेलिया नै

---

1 तब दोनों भाई सवार हो मार्गमें कांधलसे मिले । 2 हम तुम्हारे काममें मददगार हैं, तुम्हारे शामिल हैं । 3 कौल वचन किये । 4 हम रात्रि-आक्रमण करेंगे । 5 इस प्रकार कह कर रवाना हुए । 6 कान्हड़देजीके पास आकर सब वात कही । 7 फिर दूसरे दिन सभी सैनिकोंको इकट्ठा करके रात्रि-आक्रमण किया । 8 बादशाह भाग कर निकल गया । 9 कहा जाता है कि कान्हड़देकी सेना भागती हुई बादशाही सेनाका पीछा करती हुई मारती गई । 10बादशाही सेनाका नाश करके कान्हड़देजी सोमनाथके पास आये । 11 महादेवजीकी पिंडीको हाथ डाल करके उठाया तो वह तुरंत उठ गई और उसको सकराणेमें ही स्थापित कर दिया । 12 कान्हड़देजीने हिन्दुस्थानकी मर्यादा (प्रतिष्ठा) रख ली । 13 परंतु (गो-भक्षक मुसलमान) बादशाहतमें रहने वाले, अतः गोवध करते हैं सो हिन्दुओंको यह सहन नहीं होता । 14 इनको किसी बातके मिस यहांसे निकाल देना । 15 तब किसी एकने कहा कि इनके पास धारू और वारू नामक दो वेश्याएँ हैं, उन्हें मांगी जांय; ये देंगे नहीं, तब अपने आप चले जायेंगे ।

पातरियां मंगाई[1] । तरै यां कह्यो—"महादेवजीरो देहुरो रावळीजी मंडायो सु पूरो हुतो तद म्हे रावळजीनूं आपै पेस करता । पिण रावळीजी म्हां कना पात्र्यां मंगाई सु म्हांनूं सीख देवणी तेवड़ी[2] ।" अै छांडिया । पछै राजा हमीरदे चहुवांणरै गया । तरै हमीरदे घणो आदरभाव कियो । पछै हमीरदे ऊपर इण वास्तै पातसाह अलावदीन आयो । घणा दिन गढ़रोहै रह्यो । पछै संमत १३५२रा श्रावण वदि ५ हमीरदेजी कांम आया । पछै कितरे'क दिन पातसाहजीरै पंजुपायक थो सु किणी'क सूळ उठासूं छांडियो[3] सु पातसाह कनैथी आयौ । सु उठै इसड़ो कोई नहीं, जु पायकपंजुसूं जीतै, पातसाहजीरै पायक आगै हुता, सु सोह पंजु जीता[4] । तरै पातसाहजी पंजुनूं फरमायो—"कोई तोसूं खेलै तिसड़ो पायक कठैही सूझै छै ?" तरै पंजु अरज की—"साहिबरी वडी मांड छै[5] । किणही वातरी परमेसररै घरै कमी न छै । घणा इण प्रथी ऊपर हुसी, सु मैं दीठा नहीं । नै रावळ कांनड़दे चहुवांण जाळोररो धणी, तिणरो बेटो वीरमदे, मो कनाहीज सीखियो छै[6], सु मो सारीखो खेलै छै ।" तरै पातसाहजी रावळ कांनड़दे सांमा लिखिया किया[7] । बोल कौल सूधा भेजिया । "एक वार वीरमदेनूं सताब[8] म्हां कनै भेज दीजो ।" आदमी फुरमांन ले जाळोर आया । कांनड़देजी आपरा भाई बंधु, प्रधांन भेळा कर मिसलत करी[9] । सारै कह्यो—"आपै पातसाहनूं रीस चाढ़िया छै[10] । दिल्लीस्वर ईश्वर छै, अै आरंभरांम[11] छै, करण मतै सु करै । आगलो आपांनूं खून बगसै छै[12], मया कर वीरमदेजीनूं पातसाहजी तेड़ै छै तो मेल दीजै[13] ।"

---

1 इस पर रावलजीने दो मनुष्य भेजे और वेश्याओंको मंगवाया । 2 तब इन्होंने कहा—महादेवजीका मंदिर रावलजीने बनवाना शुरू किया सो वह जब पूरा हो जाता तब हम अपने आप रावलजीको पेश कर देते, परंतु रावलजीने हमारे पाससे उन वेश्याओंको मंगवा लिया अतः हमको यहांसे निकाल देने का इरादा कर लिया है । 3 बादशाहके पास पंजू नामका एक मल्ल था जो किसी कारणवश छोड़ कर बादशाहके पाससे चला आया । 4 सबसे पंजू जीत गया । 5 परमात्माकी बड़ी रचना है । 6 मेरेसे ही सीखा है । 7 तब बादशाहने रावल कान्हड़देसे पत्र-व्यवहार किया । 8 जल्दी । 9 परामर्श किया । 10 हमने बादशाहको क्रोधित किया है । 11 करता-धर्ता, सर्वाधिकारी । 12 वह अपने अपराधोंको क्षमा करता है । 13 बादशाह कृपा करके वीरमदेवजीको बुलाता है तो भेज देना चाहिये ।

तरै वीरमदेजीरो वडो सामांन करनै पातसाहजीरी हजूरनूं चलायो। कितरेहेक दिने उठै जाय पोहता[1]। पातसाहजीरो मुजरो कियो। पातसाहजी वीरमदेजीनूं देख बोहत राजी हुवा। दिन दस पांच आडा घातनै वीरमदेसूं कहाव कियो[2]—"एक वार पंजु नै थे खेलो, म्हे देखां।" तरै वीरमदे अरज कराई, "म्हारो तो यो कांम न छै पिण हजरत फुरमावै छै, तो एकंत[3] हजरत हुकम करसी तठै म्हैं नै पंजु ख्याल दिखावस्यां[4]।" पछै पातसाहजी आपरी अंगरहण थी तठै ठौड़ संवाराई[5]। मोहलरो लोग पिण चिगांरै ओळै देखण आयो[6]। पछै उठै पातसाहजी बैठनै पंजु वीरमदेनूं तेड़िया। अै खेलिया। अै एक दोय वार तो बर बर रह्या। पातसाहजी बोहत रीझिया[7]। पंजु नै वीरमदे सारीखी-सारीखी सारी विद्या जांणता। वीरमदे तो पंजु कना-सूंई विद्या सीखियो हुतो; पिण पंजु कांनड़देजी कना[8] छांड पातसाहजी कना[9] आयो, वांसै कांनड़देजी कनै करणाटरा पायक आया हुता[10], तिणां कना विद्या एक पगरै अंगूठै पाछणों[11] बंधायनै उलटी कुळाछ खाइनै पाछणारी चोट निलाड़नूं कीजै[12]; तिका विद्या वीरमदे नवी सीखियो। पांजुरै उलटी कुळाछ खेलनै पाछणारी हळवोसी लगाई[13]। वीरमदे इण घात जीतो[14]। पातसाहजी बोहत रीझिया। मोहलांरो लोग रीझियो। पातसाहजीरै बेटी १ वडी कँवारी हुती सु निपट रीझाई[15]। पछै पातसाहजी पांजु वीरमदेनै डेरारी सीख दी[16]। पातसाहरी बेटी हुती खटवाटी ले पड़ी[17]। धांन खाय न पांणी पीवै। मोहलरै लोग पूछियो[18]—"कुण वास्तै[19]?" तरै आ साहजादी कहै—

---

1 वहां जा पहुँचे। 2 पांच दस दिनके वाद वीरमदेको कहलवाया। 3 एकान्तमें। 4 खेल दिखायेंगे। 5 फिर वादशाहने जहां अपने एकान्त रहनेका स्थान था उस जगहको सजाया। 6 महलकी अंतःपुरिकायें भी चिकोंकी ओटमें देखने आईं। 7 वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ। 8 पाससे। 9 के पास। 10 पीछेसे कान्हड़देजीके पास कर्णाटकके मल्ल आये थे। 11 उस्तुरा। 12 ललाटमें मारी जाये। 13 हलकी सी चोट मारी। 14 वीरमदे इस घात (दाव) में जीत गया। 15 वादशाहके एक वड़ी वेटी क्वारी थी वह वहुत ही प्रसन्न हुई। (चौहान कुलकल्पद्रुममें इस लड़कीका नाम 'सीताई' लिखा है।) 16 अपने-अपने डेरोंको जानेकी आज्ञा दी। 17 प्रतिज्ञा करली। 18 अन्तःपुरिकाओंने पूछा। 19 किसलिए।

"कै तो कंवर वीरमदे परणूं[1], नहींतर धांन-पांणी नवे दांते खाऊं[2]।" तरै दिन एक तो मोहलरै लोग उणरी मा सारी हुरमां समझाई—"ओ हिंदू, तूं तुरकांणी, किण भांत परणावां ?" पिण उण अत हठ मांडियो[3], मरण लागी। तरै मोहलरै लोग आ वात पातसाहजीसूं मालम कीवी। तरै एक दोय वार पातसाहजी पिण फुरमायो—"आ वात हूणरी नहीं।" साहिजादीनूं दिन ३ हुवा धांन खायां, पांणी पियां। तरै वळै पातसाहजीसूं अरज पोहती[4]–साहिजादी मरै छै। तरै पातसाहजी वीरमदेजी वीच आदमी फेरिया। वीरमदे घणो ही उजर कियो। पण पातसाह अत हठ मांडियो; तरै दीठो[5]—"कै तो[6] मरां कै वात कबूल की चाहीजै।" तरै वीरमदे दाव कियो[7]। कह्यो—"भली वात, साहो जोवाड़ीनै म्हांनूं विदा कीजै[8]। म्है जाळोर जाय सूल सामांन कर जांन ले साहा ऊपर आवां, परणां[9]।" तरै पातसाहजी कह्यो—"तू उठै जाय बैठ रहै। नहीं आवै तो तिण वातरा ओळ दे जा[10]।" तरै रांण वणवीरोतनूं ओळमें पातसाहजी कनै राखनै वीरमदे घरे जाळोर आयो। वात हुती सु रावळ कांनड़देजीसूं मालुम की। कांनड़देजी दीठो, वात विगड़ी[11]। तरै कांमदारांनूं तेड़नै गढ़रोहारो सामांन सतावसूं करायो[12]। पातसाहजी रांणानूं पांचे दिने साते दिने तेड़नै फुरमावै—"अजेस वीरमदे नहीं आयो।" रांणै पातसाहनूं वाते लगाय लियो छै—"सामांन करै छै, सु सताब आवसी।" मास २ तथा ४ यूं आघा नीसरिया[13]। पछै पातसाहजी आपरा हजूरी लोग दिनांरो अवादो[14] बोलनै जाळोर मेलिया[15]। वे अठै आया। रावळ कांनड़दे नै कंवर वीरमदेनूं मिळिया। मुंहडै तो

---

1 या तो कुंवर वीरमदेके साथ विवाह करूं। 2 नहीं तो अन्नजल नये दांत आने पर (नये जन्ममें) लेऊं। 3 परंतु उसने वहुत हठ किया। 4 पहुंची। 5 तव देखा। 6 या तो। 7 दाव खेला। 8 लग्न दिखा कर हमको विदा कर दें। 9 हम जालोर जा कर सव सामान और तैयारी करके लग्न ऊपर वरात ले आवें और शादी करलें। 10 यदि वापिस नहीं आवे तो अपने वदलेमें जामिनकी तौर पर आदमी रख कर चला जा। 11 कान्हड़देजीने देखा, वात तो विगड़ गई। 12 तव कामदारोंको वुला कर शीघ्र ही किलेवंदी का सामान तैयार करवाया। 13 इस प्रकार महीने २ तथा ४ आगे निकल गये। 14 मयाद। 15 भेजे।

हळभळ करै, आवणरी मांड का नहीं[1] । गढ़री तैयारी हुवै छै । सु पातसाहजी वीरमदेनूं तेड़ै मेलिया था, त्यां पातसाहजीनूं आय कह्यो– "वीरमदे नावै, गढ़ सझै छै[2] ।" तरै पातसाजी बुरो मांनियो । तगा कोटवाळनूं कह्यो—"जु रांणानूं बेड़ी पहरावो ।" तगै रांणानूं कह्यो– "थे बेड़ी पहरो ।" तरै रांणो तगानूं मारनै कुसळ खेमै गयो[3] ।

साखरा दूहा

काय[4] आडां पग आड, काय कर घात[5] कटारियां ।
छोगाळा छळ छाड, रांणा रावत वट[6] तणो[7] ॥ १ ॥
तगो न जांणै तोल[8], मूरख मछरीकां[9] तणो ।
कारण किणी'क बोल, मारै काय आपण[10] मरै ॥ २ ॥
सुध[11] पूछै सुरतांण, कोलाहळ केहो[12] कटक ।
काय रीसांणो रांण, मैंगळ[13] खंभ मरोड़िया ॥ ३ ॥

वात

रांणो कुसळ-खेमै घरे आयो । घोड़ो गांव झींथड़ै कनै मुवो[14] । पछै पातसाहजी मुदफरखांन दाऊदखांननूं पांच लाख घोड़ांसूं विदा किया । सु अै आय गढ़ लागा[15]। रोज-रो-रोज ढोवो हुवै, तरै उठारी खबर ढोलरै ढमकै पातसाहजीनूं आवै[16]; कहै छै—बारै वरस विग्रह हुओ । पछै कहै छै—दहिया रजपूत २ खूनमें[17] आया था, त्यांनूं कांनड़देजी सूळी दिराया था[18], सु वे सूळी ऊपर थका वायरासूं अपूठा हुता सु सांम्हां हुवा[19] । सु रावळ कांनड़देजी देखनै हंसिया ।

---

1 मुंह पर खूब बातें बनाते हैं, परंतु आनेकी तैयारी कुछ नहीं । 2 वीरमदे नहीं आयेगा, लड़ाईके लिये गढमें सामान सजाया जारहा है । 3 तब तगाको मार करके राणा कुशलक्षेमसे चला गया । 4 अथवा, या तो । 5 प्रहार । 6 गर्व । 7 का । 8 रहस्य, मर्म । 9 स्वाभिमानियोंका । 10 स्वयं । 11 खबर । 12 कैसा । 13 हाथी । 14 राणाका घोड़ा झींथड़ा गांवके पास मर गया । 15 सो इन्होंने आकर गढ़ घेर लिया । 16 हमेशा ही धावे होते, तब वहांकी खबर ढोल बजा कर बादशाहको पहुँचाई जाती । 17 खून करनेके अपराधमें । 18 उनको कान्हड़देजीने सूली चढ़वाया था । 19 सो वे सूली पर चढे हुए भी उल्टे थे सो हवासे सन्मुख हो गये ।

कह्यो—"दहिया भेळा ह्वै ज्यूं जांणीजै छै[1] । गढ़ लिरासी[2] ।" सु वांरो भाईबंध दहियो रावळजीरी पाखती ऊभो हुतो[3], तिण वात आ सुणी । उणनूं खटक लागी[4] । उण तुरकांनूं भेद दीनो । गढ़ सुरंग पिण लागी[5] । कोट उडियो । गढ़ भिळियो[6] । कांधळ खांडैरै मुंहडै घणो पराक्रम कियो[7] । रावळ कांनड़देजी अलोप हुवा[8] । कुंवरांगुर वीरमदेजो अतरा[9] साथसूं कांम आयो । पछै तुरकां वीरमदेरो माथो वाढ़ियो[10], नै दिली ले गया । पछै वा पातसाहजीरी बेटी वीरमदेरो माथो थाळी मांहै घातनै[11] परणीजण लागी, सु माथो संत्रो हुतो सु फिरनै अपूठो हुवो[12] । तरै साहजादी पूरवजनमरी वात कही; तरै माथो अपूठो हुतो सु फिरनै संवळो हुवो[13] । तरै साहजादी फेरा खायनै वांसै कहै छै सती हुई । सं० १३६८ वैसाख सुदि ५ बुधवाररो गढ़ जाळोर तूटो । गढ़ तूटतां साथ जिसो हुवो तिणरी हकीकत—

अतरो साथ कांनड़देजीरो सवौं हुवो[14] । कांनड़देजी आप अलोप हुवा—

१ कांधळ देवड़ो ।
१ कांनो ओलेचो ।
१ लिखमण सोमत ।
१ जैतो देवड़ो ।
१ जैतो वाघेलो ।
१ लूणकरण ।
१ मांन लणवायो ।
१ उरजन विहळ ।
१ चांदो विहळ ।

---

1 ऐसा जाना जाता है कि दहिये संगठित हो रहे हैं । 2 गढ लें । 3 पासमें खड़ा था । 4 उसको चुभी । 5 गढमें सुरंग लगवाई गई । 6 गढ़ पर शत्रुओंका अधिकार हो गया । 7 कांधलने तलवारके सामने बहुत पराक्रम दिखाया । 8 रावल कान्हड़देजी अलोप हो गये । 9 इतने । 10 काटा । 11 रख कर । 12 माथा सन्मुख था सो उलटा हो गया । 13 सीधा हो गया । 14 वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

१ जैतमल ।

१ रा० सातळ ।

१ सोमचंद व्यास ।

१ सलो राठोड़ ।

१ सलो सेपटो ।

१ झांझण भंडारी ।

१ गाडण सहजपाळ ।

४ रांणी जमहर पैठी[1]—

१ ऊमादे । १ कँवळदे । १ जैतळदे । १ भावळदे ।

इतरो[2] साथ कांनड़देजी अलोप हुवां वांसै[3] तीजै दिन वीरमदेजी साथै कांम आयो—

१ कँवर वीरमदेजी ।

१ अडवाळ वीहळ ।

१ आल्हण देवड़ो ।

१ आल्हण सोहड़ ।

१ धारो सोढ़ो ।

१ भांणो धांधळ ।

१ सींधळ पतो ।

१ झांझण परिहार ।

इतरो साथ निसर गयो[4]—

१ सेलोत लूंढ़ो ।

१ मेरो ।

१ अरसी ।

१ विजैसी ।

१ सांगो सेलार ।

१ सलूंणो ।

---

1 चार रानियोंने चिता-प्रवेश कर जौहर किया। 2 इतना। 3 पीछे । 4 इतना साथ निकल भागा ।

१ जेसो ।

१ लखमण ।

१ लूणो दहियो ।

१ धुंधळियो सांहणी ।

१ पतो दहियो ।

१ वीलण सोभत ।

१ मूळू सेपटो ।

१ लालो ।

१ नरसिंघ सींधळ ।

१ जगसी सींधळ ।

१ करमसी ।

१ वीको दहियो वडो स्यांमद्रोही हुवो, जिणरा भेदसूं गढ़ जाळोररो तूटो[1] ।

इति सोनगरा जाळोररा धणियांरी ख्यात वार्ता सम्पूर्ण ।
लिखतं वीठू पना सींहथळरो वांचै जिण सिरदारसूं
जैश्रीरुघनाथजीरी मालुम होसो ।

1 दहिया वीका वड़ा स्वामीद्रोही हुआ, जिसके भेद देनेसे जालोरका किला टूटा ।

वात साचोररी

सहर तो कदीम छै[1]। घणां दिनांरो वसै छै[2]। पाधर मैदांनमें वसै छै[3]। सहर वीच कोट ईंटांरो थो सु तो विचले वरसे[4] पड़ गयो नै दरवाजौ १ कोटरो साबतो[5] नै क्युंहेक[6] भींत रावळा घरां वांसै, क्युंहेक दरवाजारै मुंहडै थोड़ीसी भींत रही थी। पछै संमत १६८१रै टांणै[7] महाराजा श्रीगजसिंघजीनूं साचोर जागीर हुती, तद एक वार काछी कटक मांणस ५००० साचोर ऊपर आया हुता[8], तद मुं० जैमल जैसावतनूं परगनो थो। पछै जैमलरै चाकरै वेढ़ कीवी[9]। कटक काछी भागौ। पछै मुं० जैमल कोट फेर संवरायो। सहररो मंडाण निपट सखरो छै[10]। वडो बाजार गुजरातरी तरै कैहलवांरो छायो छै। देहुरा २ जैनरा छै। एक मुं० जैमलरो करायो छै। कोट मांहै कुवो १ छै, पिण पांणी नहीं। सहर पांणीरी कमी। कुवा रुखी वाय १ चहुवांण तेजसीरी कराई छै, तिणरो खारो पांणी[11]। घणी सहररी मंड उण ऊपर छै[12]। राव बलूनूं साचोर हुई तरै कुवो १ दिखण दिसनै राव बलू खिणायो छै[13]। तिण मांहै पांणी मीठो पुरसे २० नीसरियो छै[14]। उण ऊपर क्यूं वाग छै[15]। तळाव घणा को नहीं। नाडा[16] दोय तीन छै। मास २ तथा ३ पांणी रहै। पांणीरो गांवरै खेड़ै दुख हीज छै[17]। मुदै खारो कुवो सहरमें तेजसीरी वाय ऊपर छै तिण ऊपर तीण ६ वहै छै[18]। राव बलूरो करायो कोहर दिखण

---

1 शहर तो पुराना है। 2 बहुत समयसे बस रहा है। 3 समतल मैदानमें बसा हुआ है। 4 अभी थोड़े वर्ष हुए। 5 साबित। 6 कुछ। 7 समय। 8 तब एक बार काछियोंकी सेनाके ५००० मनुष्य साचोर पर चढ़ आये थे। 9 मंहता जयमलके चाकरोंने लड़ाई की। 10 शहरकी रचना बड़ी सुन्दर है। 11 बावड़ी एक कुएकी ओर चौहान तेजसीकी बनवाई हुई है, जिसका पानी खारा है। 12 शहरकी अधिक भीड़ उसी पर लगती है। 13 राव बलूको जब साचोर मिली तब उसने एक कुआ शहरसे दक्षिणकी ओर खुदवाया। 14 उसमें २० पुरुष नीचे मीठा पानी निकला है। (पुरुष=गहराईकी एक माप जो मानमें हाथ उठा कर खड़े हुए मनुष्यके बराबर होती है। पुरसा।) 15 उसके ऊपर छोटासा बाग भी लगा हुआ है। 16 छोटी तलैया। 17 गांवके आसपास पानीका कष्ट ही है। 18 तेजसीकी बावड़ीके ऊपर, जो खारे पानीका कुआ है और जिस पर छः चरसे चलते हैं, वही शहरके लिए पानीका आधार है।

दिसनूं कोस छै[1], पांणो मीठो छै। साचोरसूं कोस १ गांव लाछड़ी उत्तरनूं छै, तिण[2] गांव कूवो १ छै तिणरो पांणी निपट मीठो पालर[3] सारीखो छै। उठासूं वांहणां पांणी सहर आवै छै[4]। साचोररो निर-जळ देस छै। सहररी पाखती जाळ, कैर घणा[5]। परगनो इकसाखियो[6] रैत[7] पटेल, रजपूत। गांव १२६ लागै। तिण मांहै गांव २८ नदी लूणी सूराचंद राड़धरारै कांठै नीसरै, तरै इतरा गांवां साचोररां मांहै वहै[8]। तिण गांवे गोहूं, चिणा सैंवज हुवै[9], रेल आयां[9]। रेल नावै तरै गांवां २८ कोसीटा २०० हुवै[10]। बीजा[11] गांव सारा इक-साखिया। बाजरी, मोठ, मूंग, तिल, कपास हुवै। परगना मांहै भूमिया देवड़ा, वागड़िया तिणांरा गांव छै[12]। नै चोहुवांण पूरेचा गांवां मांहै छै[13]। सहर साचोर मांहै सकना तुरक घर १५० छै[14]। सकना कहावै छै। खेत १०० सहर मांहै पसाइता खावै छै[15]। खूंम ३ उणांरा छै १ वहलीम, १ झेरडियो, १ पायक, गांव दीठ रु० २) पावै छै[16]। गांव १२६ माथै दांम २४८०००० । साचोर सहररी वस्ती उनमांन[17] घर १२४५—

७००	महाजन ओसवाळ श्रीमाळ।	१५	दरजी।
८०	वांभण श्रीमाळी[18]।	१२	मोची।
१०	रजपूत।	४०	तेली।
१५०	सकना।	३५	सोनार।

1 राव वलूका वनवाया हुआ कुआ दक्षिण दिशाकी ओर आवे कोसकी दूरी पर है। 2 उस। 3 वर्षा जल। 4 वहांसे बैलगाड़ियों पर पानी शहरमें लाया जाता है। 5 शहरके पास जाल (पीलू) और कैरके वृक्ष वहुत हैं। 6 साचोर वरसाती फसलका परगना है। 7 प्रजा। 8 इनमें २८ गांव ऐसे हैं जिनमें लूनी नदी वहती है, जो सूराचंद और राड़धराके पास सीमा पार करती है। 9 इन गांवोंके किनारोंके खेतोंमें लूनी नदीके पानीकी रेल आनेसे गेहूं और चने सेजेसे होते हैं। 10 और जब रेल नहीं आती है तब इन २८ गांवोंमें २०० कोसीटों द्वारा गेहूंकी फसल होती है। 11 दूसरे। 12 परगनेमें भोमियोंके रूपमें देवड़े और वागड़िया चौहानोंके गांव भी हैं। 13 और पूरेचा चौहान भी गांवोंमें रहते हैं। 14 साचोर शहरमें १५० घर सकना मुसलमानोंके हैं। 15 ये शहरमें एक सौ खेत माफीके खा रहे हैं। 16 इनके तीन मंगन (अन्त्यज) वहलीम, झेरड़िया और पायक हैं जिनको प्रति गांव रु० २) मिलते हैं। 17 अनुमान। 18 श्रीमाली ब्राह्मण।

२५	पींजारा ।	५	माळी ।
१५	सूत्रधार[1] ।	२	लोहार ।
१२	छींपा धोबी ।	५	गंध्रप[3] ।
४	कूंभार ।	३५	ढेढ़ ।
५	रंगरेज ।	४०	भील ।
१५	भोजग[2] ।		

वात चहुवांणां साचोरर धणियांरी

चहुवांण विजैसीह आलणोत[4] सीहवाड़ै रैहतो, नै दहियो विजैराज तद साचोर धणी थो । तिणरै भांणेज महिरावण वाघेलो छै[5]; तिण[6] नै[7] विजैराज दहियै माहोमाहि जीव बुरो हुवो[8] । तरै वाघेलो विजयसीहसूं मिळियो । कह्यो—"आंपै साचोर लां, आधोआध हैंसो[9] ।" तरै विजैसी कह्यो—"भली वात ।" पछै वाघेलै तेड़ियो[10] तद विजैसी सीहवाड़ारो चढ़ियो गयो । उठै दहिया मारिया । ओ वाघेलो पिण मारियो । साचोर लीधी । आपरी आंण फेरी[11] । संमत ११४१ फागुण वदी ११ गुर थापना साचोर कीधी[12] ।

कवित्त

धरा धूण धकचाळ[13], कीध दहिया दहवट्टै[14] ।
सबदी सवळां साल[15], प्रांण मेवास पहट्टै ।।
आल्हण सुत विजयसी, वंस आसराव प्रागवड़ ।
खाग त्याग खत्रवाट, सरण विजै पंजर सोहड़[16] ।।
चहुवांण राव चोरंग अचळ, नरां नाह अंणभंगनर ।
धूमेर सेस जां लग अटळ, तांम[17] राज साचोर धर ।। १ ।।

---

1 खाती । 2 शाकद्वीपी ब्राह्मण । 3 गन्धर्व । 4 आलणका बेटा । 5 उसका भानजा महिरावण वाघेला है । 6 उसके । 7 और । 8 आपसमें खट-पट हो गई । 9 अपने साचोर पर हमला कर उस पर अधिकार करलें, दोनोंका आधा-आधा हिस्सा । 10 बुलाया । 11 अपनी दुहाई फेर दी । 12 सम्वत् ११४१ फाल्गुन कृष्ण ११ गुरुवारको सांचोरमें अपने राज्यकी (यहां सं० १२४१ होना चाहिये; क्योंकि विजयसिंहके पिता आल्हणका समय १३वींका पूर्वार्द्ध निश्चित है । तव सं० ११४१ में आल्हणका वेटा विजयसिंह नहीं हो सकता ।) 13 युद्ध । 14 नाश । 15 शल्य रूप । 16 सुभट । 17 तब तक ।

पीढ़ियांरी विगत—

१ राव लाखण ।

२ बलि ।

३ सोही ।

४ महंदराव ।

५ ग्रणहल ।

६ जींदराव ।

७ ग्रासराव ।

८ मांणकराव ।

९ ग्राल्हण ।

१० विजैसी । साचोर ली ।

११ पदमसी ।

१२ सोभ्रम ।

१३ साल्हो सोभ्रमरो । निपट वडो रजपूत हुवो । जाळोर गढ़ पातसाह ग्रलावदी घेरियो, तद कांम ग्रायो । जाळोररी पैहली प्रोळ चढ़तां साल्हा चौकी कहीजै[1] । ग्रागै ग्राप पुरांणां मांहै सुणियो छो[2]—"संग्रामरै विखै पग सांमां भरै तठै ग्रश्वमेधरो फळ लहै[3] ।" सु वात मनमें ग्रांणनै[4] रावळ कांनड़दे जीवतां घोड़ै चढ़नै साथळां मांहै खीला पाती जड़ाय[5], पातसाही कटक मांहै घोडो उपाड़ नांखियो[6] । कांनडदे उमाहड़ै[7] मोहळ[8] वैठा देखै छै । घणो लड़ियो, घणो विसेख कियो[9] ।

---

1 जालोरके किले पर चढ़ते हुए पहली पौलके पास वनी हुई साल्हा चौकी कही जाती है । जिस जगह पर ग्रलाउद्दीनसे वड़ी वहादुरीसे लड़ता हुग्रा साल्हा काम ग्राया था । 2 था । 3 संग्राममें ग्रपने पाँव ग्रागे वढ़ाता जाय तो ग्रश्वमेधके फलकी प्राप्ति होती है । 4 मनमें ला करके । 5 जंघाग्रोंमें लोहेकी कीलें ग्रौर पत्तियें जड़वा करके । 6 वादशाही सेनामें ग्रपने घोड़ेको डाल दिया । 7 उत्साहसे । 8 महल । 9 ग्रत्यन्त पराक्रम दिखलाया ।

कवित्त

अलावदी आरंभ[1] कीध[2] सोनागर[3] ऊपर।
हुवो समर तलहटी जुड़ैं चहुवांण मछर[4] भर।।
सकतीपुरचो सांम प्रांण सुरतांण संकायो।
गांजै[5] घड़[6] गज रूप चीत[7] आलम चमकायो।।
रांजियो राव कांनड़ रिणह कोतक खिरथ[8] थंभियो।
वरमाळ कंठ अपछर वरै साल्ह विवांणै[9] माल्हियो[10]।। १ ।।

१३ वीकमसी।
१४ पातो।
१५ राव वरजांग।
१३ हापो, तिणरै वांसला सूराचंद धणी[11]।
१४ घड़सी।
१५ सहसमल।
१६ भोजदे।
१७ उधरण।
१८ वीसो।
१६ डूंगर।
२० रांणो मांन
२१ रांणो भारवर।
२१ रांणो सूजो।
२२ रांणो साढूल सूजारो।
२२ दयाळदास सूजारो।
२३ अखो दयाळदासरो।

राव वरजांग पातारो। पातो, वीकमसी, साल्हो सोभ्रम, पदमसी विजैसी, आंक १५ राव वरजांग नैं मिलकमीर वेढ़ हुई सं० १४७८[12]

---

1 हमला। 2 किया। 3 जालोरका स्वर्णगिरि नामका किला। 4 क्रोध, गर्व। 5 नाश कर दिया। 6 सेना। 7 चित्त। 8 सूर्य। 9 विमानमें। 10 प्रस्थान किया। 11 हापा, जिसके पीछे वाले (वंशज) सूराचंदके स्वामी हुए। 12 राव वरजांग और मीरमलिकके सं० १४७८ में लड़ाई हुई।

राव वरजांगनूं मारनै साचोर मुगलै लीवी[1] । राव वरजांग वडो ठाकुर हुवो । गढ़ जेसलमेर राव वरजांग परणियो[2], तद इतरो खरच लाग दापो कियो सु अजेस जेसळमेर उण चँवरीको परणीजै न छै[3] । राव वरजांगरी चँवरीरी ठोड़ प्रगट छै[4] ।

राव वरजांगरा वेटा—

१६ जैसिंघदे । साचोर धणी । वरजांगरो[5] ।

१६ तेजसी । साचोर धणी ।

१६ हीमाळो ।

१६ राघवदे ।

१६ रांम ।

१६ आसो ।

१६ देपाळ ।

जैसिंघदे वरजांगरो । साचोर धणी । रांणा उदैसिंघरी मेवाड़ वैहन परणियो हुतो[6] । आंक १६ ।

१७ नींबो ।

१७ धीरो ।

१७ जगमाल साचोर धणी । तिणनूं पीथमराव तेजसीयोत मारियो[7] ।

१७ कचरो ।

१७ सूरदास ।

१७ भैरव ।

१७ रतन जैसिंघदेरो । आखड़ी ४६ वहैतो[8] ।

नींबो जैसिंघदेरो । आंक १७ ।

---

1 राव वरजांगको मार कर मुगलोंने साचोर लेली। 2 विवाह किया। 3 तब लाग-दापा आदिमें इतना खर्च किया कि अभी तक जैसलमेरमें उस चौंरी पर (इससे अधिक खर्च करने वाला अभी तक कोई उत्पन्न नहीं हो सका है) किसीका विवाह नहीं किया जाता। 4 राव वरजांगकी वह चौंरीकी जगह अब तक प्रसिद्ध है। 5 वरजांगका वेटा। 6 जयसिंहदे, वरजांगका वेटा, पुनः साचोरका स्वामी हुआ। मेवाड़के राणा उदयसिंहकी वहनसे विवाह किया था। 7 जगमाल साचोरका स्वामी जिसको तेजसीके वेटे पीथमरावने मारा। 8 रतन जयसिंहदेका वेटा, ४६ प्रतिज्ञाओं पर आचरण करने वाला।

१८ रांणो नींबावत । रांणारै पटै राव मालदेरी दीधी समदड़ी सिवांणारी थी[1] ।

१९ महकरण रांणावत। मोटा राजाजीरो सुसरो[2]। दलपतजीरो मांमो तुरकांण मांहै कांम आयो ।

२० सिखरो महकरणरो । राजा श्रीगजसिंघजीरो सुसरो । मोटा राजाजीरो चाकर । खेजड़ली गांव ३ सूं पटै[3] ।

महकरणरो परवार, सिखरारो परवार—

२१ रांमसिंघ सिखरावत ।

२१ हरिदास सिखरावत ।

२१ दयाळदास सिखरावत ।

२२ राघोदास ।

२० देईदास महकरणोत । मोटा राजाजीरै समावळीरो चाकर[4]। संमत १६४० गांव चवाड़ी जोधपुररी, सं० १६ ˙˙ तांतूवास ओईसांरो, सं० १६ ˙˙ गोयंदरो-वाड़ो दूनाड़ारो, संमत १६ ˙˙ दहीपुड़ो जोधपुररो[5] ।

२१ कचरो देईदासरो । संमत १६६३ तांतूवास पटै । संमत १६७४ हूण गांव सोभतरो पटै । संमत १६७७ तिमरली रांम कह्यो[6] ।

२२ मुकंददास ।

२२ हरिदास ।

२१ केसवदास देईदासरो । संमत १६७३ दहीपुड़ो जोधपुररो पटै ।

२० सांवतसी महकरणोत । दलपतजीरो मांमो नै दलपतजीरो हीज चाकर । ठाकुराईरो धणी[7] ।

---

1 राणा, नींवाका वेटा । राणाको राव मालदेवकी दी हुई सिवाना परगनेकी समदड़ी पट्टेमें थी । 2 मोटा राजा उदयसिंहजीका सुसरा । 3 तीन गांवोंके साथ खेजड़ली गांव पट्टेमें । 4 मोटा राजाजी उदयसिंहके समावली गाँवका चाकर । 5 इसें सम्वत् १६४० में जोधपुर परगनेका चवाड़ी, सं० १६˙˙ में ओईसांका तांतूवास, सं० १६˙˙ दूनाड़ेका गोविंदरो-वाड़ो और सम्वत् १६˙˙˙जोधपुर परगनेका दहीपुड़ा—पट्टेमें मिले थे । 6 सं० १६७७ में तिमरली गाँवमें मरा । 7 वड़ी ठकुराईका मालिक ।

२१ साद्रूळ सांवतसीयोत । संमत १६८४ गांव ६, रुपिया ४७००) नागोररा, व्रहांनपुर रावळै पटै दिया[1] । पछै छांड़ मोहवतखांरै वसियो । पछै दखिणमें कांम आयो[2] ।

२१ गोपाळदास सांवतसीयोत । दोलतावाद मोहवतखांरै कांम आयो ।

२१ वलू सांवतसीयोत । महेसदास दलपतोतरो चाकर थो । पछै संमत १६८५ महेसदास मोहवतखांरै वसियो[3], तरै जुदो मोहवतखांरै चाकर दिखण मांहै लोहड़ै पड़ियो[4] । पछै मोहवतखांन मुवो[5] तद महेसदास वलू वेहू[6] पातस्याही चाकर हुवा । महेसदासनूं जाळोर हुवो[7], तरै वलूनूं साचोर दियो थो सं० १६६६ । पछै सं० १७१७ पूरवनूं मुवो[8] । राव वलू सात सदी जात, चारसौ असवार मुनसव[9] थो । चौ० वेणीदास वलुओतरो मुनसव चार सदी जात सौ असवार हुवो । दूजो[10] परगनो विहानूं हुवो थो । दिन थोड़ा जीवियो[11] । पछै सकतसिंघ वेणीदासोतनूं मुनसव जात अढ़ाई सदी, तीस असवार मुनसव हुवो ।

२२ वेणीदास ।

२२ नरहरदास । सं० १७१४रा जेठमें धोलपुर कांम आयो ।

२३ सकतसिंघ ।

२१ अचलदास सांवतसीयोत । मोहवतखांरै दिखणमें कांम आयो ।

२२ गोयंददास ।

२१ भींव सांवतसीयोत । सं० १६७७ जाळोररो चवरा पटै[12] । जूंझारसिंघ दलपतोतरै कांम आयो[13] ।

---

1 सम्वत् १६८४में महाराजा जसवंतसिंहने बुरहानपुरमें रु० ४७००)की आयके नागौरके ६ गांव पट्टेमें दिये थे। 2 पीछे छोड़ कर मोहवतखांके जाकर रहा और दक्षिणमें काम आगया। 3 मोहवतखांके जाकर रहा। 4 घायल हुआ। 5 मर गया। 6 दोनों। 7 महेशदासको जालोर मिला। 8 पूर्वमें मरा। 9 राव वलूका मनसव सातसौ जात और चारसौ सवारका था। 10 दूसरा। 11 थोड़े दिन ही जीवित रहा। 12 सांवतसिंहका बेटा भीम, जिसको जालोर परगनेका चवरा गांव पट्टे। 13 दलपतके बेटा जूंझारसिंहके काम आया।

२२ विहारी ।

२१ कलो सांवतसीयोत । जूंझारसिंघ दलपतोतरै कांम आयो ।

२१ अजो सांवतसीयोत । सं० १६७५ कैरलो पालीरो पटै । पछै कनीरांम दलपतोतरै वसियो सु ब्रहांनपुर कनीरांम साथै कांम आयो ।

२० रायमल महकरणोत ।

२१ भांण दलपतरै कांम आयो ।

२२ अखैराज, कनीरांम दलपतोतरै कांम आयो । दिखण डेरा मांहै फौज नीसरी तठै[1] ।

२१ भांण, किसनसिंघजीरै वास थो उठै कांम आयो[2] ।

२० रतनसी महकरणोत ।

२० रावत महकरणोत । सं० १६४० हीरादेसर पटै । पछै वीसळू दोवी । लूणो रांणावत । रांणारो वडो बेटो वडो रजपूत हुवो[3] । आंक १९ ।

२० महेस जाळोर कांम आयो ।

२१ नारण ।

२० किसनो । उग्रसेण चन्द्रसेणोत साथै कांम आयो[4] ।

२० कान्हो ।

२१ हींगोळ ।

२२ संकर हींगोळरो ।

२० रांमो लूणावत । मीच मुवो[5] ।

२१ सूजो । दलपतजीरै कांम आयो ।

२२ लिखमीदास (भींव करणोतरै[6]) ।

२२ जैतसी (सबळसिंघजीरै[7]) ।

---

1 दलपतके बेटे कनीरामके अखैराज काम आया, दक्षिणमें डेरोंमें हो कर फौज निकली थी वहां पर । 2 भाण, किसनसिंहजीके यहां रहता था और वहीं काम आया । 3 लूणा, राणाका बड़ा बेटा बहुत बड़ा राजपूत हुआ । 4 राव चन्द्रसेनके बेटे उग्रसेनके साथ काम आया । 5 मौतसे मरा । 6 लिखमीदास भीम करणोतके यहां रहता है । 7 जैतसी सबळसिंहके यहां रहता है ।

मांडण रांणावत, आंक १९ ।

२० सांवळ मांडणोत । सं० १६५२ वालो भाद्राजणरो धना भेळो[1] । पछै सं० १६६६ सुगाळियो सांवळनूं[2] । पछै राखांणो भाद्राजणरो दियो थो, सु संमत १६७१ रावळै खिराळूरै परगनै कांम आयो[3] ।

२१ कलो । संमत १६७१ राखांणो बरकरार ।

२१ जसो ।

२१ जगनाथ ।

२२ नरसिंघदास ।

२० सूजो मांडणोत । सं० १६ ˙ ˙ सूजा सांवळनूं बालो नै नीलकंठ भाद्राजणरा[4] ।

२१ पतो सूजारो । सं० १६८५ सिरांणो जाळोररो ।

२२ खेतसी ।

२२ नाथो ।

२० धनो मांडणोत । सं० १६७० मेहळी सिवांणारी पटै[5] । सं० १६८३ इंद्रांणो सिवांणारो[6] । पछै मुवो[7] ।

२१ तेजमाल धनारो । धनारै वदळै चाकरी करतो सु तिमरणी रांम[8] कह्यो ।

२२ सुरतांण ।

धीरो जैसिंघदेवोत, आंक १७ ।

१८ वरसिंघ धीरावत । साचोर कांम आयो ।

१९ वीको वरसिंघरो भाचरांणै सींधले मारियो[9] ।

---

1 मांडणका वेटा सांवल, सं० १६५२ भाद्राजुनका वाला गांव धन्नेके शामिल पट्टेमें । 2 वादमें सांवल को सं० १६६६ में सुगालिया गांव पट्टेमें । 3 फिर वह सं० १६७१ में खिरालू परगनेमें काम आया । 4 मांडणका वेटा सूजा, सं० १६ ˙ ˙ में सूजा और सांवल दोनों भाइयोंको भाद्राजुनके वाला और नीलकंठ पट्टेमें थे । 5 मांडणका वेटा धन्ना, जिसके सं० १६७०में सिवानेका मेहली गाँव पट्टेमें । 6 सं० १६८३में सिवानेका इन्द्राणो गांव पट्टेमें । 7 फिर मर गया । 8 धन्नेका वेटा तेजमल, जो धन्नेके वदलेमें चाकरी करता था वह तिमरणी गांवमें मरा । 9 वरसिंहका वेटा वीका, जिसे सिंधल राजपूतोंने गांव भाचरणेमें मारा ।

२० हमीर वीकावत । राव चंद्रसेणरो सुसरो । हरदास महेसोत मारियो[1] ।

२१ पंचाइण हमीररो । सं० १६६६ वीजळी भाद्राजणरी थी[2] । उरजन चाकरी करतो[3] ।

२२ रायसिंघ सं० १६ ··· रोहचो जोधपुररो, सं० १६६९ रायमो भाद्राजणरो पटै केसोदास भेळो[4] । सं० १६८५ सीहरांणो भाद्राजणरो ।

हमीर वीकावतरो परवार आंक २० । पंचाइणरो परवार आंक २१ ।

२२ केसोदास पंचाइणरो बालपुर मांहै रांम कह्यो[5] ।

२२ उरजन पंचाइणरो । सं० १६८९ साहरियांणै थो[6] ।

२२ भोजराज पंचाइणरो ।

२२ वीरम हमीररो ।

२२ नारायणनूं भाद्राजणरो रेवड़ा पटै[7] ।

२२ भांण ।

२१ देदो हमीररो ।

२२ मन्होर, भवरांणी रहै[8] ।

२१ भोपत ।

२१ जैतसी हमीररो । जैतसी नगावतनूं तुरके पकड़ियो तठै कांम आयो[9] ।

अखैराज धीरावत, आंक १८—

१९ कूंपो अखैराजोत ।

२० रांम । भाखरसी दासावतरै कांम आयो ।

२० कांन्हसिंघ जैतसीयोतरै कांम आयो ।

---

1 वीकेका बेटा हमीर, जो राव चंद्रसेनका सुसरा था जिसे महेशके बेटे हरदासने मारा । 2 हमीरका बेटा पंचायण, जिसके पट्टेमें भाद्राजुनका गांव बीजली था । 3 चाकरी पंचायणका बेटा अर्जुन करता था । 4 रायसिंहको जोधपुरका रोहेचो गांव सं० १६···में पट्टे और सं० १६६९में भाद्राजुनका रायमो गांव उसके भाई केशोदासके शामिल पट्टेमें । 5 पंचायणका बेटा केशोदास बालपुरमें मरा । 6 पंचायणका बेटा अर्जुन, जिसको सं० १६८९में साहरियाणो गांव पट्टेमें था । 7 नारायणको भाद्रजुनका रेवड़ा गांव पट्टेमें । 8 मनोहर,भवराणी गांवमें रहता है । 9 हमीरका बेटा जैतसी, नागाके बेटे जैतसीको जब मुसलमानोंने पकड़ा, वहां काम आया ।

१९ गोपो अखैराजोत । जैतसी ऊदावत साथै वड़ी वेढ़ कांम आयो[1] ।

२० लोलो गोपावत ।

२१ मांनो, सुगाळियै सींधल आया तठै कांम आयो[2] ।

२२ आसो ।

२२ करन ।

२१ जोधो लोलावत ।

२२ भोपत ।

२१ सूरो लोलावत ।

२० लाखो गोपावत । सासरै ईंदांरै गयो थो तठै कांम आयो[3] ।

भैरूंदास जैसिंघदेओत, आंक १७—

१८ जांभण भैरूंदासोत । राव मालदेरै, मेहगड़ो सिवांणारो[4] ।

१९ पिराग जांभणोत । सं० १६४० मोटै राजाजी गांव गादेरी लवेरारी पटै दी थी, इतबारी धड़ थो[5] ।

२० अमरो पिरागरो सं० १६...गादेरी बरकरार रही ।

२० सकतो सं० १६६८ गोपड़ी सिवांणारी । सं० १६७२ रूंदिया कूवो[6] लवेरारो । पछै छाडियो ।

२० नरहरदास सं० १६७० नरावस जोधपुररो पटै । पछै सं० १६७१ अजमेर गोयंददासजी साथै कांम आयो ।

२१ मनोरदास नरहरदासोत । सं० १६७२ नरावस बरकरार राखियो । सं० १६८१ मेहलांणो दियो । तठा पछै[7] सं० १६८२ कुंवर अमरसिंघजीरै वसियो[8] ।

२० भगवांनदास । सं० १६७८ तानूंवास पटै ।

---

1 अखैराजका वेटा गोपा, ऊदाके वेटे जैतसीके साथ वड़ी लड़ाईमें काम आया। 2 माना, सुगालिये गांवमें सींधल चढ़ कर आये तव काम आया। 3 गोपेका वेटा लाखा, ईंदोंके यहां अपनी ससुराल गया था वहां काम आया। 4 भैरोंदासका वेटा जांभण, राव मालदेवका चाकर, सिवानेका मेहगड़ा पट्टेमें। 5 प्रयाग जांभणका वेटा, जिसे मोटे राजा उदयसिंहने लवेराका गादेरी गांव पट्टेमें दिया था, विश्वासपात्र मनुष्य था। 6 लवेरे गांवका रूंदिया नामक कुआ। 7 जिसके बाद। 8 निवास किया।

२० अचळदास प्रागदासोत ।

१९ रांमो जांझणरो । पोकरणरै गांव चंद्रसेणजीरै कांम आयो, देवराजरी वेढ़[1] ।

१९ कांन्हो जांझणोत । मेहगड़ै मीच मुवो[2] ।

२० मैहरांवण कांन्हावत ।

२१ तिलोकसीनूं बाघलप सिवांणारी ।

१९ सेखो जांझणरो ।

२० लिखमीदास सेखावत । सं० १६४० वासणी हरढांणा तीरै[3] । सं० १६७७ सिरांणो जाळोररो ।

१७ दयाळदास । सं० १६८० जाळोररो गांव पटै[4] ।

१७ उगरो लिखमीदासोत ।

१७ ऊदो, मेड़तारो भांनावास पटै ।

१७ विसनदास । सं० १६८२ रूपावास पालीरो ऊदा भेळो[5] । सं० १६८३ भांनावास मेड़तारो पटै ।

१९ किसनो जांझणरो । उग्रसेण चंद्रसेणोत साथै मारांणो[6] ।

१९ गोपाळदास । कल्यांणदास रायमलोतरो चाकर । कल्यांणदासजी साथै सिवांणे कांम आयो[7] ।

१९ गोयंददास सं० १६४२ गादेरी, करमसीसर पिराग भेळा । पछै हीरादेसर कूंभा भेळो[8] ।

२० कूंभो गोयंदरो । सं० १६६२ गुजरातमें मांडवै कांम आयो[9] ।

२१ भींव कूंभावत[10] । सं० १६७५ कोरणो भाद्राजणरो ।

---

1 जांझणका वेटा रामा देवराजकी लड़ाईमें पोकरणके एक गांवमें राव चंद्रसेनजीके काम आया । 2 मेहगड़ेमें मौतसे मरा । 3 शेखेका वेटा लिखमीदास जिसे सं० १६४०में हरढ़ाणेके पासका वासणी गांव पट्टेमें था । 4 दयालदासको जालोरका एक गांव सम्वत् १६८०में पट्टे था । 5 विशनदास, जिसे पाली परगनेका रूपावास सम्वत् १६८२में ऊदाके शामिल पट्टेमें था । 6 रावचंद्रसेनके वेटे उग्रसेनके साथ मारा गया । 7 गोपालदास, रायमलके वेटे कल्याणदासके साथ सिवानेमें काम आया । 8 गोयंददासको सम्वत् १६४२में गादेरी और करमीसर दोनों गांव प्रयागके शामिल पट्टेमें । पीछे कुंभेके साथ हीरादेसर मिला । 9 कुंभा गोयंददासका, सं० १६६२में गुजरातके मांडवै गांवमें काम आया । 10 भीम कुंभेका लड़का ।

सं० १६७८ सझाड़ो जोधपुररो। सं० १६८६ पोलावास मेड़तारो। सं० १६६१ कुंवर अमरसिंघजी साथै गयो।

२० तेजमाल गोयंदरो। हीरादेसर पटै।

१६ सुरतांण जांझणरो। सं० १६४० हीरादेसर मास १ रह्यो[1]। पछै गादेरीथी[2]। पछै चीनड़ी आसोपरी थी[3]।

१६ सादूल जांझणरो। धवेचांसूं वेढ़ हुई तठै कांम आयो[4]।

१६ खंगार जांझणरो। किसनसिंघजीरै वास थो[5]।

२० वीजो।

१८ ऊदो भैरवदासरो।

१६ वीरम ऊदावत। मेड़तै कांम आयो।

२० नेतसी। मेड़तारी वेढ़ सं० १६१८ देईदासजी साथै कांम आयो।

२१ अचळो नेतसीरो।

२२ तेजसी, सं० १६८२ ऊदारो भाद्राजणरो थो। सं० १६८५ तालियांणो जाळोररो[6]।

नेतसी वीरमोतरो परवार आंक २०। अचळो नेतसीयोतरो परवार आंक २१—

२२ जगमाल।

२२ महेस।

२१ अमो नेतसीरो।

२२ भोजो।

२१ अमो नेतसीरो।

२२ रांणो सं० १६७७ खीरोहरी जाळोररी। सं० १६८४ अहुर जाळोररी। सं० १६६० डांगरां। पछै सं० १६७५ जाळोररो सामूंजो पटै[7]।

---

1 जांझणके बेटे सुरतारणको सं० १६४०में हीरादेसर १ मास रहा। 2 बादमें गादेरी मिली थी। 3 और फिर आसोपका चीनड़ी गांव पट्टेमें दिया गया। 4 जांझणका बेटा सादूल, धवेचोंसे लड़ाई हुई वहां काम आया। 5 जांझणका बेटा खंगार, किशनसिंहजीके यहां रहता था। 6 अचलेका बेटा तेजसी, जिसे भाद्राजुनका ऊदारो गांव सं० १६८२में, और सं० १६८५में जालोरका गांव तालियारणो पट्टेमें दिया गया था। 7 राणा, अखेका बेटा, जिसे सं० १६७७में जालोरका खीरोहरी गांव, सं० १६८४में जालोरका आहोर गांव, सं० १६६०में डांगरा और सं० १६७५में जालोरका सामूंजो गांव पट्टेमें दिया गया था।

२२ वाघो ।

२२ रायमल ।

१६ खेतसी ऊदारो । ऊदो भैरवदासरो ।

२० जगहथ खेतसीरो ।

२१ सादूळ । संमत १६७२ भूंभादड़ो पालीरो पटै[1] ।

२२ मनोहर । संमत १६८१ भूंभादड़ो । संमत १६८८ सापो सोझतरो पटै[2] ।

१८ मेघो भैरवदासरो । प्रथीराजजी साथै मेड़ते कांम आयो ।

१६ भारवर ।

१६ वीदो ।

१८ गांगो भैरवदासरो ।

१६ जीवो गांगावत । मोटा राजाजीरै समावळी चाकर थो । संमत १६४० दांतणियो पटै । पछै माणकळाव पटै[3] ।

२० भोजराजनूं माणकळाव बरकरार । पछै देवराजांसूं डरतो छांड़ गयो । पछै दलपतजीरै वसियो । उठै कांम आयो[4] ।

२० वाघो जीवारो ।

२० महेस । संमत १६७४ भूतेळ भाटीव जाळोररी पटै थी[5] ।

२० ईसरदास जीवारो ।

१६ नारायणदास भैरवदासरो ।

तेजसी वरजांगोत, आंक १६—

१७ पीथसराव तेजसीरो । सेखा सूजावतरौ नांनो । देईदासजीरो

---

1 सादूलको सं० १६७२ में पाली परगनेका भूंभादड़ा गांव पट्टेमें था । 2 मनोहरको सं० १६८१ में भूंभादड़ा और सं० १६८८ में सोजत परगनेका सापा गांव पट्टेमें दिया गया । 3 गांगाका पुत्र जीवा, यह मोटाराजा उदयसिंहका समावली गांवमें चाकर था । सं० १६४०में दातणिया और फिर माणकलाव गांव पट्टेमें थे । 4 भोजराज जीवाका बेटा जिसको माणकलाव गांव बरकरार, पीछे देवराजके वंशजोंके भयसे छोड़ कर चला गया और दलपतके यहां जा कर बसा और वहीं काम आया । 5 महेश जीवाका पुत्र, जिसके सं० १६७४ में जालोरके भूतेल और भाटीव गांव पट्टेमें थे ।

पिण नांनो। राव सूजोजी परणिया था। चोहुवांण जगमाल जैसिंघदेग्रोतनूं मारनैं साचोर लियो। जीवियो तठा सूधी साचोर प्रथीराव भोगवी[1]।

१८ वाघो प्रथीरावरो। जिण कोढ़णारो वाघावास वसायो। साचाररो टीको हुवो थो। पछै चहुवांण रांणै नींवावत धरती सूनी की, तरै वाघो सूनी धरती छोड़ कोढ़णे आयो[2]।

१९ सिंघो वाघावत।

२० वणवीर सिंघावत। मोटा राजाजीरो सुसरो।

सिंघा वाघावतरो परवार आंक १९। वणवीर सिंघावतरो परवार आंक २०—

२१ सूजो वणवीररो।

२२ रांमो, संमत १६६३ खारड़ी थोभरी पटै थी। भलो रजपूत थो[3]।

२२ रायसिंघ सूजावत।

२३ भोपत।

२२ कांन्हो।

२३ माधो।

२१ नारायण।

२१ देदो वणवीरोत। पटाऊ पटै थी।

२१ रायसिंघ वणवीरोत।

---

1 पृथ्वीराज तेजसीका बेटा। सूजाके बेटे सेखाका यह नाना और देईदासका भी नाना। जोधपुरका राव सूजा इसके यहां व्याहा था। इसने चौहान जयसिंहदेके बेटे जगमालको मार कर साचोर लिया और जहां तक जिंदा रहा साचोर इसके अधिकारमें रहा। 2 पृथ्वीरावका बेटा वाघा, जिसने कोढ़णावाटीका वाघावास बसाया। साचोरका तिलक हुआ था। पीछे चौहान रांणे नींवावतने (साचोरकी) धरतीको उजाड़ दिया तब वाघा सूनी धरती छोड़ कर कोढ़णे चला आया। 3 रामाके संमत १६६३ थोभका खारड़ी गांव पट्टेमें था। अच्छा राजपूत था।

२० पतो सिंघावत । गोपाळदास ऊहड़रो नांनो । बेटो नहीं ।

२० सांडो सिंघावत ।

२१ भींवो सांडावत ।

२१ रांणो भींवावत । पांनीलै राते परणियो नै सवारै बाहड़मेरां आय वित लियो तरै वाहरमें कांम आयो[1] ।

२० संकर सींघावत । गोपाळदास ऊहड़ साथै कांम आयो ।

२१ रतनो संकरोत ।

२२ जैतो रतनोत । मोहवतखांरै कांम आयो ।

२३ चांदो मांडणरै वास ।

२१ गोयंददास । पाटोधी भाटियां मारियो[2] ।

२२ जीवो, मांडण ऊहड़रै[3] ।

२१ आसो संकररो, मांडणरै वास[4] ।

२० जोधो सिंघावत । राव चंद्रसेणरा गढ़रोहा मांहै कांम आयो[5]।

२१ वीसो जोधावत । गोपाळदास ऊहड़ साथै कांम आयो ।

२२ सहसो, मांडण ऊहड़रै वाहर मांहै कांम आयो[6] ।

२३ भगवांनदास ।

२२ वैरसल ।

२२ जैतसी ।

२१ सतो जोधावत, अउत[7] ।

१८ अजो प्रथीरावरो । सेखाजी देईदासजीरो मांमो । सेखोजी कांम आया नै देवीदासजीनूं रजपूतें काढ़िया तरै अजो ही साथै नीसरियो । पछै चीतोड़ गढ़रोहा मांहै देईदासजी कांम

---

1 भींवाका बेटा राणाका, रातको पानीले गांवमें विवाह हुआ और सवेरे बाहड़मेरे आकर जब उसके पशुओंको ले गये, तब यह उनके पीछे वाहरमें चढ़ा और वहां काम आ गया। 2 गोयंददासको पाटोदीके भाटियोंने मार दिया। 3 जीवा, मांडण ऊहड़की चाकरीमें। 4 शंकरका बेटा आसा मांडणके यहां रहा। 5 सिंघाका बेटा जोधाराव चन्द्रसेनके गढ़रोहेमें काम आया। 6 सहसा, मांडण ऊहड़की वाहरमें काम आया। 7 जोधाका बेटा सत्ता, अपुत्र रहा।

आया तठै अजो पिण कांम आयो[1] ।

हीमाळो वरजांगोत, आंक १६—

१७ सोभो वडो रजपूत हुवो । आधी साचोर सोभारै हुती । आधी साचोर गुजरातरा पातसाहरी दो मुगल प्रेमनूं हुती । पछै मुगले कोट मांहै गाय मारी तिणसूं उपाध हुवो, सोभै प्रेम मुगलनूं मारियो[2] ।

१७ ऊदो हिमाळारो ।

१७ देवो हिमाळारो ।

१७ सांगो हिमाळारो ।

चोहुवांण सोभो हीमाळावत । मुगल प्रेम गाय मारी तिण ऊपर मारियो, तिण साखरो गुण[3]—

दूहा

छायल फूल विछाय, वीसम तो वरजांगदे ।
गैमर[4] गोरी राय, तिण[5] आंमास[6] अड़ाविया ॥ १ ॥

इसड़ै[7] सै अहिनांण[8], चहुवांणो चौथे चलण[9] ।
डखडखती दीवांण, सुजड़ी[10] आयो सोभड़ो[11] ॥ २ ॥

काला काळ कलास, सरस पलासां सोभड़ो ।
वीकम सीहां वास, मांहि मसीतां[12] मांडजै ॥ ३ ॥

---

1 पृथ्वीराजका वेटा अजा, यह सेखा और देईदासका मामा जब सेखा मारा गया और देईदासको राजपूतोंने निकाल दिया तब अजा भी उसके साथ निकल गया, फिर चितौड़के गढ़रोहेमें देईदास काम आया, वहां अजा भी काम आ गया । 2 शोभा वड़ा वीर राजपूत हुआ, आधी साचोर शोभाको मिली हुई थी और आधी गुजरातके बादशाहकी ओर से मुगल प्रेमको दी हुई थी, पीछे मुगलोंने कोटके अंदर गाय मार डाली, जिससे झगड़ा हो गया, शोभाने प्रेम मुगलको मार दिया । 3 चौहान हीमालेका वेटा शोभा, जिसने प्रेम मुगलको गाय मारने पर मार दिया था, जिसका साक्षी—काव्यमें वर्णन । 4 हाथी । 5 जिसने । 6 घर । 7 ऐसे । 8 चिन्ह, व्यवहार । 9 पाँव । 10 कटारी । 11 शोभा चौहान । 12 मस्जिदोंमें ।

हीमाळाउत[1] हीज, सुजड़ी[2] साही[3] सोभड़े[4] ।
ढील पहां रिमहां[5] घड़ी, खखळ-बखळ की खीज[6] ॥ ४ ॥

सोभड़ा सूअर सीत, दूछर ध्यावै ज्यां दिसी ।
भीत हुवा भड़ भड़भड़ै, रोद्रित कर गज रीत ॥ ५ ॥

चोळ[7] वदन चहुवांण, मिलक अढ़ारे मारिया ।
सुजड़ी आयो सोभड़ो, डखडखती दीवांण ॥ ६ ॥

वणवीरोत वखांण[8], हीमाळावत मन हुवा ।
त्रिजड़ी[9] काढेवा तणी[10], चलण दियै चहुवांण ॥ ७ ॥

सोभड़ै कियो सुगाळ, मुंहगौ एकण ताळमें ।
खेतल वाहण खड़खड़ै, चुड़खै चामरियाळ ॥ ८ ॥

लोद्रां चीलू आंध, भागी सोह[11] कोई भणै[12] ।
सोभमड़ा[13] सग सातमै[14], बाबा तोरण बांध ॥ ६ ॥

॥ इति साचोरा चहुवांणांरी ख्यात वारता संपूर्ण ॥

++

वात

चहुवांणां मांहै साख १ बोड़ांरी छै। अैही[15] राव लाखणरा पोतरा[16] सोनगरा जाळोररा धणी। सीरोहीरा धणी, कीतूरा पोतरा बोड़ो भाखररो बेटो हुवो। तिणरा वांसला बोड़ा कहीजै छै[17]। इणांरै उतन परगनो जाळोररै सेणारो छोटो सो परगनो छै[18]। आगै

1 हीमालेका पुत्र शोभा। 2 कटारी। 3 धारण की। 4 शोभेने। 5 शत्रुओं। 6 क्रोध। 7 लाल। 8 प्रशंसा। 9 तलवार। 10 की, लिये। 11 सब कोई, सभी। 12 कहते हैं। 13 शोभा। 14 सातवें स्वर्गमें। 15 ये भी। 16 पोते। 17 जिसके पीछे वाले बोड़ा कहलाते हैं। 18 इनका निवास जालोर परगने कोसेणा गांव जिसके पीछे एक छोटा सा परगना है।

ओ सीरोही वांसै थो[1]। पछै राव सुरतांण भांणोत, राव कला मेहाजलोतसूं वेढ़ काळाधरी[2]की तद विहारी मिलकखांन हेतावतनूं परगना ४ जाळोर वांसै[3] दिया था सु तदरा[4] जाळोर वांसै पड़िया तासु हमै जाळोर वांसै हीज छै। परगनो सेणो जाळोरसूं कोस १० सीरोही दिसा ऊगवणनूं[5] सीरोहीरा गांवांसूं कांकड़[6]। परगनो दुसाखो[7] छै। सहर छोटी सी भाखरीरी खांभ[8], अगवारै[9] वडो मैदांन। ऊनाळी निपठ घणी[10]। छोटा मोटा ढींवड़ा[11] ३०० हुवै। गांव १२ सेणा वांसै। बोड़ांरो ठिकांणो घणा दिनांरो थो सु सं० १६९९ राव महेसदास दलपतोतनूं जाळोर हुई, वरस ४ महेसदास जीवियो, तठाऊं[12] वोड़ो कल्यांणदास नारांणदासोतनूं सेणो, सदा भोमिया रुखो हुतो[13] त्यौं रह्यो[14]। पछै राव महेसदास दलपतोत संमत् १७०३[15] ...। पछै पातसाह रतन महेसदासोतनूं दीवी। पछै राव रतन बोड़ा कल्यांणदास नाराणदासोतनूं सेणै वाहर रुखो आयो[16]। कहाड़ियो—"म्हे आघा जावां छां, थे सताव आवो[17]।" पछै कल्यांणदास थोड़ा हीज साथसूं आयो[18], तरै रतन आप हाथसूं वरछीरी दे कल्यांणदासनूं मारियो नै सेणो लियो[19]। बाकीरा नासनै सीरोहीरा देसमें गया[20]। सेणो निखालस हुवो[21]। नै आगै नवघण, विजो

---

1 पहले यह सिरोही रियासतका गांव था। 2 कालंदरी गांव। 3 पीछे। 4 तवसे। 5 पूर्व दिशाकी ओर। 6 सीमा। 7 परगना दुफसली है। 8 शहर छोटी सी पहाड़ीकी ढलानमें। 9 आगे। 10 रवीकी फसल अधिक। 11 रहँट। 12 तवसे। 13 सदा भोमियाकी भांति था। 14 उसी प्रकार रहा। 15 प्राप्त सभी प्रतियोंमें यहां कुछ अंश छूटा हुआ है जिससे यहां यह पता नहीं पड़ता कि सं० १६९९से सं० १७०३ तक चार वर्ष महेशदासके अधिकारमें जालोर रहनेके वाद महेशदासका क्या हुआ ? वैसे इसके आगे महेशदासके वेटे रतनको जालोर देनेका उल्लेख है, इससे यह अनुमान होता है कि त्रुटित अंशमें महेशदासके मर जानेका उल्लेख होना चाहिए। 16 पीछे राव रतन नारायणदासके वेटे कल्याणदास वोड़के लिए वाहरके रूपमें आया। 17 उसने कहलाया कि हम आगे जा रहे हैं, तुम भी जल्दी आओ। 18 लेकिन कल्याणदास थोड़े मनुष्योंको ही लेकर आया। 19 और सेणे पर अधिकार कर लिया। 20 शेष भाग कर सिरोही राज्यमें चले गये। 21 सेणा गांव सर्वथा अधिकारमें हो गया।

वडा अखाड़सिध रजपूत हुवा छै[1] । नै काल्हरै दिन[2] बोड़ो नाराण-दास बाघावत सं० १६८० श्री महाराज गजसिंघजीरी वार मांहै हुतो[3], वडो रजपूत हुवो । सं० १६७४ कुंवर गजसिंघजी जाळोर लियो तद विहारियांसूं जुदो फूटनै कुंवरजीसूं आय मिळियो[4] । आगैं राजा श्री सूरजसिंघजी बोड़ा नाराणदासरी बैहन परणिया हुता । नाराणदास बड़ा उमरावांरै दावै[5] रैंहतो । सेणो रुपिया १००००)रो[6] । ठोड़ गांव १२[7]—

१ सेणो । १ चांदण । १ भेटाळो । १ मेडो । १ बाहिरलो वास । १ मांहिलो वास । १ तुंड । १ देवड़ो । १ दही गांव । १ नागण । १ उंडवाड़ो । १ कणावद ।

बोड़ांरी वंसावळी—

१ राव लाखण ।	१३ लखो ।
२ बल ।	१४ महिपाळदे ।
३ सोही ।	१५ हाजो ।
४ महंदराव ।	१६ सांवत ।
५ अलण ।	१७ सिखरो ।
६ जींदराव ।	१८ नवभण ।
७ आसराव ।	२६ करमो* ।
८ आलण ।	२० विजो ।
९ कीतू ।	२१ वाघो ।
१० समरसी ।	२२ नाराणदास ।
११ भाखर ।	२३ कल्यांणदास ।
११ बोड़ो ।	

1 पहिले नवधण और विजा वड़े बांके राजपूत हो गये हैं । 2 कलके दिन । 3 महाराज गजसिंहके समयमें था । 4 तब विहारियोंसे अलग और विरुद्ध होकर कुंवरजीसे मिल गया । 5 तरह । 6 सेणा दस हजारकी आयका । 7 उसके पीछे बारह गांव हैं ।

* कर्मा बड़ा कर्मण्य और वीर पुरुष था । अपनी अद्भुत वीरताके कारण यह 'मामाजी' वा 'मामा खेजड़ा'के नामसे पूजा जाता है ।

और तो वोड़ा घणा कठै ही[1] सुणिया नहीं, नै एक वोड़ो मांनो नरवदोत जाळोररै गांव वापड़ोतरै रहतो, वापड़ोतरो पटै हुतो। गांव ५ तथा ७ पटी दहियावतरी मांहै—सीहरांणो, खारी सांथाणो, देवसीवास, आलवाड़ो आलासण। मांनारा भाईबंध रहता। मांणस २००रो जोड़ हुंती[2]। असवार ४० चढ़ता।

मांनो नरवदरो, सीहो, ठाकुरसी, सूरो, मेहैवैरै गांव भाटेवै वळै वोड़ा रहै छै[3]।

वात

चहुवांणांरी साख मांहै एक साख कांपलिया कहावै छै। सु कांपलो साचोररो गांव छै, तिको इणांरो[4] राजथांन, तिण गांव लारै कांपलिया नांव[5] पड़ियो। आगै कुंभो कांपलियो वडो रजपूत हुवो छै तिणरा गांव कुंभाछतरा कहीजता[6]; सु धनवो, धोरीनमो कुंभाछतमें मुदै छै[7]। ओ खंड साचोर वासै लागै छै[8]। कुंभाछत साचोर नै ईडर लगती[9]।

वात

कुंभा कांपलियारै घोड़ी १ निपट अवल छै[10]। तिण दिन रावळ मालै पिछम नै घणी धरती खाटी छै[11], सु सको पिछमरा भोमिया रावळ मालारो अमल मांनै छै[12]। कुंभारी घोड़ी लेणरो विचार करै छै। तिण समै रावळ मालारै परधांन भोओ नाई छै; तिणनूं रावळ कहै छै—"आ घोड़ी ली चाहीजै।" तरै भोओ कहै छै—"कुंभो तो पाधरियां घोड़ो देणरो न छै[13]" सु कुंभानूं तेड़[14] दरवार वैसांणियो

---

1 कहीं। 2 बराबरकी जोड़ीके २०० आदमी इसके पास थे। 3 नरवदका बेटा माना, सीहा, ठाकुरसी और सूरा ये मेहवे परगनेके भाटवे गांवमें रहते हैं। 4 इनका। 5 शाखा, वंशका नाम। 6 जिसके गांव 'कुंभाछत'के कहे जाते थे। 7 सो धनवा और धोरीनमा 'कुंभाछत'में मुख्य हैं। 8 यह खंड साचोरके पीछे लगा है अर्थात् साचोर परगनेमें है। 9 कुंभाछत खंड, साचोर परगने और ईडर रियासतसे लगा हुआ है। 10 कुंभा कांपलियेके घोड़ी १ अत्यंत सुन्दर थी। 11 उन दिनोंमें रावल मालदेने पश्चिममें बहुत धरती (प्रदेश) प्राप्त की है। 12 सो पश्चिमके सभी भोमिये रावल मालदेका शासन मानते हैं। 13 कुंभा सीधे रास्ते घोड़ी देने वाला नहीं है। 14 सो कुंभाको बुला कर।

छै[1]। आदमी ५०० चीधड़ सिलह पैहर सांमा बैठा छै[2]। आदमी ५०० तोबची जांमकियां लगाय ऊभा रह्या छै[3]। नै मालै इण बेळा मांहै घोड़ीरै वास्तै भोमिआ भोवा नाईनूं परधांनगी वीच मेलियो[4]। भोवै कह्यो—"रावळजी थांरी[5] घोड़ी मांगै छै।" भोवै मूंडै कह्यो तठा पैहली[6] कुंभो तरवाररी मूंठ हाथ दे वेगो[7] ऊठियो। रावळरो पिण साथ मूंठे हाथ दे ऊठियो; नै कुंभे भोवानूं कह्यो—"म्हारी घोड़ी रावळनूं[8] देनै[9] पछै म्हारो पलांण[10] रावळरी मा ऊपर मांडू, किना[11] थारी मा ऊपर मांडू?" इण आछटनै[12] तरवार काढ़ी[13]। सोर हुवो। कुंभारै माथैरा केस ऊभा हुवा[14]। मुंहडो रातो–चोळ हुवो[15]। तरै[16] रावळनूं किणहीक जायने कह्यो—"कुंभानूं मारो तो छो[17], पिण एक वार रजपूतनूं सूरत चढ़ी छै[18], मुंहडो देखण लायक छै।" तरै रावळ बाहिर आयो, कुंभानूं दीठो[19], राजी हुवा, उवार लियो[20]। कह्यो—"जैतमाळरी बेटी पतीनूं वींद चाहीजतो हुतो सु जुड़ियो[21]।" पछै पती कुंभा कांपलियानूं परणाई। तिणरै पेटरा बेटा २ हुवा। खेतो, भोजो। बड़ा रजपूत हुवा। तठा पैहली[22] राव जैतमालनूं राव जगमाल मालावत मारियो थो सु जैतमालरो माल वैहचीजतो थो सु हैंसा ५ किया[23]। तीन तो तीनां बेटांरा किया। एक हैंसो पतीरो कियो; नै हैंसो १ मालरो कियो नै उजाळो बछैरो अै जुदा किया था[24], कह्यो—"ओ हैंसो नै उजाळो वछेरो जैतमालरो वैर लेसी तिको लेसी[25]।" तरै ओ हैंसो पती लियो। कह्यौ—

---

1 दरबारमें बैठा दिया है। 2 पांचसौ आदमी सिलहवख्तर पहन कर सामने बैठे हैं। 3 और पांचसौ तोपची जामगियें (पलीते) लगा कर खड़े हैं। 4 और मालेने इस समय भोमिया भावै नाईको उसकी प्रधानगीकी हैसियतसे घोड़ी लेनेके लिये भेजा। 5 तुम्हारी। 6 जिसके पहले। 7 झटपट। 8 को। 9 दे कर। 10 जीन। 11 अथवा। 12 झपट कर। 13 निकाली। 14 खड़े हो गये। 15 मुँह लाल हो गया। 16 तब। 17 कुंभाको मारते तो हो। 18 परंतु राजपूतको जो पौरुष चढ़ा है, उसे एक वार। 19 कुंभेको देखा। 20 बलैंया ली, बलि गया। 21 जैतमालकी बेटीको दूल्हेकी आवश्यकता थी सो मिल गया। 22 इसके पहले। 23 मालका बँटवारा होता था उसके पांच भाग किये। 24 एक भाग मालका और उजाला नामके बछेरेको अलग किया गया था। 25 यह हिस्सा और उजाला वछेरा, जैतमाल मारा गया, उस वैरका जो बदला लेगा उसको मिलेगा।

"वैर म्हारा वेटा खेतो भोजो लेसी[1] ।" पछै खेते भोजे घरणा धूंकळ[2] जगमालसूं किया । जगमालरा दो भाई मारिया, खेढ़ो वानर जगमालरै थो तिणरा[3] सात बेटा मारिया ।

इति श्री कांपलिया चहुवांणांरी वात संपूर्ण ।

वात खीचियांरी

ग्रै ही चहुवांण राव लाखणरा पोतरा ।

पीढ़ियांरी विगत—

१. राव लाखण ।	५. ग्रणहल ।
२. वल ।	६. जींदराव ।
३. सोही ।	७. ग्रासराव ।
४. महंदराव ।	८. मांणकराव ।

वात

मांणकरा व ग्रासरावरो बेटो तिणसूं[4] बाप खुसी हुवो, तरै एकरण[5] दिन ग्रासराव मांणकरावनूं कह्यो–"तूं ऊगां-ग्राथवतां[6] बीच फिर ग्रावै तितरी[7] धरती म्है तोनूं देवां । तरै मांणकराव दिन ऊगतां समो चढ़ियो सु दिन ग्राथमियो तितरै फिर ग्रायो[8] । इतरी धरती संभररो चढ़ियो, तैंरी विगत[9]—नागोररी पटी, ८४ सारी ही, भदांण इण दीठी[10], तरै गढ़ कोटनूं ठौड़ ग्रठै विचारी नै ग्राथवणनूं[11] जायल कांनी[12] मांणकराव नीसरियो,[13] तरै उठै ग्वार[14] उतरिया था[15] नै ग्रो[16] पिरा[17] सारा दिनरो फिरतो भूखो हुवो हुतो उठै कर

1 वैरका वदला मेरे वेटे खेता ग्रौर भोजा लेंगे । 2 उपद्रव । 3 उसके । 4 जिससे । 5 एक । 6 सूर्य उदय हो कर ग्रस्त होवे । 7 उतनी । 8 तव माणकराव दिन उगनेके साथ ही चढ़ा सो दिन ग्रस्त हुग्रा तव तक फिर कर लौट ग्राया । 9 सांभरसे चढ़ कर इतनी धरतीमें फिर कर ग्राया, जिसका विवरण । 10 देखी । 11 पश्चिमकी ग्रोर । 12 तरफ । 13 निकला । 14 ग्वारिये लोग । (एक स्थायी ग्रावास-रहित जाति, जो लकड़ीके कंघे ग्रादि वना कर वेंचनेका काम करती है ।) 15 डेरे डाले हुए थे । 16 यह । 17 भी ।

नीसरियो;[1] तरै ग्वारै मनवार कीवी,[2] तरै मांणकराव कह्यो—"क्यूं रांधो अन्न हाजर हुवै तो ल्यावो[3]" सु ग्वारांरै चावळ मूंगांरी खीचड़ी तयार थी सु वाटका एकण मांहै घात ल्याया[4]। मांणकराव चढ़िये हीज खाधी[5]। आथणरो बाप तीरै आयो[6] तरै बाप मांणकरावनूं कह्यो—"कितरीहेक धरती फिर आयो[7] ?" तरै इण वात मांड कही[8]। तरै बाप पूछियो—"कठैही गढ़नूं ठौड़ विचारी छै[9] ?" तरै इण भदांणरी ठौड़ दाखवी[10]। तरै बाप कह्यो—"तैं सारा दिनमें कठै ही क्यूं खाधो[11] ?" तरै मांणकराव ग्वारांरी खीचड़ी खाधी हुती तिकी वात कही[12]—"जु जायल कनै हूं आय नीसरियो, तठै ग्वार पड़िया था,[13] त्यांनूं म्हैं कह्यो[14]—"क्यूं रांधो धांन हुवै तो ल्यावो। तरै ग्वारां चावळ मूंगारी खीचड़ी धोबो भरनै[15] ऊंठ चढ़ियानूं हीज दीवी, सु मैं खाधी[16]" तरै बाप कह्यो—"यूं तैं खीचड़ी खाधी तो थांहरी नख खीचीरी दी नै वा धरती दी,[17] नै कह्यो—"बेऊ ठोड़ां भदांणै, जाहल कोट कराय, बेऊ राजथांन कर[18]।" तरै मांणकराव बेंऊ ठोड़ां कोट कराया नै बेऊ राजथांन किया।

मांणकराव, अजैराव, चंद्रराव, लखणराव, गोयंदराव, सांगमराव, प्रथीराजरो सांवत गूंदळराव।

राजा प्रथीराज चहुवांणरी बैर[19] सुहवदे जोईयांणी रूसणै[20] बापरै घरै हुती। तिणनूं[21] खाटूरी भाखरी[22] उणरै[23] बाप माळियो[24]

---

1 भूखा-थका उधर होकर निकला। 2 तब ग्वारियोंने मनुहार की। 3 कोई रंधा हुआ अन्न तैयार हो तो ले आओ। 4 सो एक कटोरेमें डाल कर लाये। 5 माणकरावने ऊंट पर चढ़े हुए ही खाई। 6 संध्याको बापके पास आया। 7 कितनी धरतीमें फिर आया। 8 तब इसने सब हकीकत कही। 9 कहीं गढ़ बनवानेकी जगहका भी सोचा है ? 10 तब इसने भदाणकी जगह दिखाई (जिक्र किया)। 11 तैंने दिन भरमें कहीं कुछ खाया ? 12 तब माणकरावने ग्वारियोंकी खिचड़ी खाई थी वह बात कही। 13 वहां ग्वारिये डेरे डाले पड़े थे। 14 उनको मैंने कहा। 15 दोनों हाथोंके सम्पुटको भर करके। 16 ऊँट पर चढ़े हुएको ही दी और मैंने खा ली। 17 इस प्रकार तूने खिचड़ी खायी तो तुम्हारी शाखा 'खीची' प्रदान की गई और वह धरती भी तुम्हें दे दी गई। 18 भदाणे और जायल दोनों स्थानोंमें कोट बनवा कर दोनोंको राजधानी बना लो। 19 पत्नी। 20 नाराजीमें। 21 उसको। 22 पहाड़ी। 23 उसके। 24 महल।

करायो । इसो[1] ऊंचो करायो, जिणरो दीयो अजमेर दीसै[2] । तिणसूं गूंदळराव हालतो मांडियो सु इसड़ी सुरंग एक वणाई, जिकाहूं उणरै गांवथी सुहवदेरै माळियै छांनो आवै[3] सु प्रथीराजरी वैर अजैदे दहियांणी अजमेर थकां अटकळी[4]; किणी भांत उण दीवासूं, कोइक मरद आवै छै, सु तिका वात प्रथीराज आगै कही, तरै प्रथीराज चोकीरो घोड़ो थो तिके चढ़नै उडायो,[5] नैं अजांणजकरो[6] सुहवदेरै माळियारी दोढ़ी गयो । घोड़ो परो छोड़नैं । तरै प्रोळियै दोड़ खवर आगै दीवी । वांसाथी[7] प्रथीराज उतर आयो, सु गूंदळराव तो सुरंग मांहै हुय गयो । प्रथीराज आय ढोलियै सूतो[8] । परभात हुवो, सु गूंदळरावरै पगांरो जोड़ो उठै रह्यो सु प्रथीराज दीठो[9] नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया[10] तरै सुहवदेनूं प्रथीराज कह्यो—"ओ जूतो किणरो छै ? अठै कुण मरद आवै छै ?" तरै सुहवदे वेळा दोय च्यार तो टाळाटोळारी कही; तरै प्रथीराजरी भूंठी आंख देखी;[11] तरै सूधो कह्यो[12]—'अठै गूंदळराव खीची आवै छै" तरै प्रथीराज आपरै घरै फिर आयो, नै सवारै चामंडराय दाहिमो खीचियां ऊपर जायल फौज दे विदा कियो[13] तरै उठाथी गूंदळराव नीसरियो सु माळवै गयो । उठै डोडिया रजपूत रहता, तिणांरै गढ़ १२ हुता[14] तिकै गूंदळराव इणांरा वेटा पोतरा मारनै लिया । मऊ, मैदानो, गागूरूण, वालाभेट, सारंगपुर, गूंगोर, वार, वड़ोद, खाताखेड़ी, रांमगढ़, चाचरणी ।

जायल राजथांन कियो सु गोरारा पोतरा[15] खीचीवाड़ै गया ।

---

1 इतना । 2 जिसका दीपक अजमेरमें दिखाई दे । 3 जिससे गूंदलरावका अनुचित संबंध हो गया सो एक सुरंग ऐसी बनवाई जिससे वह उसके गांवसे सुहवदेके महलमें गुप्त रूपसे आवे । 4 अजमेर होते हुए ही अनुमान कर लिया । 5 तब पृथ्वीराजने चौकीके घोड़े पर चढ़ कर उसे उडाया । 6 अचानक । 7 पीछेसे । 8 पृथ्वीराज आकर पलंग पर सो गया । 9 गूंदलरावके पाँवोंके जूते वहाँ रह गये सो पृथ्वीराजने देखे । 10 और महलके दूसरे लक्षणोंसे भी अनुमान लगाया । 11 जब पृथ्वीराजकी बदली हुई आंख देखी । 12 तब उसने सीधासा उत्तर दे दिया । 13 और दूसरे दिन चामुंडराय दाहिमाको फौज देकर खीचियोंके ऊपर जायलको रवाना किया । 14 जिनके १२ गढ़ थे । 15 गोराके पोते ।

भदांणों राजथांन राव गालणरो हुवो । जिण[1] नागोर गींदांणी तळाव करायो । तिण साखरो दूहो[2] —

"गींदा हुता भदाणिया, तूंगै जायलवाळ ।"

कवित्त

खंड पूंगळ खळभळै,[3] कोट मरवटां टळक्कै ।
देरावर डिगमगै, लसै वरि हा हा संकै[4] ।।
लुद्रवो थरथरै,[5] छेलपुर नह संगट्टै ।
भुटां अनै भाटियां सास नीवट्ट नीवट्टै ।।
वीकमपुर वसै न बारही, धूजै धर पाटण पड़ै ।
गींदो रोद्र भदांणियो धाए सांमेई धड़ै[6] ।।१।।

वात

कहै छै गींदारै पच्छिमनूं चौरासी गढ़ हुता; तिणरै बेटो मांहगराव हुवो, तिणरो दूहो—

आंखड़ियां रतनालियां, मूंछ अवद्दां फेर ।
जिण भय कांपै गज्जणो, आ गींदांणी केर ।।१।।

तिण गूंदलरावरा पोतरा खीचीवाड़ै निपट बड़ा रजपूत हुवा । तिणां मांहै[7] धारू आनळोत वड़ो दातार, वड़ो जूंझार हुवो । आनानूं सांखलै सीहड़ वडो रजपूत जांण पांगळी[8] बेटी परणाई हुती । पण कहै छै, पछै आंनें तिणनूं सुहागण की[9] । तिणरै पेट धारू वडो दातार, वडो जूंझार, संसार सिरोमण रजपूत हुवो ।

वात

खीची आंनो दुकाळ मांहै डोडांरै परणियो थो[10] । सु सासरै जांणनै डोडवाड़ै जातो थो[11] सु परगना कोटारै गांव सूरसेन गूढ़ा

---

1 जिसने । 2 जिसकी साक्षीका दोहा । 3 खलबली मचती है । 4 डरते हैं । 5 कांपता है । 6 सेनाके सामने दौड़ता है । 7 उनमें । 8 लूली । 9 पीछे आनाने उसको सौभाग्य दिया (मानित किया) । 10 खीची आना दुकालमें डोडोंके यहाँ व्याहा था । 11 ससुराल जानेके लिए डोडवाड़े जा रहा था ।

सूधा[1] जाय डेरो कियो छै। सु आनारी वहू सांखलीनूं आधांन[2] छै। सु दसमा ऊपर दिन जाय छै[3]। आनो तिण समै निपट वेखरच छै[4]। सूल सामांन मांमूर कूं न छै[5]; सु उठै धारूरी मा कस्टी रातरी; तरै डेरो डांडो साथे, मांमूर क्यूं न छै[6]। तरै पाखती[7] एक पुरांणो वडो देहुरो[8] छै, तठै सांखलीनूं ओळै राखी[9]। उठै धारू जायो[10]। तरै पीढ़ी एकी ऊपर राखियो[11] तठै सापरो विल १ छै, तिण मांहैसूं साप १ नीसरनै[12] पीढ़ी दोळी[13] परदिखणा[14] देनै मोहर १, सोनो तोळा पांच भररी मेल गयो,[15] सु धारूरी मा सारो विरतंत[16] देखै छै, नै पछै मोहर उरी ली,[17] नै सवारै आंनै मांहै आयनै वैरनूं कह्यो[18]– "कूच करां पिण खांणानूं सारा गुढ़ारा लोगरै कनै क्यूं न छै।" तरै वैर कह्यो–"आज तो मोसौं चालियो जाय नहीं; नै मोहर वा आंनानूं सांखली दीवी, कह्यो–'आज तो खरच इणरो करो।" तरै आंनो खुसी हुवो; जांणियो–"सांखली आ मोहर आप कनै[19] किणही सूल[20] वेळा-कु-वेळानूं[21] कठैक छांनो[22] राखी हुती, सु आज गुढ़ारा लोगनूं लांघण[23] पड़तौ जांणनै मोनूं दी छै।" पछै दूजै[24] दिन पिण साप उणहीज भांत पीढ़ी दोळी परदिखणा देनै मोहर मेल गयो। सांखली आंनानूं दिन ५ तथा ७ इण भांत साप मोहर मेल जाय; धारूरी मा मोहर उरी लेनै आंनानूं दै। तरै आंनारै मनमें इचरज[25] आयो– "म्हारी वैर सासती मोनूं मोहर कठाथी दै छै[26]?" तरै आठमैं दिन वैरनूं आंनै मोहररी वात पूछी; तरै वैर वात मांडनै सोह[27] कहो; नै कह्यो–"आज थे पिण उण वेळा आयनै तमासो देखो।" तरै आंनो

1 निकट। 2 गर्भ। 3 दसवें महीनेके ऊपर दिन निकल रहे हैं। 4 आनाके पास उस समय खर्च करनेको कुछ भी नहीं है। 5 खाने-पीने आदिका सामान कुछ भी नहीं है। 6 सो वहाँ धारूकी माँको रातमें प्रसव-पीड़ा हुई तो वहाँ डेरे-डांडे आदिका कुछ भी साधन नहीं है। 7 पासमें। 8 मन्दिर। 9 वहां सांखलीको ओटमें रखा। 10 वहां धारूने जन्म लिया। 11 तब सद्यजात शिशुको एक मचिया पर रखा। 12 निकल कर। 13 चारों ओर। 14 प्रदक्षिणा। 15 रख गया। 16 वृत्तान्त। 17 ले ली। 18 और दूसरे दिन आनाने अंदर आ कर अपनी स्त्रीको कहा। 19 पास। 20 किसी प्रकार। 21 समय-कुसमय। 22 गुप्त। 23 लंघन। 24 दूसरे। 25 अचरज। 26 मेरी पत्नी निरंतर मुहर कहांसे ला कर मुझे देती है? 27 सब।

पिण उण वेळा[1] आयो सु ओ साप आयो सु परदिखणा दे मोहर १ मेलनै जावण लागो, तरै आंनै सापनूं पूछियो–"तूं कुण छै[2] ? नै तूं इण डावड़ारी[3] इतरी-इतरी[4] रिख्या[5] करै छै; सु तोनै इण कुण सनमंध छै[6] ?" तरै साप मांणसरी[7] भाखा[8] बोलियो, कह्यो–'आगै इण देस राजा हूंन वडो महाराज हुवो छै, तिको जीव थारै पेट बेटो हुय आयो छै,[9] नै उण राजा हूंननै मो मित्रताई हुती, सु मोनूं तीस चरू[10] मोहरांरा भरिया सूंपिया[11] छै सु इण देहुरै मांहे म्हारा बिल कनै इण ठोड़ छै। म्हैं इतरा[12] दिन रखवाळी कीवी। हमैं चरू अै थांहरा बेटारा छै[13]। थे इण ठोड़ खिणनै उरा ल्यो[14] नै थे इण ठोड़था[15] कठै ही[16] आघा-पाछा मत जावो। आ धरती थांहरै बेटां-पोतांरै सारी हाथ आवसी[17]। अठै हीज[18] कोट करावो।" तरै सापरै वचनथी[19] आंनो अठै रह्यो नै डोडांसूं आप जाय मिळनै[20] कह्यो–"थे कहो तो म्हे अठे हीज रहां[21]। तरै डोडे कह्यो–"भली वात।" पछै आंनै उठै कोट करायो। धारू मोटो हुवो, तद धरतीरा धणी डोड हुता। तरै धारू मांमा कनै गयो। चाकरी करण लागो। डोडे सपूत देख भांणेज माथै[22] सारी दरबाररी, दीवांणरी मदार[23] राखी। पातसाहरी चाकरी डोडांरै वदळै धारू करण लागौ। डोड दिन-दिन गळता गया[24]। खीची दिन-दिन वधता गया[25]। वडी ठाकुराई हुई। पातसाह अकबररी पातसाही ताउं[26] तो निपट जोर साहिबी[27] थी। अकबर पातसाह खीचीवाड़ा ऊपर कछवाहा मांनसिंह भगवंतदासोतनूं कुंवरपदै[28] फौज दे मेलियो हुतो,[29] तद मांनसिंघ खीची रायसल वेढ़

---

1 उस समय। 2 तू कौन है ? 3 लड़केकी। 4 इतनी-इतनी। 5 रक्षा। 6 सो तुझसे इसका क्या संबंध है ? 7 मनुष्य। 8 भाषा। 9 वह जीव तेरे (और तेरी स्त्रीके) पेट पुत्र होकर आया है। 10 चरू, देग। 11 सौंपे हैं। 12 इतने। 13 अब ये चरू तुम्हारे बेटेके हैं। 14 तुम इस जगहको खोद कर ले लो। 15 से। 16 कहीं भी। 17 यह सब धरती तुम्हारे बेटे-पोतोंके हाथ आयेगी। 18 यहां ही। 19 से। 20 मिल करके। 21 तुम कहो तो हम यहां ही रहें। 22 के ऊपर। 23 आधार। 24 घटते गये, निर्वंश होते गये। 25 बढ़ते गये। 26 तक। 27 हुकूमत। 28 कुंवरपदकी अवस्थामें, कुमारावस्थामें। 29 भेजा था।

हुई। मांनसिंघ वेढ़ जीती। रायसल वेढ़ हारी। राव प्रथीराज हरराजोत रायसलरो चाकर, राव देवीदास सूजावतरो पोतरो[1] कांम आयो। तठा पछै[2] वळै[3] एक वार राव प्रथीराज कल्यांणमलोत वीकानेरियानूं[4] पातसाहजी गढ़ गागुरण दी थी, तद पिण[5] वेढ़ १ हुई। तिकी[6] राव प्रथीराज जीती। खीची हारिया। पछै पातसाह जहांगीर खीचियांसूं जोर लागो[7]। मऊ राव रतननूं इनांममें दीवी, कह्यो–"मार ल्यो[8]।" पछै राव रतन जोर मऊसूं खीचियांसूं राह हुय लागो[9]। थांणा ४ असवार २००० मऊरा देसमें राखिया। गांव रजपूतांनूं वांट दिया[10]। राव गोयंददास उग्रसेनोत, राव कांन रायमलोत राठोड़ां सिरदारानूं राखिया। पछै राव रतनरा साथ रैनै खीचियां मांमला[11] ठौड़-ठौड़ घणा हुवा। खीचियांसूं धरती छूटण हाली[12]। राजा सालवाहन पिण राव रतनरै साथ मारियो[13]। दिन-दिन खीची टूटता गया[14]। हाडांरो जमाव हूतो गयो। हाडै खीची मारनै धरती भोग घाती[15]। मुदौ मऊ ऊपर[16] सु मऊनूं गांव १४०० लागै। गांव ७०० अगवारै तिकै चौड़ै, गांव ७०० पछवाड़ै तिणां झाड़ पाहाड घणा[17]।

राव गोपाळ मऊ, मैदांनरो धणी,[18] वडो रजपूत हुवो, पातसाही चाकरी करतो। खीचियांसूं और ठोड़ तो गई। घणा दिन हुवा चाचरणी तो वारसां कईक पैहली खीची वाघरी मा, वैर सींधळ हुती तिका जीन साज पैहर-वैहरनै पातसाही फौजांसूं केई लड़ाई लड़ी[19]।

---

1 पौत्र। 2 जिसके वाद। 3 फिर। 4 वीकानेर वालेको। 5 तब भी। 6 जिसको। 7 विवश करने लगा, हमला करने लगा। 8 मार करके अधिकार कर लो। 9 पीछे राव रतन मऊके खीचियोंसे राहु होकर पीछे लगा, लड़ाई करने लगा। 10 वांट दिये। 11 लड़ाइयां। 12 खीचियोंसे धरती छूटनेको चली। 13 राव रतनके साथने राजा सालिवाहनको भी मार दिया। 14 दिन-दिन खीची कमजोर होते गये। 15 हाडोंने खीचियोंको मार करके धरतीको अपने अधिकारमें कर लिया। 16 मुख्य आधार मऊके ऊपर। 17 गांव ७०० आगेके चौड़े-मैदानके और ७०० गांव पीछेके जिनमें वृक्ष और पहाड़ वहुत। 18 राव गोपाल मऊ और मैदानका स्वामी। 19 कई वर्षोंसे और वहुत समय पहलेसे चाचरणी गांव वाघकी मा, सींधल स्त्री के (सींधलियाणीके) अधिकारमें था, जिसने शस्त्र धारण करके वादशाही सेनासे कई लड़ाइयां लड़ीं।

कई फौजां मुगलांरी, हाडांरी मारी[1] । पछै सींधळ गोपाळदे मूंई,[2] तठा पछै[3] नवसेरीखांन चाचरणी लीवी ।

॥ इति संपूर्ण ॥

---

1 मुगलों और हाडोंकी कई फौजोंका नाश किया । 2 जब सींधल गोपालदेवी मर गई । 3 जिसके बाद ।

वात अणहलवाड़ा पाटणरी

वनराज वडो रजपूत हुओ। तिको एक नवो सहर वसावणरी मन धरै छै। इण पाटणरी ठोड़ एक कोई गवाळियो अणहल नांमै स्यांणो आदमी हुतो[1]। तिण एक तमासो दीठो हुतो[2]। एकण गाडर वांसै नाहर दोड़ियो[3]। गाडर आगै नाठी[4]। इण पाटणरी ठोड़ गाडर आई तरै नाहरसूं सांमी मांड ऊभी रही[5]। तिका वात अणहल दीठी हुती। तिको वनराज धरती देखतो फिरै छै; तरै अणहल ग्वाळियो आय वनराज चावड़ानूं मिळियो। कह्यो–"हूं थांनूं सहर वसावणनूं इसड़ी[6] ठोड़ एक वताऊं, जिको वडो अजीत खैड़ो हुवै;[7] पिण थे बोल दो[8]। क्यूं सहर मांहे म्हारो नांव आंणो[9]।" तरै वनराज बोल-कौल दिया[10] तरै अणहल गाडरनै नाहर वाळी वात कही। तरै हमैं[11] पाटण वसै छै, आ ठोड़ चावड़ा वनराजनूं दिखाई। वनराज ठोड़ देख वोहत राजी हुवो नै 'अणहलवाड़ो पाटण' सेहररो नांव दियो[12]। संमत ६०१रा वैसाख सुद ३ रोहिणी नक्षत्र मध्यांन्ह विजय मोहरत पाटणरा कोटरी रांग भरी[13]। आगै कोई गुजराती लोक भील मलेछ रैहता, सु सारा दूर किया। आबूरी तळहटीरो लोग नवो आंण[14] वसायो। वडो सहर वनराज चावोड़ै वसायो। अणहलवाड़ा पाटणरी जन्मपत्रिका लिख्यते[15]।

---

1 इस पाटनकी जगह अणहल नामका एक ग्वाला सयाना आदमी रहता था। 2 उसने एक तमाशा (अद्भुत वात) देखा था। 3 एक भेड़के पीछे नाहर दौड़ा। 4 भेड़ आगे भगी। 5 तव नाहरसे सामना करनेको खड़ी रही। 6 ऐसी। 7 वह गांव अजीत होगा। 8 परंतु तुम वचन दो। 9 शहरके नामकरणमें कुछ मेरा नाम भी रखो। 10 तव वनराजने वचन दिया। 11 इस समय। 12 और 'अणहिलवाड़ा पाटन' शहरका नाम रखा। 13 सम्वत् ६०१के वैशाख शुक्ल ३ रोहिणी नक्षत्र, मध्यान्ह समय विजय मुहूर्तमें पाटनके कोटका खात-मुहूर्त किया। 14 लाकर। 15 अणहिलवाड़ा पाटनकी जन्मपत्रिका (इस प्रकार) लिखी जाती है।

अणहलवाड़ा पाटणनूं गांव ४५९ लागै छै। तिणमें[1] तपो गांव ५२ सीधपुर छै, रु० २५०००) उपजतांरी ठोड़। नै पाटण तो आगै वडी ठोड़ हुती, रुपिया लाख ७०००००) री पैदास हुती। संमत १६८२ तथा १६८३ ताउं उपजतां[2]। संमत १६८७ पछै पाटण तूटी। कोळियां सारा गांव सूना किया[3]। हमैं रुपिया २०००००) नीठ उपजै छै[4]। पाटण चाओड़ां भोगवी तिणरी विगत[5]—

वरस।	मास।	आसामी।
६० वरस	६ मास	वनराज चाओड़ै भोगवी।
१० वरस		जोगराज भोगवी।
३ वरस		राजादित भोगवी।
११ वरस		वरसिंघ भोगवी।
३९ वरस		खेमराज भोगवी।
२७ वरस		चूंडराव भोगवी।
१९ वरस		गूंडराज भोगवी।
२९ वरस		भोवंडराज भोगवी।

कवित्त

साठ वरस वनराज, वरस दस जोगराव भण।
राजादित त्रिण[6] वरस, वरस इगियारा सिंघ सुण॥
खीमराज चाळीस, वरस इक ऊण[7] मुणीजै[8]।
चुंडराव सतवीस, वरस भोगवी भणीजै॥
उगणीस वरस गुंडराज कहि, उगणतीस भोवंड भुह।
चामंडराज अणहलनयर, कीध वरस सौ छीनवह[9] ॥१॥

---

1 जिनमें। 2 सम्वत् १६८२ तथा १६८३ तक यह उपज होती थी। 3 कोली लोगोंने पाटनके सब गांवोंको सूना कर दिया। 4 अब रुपये दो लाख मुश्किलसे पैदा होते हैं। 5 चावड़ोंने पाटन भोगी उसका विवरण। 6 तीन। 7 एक वर्ष कम। 8 कहा जाता है। 9 एक सौ छियानवे वर्ष राज्य किया।

आठ छत्र[1] चावड़ा कीध पाटण धर रज्जह[2] ।
वरस एक सौ छिनु गया भोगवी सकज्जह ।।
हुए सोळंकियां वरस सौ············सत्तह ।
हुवा पांच वाघेल वरस भू वीसो सत्तह ।।
पांच सौ वरस चाळीस सु वसुह[3] भार साचो वह्यौ ।
पंचवीस[4] छत्र गूजरधरा अणहलवाड़ो ऊ गह्यौ ।।२।।

सोळंकियां पाटण भोगवी—

पहली चावोड़ांनूं हुती, पछै तोडारो तरफसूं राज, बीज आया; तिांणनूं चावड़ै परणाया[5] । पछै चावोड़ांरै भांणेज राजरै बेटै बीजरै भतीज चावोड़ांनै मारनै पाटण लीवी । इतरां पाटण भोगवी तिण साखरो कवित्त—

मूळू पैंताळीस वरस दस कियो चंदगिर ।
वलभ अढ़ाई वरस साढ-बारह द्रोणागिर ।।
भीम वरस चाळीस वरस चाळीस करन्नह ।
एक-घाट-पंचास[6] राज जैसिंघ वरन्नह ।।
कंवरपाळ तीस-त्रिहुं-आगळि[7] वरस त्रिण्ण[8] मुळराज लह ।
विलसी ज भीम सत रसह[9] रस वरस साठ अगलीक चह[10] ।।१।।

४५ मूळराज ।
१० चंदगिर ।
२।। वलभराज ।
१२।। द्रोणगिर ।
४० भीमदे नांनगसुत ।
४० करन ।
४९ सिधराव जैसिंघदे।

---

1 राजाओंने । 2 राज्य । 3 वसुधा । 4 पच्चीस । 5 चावड़ोंने उनका विवाह कर दिया । 6 एक कम पचास (४९) 7 तीसके ऊपर तीन (३३) वर्ष । 8 तीन । 9 भूमि । 10 साठके आगे चार (६४) वर्ष ।

३३ कंवरपाळ ।
३ बोळो मूळदेव लोहड़ो[1] ।
६४ भीमदे मूळराजरो लोहड़ो भाई[2] ।

सोळंकियांरी पीढ़ी—

१ आद नारायण ।	७ सुकर ।
२ जुगाद ब्रह्मा ।	८ अरजन ।
३ ब्रह्मरिष ।	९ अजैपाळ ।
४ धोमरिष ।	१० देपाळ ।
५ चाच ।	११ राज ।
६ बाळग ।	१२ मूळराज ।

तठा पछै वाघेलै धरती लीवी । सोळंकी वाघेला आगै जातां एक[3] । वाघेला सोळंकियां भिळै[4] । पाटण वाघेलां भोगवी तिण साखरो कवित्त—

गूजर धर भोगवी वरस वीसळ अढ्ढारह ।
अजैदेव इकतीस कोट पाटण उद्धारह ॥
वीरमदे तेतीस वरस वाघेलां मंडण ।
वीस वरस लहु करण विढै वैरियां विहंडण[5] ॥
देवराज प्रतापियो चत्र[6] वरस वदां[7] साख वंसावळी ।
वाघेल राज अणहल नगर वरस सत्त-छव-आगळी[8] ॥१॥

वाघेलांरै पाटण इतरा वरस रही—

१८ राव वीसळदे ।
३१ अरजनदे ।
३३ वीरमदे ।
२० करन गैहलो ।
४ देवराज ।

1 मूलदेव छोटा जो वहरा था । 2 भीमदेव मूलराजका छोटा भाई । 3 आगे जाते सोलंकी और वाघेले एक हो जाते हैं । 4 वाघेले सोलंकियोंमें मिल जाते हैं । 5 दुश्मनोंका नाश करनेके लिये अपने राज्यकालके वीस वर्ष तक करण लड़ाइयां लड़ता रहा । 6 चार । 7 कहता हूं । 8 सौ आगे छ वर्ष, १०६, एक सौ छ वर्ष ।

संमत १३०४ माधव बांभण[1] परधांन हुओ। तिण नै वाघेलां विगड़ी[2]; तरै ओ जायनै अलावदी पातसाहनूं ले आयो। मजल-मजलरा लाख-लाख टका दे ल्यायो। पछै धरती तुरके लीवी। पातसाह अलावदी टाकांनूं थांणै राखिया हुता सु अलावदी समंदमें नांख अै टाक पातसाह हुवा[3]।

वरस ४५ सुलतांन कुतबतारखां[4]।
३१ फरेखांन[5]।
३३ गदाकर[6]।
३४ अहमंद, जिण अहमंदावाद वसायो। संमत १४३७[7]।
१० दाऊदखांन।
५८ महमंद बेगड़ो।
२५ मुदाफर[8]।
२२ सिकन्दर।
१२ महमूंद[9]।
१० वहादुर।
१५ महमंद।
१८ मुदफर[10]।

पछै संमत १६२९ काती सुद १५ अकबर पातसाह गुजरात लीवी।

सोळंकियांरी साख इतरी[11]—

१ सोळंकी। २ वाघेला। ३ रहवर। ४ बेहला। ५ वीरपुरा। ६ खैराड़ा। ७ सोभतरा। ८ पीथापुरा। ९ खालत। १० भुयंड, सिंधनूं तुरक[12]। ११ डहर, सिंधमें तुरक छै[13]। १२ रूभा सिंधनूं, थटैनूं तुरक छै[14]।

---

1 ब्राह्मण। 2 उसके और वाघेलोंमें विगड़ गई। 3 वादशाह अलाउद्दीनने टाकोंको थाने पर रखा था सो अलाउद्दीनको समुद्रमें डाल करके ये वादशाह बन बैठे। 4 कुतुवतातारखां। 5 फरेखान। 6 मुदाफर। 7 अहमद, जिसने सम्वत् १४३७में अहमदावाद वसाया। 8 मुजफ्फर। 9 मुहम्मद। 10 मुदाफर। 11 सोलंकियोंकी इतनी शाखायें हैं। 12 भुयंड शाखाके सोलंकी मुसलमान हो गये, सिंधमें रहते हैं। 13 डहर शाखाके सोलंकी सिंधमें मुसलमान हैं। 14 रूभा शाखाके सोलंकी सिंध और थट्टेमें मुसलमान हैं।

वात सोळंकियां पाटण आयांरी

राज, बीज सोळंकी बेहू[1] भाई तोडारा धणी, सु यांरो[2] बाप मुंवो,[3] तरै बीजा[4] दुमात भाई था तिकै राजरा धणी हुआ; नै यां बेहू भायांनूं धरती मांहीथी परा काढ़िया[5]। सु थोड़ासा साथ सामांनसूं तोडाथी नीसरिया,[6] सु कठैक[7] आय रह्या। सु वडो भाई बीज तिको जनम आंधो नै राज देखतो सु बाळक। सु कितरैहेक[8] दिने कठैक धरती नजीक रह्या। वांसला भायां[9] खबर न ली, तरै यां विचार दीठो;[10] "अठै रह्यां क्यूं नहीं; द्वारकाजीरी जात जावां"[11] तद द्वारकाजीरी जात चालिया सु कितरैहेक दिनै[12] पाटण आय उत-रिया। सु पाटण चावोड़ा राज करै छै। सु रावळी[13] वडी घोड़ी थी तिका चरवादार तळाव संपड़ावण[14] वास्तै ले आयो। यांरो[15] तळावरी पाळ[16] डेरो छै। बैठा छै। नै पांडव[17] घोड़ियां चढ़ियां आवै छै, सु बीज कह्यो—"घोड़ी नीली भला पग मंडै[18] छै। वाखांण[19] करण लागो। तरै घोड़ी पांडवं यांरै सांमो जोयो,[20] आंधो छै नै घोड़ियांरा रंग की[21] जांणै ? तितरै घोड़ी सुसती पड़ी[22]। तरै पांडव ताजणो वाह्यो[23] तरै बीज पांडवनूं गाळ दीवी, कह्यो—"फिट रे,दारिया-गोला ! लाखरी वछैरीरी आंख फोड़ी[24] ! तरै पांडव कह्यो—"दारियो आंधो कासूं कहै[25] ?" पांडव घोड़ी ठांण ले गयो[26]। नै राते घोड़ी ठांण दियो,[27] बछेरो घोड़ी कांणो जायो[28]। उणै जायनै आपरा

---

1 दोनों। 2 इनका। 3 मरा। 4 दूसरे। 5 और इन दोनों भाइयोंको अपनी धरतीमेंसे निकाल दिया। 6 तोडासे निकले। 7 कहीं। 8 कितनेक। 9 पिछले भाइयोंने। 10 तब इन्होंने विचार करके देखा। 11 चलें। 12 कितनेक दिनों बाद। 13 राजाकी। 14 नहलानेके। 15 इनका। 16 पाल, ऊंचा किनारा। 17 सईस। 18 नीली घोड़ीकी चाल अच्छी है। 19 प्रशंसा। 20 तब घोड़ीके सईसोंने इनकी ओर देखा। 21 क्या जाने ? 22 इतनेमें घोड़ी धीमी हो गई। 23 तब सईसने चाबुक मारा। 24 तब बीजने सईसको गाली दी, कहा—'फिट रे दारीके गोले ! एक लाखकी बछेरीकी आंख फोड़ दी !' (दारी = वेटी)। 25 यह अंधा हमें दारिया क्यों कहता है ? 26 सईस घोड़ीको ठान (तवेले) ले गया। 27 और रातको घोड़ीने बच्चा दे दिया ('घोड़ी ठांण देणो' मारवाड़ीका एक मुहावरा है; जिसका अर्थ होता है—घोड़ी का बच्चा देना)। 28 घोड़ीने काने वछेरेको जन्म दिया।

ठाकुर चावड़ानूं जणायो[1]। वात कही–"इसड़ा[2] आदमी दो भाई, नै च्यार-पांच आदमी साथै छै। तळाव उतरिया छै[3]। यां घोड़ीरी वात मांड[4] कही। तद[5] पाटणरै धणी चावड़ै खबर कराई। कह्यो–"इसड़ा अकलवंत अठै रहे तो राखीजै[6]। पछै पाटणरो धणी आप चढ़ तळाव उणांरै[7] डेरै आयो, मिळिया, पूछियो–"कहो, थे कुण छो ? कठै रहो[8]?" तरै वीज आपरी वात मांडनै कही[9]–"म्हे सोळंकी तोडारा धणीरा बेटा, म्हांरो दूजो दुमात भाई राज बैठो[10]। म्हांनूं धरती मांहैसूं परा काढ़िया[11]। सु कितराहेक दिन तो म्हे उठै रह्या[12]। सु हूं तो आंखै जखम छूं,[13] नै म्हारो भाई नान्हो थो, तिको उठैहीज रह्यौ[14]। हमैं वीज कह्यो–"राज पिण मोटो हुवो, किणीकरै वास रहस्यां[15]। हमार तो द्वारकाजीरी जात जावां छां[16]।" पछै पाटणरै धणी चावड़ै वीज, राजरो घणो आदर कियो, विनाही जांणनै कह्यो–"राज म्हारै परणीजो;[17]" तरै वीज कह्यो–"हूं तो आंखै जखम परणीजूं नहीं,[18] नै म्हारा भाई राजनूं परणावो।" तरै राज परणियो[19]। इणानूं[20] चावोड़ै घणो माल, घणा गांव पटै दे राखिया। कितरैहेक दिने चावोड़ीरै पेट मूळराज बेटो हुवो,[21] तरै राजनूं वीज कह्यो–"आंपै[22] द्वारकाजीरी जात[23] जावतां वीचमें अठै रह्या, सु हमैं चालो, द्वारकाजीरी जात तो कर आवां।" सु पाटणसूं राज, वीज बेहूं चालिया। चावोड़ीनै मूळराजनूं पाटण राखनै[24] चालिया। सु जाड़ैचै लाखै आ वात घोड़ी नै वछेरावाळी सांभळी छै,[25] सु सांमां आदमी मेलनै देखणरै वास्तै

---

1 उन्होंने जा करके अपने चावड़े ठाकुरको सूचित किया। 2 इस प्रकारके। 3 तालाव पर ठहरे हुए हैं। 4 इन्होंने घोड़ीके संबंधकी सविस्तार वात कही। 5 तव। 6 ऐसे बुद्धिमान यहां रहें तो रखना चाहिये। 7 उनके। 8 कहो, तुम कौन हो ? कहां रहते हो ? 9 तव वीजने अपनी वात विस्तारसे कही। 10 हमारा दूसरा दुमात भाई राज्यकी गद्दी पर बैठ गया। 11 हमको देशमेंसे निकाल दिया। 12 सो कितनेही दिन हम वहीं रहे। 13 सो मैं तो आंखोंसे अंधा हूं। 14 और मेरा भाई छोटा था, इसलिये वहीं रहा। 15 किसीके यहां जाकर रहेंगे। 16 अभी तो द्वारकाजीकी यात्राको जा रहे हैं। 17 विना जांच किये ही कहा, आप हमारे यहां विवाह कर लें। 18 मैं तो आंखोंसे अंधा, विवाह नही करूं। 19 तव राजका विवाह हुआ। 20 इनको। 21 कितनेही दिन वाद चावड़ीके पेटसे मूलराज उत्पन्न हुआ। 22 अपन। 23 यात्रा। 24 रख कर। 25 सुनी है।

तेड़ाया[1]। नजीक आया, तरै सांम्हो आय घणो आदर कर तेड़ लेजायनै, लाखै आपरी बैहन राजनूं परणाई[2]। अठै राखिया। लाखारी पूरी साहिबी, सु लाखो नै राज साळो बहनोई आठ पोहर भेळा रहै,[3] नै वीज बाहिर रहै आपरा रजपूतां भेळो। सु राज वीजरी खबर ही ले नहीं। तरै एक दिन वीज राजनूं कहाड़ियो[4]–"थे साळो बहनोई एक हुय रह्या, म्हारी खबर ही ल्यो नहीं, सु म्हे अठै रहां नहीं, म्हे पाटण जावस्यां, मूळराजनूं खोळै बैसांणस्यां[5]। चावोड़ी थाळी पुरससी सु जीमस्यां नै उठै जाय बैस रेहस्यां[6]।" सु राज तो लाखारी वडी साहिबी सु छोड़ी नहीं नै उठैहीज लाखा तीरै रह्यो, नै वीज पाटण आयो, मूळराज कनै रहै छै। राज लाखा भेळो रहै छै, सु लाखै घणोहीज सुख दियो। राजरै जाड़ैचीरै पेट राखायच बेटो हुवो[7]।

साळै बहनैईरै घणो सुख छै, सु एक दिन चोपड़ रमता छा,[8] सु राजरा हाथसूं गोट मारतां चिर[9] फाट उछळी सु लाखारै निलाड़[10] लागी, सु थोड़ो सो लोही[11] आयो लाखाजीरै। तरै मन मांहै रीस आई लाखानूं, सु कनैं भळको[12] पड़ियो थो तिको झालनैं[13] लाखै सोळंकी राजनूं चूंक लियो,[14] सु राजरै थणरै लाग गयो[15]। सु वातकरतां[16] राज सोळंकीरो हंसराजा उड़ गयो[17]। लाखै घणो पछतावो कियो। जांणियो, परमेसर! आ किसी उपाध की[18]। मोनूं किसी कुबुध आई[19]। हूं णहारसूं जोर को नहीं[20]। पछै आ वात लाखैरी वैहन जाड़ैची सांभळी,[21] तरै बळणनूं तयार हुई[22]। लाखो कहण लागो–"बेहनेई म्हारै हाथ मुंवो[23]। आ बेहन वांसै बळै,[24] भांणेज

1 बुलाये। 2 लाखेने अपनी बहनका राजके साथ विवाह किया। 3 आठों पहर शामिल रहते हैं। 4 कहलाया। 5 मूलराजको गोदमें बिठायेंगे। 6 चावड़ी थाली परोसेगी सो जीमेंगे और वहीं जाकर बैठ रहेंगे। 7 राजको जाड़ेचीके पेटसे राखाइच नामका पुत्र हुआ। 8 थे। 9 खपची, फटनका टुकड़ा। 10 ललाट। 11 खून। 12 बर्छी। 13 पकड़ कर। 14 मार दिया, घुसेड़ दिया। 15 सो राजकी छातीमें लग गया। 16 तुरंत। 17 प्राण उड़ गया। 18 जाना, हे परमेश्वर! यह कौनसी उपाधि मैंने कर ली। 19 मुझे कौनसी कुमति आ गई। 20 होनहारसे कोई जोर नहीं। 21 सुनी। 22 तब सती हो जानेको तैयार हुई। 23 बहनोई मेरे हाथसे मरा। 24 यह बहिन उसके पीछे जले (सती हो जाये।)

नान्हों,[1] इणांरो दुख कर मरै तो इतरी हत्या मोसूं सांखवी न जाय[2] ।" तरै लाखो पेट मारणनूं तयार हुवो, वडो अनरथ हूण लागो[3] । तरै लाखारै घर मांहे कारणीक मांणस था,[4] तिकां जाड़ेचीनूं घणो हठ कर बळतीनूं राखी[5] । पिण जाड़ेची कहै–" थे म्हारो कुस्वारथ करो छौ[6] ।" पिण मांडां राखी[7] । तरै लाखानूं जाड़ेची कहाड़ियो[8]–"तैं म्हारो धणी मारियो नै मोनूं बळण न दे छै, तो तूं मोनूं मुंहड़ो मत दिखावै[9] ।" लाखे वात कवूल कीवी । तिण पापरा लाखै घणा दांन-पुन्य किया,[10] घणा सूंस-नेम लिया नै लाखो घणो दुख करै छै[11] । उण ओळजरो लियो लाखो भांणेजनूं कदेही छाती ऊपर थी अळगो करै न छै[12] । सारी साहिवीरी मदार राखायच ऊपर छै[13] । कोई राखायचरो हुकम लोपै न छै ।

वात पाटण चावोड़ांथी सोलंकियांरै आवै जिणरी[14]

पाटण चावोड़ो चावंडराज धणी हुतो सु मुवो । तिणरै च्यार बेटा, लायक सारीखै माथै[15] । च्यारांई भायां आंटी करी, अहड़स हुई[16] । तरै वीच मांणसै फिरनै कह्यो[17]–"सिंघासण, छत्र वीच

---

1 भानजा छोटा है । 2 इनका दुःख करके यह मर जाय तो इतनी हत्याएं मेरेसे सहन नहीं हो सकतीं । 3 तव लाखा पेटमें कटारी मार कर मरनेको तैयार हुआ, वड़ा अनर्थ होने लगा । 4,5 तव लाखाके घरमें जो विवेकशील मनुष्य थे उन्होंने जाड़ेचीको सती होनेसे हठात् रोका । 6 परंतु जाड़ेची कहती है कि (मुझे सती होनेसे रोक कर) तुम मेरा अनिष्ट कर रहे हो । 7 परंतु वलात् रोक दिया । 8 कहलाया । 9 तूने मेरे पतिको मार दिया और अव मुझे उसके पीछे सती भी नहीं होने देता है, तो तू मुझे अपना मुंह मत दिखा । 10 उस पापके प्रायश्चित्त रूपमें लाखेने वहुतसे दान-पुन्य किये । 11 और कई शपथ और नियम पालन करनेका निश्चय किया और लाखा वहुत अनुताप करता है । 12 इस विरह-विरसको ले कर लाखा कभी अपने भानजेको अपनी छातीसे दूर नहीं करता है । 13 सारी हुकूमतका दारोमदार राखाइच ऊपर है । 14 पाटनका शासन चावड़ोंसे छूट कर सोलंकियोंके अधिकारमें आ जाता है, उस घटनाकी वात । 15 उमर-लायक और समान प्रकृतिके । 16 चारों भाइयोंने हठ किया और परस्पर टंटा हो गया । 17 तव मनुष्योंने वीचमें पड़ कर कहा ।

मेलो[1] । च्यारे ही भाई सिंघासणरी पाखती बैसो[2] । कांमदार परधांन कांम चलावसी । हासल आवसी सु च्यारै भाई वांट लेसी[3] । रजपूत च्यारांनूं आय जुहार करसी[4] ।" तरै आ वात च्यारांई कबूल कीवी । कितराइक दिन इण भांत कांम चालै छै । सोळंकी बीज अठै आयो । बीजरो भाई राज चावोड़ांरै परणियो थो । तिणरै पेट मूळराज बेटो हुवो थो सु चावड़ांरो भांणेज छै[5] । नै राज तो लाखाजी कनै[6] रह्यो नै राजरो बेटो पाटण छै । तठै बीज आंधो आय रह्यो छै । सु चावड़ा च्यारूंई तीजे-पोहररा[7] नदी सासता झूलण[8] जाय तरै[9] कहै–"सिंघासण, गादी, छत्ररी रखवाळीनूं किणनूं राखसां[10] । आपांनूं तो पोहर दो पोहर उठै लागसी[11] ।" तरै च्यारै भायां चावड़ां विचारनै कह्यो–"अठै वांसै भांणेज मूळराजनूं राखो[12] । ओ गादी बैस वांसलो कांम-काज चलावसी[13] ।" सु इण भांत मूळराजनूं वांसै गादी बैसांण जाय । आप आवै तरै गादी उरी लेवै[14] । सु मूळराज बळ-बळ आवटै[15] । तरै बीज एक दिन आंधै-आंधै आपरा भतीजा मूळराजरी छाती हाथ फेरनै कह्यो–"बेटा ! इतरो दूबळो कुण वास्तै[16] ?" तरै मूळराज गादी बैसांण उठावणरी वात सारी काकानूं कही । तरै बीज कह्यो–"आज तोनूं वांसै राखै तरै तूं मत रहै[17] ।" चावड़ा कहसी, कुण वास्तै ? तरै तूं कहै, "म्हारो हाल-हुकम को मांनै नहीं,[18] तो हूं इण गादी बैसनै कासूं करां[19] ?" तरै चावड़ा बेअकल हुता सु कांमदारां-परधांनां सारांनूं तेड़नै कह्यो[20]–"मूळराज कहे सु किया करजो ।"

---

1 सिंहासन और छत्र बीचमें रख दिये जांय । 2 चारों ही भाई सिंहासनके पास बैठ जाओ । 3 मालगुजारी आयेगी वह चारों भाई बाँट लेंगे । 4 राजपूत (ठाकुर लोग) चारोंको आकर जुहार करेंगे । 5 जिसकी स्त्रीकी कोखसे मूलराज नामका बेटा हुआ था जो चावड़ोंका भानजा है । 6 पास । 7 तीसरे पहर । 8 निरंतर नहानेको जावें । 9 तब । 10 किसको रखेंगे । 11 अपनेको तो पहर दो पहर उधर लग जायगी । 12 यहां पीछे अपने भानजे मूलराजको रख दो । 13 यह गद्दी पर बैठ कर पीछेका काम-काज चलायेगा । 14 ये आवें तब उससे गद्दी ले लेते हैं । 15 इससे मूलराज (अपमानकी ज्वालासे) जल कर दुखी होता है । 16 बेटा ! इतना दुर्बल क्यों ? 17 आज तुझको (गद्दी पर बैठनेके लिए) पीछे रखें तो तू मत रहना । 18 मेरी आज्ञा कोई मानता नहीं । 19 तो मैं इस गद्दी पर बैठ करके क्या करूं ? 20 चावड़े मूर्ख थे इसलिये उन्होंने अपने कामदार-प्रधान इत्यादि सबको बुलवा कर कहा ।

तठा पछै मूळराजरो हाल-हुकम हालण लागो[1]। नै चावोड़ांरी जांणहार,[2] सु दिन घड़ी ४ चढ़तैरा[3] वागां, वावड़ियां, तळाव सैल जाय[4] सु रात घड़ी ४ गयां पाछा घरे आवै। नेजे मीर वाळी वात मांड रही छै[5]। राजरी को खवर लै नहीं[6]। कांमदार रजपूत सारा चावड़ांथी आखता[7] हुय रह्या छै। मूळराजरो हाल-हुकम हुवो। सु मूळराज वडो राहवेधी छै[8]। वीज काको आंधो वलाय-रा-त्रंधरण छै[9] सु चावड़ांरो माल ऊधमनै[10] सारा रजपूत, कांमदार, खवास, पासवांन, महाजन लोग सारा आपरा कर राखिया छै[11]। सारांरो दिल हाथ लियो[12]। हमैं धरती लेणरो विचार वीज नै मूळराज करै छै[13]। सु मूळराजरी मा छांनी कठैहेक रहनै वात सुणती हुती,[14] सु किणही सूल उणरा पग वाजिया[15]। तरै काके वीज कह्यो–"मूळराज, देख ! औ किणरा पग वाजिया[16]।" तरै मूळराज वांसै दोड़ियो[17]। आगै देखै तो आपरी मां छै, तिका मूळराजनै देखनै कहण लागी–"तूं नै थारो काको म्हारा भायांनूं मारणरो विचार करो सु कुण वास्तै ? इणां थांसूं कासूं वुरो कियो[18] ?" तरै मूळराज मानूं कह्यो–"थांनूं काकोजी तेड़ै छै[19]।" आ नीचे पावड़ियां उतरण लागी,[20] तरै इण दिठो[21]–"आलोच वारै फूटसी; धरती हाथ नहीं आवै[22]। तरै माथै मांहै झटकारी दी,[23] माथो तूट पड़ियो। काका कनै पाछो आयो। काके वीज पूछियो–

---

1 जिसके वाद मूलराजकी आज्ञा चलने लगी। 2 और चावड़ोंकी जाने वाली (चावड़ोंका शासन जानेका संयोग)। 3 चार घड़ी दिन चढ़ते ही। 4,5 वागों, वावड़ियों और तालावों पर सैर करनेको चले जायें जो चार घड़ी रात वीत जाने पर घर पर लौटते हैं, मीर नेजेके समान अपना आचरण वना रखा है। 6 राज्यकी कोई खवर नहीं लेता। 7 क्रोधित, नाराज। 8 मूलराज वड़ा दूरदर्शी है। 9 उसका अंधा चाचा वीज गजवका चतुर है, खूव चालाक है। 10 खर्च करके। 11 अपने वना लिये हैं। 12 सवके दिल अपने हाथमें ले लिये। 13 अव वीज और मूलराज पाटनकी धरती अपने अधिकारमें ले लेनेकी सोच रहे हैं। 14 सो मूलराजकी माँ कहीं छिपी रह कर वात सुनती थी। 15 सो किसी प्रकार उसके पाँवोंकी आहट हो गई। 16 यह किसके पाँवोंकी आहट हुई ? 17 तव मूलराज पीछे दौड़ा। 18 इन्होंने तुम्हारा क्या वुरा किया ? 19 तुमको काकाजी वुलाते हैं। 20 यह सीढ़ियोंसे नीचे उतरने लगी। 21 तव इसने देखा। 22 मंत्रणा वाहिर फूट जायेगी तो फिर यह धरती हाथ नहीं आवेगी। 23 तव उसके सिरमें तलवारका झटका मार दिया।

"कुण हुतो[1] ?" तरै मूळराज कह्यो–"म्हारी मा हुती[2] ।" तरै बीज कह्यो–"मारणी हुती[3] । तैं जाण दी, बुरी कीवी ।" तरै मूळराज कह्यो–"जांण न दी छै, मारी छै ।" तरै बीज कह्यो–"वडो कांम कियो[4] । हूं थारी अकल-समभसूं बोहत राजी छूं । तूं सही पाटणरो धणी हुईस[5] । थारी वडी साहबी हुसी[6] ।" पछै मूळराजरी मानूं खाडाबूज करनै[7] बीजै दिन रजपूत आप वळू किया था सु सारा भेळा करनै चावड़ा झूलता था तठै ऊपर गयो[8] । सारा कूट मारिया[9] । पाटण मूळराज ली । बीज सवणी हुतो,[10] कह्यो–"इतरी पीढ़ी आपणां घरसूं पाटणरो राज नहीं जाय[11] ।"

वात एक जाड़ेचा लाखानूं सोलंकी मूळराज मारियांरी[12]

मूळराज पाटण धणी छै । मूळराजरो भाई राखाइच लाखा जाड़ेचारो भांणेज लाखा कनै कैलाहकोट रहै छै[13] । सु लाखो जाड़ेचो सूतो पाछली रातरो जागै,[14] सबळी धाह दे रोवै[15] । लाखारै साहिबीरी मदार सारी भांणेज राखाइच सोळंकी ऊपर छै[16] ।

एक दिन राखाइच लाखा फूलांणी मांमांनूं कह्यो–"थे पाछली रातरी धाह दे सासता रोवो छो सु थांनूं इतरो कासूं दुख छै[17] ?"

---

1 कौन था । 2 मेरी मां थी । 3 मार देनी थी । 4 बहुत अच्छा काम किया । 5 तू निश्चयपूर्वक पाटनका स्वामी होगा । 6 तेरी बड़ी हुकूमत होगी । 7,8 फिर मूलराजकी मांको खड्डेमें दूर करके, दूसरे दिन जिन राजपूतोंको अपने पक्षमें कर लिया था उन सबको इकट्ठा करके जहां चावड़े नहा रहे थे, वहां उन पर चढ़ कर चला गया । 9 सबको मार दिया । 10 बीज शकुनी था । 11 इतनी पीढियों तक अपने घरसे पाटनका राज्य नहीं जायेगा । 12 जाड़ेचा लाखाको सोलंकी मूलराजने मार दिया उस घटनाकी एक वात । 13 मूलराजका भाई राखाइच जाड़ेचा लाखाका भानजा, लाखाके पास कोलाहकोटमें रहता है (कच्छ-कलाधरमें 'राखाइच'का नाम 'लाखाइत' और 'कैलाहकोट'का नाम 'केराकोट' लिखा है । 'कपिलकोट'से बिगड़ कर 'केराकोट' हो जाना बताया गया है । 14 लाखा जाड़ेचा सोता हुआ पिछली रातको जाग जाता है । 15 जोरसे चिल्ला कर रोता है । 16 लाखाकी हुकूमतका सारा दारोमदार अपने भानजे राखाइच सोलंकी पर है । 17 तुम पिछली रातको बड़े जोरसे निरंतर रोते हो सो तुमको इतना क्या दुःख है ?

लाखे पाछो जवाव तो राखाइचनूं क्यूं दियों नहीं नै आपरी[1] नावरा खास मलाह था तिणनूं कह्यो–"सवारं[2] भांणेज राखाइचनूं नाव वैसांणनै फलांणै विंट मेलनै थे नाव तुरत ल्यावजो उरी[3]।" पछै राखाइचनूं तेड़नै[4] कह्यो–"थे नाव वैसनै एक वार समंदररो तमासो देख आवो।" तरै नाव वैसनै राखाइच दरियावरो तमासो देखण गयो। मलाहे लाखे ठोड़ वताई तठै उतारनै मलाह राखाइचनूं विण पूछियां नाव उरी ले आया[5]। राखाइच उण विंट ऊपर गयो। आगै देखै तो डांडी एक मांणस आवणरी छै,[6] तिण डांडी राखाइच चालियो जाय छै। आगै देखै तो वडी मोहलायत छै,[7] तिण मांहिसूं अपछरा पांच-सात सांम्ही भांणेज! भाणेज! करती आवै छै[8]। राखाइच देख हैरांन हुओ। इण पूछियो–"थे कुण छो[9]? अै मोहल किणरा छै[10]?" तरै उणै अपछराअे कह्यो–"अै मोहल लाखाजीरा छै। म्हे लाखा-जीरी बैरां छां[11]।" नै एकण ढोलिया ऊपर मरद पोढ़ियो छै, तिको दिखायो[12]। कह्यो–"आ लाखाजीरी देह छै।" तरै राखाइच अपछ-रावांनूं पूछियो–"लाखाजी धाह कुण वास्तै दे छै[13]?" तरै उण कह्यो–"लाखोजी पोढ़ै छै तरै लाखाजीरो जीव अठै आवै छै। इण देहमें प्रवेस करनै म्हांसूं हसै-रमै छै। पछै जागै छै तरै जीव उठै आवै छै, तिण वास्तै[14] धाह दे छै।" तरै राखाइच दीठौ–"आ वात सत छै।" तरै राखाइच अपछरावांनूं पूछियो–"अै तो लाखाजीरो मोहल सु तो वात जांणी, पिण ऊपर अै वीजा मोहल दीसै तिकै किणरा छै[15]?" तरै अपछराअे कह्यो–"हमार तो अै किणहीरा न छै,[16] नै वापरै वैर

---

1 अपनी। 2, 3 कल सवेरे भानजे राखाइचको नावमें वैठा कर अमुक टापू पर छोड़ करके तुम नावको तुरंत वापिस ले आना। 4 वुला कर। 5 राखाइचको विना पूछे नाव ले आये। 6 आगे देखता है तो मनुष्योंके आनेकी एक पगडंडी दिखाई दी। 7 आगे वड़ा महल दिखाई देता है। 8 जिसमेंसे पांच-सात अप्सराएं भानजा! भानजा! वोलती हुई सामने आ रही हैं। 9 तुम कौन हो? 10 ये महल किसके हैं? 11 हम लाखाजीकी स्त्रियां हैं। 12 और एक पलंग पर मनुष्य सोया हुआ है, उसको दिखाया। 13 लाखाजी इतने जोरसे क्यों रोते हैं? 14 इसलिये। 15 किन्तु ऊपर ये दूसरे महल दिखाई देते हैं वे किसके हैं? 16 अभी तो ये किसीके नहीं हैं।

सांमरै कांम, धणीरा मुंहडा आगै बाज मरै सु अै मोहल पावै[1] ।" पछै रातै राखाइच उठै रह्यो, नींद आई, सवारै लाखा कनै जागियो[2] । तठा पछै राखाइच उण लोक जांणरी मनमें धारी[3]; नै लाखारै पाट-हड़ो महुवो थो उण चढ़नै पाटख मूळराज कनै गयो[4] । भाईनूं राखा-इच लाखारी सारी ठाकुराईरो भेद बतायो । मूळराजनूं कह्यो– "हमार[5] दीवाळी छै । सारा साथनूं लाखेजी सीख दी छै[6] । कदै वैर वाळणरी मनमें छै तो फलांणी तेरीख वेगा आवजो[7] ।" राखाइच कहनै पाछो आयो । वांसै मूळराज सबळो कटक करनै लाखोजोरो आठ कोट हुतो तठै ऊपर आयो[8] । नै लाखो पायगा आयनै उण घोड़ा ऊपर हाथ फेरियो, रज लागी आई[9] । तरै लाखै कह्यो–" आ तो रज अणहलवाड़ा-पाटणरी छै । इण घोड़ै कुण चढ़ कठी गयो हुतो[10]? तरै पांडव कह्यो–"राखाइच चढ़ गयो हुतो ।" तितरै राखाइच पिण मुजरै आयौ[11] । लाखोजी देख मुळकिया[12] । कह्यो–"भांणेज ! भवां-वळा हुआ[13]?"राखाइच वात कबूल की । तितरै खबर आई, कह्यो– "कटक आयो ।" तरै राखाइच लाखाजीरै मुंहडै आगै सांमरै कांम बापरै वैर बाज मुवो, नै लाखोजी पिण कांम आया नै राखाइच उण लोकनै प्राप्त हुवो ।

↔

---

1 और अपने बापके वैरका बदला लेनेके लिये, स्वामीके कामके लिये स्वामीके सन्मुख लड़ कर मरे वह इन महलोंको पावे। 2 प्रातःकाल लाखाके पास जागा। 3 जिसके बाद राखाइचने उस लोकमें जानेका मनमें निश्चय किया। 4 और लाखाके पास जो जवान महुवा घोड़ा था उस पर चढ़ करके मूलराजके पास गया। 5 अभी। 6 सभी मनुष्योंको लाखाजीने छुट्टी दी है। 7 जो कभी वैर लेनेका बदला लेनेकी मनमें हो तो अमुक तारीख पर जल्दी आ जाना। 8 पीछे मूलराज जबरदस्त कटक तैयार करके लाखाजीका बनवाया हुआ आठ कोट था, उस पर चढ़ कर आया। (सौराष्ट्रमें जाम लाखाने भादर नदीके किनारेके पहाड़ी प्रदेशमें सात किले (कोट) बनवाये थे और इस आठवें कोटका नाम उसने 'आठ कोट' रखा था, जो अब 'आठ कोटके' नामसे पसिद्ध है। आठ कोट, राज कोटसे ३० मील दूर अग्निकोणमें बसा हुआ है। 9 हाथमें रज लग आई। 10 इस घोड़े पर कौन चढ़ कर कहां गया था ? 11 इतनेमें राखाइच भी मुजरा करनेको आया। 12 लाखाजी देख कर मुस्कराये। 13 भानजे ! धोखा विचार लिया ?

वात रुद्रमाळो प्रासाद सिद्धराव करायो तिणरी[1]

राजा सिद्धराव रातै सुवै तरै सुहणा मांहे देखै प्रिथीरो रूप धारनै राजा कनै आवै[2]। कहै–"एक मोनूं ग्रहणो सखरो दीजै[3]। राजा सासतो सुपनो देखै; तरै पंडितां सुपन-पाठीकांनूं पूछियो[4]–"प्रिथी वैररो रूप धार ग्रहणो मांगै छै, सु कासूं कीजै[5] ?" तरै पंडित कह्यो–"प्रथीरो ग्रहणो प्रासाद छै। राज प्रासाद करावो।" तरै राजारै मनमें आई–"जु एक इसड़ो[6] देहुरो कराऊं जिसड़ो[7] म्रत्युलोक मांहे अचंभो हुवै।" सु हमैं देस-देसरा सूत्रधार तेड़ीजै छै। कारीगर देहुरारी जिनस मांड दिखावै छै,[8] पिण राजारै मन काय तरह दाय नावै छै[9]। तिण समै खाफरो चोर नै काळो चोर नांवजादीक छै[10]। तिकै दीवाळीरै दिन जूवै रमिया, तरै खाफरै तो राजा जैसिंघदेरो चढ़णरो पाटहड़ो घोड़ो कोड़ीधज आडियो[11] नै काळे काइक बीजी वस्त आडी छै[12]। काळो सीरोही तीरै आगै उभरणी सहर छै. तठै रहै छै,[13] सु काळो जीतो, खाफरो हारियो, तरै कह्यो–"घोड़ो कोड़ीधज आंण दे[14]।" तरै खाफरै कह्यो–"आवती दीवाळी उरौ आंण देईस[15]।" तरै खाफरो पाटण गयो, मजूररो रूप करनै। घोड़ा कोड़ीधजरै ठांण द्रोवरी पोट ले जायनै सैंधो हुवो[16]। पछै द्रोवरी पोट फिटी करनै ढांणियो हुय रह्यो[17]। घणी खिजमत करै,[18] इण मांहे घणी कळा[19]। राजा सदा कोड़ीधजरै ठांण आवै, सु इणसूं

---

1 सिद्धरावने रुद्रमहालय प्रासाद करवाया जिसकी वात। 2,3 राजा सिद्धराव रातमें जब सोता है तो स्वप्नमें देखता है कि पृथ्वी स्त्रीका रूप धर कर राजाके पास आती है और कहती है कि एक मुझे अच्छा गहना दिया जाय। 4 तब पंडितों और स्वप्न-पाठकोंसे पूछा। 5 सो क्या करना चाहिये ? 6 ऐसा। 7 जैसा। 8 शिल्पी लोग देहरेका चित्र (मॉडल) बना कर दिखाते हैं। 9 परंतु राजाको वे किसी प्रकार पसन्द नहीं आते हैं। 10 उस समय खाफरा चोर और काला चोर प्रसिद्ध हैं। 11 दाव पर लगाया। 12 और कालेने किसी दूसरी वस्तुको दांव पर लगाया है। 13 वहां रहता है। 14 ला कर दे। 15 आने वाली दिवाली पर ला कर दे दूंगा। 16 परिचित हुआ। 17 पीछे दूबकी पोट लाना छोड़ करके घोड़ेकी ठान साफ करनेकी नोकरी पर रहा। 18 सेवा करे। 19 इसमें कला बहुत।

खुसी हुयनै घोड़ा कोड़ीधजरो खाफरानूं पांडव कियो[1]। सु खाफरो घणी खीजमत करै। राजा कोड़ीधजरै ठांण सदा घड़ी दोय बैसे[2] सु राजा देहुरारी वात सदा करै। "कोई उसड़ो[3] कारीगर जुड़ै[4] तो देहुरो कराऊं"। पिण कारीगर जुड़ै नहीं। सु आ[5] वात खाफरो सदा सुणै। दीवाळी निजीक आई तरै खाफरो रात घड़ी ४ गई घोड़ानूं छोड़ नै कोट कुदाय नै ले नाठो[6]। नै राजानूं परभात खबर हुई, पांडव घोड़ो ले नाठो। तरै राजारो साथ कहण लागो "वाहर चढ़ां[7]।" तरै राजा कह्यो "उणनूं कुण आपड़ै[8] ? वांसै को मत चढ़ो[9]।" सु वाहर तो को वांसै चढ़ियो नहीं[10]। नै खाफरो रात पोहर १ पाछली थकी आबू निजीक उठै उतरियो,[11]। जांणियो "हूं तो कुसळै पड़ियो[12]। अठै घड़ी १ बैसां।" यिऊं ही उतर बैठो। तितरै[13] धरती फाटण लागी। तरै इण जांणियो "ओ कासूं ह्वै छै[14]?" सु धरती मांहिथी देहुरो १ नीसरै छै, सु पैहली तो देहुरारा तीन ईंडा[15] सोनारा नीसरिया;[16] पछै सिखर नीसरियो। पछै मंडप धड़ाबंध[17] नीसरियो। तठै घणा देवी-देवता आइ नाटक मांडियो, सु खाफरो पिण जाइ एकै गोख मांहै जाय बैठो। रात घड़ी २ पाछली हुती; तरै नाटक पूरो हूंण लागो। तरै देवता उपरम करण लागा[18] सु खाफरो मांहे बैठो सु देहुरो खिसै नहीं[19]। तरै देवता कहण लागा--"जोवो[20] को मांणस छै।" तरै जोवै तो खाफरो लाधो। तरै देवताए खाफरानूं पूछियो-- "तूं कुण छै ?" तरै खाफरै आपरी वात मांडनै कही। देवतांनूं देहुरारी वात पूछी--"जु ओ देहुरो वळै अठै कदै नीसरै छै[21]?" तरै देवताए कह्यो--"दीवाळीरी रातरै दिन वरस एक मांहै नीसरै छै। एक आज

---

1 सईस बना दिया। 2 बैठता है। 3 वैसा। 4 प्राप्त हो। 5 यह। 6 भाग गया। 7 पीछा करें। 8 उसको कौन पहुँचे ? 9 पीछे कोई मत चढ़ो। 10 इसलिये पीछे वाहर तो कोई नहीं चढ़ा। 11 और खाफरा एक पहर पिछली रात रहते आबूके पास जा कर उतरा। 12 विचार किया कि मैं तो कुशलपूर्वक निकल आया। 13 इतनेमें। 14 यह क्या हो रहा है ? 15 कलश। 16 निकले। 17 सम्पूर्ण। 18 तब देवता लोग देहरेको पृथ्वीमें प्रवेश कराके अदृश्य करने लगे। 19 देहरा खिसकता नहीं। 20 देखो। 21 यह देहरा पुनः यहां कब निकला करता है ?

नीसरियो हुतो नै सवारै परसूं वळै नीसरसी[1] ।" तरै खाफरो देहुरारी गोखैथी परो उठियो[2] । देहुरो परो उपरमियो[3] । खाफरै कोड़ीधज चढ़नै पाटणनूं पाछा उड़ाया[4] । मनमें जाणियो–"मैं सिधराव जैसिंघदेरो लूंण वरस दिन खाधो छै,[5] नै सिधरावरै देहुरारी वोहत चाह छै; ओ देहुरो हूं सिधरावनूं देखाऊं; ज्यूं राजा इसड़ो[6] देहुरो करावै, राजारो प्रथी मांहे अमर नांम रहे।" सु खाफरो दिन घड़ी ४ चढ़तां पाछौ पाटण आयो । घोड़ो ठांण बांधनै सिधरावरै मुजरै आयो । राजा वात पूछी–"कुण कांमनूं गयो हुतो[7] ? पाछो किण विध आयो ?" तरै पैहली तो कोड़ीधज हरियारी[8] वात मांड राजानूं कही । पछै देहुरारी वात कही–"मैं जांणियो रावळै[9] देहुरो करावणरी मनमें चाहि घणी छै । मैं रावळो लूंण घणो खाधो हुतो[10] । मैं आज रातै एक आवूरै कना इसड़ो देहुरो दीठो[11] । आज वळै देहुरो नीसरसी । जांणियो,[12] राजानूं देहुरो दिखाऊं । राज उसड़ो[13] देहुरो करावै, रावळो अमर नांम रहै ।" तरै[14] राजा वात मांनी । तिणहीज[15] घड़ी खाफरो नै सिधराव दोनूं घोड़ै चढ़नै उण ठौड़ आबूरी तळहटी गया । घोड़ो अळगो बांधनै उण ठौड़ जायनै बैठा । वा वेळा हुई,[16] तरै धरती फाटण लागी, देहुरो नीसरण लागो । तरै खाफरो सिधराव सूतो थो सु जगायो । राजानूं देहुरो नीसरतो दिखायो । तितरै[17] देवी-देवता केई आया । आखाड़ो मांडियो । राजानै खाफरो बेऊं[18] झाड़ांसूं[19] नजीक घोड़ो बांध नै देहुरारै गोखै मांहै जाय बैठा । सारो तमासो दीठो । रात घड़ी ४ पाछली रही, तरै देहुरो देवता उपरमण लागा । राजा नै खाफरो देहुरारा गोखै मांही वैस रह्या । देवताए

---

1 निकलेगा । 2 तब खाफरा देहरेके गवाक्षसे उठ कर चला गया । 3 देहरा लोप हो गया । 4 खाफरा कोड़ीध्वज घोड़े पर चढ़ कर उसे वापिस पाटणकी ओर उड़ा दिया । 5 मैंने वर्ष-दिनों तक सिद्धराव जैसिंहदेका नमक खाया है । 6 ऐसा । 7 किस कामके लिये गया था । 8 हर कर ले जाने की । 9 आपको । 10 मैंने श्रीमान्का बहुत नमक खाया था । 11 देखा । 12 विचार किया । 13 वैसा । 14 तब । 15 उसी समय । 16 वह समय हुआ । 17 इतने में । 18 दोनों । 19 वृक्षोंसे ।

दीठो[1]–"रात तो हमैं काई नहीं,[2] देहुरो उपरमैं नही, सु कुण वास्तै[3]?" तरै सारै मिळनै कह्यो–"च्यारूं तरफ देहुरारी देखो, कोई कठैई मांणस तो छै नहीं ?" आगै देखै तो गोखड़ारै मांहै आदमी दोय बैठा; तरै पाछै देवताए जायनै इन्द्रनूं कह्यो–"एक आदमी काल वाळो नै एक को वळै[4] आदमी देहुरारा गोखा मांहै वैठा छै। म्हे तो ऊणानूं कह्यो,[5] थे परा जावो,[6] वे जाय नहीं। "तरै इन्द्र आप राजा खाफरा कनै आयो। इणानूं पूछियो–"थे कुण छो ?" तरै राजा आपरो नांव कह्यो। तरै इन्द्र देवता कह्यो–"रात गळी, थे परा ऊठो,[7] ज्यूं म्हे देहुरो ले जावां[8]।" तरै राजा कह्यो–"म्हारै इसड़ो देहुरो करावणो छै, मोनूं इसड़ा देहुरारो करणहार वतावसो तरै अठाथी हूं उठीस[9]।" तरै देवताए सिधरावनूं गोळी ७ दीनी। कह्यो–"अै गोळी ऊपरा-ऊपर चाढ़सी तिको थांनूं इसड़ो देहुरो कर देसी[10]। "तरै राजा नै खाफरो गोळी लेनै देहुराथी परा ऊठिया। देहरो नै देवता कवळासिया[11]। राजा नै खाफरो पाछा पाटण आया। सिधराव खाफरानूं सिरपाव कोड़ीधज देनै विदा कियो। नै सिधराव कारीगरांनूं देस-देस तेड़ा मेलिया[12]। देस-देसरा कारीगर आय भेळा हुवा। राजा वां कारीगरां आगै गोळी मेली,[13] सु किणही कारीगरसूं गोळी ऊपर गोळी चढ़ै नहीं। राजा सासतो मोहरत थापै, आपरै मन कोई कारीगर मांनै नहीं। तरै मोहरत आघा ठेले सु[14] आ वात सारी प्रिथीमें ही हुई रही छै। सु एक कारीगर हुतो,[15] सु बाप बेटो दोय हुता[16]। सो वे ही चालणरो विचार करण लागा। तरै बाप बेटानूं कह्यो–"वाट वाढ़ो[17]!" तरै बेटो हथोड़ो टांकी

---

1 देवता लोगोंने देखा। 2 रात तो अब शेष है नहीं। 3 सो किस लिये। 4 एक कोई और। 5 हमने तो उनको कहा। 6 तुम चले जाओ। 7 रात वीत गई है, तुम यहांसे उठ कर चले जाओ। 8 जिससे हम देहरेको ले जावें। 9 मुझे ऐसे देहरेका करने वाला वताओगे तब मैं यहांसे उठूंगा। 10 इन गोलियोंको एक के ऊपर जो चढ़ा देगा वह तुमको ऐसा देहरा वना देगा। 11 देहरा और देवता लोग अंतर्धान हो गये। 12 और सिद्धरावने शिल्पियोंको वुलानेके लिये देश-देशोंमें बुलावे भेजे। 13 राजाने उन कारीगरोंके आगे उन गोलियोंको रखा। 14 तव मुहूर्तको और आगे खिसकावे। 15 था। 16 थे। 17 मार्ग काटो।

ले पैंडो वाढै । सु बाप कह्यो–"बेटो परणियो नहीं[1] ।" तरै यूं करतां बाप-बेटानूं तीनै ठोड़ै परणायो[2] सु बेटो उण वातमें क्यूं समझै नहीं । तरै चोथी वेळा[3] वळै[4] बेटानूं परणायो । सु वहू वत्तीस लक्षणी हुती । सु मांटीनूं[5] वैर[6] पूछियो–"थांनूं चार वेळा क्यूं परणाया ?" तरै मांटी कह्यो–"म्हारै बाप मोनूं कह्यो–वाट वाढ़ो ।" तरै वहू कह्यो–"वाटरी थांनूं[7] सुसरोजी कहै तरै तूं यूं कहै–देहुरो आंपै इण भांत करस्यां, इण भांत मांडस्यां । यूं वात करजो ।" नै उण वहू कह्यो–"राजा वे गोळी आगै मेलसी,"[8] तरै उण वहू सात वींटी दी, कह्यो–"गोळी ऊपर वींटी मेलनै बीजी गोळी चाढ़जो[9] ।" पछै कारीगर राजा कनै आया । पछै सिधराव उण आगै गोळी ७ वे आंण मेली[10] । औ बीच वींटी देतो गयो । साते ही गोळी वींटी वीच दियां ऊपरा-ऊपर चढ़ो । सिधराव कारीगरनूं पूछियो–"अै वींटी कासूं[11] ?" तरै कारीगर कह्यो–"अै वीच थर हुसी[12] ।" तरै राजारै जमै-खातरी हुई[13] । उणै कारीगरां देहुरो तयार कियो । वरस १६ देहुरो करतां लागा । कई हजारां कारीगर लागता ।

संमत १७१५रा वैसाख मांहै महाराजा श्री जसवंतसिंघजीनूं गुजरातरो सूबो हुवो । संमत १७१७रा भादवा मांहै मुं० नैणसीनूं हजूर बुलायो,[14] तरै भादवा वदि ७ मुं० नैणसीरो सिधपुर डेरो हुवो । सु सिधपुर भलो सहर छै । सिधराव आपरै नांव नवो वसायो नै पूरवसूं वांभण उदीच वेदिया १००० तेड़ायनै[15] गांव ५००सूं सिधपुर दियो । गांव ५०० सीहोररा दिया, सेत्रूंजा कनै[16] दिया ।

रुद्रमाळो वडो प्रासाद करायो हुतो, सु पातसाह अलावदी पाड़ियो[17] । तोही[18] कितरोएक प्रासाद अजेस छै[19] । गांव आगै

---

1 बेटा विवाह किया हुआ नहीं । 2 तब इस प्रकार करते हुए बापने बेटेका तीन स्थानोंमें विवाह किया । 3 वार, दफा । 4 पुनः । 5 पति । 6 पत्नी । 7 तुमको । 8 रखेगा । 9 गोलीके ऊपर छल्ला रख कर दूसरी गोली चढ़ा देना । 10 लाकर रखी । 11 ये छल्ले किस लिये ? 12 ये वीचमें तह होंगे । 13 तब राजाको तसल्ली हुई । 14 मुंहता नैणसीको महाराजाने बुलवाया । 15 बुला कर । 16 पास । 17 जिसको बादशाह अलाउद्दीनने गिरवाया । 18 तब भी । 19 अब भी स्थित है ।

उगवणनूं फळसैं सरस्वती नदी छै[1] । तिण ऊपर प्राची माधवरो देहुरो करायो हुतो । घाट बंधायो हुतो । सु देहुरो तो मुगळे पाड़ियो नै घाट बंधायो हुतो सु अजेस छै। तठै सको[2] सिनांन करैं छै । घाट ऊपर बंगळो १ किणही तुरक करायो छै । सिधपुर पाटणथा कोस १२ छै । सिधपुर हमैं पाटण वांसै छै[3] । सिधपुररै तफै गांव ५२ लागैं छै[4] । घर २००० वांणियांरा छै । घर १०० ओसवाळांरा छै । बीजा डीसावाळ पोरवाड़ छै[5] । घर ७०० बांभण[6] वसैं छै । बीजा मुसलमांन बोहरा १००० वसै छै । रुपिया २५००० उपजतांरी ठोड़ छै[7] । सिधपुरथी कोस ११ बिंदसरोवर वडो तीरथ छै[8] । सरस्वती नदी छै । पूंजा साठियारी धरती छै । तठै भाखरां मांहै कोटेस्वर महादेव छै[9] । तठै एक आंवारो व्रच्छ छै[10] । तिणरी जड़ां मांहिसूं प्रगट हुवा, तठै आंबावरा भाखरांरो पांणी आवै छै[11] ।

कवित सिधराव जैसिंघदेरा देहुरारा, लल्ल भाटरा कह्या[12]—

थर सो चवदह माळ[13] थंभ सत-सहस निरंतर ।
सौ-अढ़ार[14] पूतळी जड़ी हीरां मांणक वर ।।
तीस-सहस धजडंड[15] कणै[16] सान्नन्त[17] निहाळै ।
सत्तर-सौ गय[18] तुरी[19] लल्लगुण रुद्र संभाळै ।।
एतला[20] पेख[21] अचिरज हुवै, रोमंचै सुर नर स्रवै[22]।
सु प्रासाद कीध जैसिंघ ते, टगमग चाहै चक्कवै[23] ।।१।।
दिस गयंद गड़ीयड़ै सीह खिण-खिण गुंजारै ।
कणै कळस भळहळै मंड ऊडंड संभारै ।।

---

1 गाँवके आगे पूर्व दिशा द्वार पर सरस्वती नदी है। 2 सब कोई। 3 सिद्धपुर अब पाटनके अधिकारमें है। 4 सिद्धपुरके नीचे ५२ गाँव लगते हैं। 5 दूसरे डीसावाल पोरवाड़ बनिये हैं। 6 ब्राह्मण। 7 रुपये २५०००की आमदनीका स्थान है। 8 सिद्धपुरसे आध कोस पर विन्दु सरोवर बड़ा तीर्थ है। 9 जहां पहाड़ोंमें कोटेश्वर महादेव हैं। 10 वृक्ष। 11 जहां अंबाजीके पहाड़ोंका पानी आता है। 12 लल्ल भाट रचित सिद्धराव जयसिंहदेवके रुद्रमाल देहरेके कवित्त। 13 चौदह मंजिल। 14 अठारह सौ। 15 ध्वजा-दंड। 16 सोनेके। 17 लता, फूलपत्तोंसे युक्त। 18 हाथी। 19 घोड़े। 20 इतने। 21 देख कर। 22 सब ही। 23 चक्रवर्ती राजा भी एकटक देखना चाहते हैं।

नाचै रंग पूतळी इक गावैं द्रक वावैं[1] ।
तिण पर सुर उच्छलंग संख सवदह ळावैं ॥
पेखवै सुरनर सयल पर धंमधमंत सुर उच्छलग ।
तिण कारण सिद्ध नरेंद्र सुण ब्रखभ तेणथी गो डरग[2] ॥२॥
सरग[3] यंद्र[4] सल[5] हीयै राव पायाळै[6] वासग[7] ।
मात लोक[8]नूं राव कहां हव ओपम कासग[9] ॥
हेम सेत मंझार न को हिव[10] अत्थ[11] न रावह ।
इत्थ चवत्थो[12] राव हुवत जंपियै सरावह ॥
त्रिण राव त्रिणेही भवणपति, सिद्ध लल्ल इम उच्चरै ।
इत्थ चवत्थो राव हुवै, तो दिव जळतो कर धरै ॥३॥
उंदर दर खण मरै,[13] पैस भोगवै भुयंगह ।
हळ वहि मरै वहिल्ल,[14] हरी जव चरै तुरंगह ॥
सूंव[15] धन संचइ मरै, वीर विद्रवै विवह पर ।
पंडित पढ़ गुण मरै, मूढ़ भूचैं रायां हर ॥
सूजांण राय गूजर धणी, करां वीनती क्रम सुत्र[16] ।
हम पढ़ां गुणह पावै अवर, कहा परख जैसिंघ तुअ ॥४॥
वीस तीस चाळीस साठि सित्तर सितहत्तर ।
भट्ट आंण समप्पिया, सिद्ध केकांण[17] विवह पर ॥
वीस ढाल दस ढोल तीस नेजा इक डंडह ।
छत्र ढाळंत गैघटा[18] दिद्ध जैसिंघ नरंदह ॥
मारियो दळद्र[19] दस लक्ख दे, इम उपाय अंकुश कियो ।
हड़हड़ै भट्ट ताहरै[20] हस्यो सिद्धराव एतो दियो ॥५॥

1 नेत्र चलाती है। 2 जिससे डर गया। 3 स्वर्ग। 4 इन्द्र। 5 शल्य रूप। 6 पातालमें। 7 वासुकी। 8 मृत्युलोक। 9 किससे। 10 अब। 11 वन। 12 चौथा। 13 चूहा बेचारा बिलको खोद कर मरता है। 14 बैल। 15 कृपण। 16 पुत्र। 17 घोड़ा। 18 हाथियोंकी घटा। 19 दारिद्रय। 20 तव।

वि०—इस एकादश रुद्र महालयके संबंधमें कहा जाता है कि इसका मुख्य मंडप इतना विशाल था कि इसमें १६०० स्तम्भ थे और इस पर चौदह करोड़ सुवर्ण मुद्रायें खर्च हुई थीं। इसका अनुपम शिल्प, विशालता और स्थापत्य-कौशल अब भी उसके खंडहरोंमें देखा जाता है। इस रुद्र महालयको गुजरातके महाराजा मूलराज सोलंकीने बनवाना प्रारंभ किया था जो उसके प्रसिद्ध पौत्र सिद्धराज सोलंकीके समयमें संम्पूर्ण हुआ था। इस विख्यात महालयके ११ खंडोंमें ११ ज्योतिर्लिंग स्थापित थे।

वात सोलंकियां खैराड़ांरी

जाजपुर रांम कुंभा खैराड़ारो बैसणो[1]। फूलियाथी[2] कोस १२, मांडलगढ़थी कोस ११। गांव ६५, दांम ४१०१६५, रुपिया १०४७५४।।।)५[3]। १ मांडलगढ़ नंदराय बालणोत सोळंकियांरो उतन। अै महारांणारा चाकर। जिण[4] वरस अकबर पातसाह रिणथंभोर लेनै आघो[5] डेरो चित्तोड़ दिसा[6] कियो, तद सोळंकियै भांनीदास, बलूहुळ वांहिजथा गढ़ छोड़ छांनै नास गया[7]। गढ़ पातसाह लियो। मांडलगढ़ वडी ठोड़, गढ़ ऊपर पांणी घणो। आगै सोळंकियांरै गढ़ ऊपर वडी वस्ती हुती। घणा महाजन गढ़ ऊपर वसता। ज्यांनरा देहरा घणा गढ़ ऊपर छै[8]। संमत १७११ पातसाह जहांगीर चीतोड़रो गढ़ पड़ायो। परगना ४ रांणारा लिया। तिणांमें[9] ओ[10] गढ़ लेनै रावळ रूपसिंघ भारमलोतनूं दियो। पछै रूपसिंघ आपरी वस्ती सूधो गढ़ ऊपर जाय वसियो हुतो। संमत १७१४रा जेठमें रूपसिंघ कांम आयो। गढ़ छूटो।

१ भांनीदास।
२ बलू भांनीदासरो। २ वणवीर।
३ नंदो।
४ साहिबखांन।
५ राव मनोहर।
४ सांईदास।
५ मनोहर।

१ सांकरगढ़ मांडलगढसूं कोस १२।
१ केकड़ी सोळंकियां भूणगोतांरो उतन।
१ रांमगढ़ जाजपुरसूं कोस १२।

---

1 जहाजपुरमें रामकुंभा खैराड़ेका निवास-स्थान। 2 फूलियासे। 3 ६५ गाँव जिनकी रेख दाम ४१०१६५ अर्थात् रु० १०४७५४।।।)५ थे। 4 जिस। 5 आगे, दूर। 6 ओर। 7 पीछेकी ओरसे गुप्त रूपसे गढ़को छोड़ कर भाग गये। 8 गढ़ ऊपर जैनोंके बहुत मंदिर हैं। 9 जिनमें। 10 यह।

मांडलगढ़सूं अै सहर इतरा कोस छै[1]—

१७ चीतोड़ ।	२८ वधनोर ।
४५ अजमेर ।	१८ वेघम ।
१७ भैंसरोड़ ।	११ जाजपुर ।
२२ बूंदी ।	

१ तोडो नागरचाळरो । अो सोळंकियांरो आद उतन छै[2]। सोळंकी जिकै जठै छै तिकै सारा तोडारा ऊठिया गया छै[3]। तोडो निपट वडी ठोड़ । तोडारा धणी राव कहावता । अै सोळंकी वाल्हणोत[4]।

१ तोडड़ी सोळंकियां महिलगोतांरो उतन[5]। मालपुरो तोडड़ीरा परगनारो गांव माल पंवार वसायो । नवो सहर कदीम सोळंकियांरी ठाकुराई । तोडड़ी राव सुलतांण इणां महिलगोतां मांहै[6]।

सोळंकियांरै पीढ़ियांरी विगत—

१ आद नारायण	२ कमळ ।
३ ब्रह्मा ।	४ धोमरिख ।
५ चाच ।	६ वाळग ।
७ सुकर ।	८ अरजन ।
९ अजैंपाळ ।	१० देपाळ ।
११ राज ।	१२ मूळराज ।
१३ द्रोणगिर ।	१४ वल्लभराज ।
१५ भीम ।	१६ करन ।
१७ सिधराव ।	१८ ईतपाळ ।
१९ कीतपाळ ।	२० वाळप ।
२१ वोहड़ ।	२२ सांगो ।

---

1 मांडलगढ़से ये शहर इतने कोस हैं। 2 यह सोलंकियोंका आदि निवास-स्थान है। 3 सोलंकी जहां भी हैं वे सभी तोडासे उठ कर गये हैं। 4 ये वाल्हणोत सोलंकी कहलाते हैं। 5 महिलगोता सोलंकियोंका निवास-स्थान तोडड़ी गाँव है। 6 तोडड़ीका राव सुरताण इन महिलगोता सोलंकियोंमेंसे है।

२३ गोयंदराज । २४ कांनड़ ।
२५ महिलूरै उतन तोड़ो[1] २६ दुरजणसाळ ।
२७ हरराज । २८ राव सुरतांण ।
२९ ऊदो । ३० वैरो ।
३१ ईसरदास ३२ राव दळपत ।
३३ राव अणदो । ३४ राव स्यांमसिंघ तोडड़ी उतन ।
३५ राव महासिंघ ।

वात

राव सुरतांण हरराजरो, तोडड़ी छोडनै रांणा रायमल कनै चीतोड़ आयो, तरै रांणै वधनोर गढ़ दरोबस्त पटै दियो । पछै रांणा रायमलरो टीकाइत बेटो प्रथीराज उडणो राव सुरतांणरी बेटी तारादे परणियो[2] । प्रथीराज रायमल जीवतां विस हुवो, पछै मुंवो[3] । पछै मुदायत रांणै रायमल जैमलनूं कियो,[4] तिको राव सुरतांणनूं जोर कुमया करै[5] । इणै तो घणी ही हळभळ की,[6] पिण जैमल मांनै नहीं, पग पड़ियो आवै[7] । तरै जैमल कटक करनै वधनोर ऊपर आयो । राव सुरतांण आपरा उचाळा भरनै नीसरियो.[8] नै सांखलो रतनो रावरै साळो पिण हुतो, परधांन पिण हुतो, इणनूं पैहली जैमल कनै मेलियो हुतो, सु इण तो घणी ही मीठी वात कही[9] । जैमल कहै–"थारी बैहननूं तो बचियांरा घोड़ांरी पूंछ बंधाईस[10] । "तरै इणही कूं कह्यो[11] । जैमल जोर मांहै मावै नहीं । वधनोर आयो । गांव तो, आगै आया तिणै कह्यो, सूनो छै[12] । इतरै रात पड़ी[13] । सारै वडे ठाकुरे कह्यो--

---

1 महिलूका निवासस्थान तोड़ा । 2 तारादेसे विवाह किया । 3 पृथ्वीराजको रायमलके जीते जी विष दे दिया गया था, जिससे वह मर गया । 4 बाद में राणा रायमलने अपना उत्तराधिकारी जयमलको बनाया । 5 जो राव सुरतान पर बहुत ही अवकृपा रखता है । 6 इसने बहुत ही खुशामद की । 7 क्रोधसे पांव पछाड़ता है । 8 राव सुरतानने वहांसे उचाला कर दिया (सपरिवार वहांसे निकल गया) । 9 सो इसने तो बहुत ही खुशामद की । 10 तेरी बहिनको तो बचियोंके घोड़ोंकी पूंछसे बंधवाऊंगा । 11 तब इसने भी कुछ कहा । 12 जो लोग आगे आये थे उन्होंने कहा कि गांव तो सूना पड़ा है । 13 इतनेमें रात पड़ गई ।

"डेरा करो, सवारै गाडांरो घंस लेस्यां, वांसै जास्यां[1] ।" जैमल घणो कस मांहै कहै[2]--"मुसालां घणी करो, मुसालां हाथियां ऊपर झालनै चढ़ो, वांसै गाडांरै खड़ो[3] ।" पग गाडांरा लेनै मुसालांरै चांनणै आप घुड़वैहल बैसनै वांसै खड़िया,[4] सु गाडांनूं गांव अटाळी, वधनोरसूं कोस ७, तठै जाय पोहता[5] । फोज नजीक आई । तठै राव सुरतांणरी बैर[6] सांखली कह्यो--"रतना भाई ! दीसै छै, वंध पड़ीजसी[7] । राणै कही थी सु हूती दीसै छै[8] ।" तरै रतनै कह्यो--"चीतोड़रो धणी आरंभरांम छै[9] । करण मतै सु करै ।" आ वात कहिनै सांखलै रतनै एकल असवार कटक सांमा खड़िया,[10] अमल कियो,[11] घोड़ारो तंग लियो, आधरै-आधरै आइ फोज मेवाड़री भेळो हुवो[12] । रात आधी ऊपर गई छै । जैमल आकड़सादा नै सथांणै वीच आवतो हुतो, घुड़वैहल बैठो । मेवाड़रा वीर सारा ऊंघता जाता छा । सांखलो रतनो मुसालांरै चांनणै घुड़वैहल नजीक आयनै घोड़ो तातो करनै जैमलनूं वोलायो, कह्यो--"राज ! सांखलो रतनो मुजरो करै छै ।" घोड़ो खुरी करनै जैमलरी छाती मांहै बरछीरी दी सु पैलै कांनै नीसरी[13] । बरछी एक दोय वळै वाही[14] । जैमल समार हुवो[15]। कांम सीधो[16]। पछै रांणारै साथ सांखला रतनानूं पण मारियो ।

---

1 सभी बड़े ठाकुरोंने कहा—यहीं डेरे लगा दो, सवेरे गाड़ियो समूह लेकर पीछे जायेंगे । 2 जयमल अधिक क्रोधमें कहता है । 3 बहुतसी मशालें तैयार करो, मशालें पकड़ कर हाथियों पर चढ़ो और गाड़ोके पीछे चलाओ । 4 पीछे चलाये । 5 जहां जाकर उन्हें पहुंचे । 6 स्त्री । 7 रतना भाई ! दिखता है कि वंधनमें पड़ जायेंगे । 8 राजाने कहा था सो ही होती दिखती है । 9 चित्तोड़का स्वामी जो चाहे सो करनेमें समर्थ है । 10 रतना अकेला ही सवार होकर सेनाके सामने गया । 11 अफीम लिया । 12 सावधानीसे धीरे-धीरे आकर मेवाड़की सेनामें आ मिला । 13 घोड़ेको पिछले पावों पर खड़ा करके जयमलकी छातीमें बरछी ऐसी जोरसे मारी कि पीठकी ओर निकल गई । 14 एक दो वार बरछीके और कर दिये । 15 जयमल समाप्त हुआ । 16 काम सिद्ध हुआ ।

गीत साखरो[1]—

चढ़ सांखला जुड़ पाड़ जैमल, प्रांण पौरस दाख ।
रावरै दळ तुंहीज रूपक. रूप रतना राख[2] ॥१॥

वात

जैमल रतनो बेऊं[3] कांम आया । फोज उठाथी पाछी वळी[4] । जैमलनूं दाग आकड़सादै सथांणै वीच हुवो[5]। वधनोररै देस मेर गूजर सदा वसता । हमैं जाट ही वधनोररा गांवां मांहै छै, सु कहै छै—"म्हे राव सुरतांणरी वसीरा[6] छां ।"

वात सोल्ंकी नाथावतरी

मूळ अै तोडारै सोळंकियां मिळै । पछै इणांरै भाई बंटै नैणवाय आई, सु भोजावत नैणवाय मुदायत[7] धणी हुता । तिणांनूं नाथावतां मांहै राघोदास सादूळोत वडो रजपूत राहवेधी[8] हुवो, सु भोजावतांनूं धकाय काढ़िया[9] । भोमियां वंट आप लियो । तठा पछै राघोदासरै बेटो नाहरखांन भलो रजपूत हुवो । तिणनूं राव रतन बूंदीरो रु० ६००००)रो पटो दियो । इणांरी वसी बूंदीरै हूंगोरी सूहतै हुती[10]। नाथावतांरी बूंदीरी प्रोळ वडी तरवार राव रतन काळ कियो,[11] तरै सो नाहरखांन राघवदासोत पातसाह जिहांगीररै चाकर हुवो । नैणवाय जागीरमें पाई । हमैं नाहरखांनरो बेटो सूर छै सु नैणवाय वसै छै[12] । नाहरखांनरा कराया मोहळ,[13] वाग छै । कितरी ही जमी

---

1 साक्षीका (यशका) छंद । 2 हे सांखला रतना ! तूने जयमल पर चढ़ करके अद्भुत बल-पौरुष दिखाया और उसे मार गिराया । राव सुरतानकी सेनामें तू बड़ा यशधारी हुआ और वीरगतिको प्राप्त कर कीर्तिमान् हुआ । (इस छंदके प्रथम पादका पाठान्तर एक अन्य प्रतिमें—'समवड़ सांखला जैमल्ल' है) । 3 दोनों । 4 फौज वहांसे पीछी लौट गई । 5 जयमलका दाहसंस्कार आकड़सादा और सथाणा गांवोंके बीचमें हुआ । 6 करमुक्त जागीरी । 7 मुख्य । 8 दूरदर्शी । 9 भोजाके वंशजोंको मार भगाया । 10 इनकी वसी (जागीरी) बूंदी राज्यके हूंगोरी-सूहतेमें थी । 11 राव रतन मर गया । 12 अब नाहरखानका बेटा सूरसिंह नैणवायमें रहता है । 13 महल ।

पातसाहजीरी दीवी पावै छै। रु० १) टको १ भूमिया वंटरो सारै परगनैमें पावै छै[1]।

वात सोलंकी रांणारै वास देसूरीरा धणियांरी[2]

सोळंकियांसूं पाटण छूटी, तरै भोजो देपावत सीरोहीरै गांव लास मुणावद वसियो[3]। तिण[4] नै[5] सीरोहीरै धणी राव लाखै माहोमांही अदावद[6] हुई। पछै वेढ़ हुई[7]। भोजो वेळा ५ तथा सात वेढ जीती। राव लाखो हारियो। पछै राव लाखै ईडररो धणी मदत तेडियो[8]। ईडररै धणी हकीकत राव लाखानूं पूछी–"थे भोजा आगै वेढ वेळा ५ तथा ७ हारी सु कासूं विचार छै[9] ?" तरै राव लाखै कह्यो–"वेढ भालांरी सूअर करनै इण भांत दौड़े सु मांहरै साथरा पग छूट जाय।" तरै ईडररै धणी कह्यो–"हिमरकै आंपै ही खेड़ांरी बाघण करस्यां[10]।" पछै राव सीरोहीरो नै ईडररो भेळा हुय लास ऊपर आया। इण वेढ सोळंकी भोजनूं मारियो[11]। पछै इणांसूं लास छूटी। पछै अै मेवाड़ आया। कुंभळमेर कनै गाडा छोड़नै रांणै रायमलरै मुजरै गया। तिण दिन[12] देसूरी मादड़ेचा चहवांण रहता, सु रांणारा गैरहुकमी हुवा हालता[13]। पछै रांणै रायमल कँवर प्रथीराज इणांनूं आ ठोड दिखाई, पछै इणेसो रायमल सांवतसी एक वार तो उजर कियो,[14] अै मांहरै सगा छै[15]। पछै रांणै कह्यो–"मांहरै दूजी ठोड़ देणनूं काई नहीं[16]।" पछै इणै वात कबूल की[17]। पछै मादड़ेचा आलणरा आदमी १४० सु कूट-मारनै इणै आ धरती लीवी[18]।

---

1 सारे परगनेमें एक रुपये पीछे एक टका भूमिया भागका मिलता है। 2 मेवाड़के राणाके यहां सोलंकियोंका देसूरीके जागीरदार वन कर रहनेकी वात। 3 तव देपाका वेटा भोजा सिरोही राज्यके गांव लास-मूणावदमें आकर रहा। 4 उसके। 5 और। 6 शत्रुता। 7 फिर लड़ाई हुई। 8 फिर राव लाखाने ईडरके स्वामीको मददके लिये वुलाया। 9 सो क्या वात है ? 10 इस वार अपन भी इसी प्रकार लड़ाई करेंगे। 11 इस लड़ाईमें सोलंकीने भोजको मार दिया। 12 उन दिनोंमें। 13 सो राणाकी अवज्ञा करते रहते थे। 14 आपत्ति की। 15 ये हमारे संबंधी हैं। 16 हमारे पास दूसरी जगह देनेको कोई नहीं है। 17 पीछे इन्होंने उस वातको स्वीकार कर लिया। 18 पीछे मादड़ेचा आलणके आदमी १४० जिनको मार-कूट कर इन्होंने इस धरतीको ले लिया।

१ भोजो देपावत ।
२ अभवणो ।
३ पातो ।
४ रायमल ।
५ सांवतसी ।
६ देवराज ।
७ वीरमदे ।
८ जसवंत ।
९ दलपत ।

गांव १४० देसूरीरो पटो कहीजै, तिणमें अै वडेरी ठोड़[1]—

१२ गांव आगरियारा ।
१२ गांव वांसरोटरा ।
१२ गांव धांमणियारा ।
१२ गांव सेवंत्रीरा ।
१२ गांव देसूरीरा ।
१२ गांव ढोलांणारा ।
८ गांव गोढ़वाड़रा ।
१ आंनो । १ करनवास । १ वांसड़ो । १ माडपुरो ।
१ केसूली । १ गांथी । १ गोढ़लो । १ चावंडेरो ।

इति सोळंकियांरी ख्यातवार्त्ता संपूर्ण ।
लिखतं वीठू पनो सीहथळरो ।

1 देसूरीके पट्टेमें १४० गांव, जिनमें बड़े ठिकाने ये हैं ।

अथ कछवाहांरी ख्यात लिख्यते ।

वात राजा प्रथीराजरी

प्रथीराज वडो हर-भगत हुवो । द्वारकाजीरी जात[1] जांग्ग लागो । मजल[2] एक दोय गयो, तरै श्रीठाकुर सांम्हां आया; प्रथीराजनूं फुरमायो–"म्हैं जात मांनी, तू पाछो वळ,[3] तू अठै थको घणी वंदगी करै छै, सु हूं जातसूं इधकी मांनूं छूं[4] ।" तरै राजा कह्यो–"हूं रावळा[5] हुकमसूं पाछो वळीस,[6] पण लोक आ वात मानसी नहीं ।" तरै श्रीठाकुर हुकम कियो–"थारै मन मांनै सो मांग ।" तरै प्रथीराज अरज की–"म्हारा खवां चक्र ह्वै पड़ै,[7] नै अठै महादेवरो देहरो छै तठै गोमती समुद्ररो संगम ह्वै[8] ज्यूं सारा जात्री सिनांन करै ।" तरै प्रथीराजरा खवां चक्र पड़िया; महादेवरै देहरै गोमती समुद्ररो संगम हुवो । आ वात सारै हिंदुस्थांन सांभळी । तरै रांणै सांगै सुणी, तरै राणै जांणियो–"इसो[9] हरभगत राजा छै तिणरो किणी सूल दरसण पाऊं, वड़ी वात ह्वै[10] ।" तरै विचार कियो–"जु बेटी परणाऊं तो प्रथीराज अठै आवै[11] ।" तरै रांणै प्रथीराजनूं नाळेर मेलियो[12] । पछै राजा परणीजणनूं आयो,[13] सु राजा प्रथीराज ठाकुररी मांनसी सेवा करतो हुतो; नै रांणा सांगारो बेटो तेड़णनूं आयो,[14] सु ओ वांसाथी बोलियो,[15] सु राजा सोनैरै कटोरै मन मांहै श्रीठाकुरनूं सिखरण आरोगावतो छो,[16] सु कंवर वांसाथी बोलियो; राजा फिर पाछो दीठो,[17] कटोरो सिखरण भरियो राजारा हाथ मांहैसूं छिटक पड़ियो । दुनी सोह[18] देख हैरान हुई; राणै आ वात सुणी, राणो आप पगे लागो, सु राजा वडो हरभगत हुवो ।

---

1 यात्रा । 2 मंजिल । 3 तू पीछा लौट जा । 4 तू यहां रहते हुये भी वहुत वंदगी करता है जिसे मैं यात्रासे भी अधिक मानता हूं । 5 आपका । 6 लौटूंगा । 7 मेरे कंधो पर चक्रोंके चिन्ह हो जायँ । 8 हो जाय । 9 ऐसा । 10 जिसका किसी प्रकार दर्शन पा लूं तो वड़ी वात हो । 11 जो मैं अपनी कन्या व्याह दूं तो पृथ्वीराज यहां आ जावे । 12 भेजा । 13 पीछे राजा विवाह करनेको आया । 14 वुलानेको आया । 15 सो यह पीठकी ओरसे वोला । 16 सो राजा श्री ठाकुरजीको सोनेके कटोरेमें सिखरनका भोग लगवा रहा था । 17 राजाने पीछेकी ओर फिर कर देखा । 18 सव ।

चवदै-चाळ ढूंढ़ाहड़ कहीजै, तिणरो मेळ गांव १४४०[1]

३६० आंबेर ।

३६० अमरसर ।

३६० ञाटसू ।

१५० दोसा ।

५० मोजावाद, नीवाई, लवाइण ।

पीढ़ी कछवाहांरी, भाट राजपांण उदैहीरै मंडाई तिंणरी नकल छै[2] ।

१	आद श्री नारायण ।	१८	धुंधमार ।
२	कमळ ।	१९	इंद्रस्रवा ।
३	ब्रह्मा ।	२०	हरजस ।
४	मरीच ।	२१	कुंभ ।
५	कस्यप ।	२२	सांसतव ।
६	सूर्य ।	२३	अक्रतासु ।
७	मनु ।	२४	पासेनजित[4] ।
८	इक्ष्वाकु ।	२५	जोबनारथ ।
९	संसाद ।	२६	मांनधाता ।
१०	काकुस्त[3] ।	२७	परुपत ।
११	अनेना ।	२८	तृदसत[5] ।
१२	प्रथु ।	२९	सुधानैव ।
१३	वेणराजा ।	३०	त्रिधानव ।
१४	चंद ।	३१	त्रियारोन ।
१५	जोवनार्थ ।	३२	त्रिसाख ।
१६	सखासु ।	३३	राजा हरिस्चंद्र ।
१७	ब्रहदथ ।	३४	रोहितास ।

1 चौदह सौ चालीस गांवोंका समूह 'चवदै-चाळ ढूंढ़ाहड़' कहा जाता है, ('चवदै-चाळ' चौदह सौ चालीसका अपभ्रंश प्रतीत होता है) । 2 निम्नोक्त कछवाहोंकी पीढ़ियां उदहीके भाट राजपाणने लिखवाईं उसकी नकल है । 3 काकुत्स्थ । ४ प्रसेनजित । ५ एक प्रतिमें 'वृहसत' लिखा है ।

३५ हरित ।
३६ चाच ।
३७ विजैराय ।
३८ रुणकराय ।
३९ विक्रसाज ।
४० सुवाहु ।
४१ सगर ।
४२ असमंज ।
४३ अंसमांन[1] ।
४४ दलीप ।
४५ भगीरथ ।
४६ नाभंगराय ।
४७ अंवरीष ।
४८ संधदीप ।
४९ आयोतास ।
५० पांणराज ।
५१ सुदर्थराज ।
५२ अंगराज ।
५३ आसमकराज ।
५४ पहपलकराज ।
५५ सदरथराज ।
५६ इवार ।
५७ वीवर ।
५८ विस्वसेन ।
५९ षटंग[2] ।
६० दीरघबाहु ।
६१ रघु ।
६२ प्रथसवा[3] ।
६३ अज ।
६४ दसरथ ।
६५ श्री रांमचंद्रजी ।
६६ कुस ।
६७ अतिरथ ।
६८ निषगराइ ।
६९ नाल ।
७० नलनाभ ।
७१ पंडरिष्य ।
७२ प्रछेमधन्वा[4] ।
७३ देवानीक ।
७४ अहिनाग ।
७५ सुधन्व ।
७६ सलराज ।
७७ धर्मादि ।
७८ आनंभराय ।
७९ परियत्रराइ ।
८० वालरथ ।
८१ वज्रधांम ।
८२ सुनंगराय ।
८३ व्रद्रीत ।
८४ हरणनाभ[5] ।
८५ ध्रुवसंध ।
८६ सुदर्सन ।
८७ अग्नवरण ।
८८ सिधगराय

---

1 अंशुमान । 2 पट्वांग । 3 पृथुश्रवा । 4 प्रसेनधन्वा । 5 हिरण्यनाभ ।

८९ सुस्तराज[1] ।	११५ समपू ।
९० अमरषण[2] ।	११६ सुधोन ।
९१ सहसमांन ।	११७ लालरंग ।
९२ विश्व ।	११८ प्रासेनजीत ।
९३ व्रयदर्थ[3] ।	११९ क्षुदकराय[4] ।
९४ उरक्रिय ।	१२० सोमेस ।
९५ वछवधराज ।	१२१ नल, नळवरगढ़ करायो ।
९६ प्रतबिंब ।	१२२ ढोलो[5] ।
९७ भांन ।	१२३ लखमन ।
९८ सहदेव ।	१२४ वज्रधांम, ग्वाळेरगढ़ करायो ।
९९ व्रहदा ।	१२५ मांगळराय ।
१०० भूभांन ।	१२६ क्रतराय ।
१०१ प्रतीक ।	१२७ मूळदेव ।
१०२ प्रतक प्रवेस ।	१२८ पदमपाळ ।
१०३ मनदेव ।	१२९ सूर्यपाळ ।
१०४ छत्रराज ।	१३० महीपाळ ।
१०५ ......।	१३१ अमीपाळ ।
१०६ अंतरिस्य ।	१३२ नीतपाळ ।
१०७ भूपभीच्च ।	१३३ श्रीपाळ ।
१०८ आमंत्र ।	१३४ अनंतपाळ ।
१०९ वेहाद्रभाज	१३५ धनकपाळ ।
११० वरदी ।	१३६ क्रमपाळ ।
१११ क्रतांगराज ।	१३७ सिसपाळ ।
११२ रांणजराय ।	१३८ बलिपाळ।
११३ सजोसराय ।	१३९ सूरपाळ ।
११४ चतुरंग ।	१४० नरपाळ ।

1, 2. एक अन्य प्रतिमें 'सुरतराज' लिखा है। एक और दूसरी प्रतिमें सुस्तराज और अमर्षणके बीचमें 'सिंधराज' नाम अधिक लिखा हुआ है। 3 वृहद्रथ। 4 क्षुद्रकराय। 5 'ढोला-मारवण' नामक प्रसिद्ध प्रेम-कथाका नायक।

१४१ गंध्रपाळ ।
१४२ हरपाळ ।
१४३ राजपाळ ।
१४४ भीमपाळ ।
१४५ सूर्यपाळ ।
१४६ इंद्रपाळ ।
१४७ वस्तपाळ ।
१४८ मुक्तपाळ ।
१४९ रेवकाहीन ।
१५० ईसरसिंह ।
१५१ सोढ़देव ।
१५२ दूलहदेव, भांणेज तुंवरनूं ग्वाळेर दियो[1] ।
१५३ हणुमांन ।
१५४ काकिलदेव, आंबेर वसायो[2] ।
१५५ नरदेव ।
१५६ जांनरदेव ।
१५७ पंजुन सामंत ।
१५८ मलयसी ।
१५९ वीजळ ।
१६० राजदेव ।
१६१ कल्यांण ।
१६२ राजकुळ ।
१६३ जवणसी ।
१६४ उदैकरण ।
१६५ नरसिंघ ।
१६६ वणवीर ।
१६७ उधरण ।
१६८ चंद्रसेण ।

१६९ प्रथीराज चंद्रसेणोत, बालबाई बीकानेरी घरे हुई तिणरा वेटा[3]—

१७० राजा भारमल ।
१७० राजा पूरणमल ।
१७० वलिभद्र ।
१७० गोपाळदासरा नाथावत कहीजै ।
१७० पंचाइण ।
१७० जगमालरा खंगारोत नारायसोवाळा
१७० सांगो ।
१७० चत्रभुज ।
१७० भीखो ।
१७० सांईदास ।
१७० सँहसो ।

१७० भींवसी, राजा दो मासरे हुवो तिणरा वेटा[4]—

१७१ राजा रतनसी । १७१ राजा आसकरण ।

---

1 दूलहदेवने अपने तुंवरको ग्वालियर दे दिया । 2 काकिलदेवने आमेर वसाया । 3 चंद्रसेनके पुत्र पृथ्वीराजकी पत्नी वालवाई वीकानेरीकी कोखसे उत्पन्न पुत्र । 4 भींवसी, केवल दो मास तक राजा रह सका, उसके पुत्र ।

१७० राजा भारमल प्रथीराजरो,[1] तिणरा[2] बेटा—

१७१ राजा भगवंतदास । १७१ सुंदर ।
१७१ राजा भगवांनदास । १७१ प्रथीदीप ।
१७१ भोपत । १७१ रूपचंद ।
१७१ लल्हैदी । १७१ परसरांम ।
१७१ सादूळ । १७१ राजा जगनाथ ।

१७१ राजा भगवंतदास राजा भारमलरो, तिणरा बेटा—

१७२ राजा मांनसिंघ । १७२ चंद्रसेण ।
१७२ माधोसिंघ । १७२ हरदास ।
१७२ सूरसिंघ । १७२ वनमाळीदास ।
१७२ प्रतापसिंघ । १७२ भींव ।
१७२ कांन्ह ।

१७२ राजा मांनसिंघरा[3] बेटा—

१७३ जगतसिंघ । १७३ भावसिंघ ।
१७३ सकतसिंघ । १७३ हिमतसिंघ ।
१७३ सबळसिंघ । १७३ कल्यांणसिंघ ।
१७३ दुरजणसिंघ । १७३ स्यांमसिंघ ।

१७३ कंवर जगतसिंघरा बेटा—

१७४ महासिंघ । १७४ जूंझारसिंघ ।
१७४ ततारसिंघ ।

१७४ महासिंघरो[4] बेटो—

१७५ राजा जयसिंघ ।

१७६ रामसिंघ । १७६ कीरतसिंघ ।

कछवाहांरी पीढ़ी[5]

कछवाहा सूरजवंसी कहीजै, त्यांरी विगत[6]—

१ आदि । २ अनाद ।

---

1 पृथ्वीराजका पुत्र। 2 जिसके। 3 के। 4 का। 5 कछवाहोंकी वंशावली (यह दूसरी वंशावली है)। 6 कछवाहे सूर्यवंशी कहे जाते हैं, उनका वंश-विवरण।

३ चांद ।
४ कंवळ[1]
५ ब्रह्मा ।
६ मरीच ।
७ कस्यप ।
८ कासिव[2] ।
९ सूरज ।
१० रुघसूं रुघवंसी कहीजै[3]
११ रघोस ।
१२ धरमोस ।
१३ त्रसिंघ ।
१४ राजा हरिचंद ।
१५ रोहितास ।
१६ राजा सिवराज ।
१७ संतोष ।
१८ राजा रवदंत ।
१९ राजा कलमष ।
२० धुंधमार, चकवै[4] ।
२१ राजा सगर ।
२२ असमंज ।
२३ भागीरथ ।
२४ कउकुस्त[5] ।
२५ दिलीप, दिल्ली वसाई[6]
२६ सिवधांन[7] ।
२७ केवांध ।
२८ अज, अजोध्या वसाई[8] ।
२९ अजैपाळ, चकवै[9] ।
३० राजा दसरथ ।
३१ श्री रांमचंद्रजी ।
३२ कुसथी कछवाहा हुवा[10] ।
३३ बुधसेन ।
३४ चंद्रसेन चाटसू वसाई[11] ।
३५ श्रीवछ ।
३६ सूर ।
३७ वीरचरित ।
३८ अजैवंध ।
३९ उग्रसेन ।
४० सूरसेन ।
४१ हरनांम ।
४२ हरजस ।
४३ द्रढ़हास ।
४४ प्रसेनजित ।
४५ सुसिध ।
४६ अमरतेज ।
४७ दीरघवाह ।
४८ विवसांन[12] ।
४९ विवसत[13] ।
५० रोरक[14] ।
५१ रजमाई ।
५२ जसमाई ।

---

1 कमल । 2 काश्यप । 3 रघुसे रघुवंशी कहे जाते हैं । 4 धंधुमार चक्रवर्ती राजा । 5 काकुत्स्थ । 6 दिलीपने दिल्ली बसाई । 7 शिवधन । 8 अजने अयोध्या बसाई । 9 अजयपाल चक्रवर्ती राजा । 10 कुशसे कछवाहा हुए । 11 चंद्रसेनने चाटसू बसाई । 12 विवस्वान । 13 विवस्वत । 14 रुरुक ।

५३ गौतम ।	६१ राजा कहनी ।
५४ नळराजा, नळवर वसायो[1] ।	६२ देवांनी ।
	६३ राजा उसै ।
५५ ढोलो नळरो[2] ।	६४ सोढ़ ।
५६ लछमरण ।	६५ दुलराज ।
५७ वजरदीप[3] ।	६६ काकिल ।
५८ मांगळ, मांगळोर वसायो[4] ।	६७ राजा हणुं, आंबेर[5] ।
	६८ जोजड़ ।
५९ सुमित्र ।	६९ राजा पुंजन ।
६० सुधिब्रह्मा ।	

कछवाहांरी विगत—

१४ राजा हरचंद, राजा त्रसिंघरो[6] । हरचंदरै रांणी तारादे हुई, कंवर रोहितास हुवो, जिण रोहितासगढ़ करायो[7] ।

३१ श्री रांमचंद्रजी, राजा दसरथजीरै[8] । रांमचंद्रजीरै लव नै कुस हुआ[9] । तिण लव लाहोर वसायो[10] । कुसरा कछवाहा हुआ[11] ।

५५ राजा ढोलो नळ राजारो, जिण गढ़ ग्वाळेर वसायो[12] । ग्वाळेर ऊपर गोलीराव तळाव करायो । जिण ढोलारै बैर १ मारवणी हुई, बंभ राजारी बेटी हुई[13] । १ पंवार भोजारी बेटी हुई[14] ।

५९ राजा सुमित्र मांगळरो, जिण ग्वाळेर राज कियो । ग्वाळेर गढ़ करायो । गोलीराव तळाव गढ़ ऊपर करायो[15]

६४ राजा सोढ़ उसै राजारो । नळवर छोड़ ढूंढ़ाड़ मांहै आय वसियो[16] ।

---

1 नल राजाने नलवर बसाया । 2 ढोला नलका पुत्र । 3 वज्रदीप । 4 मांगलने मांगलोद वसाया । 5 राजा हणु आमेर आ गया । 6 राजा त्रिसिंघका पुत्र । 7 जिसने रोहिताश्वगढ़ बनवाया । 8 राजा दशरथके पुत्र । 9 रामचन्द्रजीके पुत्र लव और कुश हुए । 10 उस लवने लाहोर वसाया । 11 कुशके वंशज कछवाहा कहलाये । 12 राजा ढोला नल राजाका पुत्र जिसने ग्वालियर वसाया । (ग्वालियर ढोलाके पहले वसा हुआ था) 13 उस ढोलाकी एक पत्नी बंभ राजाकी (?) पुत्री मारवणी थी । 14 एक दूसरी पत्नी पंवार राजा भोजकी पुत्री (मालवणी) थी । 15 गोलीराव नामका तालाव गढ़ पर करवाया । (पीढ़ी सं० ५५ में ढोलाके द्वारा गोलीराव तालाब बनवानेके उल्लेखसे यह विरुद्ध है) । 16 नलवर छोड़ कर ढूंढ़ाड़में आकर बस गया ।

६६ राजा काकिल । काकिलरै बेटा ४—

१ हणूंत, आंबेर आयो ।
१ अलधरो, तिणरा मेड़-कछवाहा कहीजै[1] ।
१ रालणरा रालणोत कहीजै[2] ।
१ देलण, तिणरा लाहरका कहीजै[3] ।

७० राजा मलैसी, जिण मलैसीरै रांणी मेलणदे खीचण, अनळ खीचीरी बेटी[4] । जिण पीहरसूं खांथड़िया-प्रोहित गुर आंणिया[5] । पैहली गांगावत था सो दूर किया[6] । मलैसीरै बेटा ४ हुवा—

१ वीजळदे, आंबेर पाटवी[7] ।
१ बालोजी, जिण खेत्रपाळ जीतो । सात तवा वेधिया[8] ।
१ जैतल, जिण आपरा मांसरी बोटी काट तिणसूं आपरै साहिब ऊपर बैठी ग्रीधण उड़ाई[9] ।
१ भींवड़ नै लाखणसी बेऊं[10] पुंजनरा, त्यांरा परधांनका-कछवाहा कहीजै[11] ।

७२ राजादे वीजळदेरो तिणरा बेटा ।

१ राजा कल्यांणदे आंबेर ठाकुर ।
१ भोजराज नै दलो, त्यांरा लवांणका-कछवाहा कहीजै[12] ।
१ रांमेस्वर, तिणरा रांणावत-कछवाहा कहीजै[13] ।
१ सोहो, तिणरा सीहांणी कहीजै[14] ।

---

1 अलधराके वंशज मेड़-कछवाहा कहे जाते हैं । 2 रालणके वंशज रालणोत कहे जाते हैं । 3 देलणके वंशज लाहरका कहे जाते हैं । 3 राजा मलैसीके मेलणदे खीचण रानी जो अनल खीचीकी बेटी । 5 जो अपने पीहरसे खांथड़िया-पुरोहित गुरुओंको साथ ले आई । 6 इसके पहले गांगावत गुरु थे जिनको दूर कर दिया । 7 वीजलदे आमेरका पाटवी राजकुमार । 8 बालोजी जिसने क्षेत्रपालको जीता और लोहेके सात तवोंको एक तीरसे वेध दिया था । 9 जैतल जिसने अपने घायल स्वामीके ऊपर बैठी हुई गिद्धनीको उड़ानेके लिये अपने मांसके टुकड़े डाले और उसको वहांसे उड़ाया । 10 दोनों । 11 जिनके वंशज प्रधानका-कछवाहे कहे जाते हैं । 12 जिनके वंशज लवाणका-कछवाहे कहे जाते हैं । 13 जिसके वंशज राणावत-कछवाहे कहे जाते हैं । 14 जिसके वंशज सीहाणी कहे जाते हैं ।

७३ कल्यांणदे राजादेरो, तिणरा बेटा—

१ राजा कुंतल आंबेर धणी ।

१ रावत अखैराज, तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै[1] ।

१ रावळ जसराजरा हीज पोतरा कहीजै ।

७४ राजा कुंतलरा बेटा—

१ हमीर, जिणरा हमीर-पोता कहीजै[2] ।

१ भड़सी, तिणरा भाखरोत-कीतावत[3] ।

१ आलणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै[4] ।

७५ राजा जुणसीरा बेटा—

१ राजा उदैकरण, आंबेर ठाकुर ।

१ कूंभो, तिणरा कूंभांणी ।

७६ राजा उदैकरणरा बेटा—

१ राजा नरसिंघ, आंबेर टीको ।

१ बालो, तिणरा सेखावत

१ वरसिंघ, तिणरा नरूका ।

१ सिवब्रह्म, तिणरा नींदड़का कछवाहा[5] ।

७८ राजा वणवीर नरसिंघरो,[6] तिको आंबेर टीको । तिणरा राजावत नै वणवीर-पोता कहीजै ।

कछवाहांरी वंसावळीरी विगत—

श्री रांमचंद्रजीरै कुस हुवो, तिण कुससूं कछवाहा कहांणां[7] । राजा सोढ़ल नळवर छोड़ ढूंढाड़ आयो, तिणसूं वंसावळी[8] ।

१ राजा सोढ़ल ।

२ दूलहराव सोढ़लरो ।

---

1 जिसके वंशज धीरावत-कछवाहे कहे जाते हैं। 2 जिसके वंशज हमीर पोता कहलाते हैं। 3 जिसके वंशज भाखरोत कीतावत। 4 जिसके वंशज जोगी-कछवाहा कहलाते हैं। 5 जिसके वंशज नींदड़का-कछवाहा। 6 राजा वणवीर नरसिंहका बेटा। 7 उस कुशके कछवाहा कहे गये। 8 उससे वंशावली लिखी जा रही है।

३ राजा काकिल आंवेर वसायो ।

४ राजा हणूं आंवेर हुवो ।

५ जांनड़दे हणूंरो ।

६ राजा पुंजन चो० प्रथीराजरै सामंत[1] ।

७ राजा मलैसी पुंजनरो । आंबेर टीको हुवो[2] । वेटा ३२ मलैसीरै हुवा छै । पुंजनरा भींवड़ लाखण हुवा, त्यांरा[3] कछवाहा परधांनका कहीजै ।

८ वीजळदे मलैसीरो ।

९ राजादे वीजळदेरो ।

१० राजा कीलणदे राजादेरो । आंवेर टीको हुवो ।

१० हेक[4] भोजराज राजादेरो । तिणरा[5] लवांणा-रा-गढ़-रा-कछवाहा कहीजै ।

१० हेक सोमेस्वर, तिणरा रांणावत कहीजै ।

११ राजा कुंतल कीलणदेरो । आंवेर ठाकुर हुवो ।

११ हेक रावत अखैराज, तिणरा धीरावत-कछवाहा कहीजै ।

११ हेक जरसी रावळ, तिणरा जसरा-पोता कहीजै ।

१२ राजा जुणसो कुंतलरो । आंबेर ठाकुर हुवो ।

१२ हेक हमीरदे, तिणरा हमीर-पोता-कछवाहा ।

१२ हेक भड़सी, तिणरा भाखरोत नै कोतावत ।

१२ हेक आलणसी, तिणरा जोगी-कछवाहा कहीजै ।

१३ राजा उदैकरण जुणसीरो । आंबेर टीकायत ।

१३ हेक कुंभो, तिणरा कुंभांणी ।

१३ हेक बालो, तिणरा सेखावत ।

१३ हेक वरसिंघ, तिणरा नरूका ।

१३ हेक सिवब्रह्मा, तिणरा नींदड़का-कछवाहा कहीजै ।

---

1 राजा पुंजन चौहान पृथ्वीराजका सामंत । 2 आमेरमें तिलक हुआ । 3 जिनके । 4 एक । 5 जिसके ।

१४ राजा उदैकरणरो नरसिंघ आंबेर टीको। तिणरा राजावत कछवाहा।

१५ राजा वणवीर नरसिंघरो। वांसला[1] वणवीर-पोता कहीजै।

१६ राजा उद्धरण।

१७ राजा चंद्रसेण उद्धरणरो। आंबेर टीकाइत।

१८ राजा प्रथीराज चंद्रसेणरो।

१९ राजा भारमल, प्रथीराजरो। आंबेर वडो रजपूत हुवो।

२० राजा भगवांनदास भारमलरो। आंबेर टीकाई[2]। वडो ठाकुर हुवो। अकबर पातसाह घणी मया[3] करी। राव मालदेजी बेटी दुरगावती बाई परणाई थी।

२१ राजा मांनसिंघ महाराजा हुवो। पूरबरो सूबो अकबर पातसाह दियो थो। राव चंद्रसेणरी बेटी आसकंवर बाई परणाई थी। संमत १६०७ पोह वद १३रो जनम। संमत १६७१ दखणमें काळ प्राप्त हुवो।

२२ कंवर जगतसिंघ मांनसिंघरो। अकबर पातसाह नागोर दियो थो। रांणी कनकावती बाई राव रतनसी कनकावतीरी बेटीरो बेटो, कंवर थको हीज मुंवो[4]।

२३ राजा महासिंघ जगतसिंघरो। द्योसा पटै हुतो[5]। मोटा राजाजीरी बेटी रुखमावती बाई परणाई हुती,[6] सु साथै बळी[7]। संमत १६७३ दिखण बालापुर थांणै[8]।

२४ राजा जैसिंघजी, भावसिंघ पछै आंबेर पायो। संमत १६७८, सीसोदिया महारांणा उदैसिंघरो दोहितो। संमत १६६८रा असाढ़ वद १रो जनम। संमत १६७९ राजा श्री सूरसिंघजीरी बेटी मृघावती बाई परणाई हुती[9]।

---

1 पीछे वाले वंशज। 2 टीकायत, गद्दीका अधिकारी। 3 कृपा। 4 कुमारावस्थामें ही मर गया। 5 था। 6 थी। 7 महासिंहके मरने पर साथमें जल कर सती हुई। 8 सम्वत् १६७३में दक्षिणमें बालापुरके थानेमें। 9 सम्वत् १६७९में राजा सूरसिंहकी बेटी मृगावती बाई व्याही थी।

२५ कंवर रामसिंघ ।

२५ कीरतसिंघ ।

२३ जूंझारसिंघ जगतसिंघोत[1] ।

२४ सगरांमसिंघ ।

२४ अनूपसिंघ जूंझारसिंघरो । बुलाकी साहजादो गैवी ऊठियो थो पूरबमें, उण कनै थो[2] । हमैं राजा जैसिंघरै छै[3] ।

२४ प्रथीराज जूंझारसिंघरो ।

२४ किसनसिंघ जूंझारसिंघरो ।

२२ सकतसिंघ राजा मांनसिंघरो ।

२२ सबळसिंघ राजा मांनसिंघरो । पूरब मांहे भटीरी वेढ़ कांम आयो[4] । राव चंद्रसेणजीरी बेटी रायकंवर बाई परणाई थी सु साथै वळी[5] ।

२२ दुरजनसिंघ राजा मांनसिंघरो । पूरबमें भटीरी वेढ़ कांम आयो ।

२३ परसोतमसिंघ, राजा भावसिंघ भेळो रहतो सु रांम कह्यो[6] ।

२६ जैकिसनसिंघ ।

२४ रांमचंदर, राजा बाहदर साथै कांम आयो ।

२४ भारथसिंघ ।

२४ सिवसिंघ ।

२२ राजा भावसिंघ राजा मांनसिंघरो । आंबेर टीको । राजा मांनसिंघ पछै भावसिंघ टीको पायो[7] । वडो महाराजा हुवो । रांणी गोड़रो बेटो । जहांगीर पातसाहरी वार मांहै वडो मयावंत चाकर हुवो[8] । संमत १६३३रा आसोज वदी ३रो जनम । संमत १६७८रा पोह वद ६ ब्रहांनपुर काळ प्राप्त

---

1 जूंझारसिंह जगतसिंहका बेटा । 2 पूर्वकी ओर बुलाकी शहजादा अचानक उठ खड़ा हुआ था, अनूपसिंह उसके पास था । 3 अब राजा जैसिंहके पास रहता है । 4 पूर्वमें भट्टीकी लड़ाईमें काम आया । 5 जो साथमें जल कर सती हुई । 6 पुरुषोत्तमसिंह राजा भावसिंहके साथ रहता था, सो वहीं मर गया । 7 राजा मानसिंहके बाद भावसिंहको राज्य मिला । 8 भावसिंह जहांगीर बादशाहके समय बड़ा कृपा-पात्र सेवक हुआ ।

हुवो[1] । राजा सूरजसिंघरी बेटी ग्रासकंवर बाई परणाई सु साथै बळी । बेटो नहीं । बेटी १ सूरजदे हुई सु राजा जैसिंघजी संमत १६७६ राजा गजसिंघजीनूं[2] परणाई । पछै संमत १६९४रा जेठमें राजा गजसिंघजी काळ कियो तद साथै बळी[3] ।

२२ हिमतसिंघ राजा मांनसिंघरो ।

२२ स्यांमसिंघ राजा मांनसिंघरो ।

२२ कल्यांणसिंघ राजा मांनसिंघरो ।

२३ उग्रसिंघ ।

२१ कांन्ह राजा भगवंतदासरो ।

२१ माधोसिंह राजा भगवंतदासरो । ग्रकबर पातसाहरो ग्रजमेर मालपुरो पटै थो । ग्रांबेररी मोहलांरी प्रोळ ऊपरला झरोखाथी पड़ियो तरै मुंवो[4] ।

२२ सुजांणसिंघ ।

२३ हिंदुसिंघ ।

२२ छत्रसिंघ माधोसिंघरो भांणगढ़ पटै थो । संमत १६८६रै ग्रासाढ़ मांहै खांनजिहां पठांणरी वेढ़ लोहै पड़ियो,[5] पछै वळै किणही उपाड़ियो[6] । पछै वळै पातसाहरै चाकर थो । पछै रांम कह्यो[7] ।

२३ पेमसिंघ छत्रसिंघरो । खांनजिहांरी वेढ़ कांम ग्रायो ।

२४ सूरतसिंघ ।

२४ मोहकमसिंघ ।

२३ ग्रांणदसिंघ छत्रसिंघ साथै कांम ग्रायो ।

२३ उग्रसेन छत्रसिंघरो ।

२३ ग्रजबसिंघ छत्रसिंघरो ।

२३ तेजसिंघ माधोसिंघरो ।

---

1 मर गया । 2 को । 3 राजा गजसिंहजी मरे तब साथमें जल कर सती हुई । 4 ग्रामेरकी महलोंकी पोलके ऊपरके झरोखेसे गिर कर मरा । 5 पठान खानजहांकी लड़ाईमें घायल हुग्रा । 6 तब किसीने वहांसे उसको उठा लिया । 7 फिर मर गया ।

२१ सूरसिंघ राजा भगवंतदासरो । वडो रजपूत हुवो । सीकरीरो कोट अकवर पातसाह करायो तद[1] सूरसिंघरो डेरो कोटरी नींव आई तठै हुतो,[2] सु डेरो सूरसिंघ न उठावै तरै[3] पातसाह कोट वांको कियो, पिण सूरसिंघनूं क्यूंही न कह्यो[4] । वड़ो आखाड़सिध[5] रजपूत हुवो । पातसाह अकवररै वडो चाकर हुवो । मोटै राजारी वेटी जसोदाबाई परणाई थी, जैतसिंघरी वैहन[6] सु साथै वळी ।

कंवर सूरसिंघ भगवांनदासोत सादमै सुलतांन वेढ़ स्याळकोट हुई,[7] जका[8] स्याळकोट, नगरकोट नै अटक वीच छै। उण ठोड़सूं गुजरात[9] पण नैड़ी[10] छै। सादमो-सुलतांन पातसाह हमाऊरो पोतो छै[11]; हंदायलरो भतीज छै[12] । लसकरी कै कमरारो वेटो छै,[13] तिणसूं वेढ़ हुई[14]। सूरसिंघ सादमतनूं मारियो; नै सूरसिंघ कुसळै गयो[15] ।

२२ चांदसिंघ सूरसिंघरो ।

२३ अगरसिंघ ।

२३ अचळसिंघ ।

२४ मनरूपसिंघ ।

२४ गजसिंघ ।

२३ ग्यांनसिंघ ।

२१ प्रतापसिंघ राजा भगवांनदासरो।

२१ वलिरांम राजा भगवंतदासरो ।

२० राजा जगननाथ भारमलरो । वडो महाराजा हुवो । गढ़ रिणथंभोर, तोडो और ही घणा परगना जागीरमें था । तोडै

---

1 उस समय । 2 वहां था । 3 तव । 4 परंतु सूरसिंहको कुछ भी नहीं कहा । 5 युद्ध-विशारद । 6 वहिन । 7 शादमा-सुलतानसे स्यालकोटमें लड़ाई हुई । 8 वह । 9 गुजरात, पंजावका एक प्रान्त । 10 निकट । 11 शादमा-सुलतान वादशाह हुमायूंका पोता है । 12 हिंदालका भतीजा है । 13 लसकरी (असकरी) कामरांका वेटा है । 14 जिससे लड़ाई हुई । 15 सूरसिंहने शादमाको मार दिया और कुशलपूर्वक निकल गया ।

राजथांन[1] । संमत १६०६रा पोस वदी ६रो जनम । संमत १६६५ मांडळ थांणो थो तठै रांम कह्यो[2] । मांडळरा तळाव ऊपर छत्री छै ।

२१ जगरूप कंवर जगनाथरो । कंवर थको हीज दिखणमें अकबर पातसाहरै संमत १६५६ कांम आयो[3] । बेटो कोई नहीं । बेटी १ थी सु राजा गजसिंघजीनूं संमत १६६२ तोडै परणाई कल्यांणदेजी ।

२१ करमचंद राजा जगननाथरो । टीको हुवो । वडो दातार हुवो । सु राजा जगननाथ पछै वरसां ४ सोह जागीर रही[4] । पछै मिलकापुर थांणै रांम कह्यो[5] ।

२२ अभैकरन ।

२१ जसो राजा जगनाथरो ।

२१ वीजळ राजा जगनाथरो, पातसाही चाकर । वांकी बेग मोहबतखांरो रिणथंभोररा सूबा ऊपर थो । पाछो साहिजादो खुरम फिरियो,[6] तरै साहिजादारै हुकमसूं गोपाळदास आइ[7] रिणथंभोररी तळैटी तलक[8] दखल कियो । वांकी बेग गढ़ चढ़ गयो । पाछो साहिजादो नीसरियो[9] नै गोपाळदास गोड़ ही जांण लागो । पाछो वांकी बेग उतरियो,[10] पाछो कियो । पछै रातै गोपाळदास रातीवाहो दियो,[11] तठै वांकी बेग नै वीजळजी कांम आया ।

२१ मनरूप राज जगनाथरो, भीवरो तोडो पटै थो ।

२१ गोपाळसिंघ पातसाही चाकर, तोडो पटै ।

२२ सुजांणसिंघ ।

२३ केसरीसिंघ ।

---

1 राजधानी । 2 वहां मरा । 3 कुंवरपदे ही सं० १६५६में दक्षिणमें अकबर बादशाहके काम आ गया । 4 राजा जगन्नाथके मरनेके बाद चार वर्ष तक सब जागीर उसके पास रही । 5 फिर मलिकापुर थानेमें मर गया । 6 पाछो फिरियो = बागी हुआ । 7 आकर । 8 तक । 9 लौट कर चला गया । 10 फिर बांकी बेग गढ़से उतरा । 11 फिर गोपालदासने रात्रि-आक्रमण किया ।

२३ हरिसिंघ ।

२१ बालोजी राजा जगनाथरो ।

२१ बलकरण राजा जगनाथरो । रावळै रह्यो थो । मेड़तारी रेयां पटै ।

२० भोपत राजा भारमलरो । अकबर पातसाह गुजरात गयो नै मुदफर पातसाह वेढ की तठै मुंदड़ा आगै कांम आयो[1] ।

२० सलेहजी राजा भारमलरो । वडो रजपूत हुवो । पैहली रांमदास ऊदावतरै सलेहदीजीरै बालार थो,[2] पाछो पातसाही चाकर हुवो ।

२० सादूळ राजा भारमलरो ।

२० सुंदरदास राजा भारमलरो ।

२० भगवांनदास राजा भारमलरो ।

२१ मोहणदास भगवांनदासरो ।

२१ अखैराज भगवांनदासरो ।

२२ अभैरांम जागीरी ऊपर मुगल १ मारियो, तिण ऊपर जहांगीर पातसाह अंबखास[3] मांहै रोकियो । कह्यो–"बेड़ी पहर" तरै लोह कर मुंवो[4] ।

२२ स्यांमरांम अखैराजरो । अभैरांम साथै कांम आयो ।

२२ हिरदैरांम अखैराजरो ।

२३ जगरांम, पातसाही चाकर। लवांइण पटै । पैसोररै थांणे[5] ।

२३ रांमसिंघ, उदैहीरै गांव वाघोर रैहतो[6] ।

२२ विजैरांम अखैराजरो ।

१६ भींवराज प्रथीराजरो । रावजी वीकानेरिया लूणकरणजीरो दोहितो[7] ।

---

1 बादशाह अकबर गुजरात गया और मुदफ्फर बादशाहने लड़ाई की उसमें अकबरके सन्मुख काम आ गया। 2 पहले रामदास ऊदावत और सलेहदीके परस्पर संबंध था। 3 दरबार-इ-आमखास। 4 तब तलवार चला कर मर गया। 5 जगराम बादशाही चाकर, लवाएा जागीरमें और पेशावरके थाने पर रहता था। 6 उदैही परगनेके वाघोर गाँवमें रहता था। 7 बीकानेरके राव लूणकरणजीका दोहिता।

२० रतनसी भींवराजरो । रतनसीनूं राजा आसकरण मारियो ।

२१ विक्रमादीत

२१ करण ।

२० राजा आसकरण भींवराजरो । ग्वाळेर राजधांनी । नळवर पटै । श्री ठाकुरांरा महाभगत वैष्णव[1] । राव मालदेवजीरी बेटी इंद्रावती बाई परणाई थी । पछै आसकरणजीरी बेटी मोटा राजाजी परणिया, तिणरै पेटरो राजा सूरसिंघजी[2] ।

२१ राजा राजसिंघ आसकरणरो नळवर राजा हुवो । मोटा राजाजीरी बेटी राईकंवरबाई परणाई थी; संमत १६७१ दिखणमें रांम कह्यो[3] ।

२२ राजा रांमदास राजसिंघरो नळवर पटै । राजा श्री सूरसिंघजी अजमेरमें पातसाह जहांगीरनूं हाथी पेश करनै नळवरनै राजाईरो टीको देरायो[4] । संमत १६९१ रांम कह्यो ।

२३ अमरसिंघ रांमदासरो । नळवर राज टीकै बैठो थो । सकतसिंघ मोटा राजाजीरो दोहितरो बाळक थकां मुंवो तरै नळवर उतरियो[5] ।

२४ जगतसिंघ अमरसिंघोत ।

२२ कल्यांणदास राजसिंघरो । दिखण जायनैं तुरक हुवो[6] ।

२२ किसनसिंघ राजसिंघरो । राईकंवर बाईरा पेटरो[7] ।

२१ जैतसिंघ राजा आसकरणरो ।

२२ मुकंददास जैतसिंघरो । रावळै कुड़कीरो पटो[8] ।

२१ गोरधन राजा आसकरणरो । राव चंद्रसेणरी बेटी कंवळावती बाई परणाई थी ।

---

1 श्री ठाकुरजीका (श्रीकृष्णका) परम वैष्णव भक्त । 2 फिर आसकरणकी बेटीको मोटा राजा उदयसिंहजी ब्याहे जिसके उदरसे सूरसिंहजी उत्पन्न हुए । 3 सम्वत् १६७१में मृत्यु हो गई । 4 राजा सूरसिंहजीने बादशाह जहांगीरको अजमेरमें हाथी नजर करके नरवरके स्वामियोंको राजाकी उपाधि दिलवाई । 5 मोटा राजाजीका दोहिता शक्तसिंह बचपनमें ही मर गया तब नरवरका राज उत्तर गया । 6 दक्षिणमें जाकर मुसलमान हो गया । 7 रायकुंवरीबाईके उदरसे उत्पन्न । 8 मारवाड़ राज्यका कुड़की गांव पट्टेमें था ।

२२ हिरदैनारायण । रावळा गांव ४, मेड़तारो गांव गांगरड़ो दियो थो[1] ।

२१ सकतसिंघ राजा ग्रासकरणरो ।

२२ गोविंददास ।

२३ भावसिंग ।

१६ सुरतांण राजा प्रथीराजरो ।

२० तिलोकदास । दसमतखांनसूं विढ मुंवो[2] ।

२१ केसोदास मीच मुंवो ।

२२ सिंघ ।

२० सुंदरदास सुरतांणरो ।

२१ नरसिंघदास ।

२० वाघ सुरतांणोत ।

२१ उग्रसेण ।

२० मोहणदास सुरतांणोत ।

२० सकतसिंघ सुरतांणोत ।

२१ सहदेव सकतावत ।

२१ देवसिंघ, वीठळदास गोंड़रै कांम आयो, रजा बाहदर साथै[3] ।

२२ सुजांणसिंघ, राजा वीठळदासरै चाकर ।

१६ जगमाल राजा प्रथीराजरो ।

२० खंगार जगमालोत । जिण खंगाररा खंगारोत-कछवाहा नराइणारा धणी छै[4] ।

२१ नराइणदास खंगारोतनूं अकबर पातसाह नराइणो पटै उतन कर दियो[5]।

२२ दुरजणसाल नराइणदासरो ।

---

1 मारवाड़ राज्यकी ओरसे मेड़ताका गांगरड़ा गांव और चार गांव और दिये गये थे। 2 दसमतखांसे लड़ कर मरा। 3 देवीसिंह रजा बहादुरके साथ विट्ठलदास गौड़के काम आया। 4 जगमालका बेटा खंगार, जिसके वंशज खंगारोत कछवाहे नराणाके स्वामी हैं। 5 खंगारके बेटे नारायणदासको बादशाह अकबरने नराणा पट्टे और वतन कर दिया।

२३ चंद्रभांण दुरजणसालरो। कांम आयो[1]।
२४ प्रतापसिंघ।
२१ सत्रसाळ नराइणदासोत।
२३ कुसळसिंघ।
२२ गिरधरदास नराणदासोत।
२३ करण।
२३ रतन।
२३ विहारीदास।
२१ मनोहरदास खंगारोत।
२२ जैतसिंघ।
२३ कल्यांणसिंघ।
२२ भोजराज। नराइणो पटै। वाघ कांम आयां पछै वडो समझवार सिरदार हुवो[2]।
२३ गोपीनाथ।
२३ सूरसिंघ।
२३ हरिसिंघ।
२२ प्रतापसिंघ मनोहरदासोत।
२३ विहारीदास।
२३ सबळसिंघ।
२३ अजबसिंघ।
२२ रतन।
२१ हमीर खंगारोत।
२२ सूरसिंघ किसनसिंघ साथै कांम आयो।
२३ तेजसिंघ।
२२ रतन हमीरोत।
२३ केसरीसिंघ।
२२ राजसिंघ हमीरोत।
२३ मोहकमसिंघ।
२२ सकतसिंघ हमीरोत।
२३ आसकरण।
२२ किसनसिंघ हमीरोत।
२१ राघोदास खंगारोत।
२२ नरसिंघदास।
२१ वाघ खंगारोत पातसाही चाकर। बेटो नहीं सु भोजराज गोद थो। संमत १६८६ दक्षिण खांनजहांरी वेढ़ कांम आयो। कछवाहा छत्रसिंघ साथै[3]।
२१ वैरसल खंगाररो। महमदमुराद नराइणा ऊपर आयो तरै कांम आयो[4]।

1 युद्धमें काम आया। 2 वाघके मारे जानेके बाद भोजराज बड़ा समझदार सरदार हुआ। 3 खंगारका वेटा वाघ बादशाही चाकर। इसके कोई वेटा नहीं, इसलिये भोजराजको गोद लिया था। सं० १६८६में दक्षिणमें खांनजहांकी लड़ाईमें कछवाहा छत्रसिंहके साथ काम आया। 4 मुहम्मद मुराद नराणे पर चढ़ कर आया तब काम आया।

२२ केसरीसिंघ वैरसलोत, नाथावतांरी वेढ़ कांम आयो[1] ।

२१ सुजांणसिंघ ।

२२ दलपत ।

२२ बिजैरांम, कांम आयो सांभररा किरोड़ीसूं वेढ़ हुई तठै[2] ।

२३ हररांम कांम आयो केसरीसिंघ भेळो[3] ।

२१ उदैसिंघ खंगारोतरै छोरू नहीं[4] ।

२१ अमरो खंगारोत ।

२२ उग्रसेन ।

२२ जगनाथ, स्यांमसिंघ करमसेणोतरै कांम आयो[5]।

२१ किसनसिंघ खंगारोत ।

२२ सबळसिंघ, राजा रायसिंघजीरै कांम आयो[6] ।

२३ स्यांमसिंघ ।

२२ हररांम ।

२१ राजसिंघ खंगारोत ।

२२ वळरांम मालपुरै कांम आशो।

२१ भाखरसी खंगारोत, भलो डील हुवो । रावळै मेड़तारी भोवाळ पटै[7] ।

२१ जसकरण ।

२२ सादूळ ।

२३ रुघनाथसिंघ ।

२२ बद्रीदास राजा जैसिंघरो चाकर ।

२३ माधोसिंघ रावळै रह्यो थो ।

२२ द्वारकादास ।

२३ अजबसिंघ, रावळै थो[8] ।

२३ सूरसिंघ रावळै थो[9] । राव हरिसिंघ साथै कांम आयो ।

२१ केसोदास खंगारोत ।

२२ कल्यांणसिंघ राजा वीठळदासरै रह्यो थो[10] ।

२१ सांवळदास खंगारोत । बेटो नहीं ।

२० जैसो जगमालोत ।

२१ केसोदास ।

२२ मनरूप ।

---

1 नाथावतोंकी लड़ाईमें मारा गया । 4 सांभरके किरोड़ीसे लड़ाई हुई उसमें मारा गया । 3 केसरीसिंहके साथ हरराम भी काम आया । 4 उदयसिंह खंगारोतके कोई पुत्र नहीं । 5 जगन्नाथ करमसेनके बेटे श्यामसिंहके लिये काम आया । 6 सबलसिंह राजा रायसिंहजीके लिये काम आया । 7 भाखरसी खंगारोत बड़ा जबरदस्त हुआ । जोधपुर महाराजाकी ओरसे मेड़तेका भोवाल गांव पट्टेमें था । 8 अजबसिंह जोधपुर महाराजाके यहां नौकर था । 9 सूरसिंह जोधपुरके महाराजाके यहां नौकर था । 10 कल्याणसिंह राजा विट्ठलदासके यहां रहा था ।

२१ बलू ।
१९ बलिभद्र वांकड़ो; राजा प्रथीराजरो[1] ।
२० अचळदास बळभद्रोत ।
२१ मोहणदास ।
२१ गिरधर अचळदासरो ।
२० दुरजणसाळ बळभद्रोत ।
२१ केसरीसिंघ ।
२१ स्यांमदास ।
२० गोयंददास बळभद्रोत ।
२० दयाळदास बळभद्रोत ।
२० स्यांमदास ।
२० वेणीदास ।
१९ सांगो राजा प्रथीराजरो । लदांवण मांहै चारण कांनै मारियो । अऊत हुवो[2] ।
१९ पंचाइण राजा प्रथीराजरो । खांन हबीबसूं खोह लड़ाई हुई तठै कांम आयो[3] ।
२० किसनदास झरहर कांम आयो[4] ।
२१ कल्यांणदास ।
२२ कांन्ह ।
२२ जैरांम ।
२१ भारथी ।
२२ गिरधर ।
२२ रांमसिंघ । रांमसिंघरै छोरू नहीं[5] ३ ।
२० नरहरदास पंचाइणरो ।
२१ छीतरदास ।
२२ व्रिंदावनदास ।
२३ किसोरदास ।
२४ फतैसिंघ ।
२४ आणंदसिंघ ।
२३ फरसरांम व्रिंदावनरो ।
२४ अजबसिंघ ।
२४ अभैरांम ।
२४ जूंझारसिंघ ।
२४ सिवरांम ।
२४ किसनसिंघ ।
२४ सुरतसिंघ, ६ फरसरांम ।
२३ सबळसिंघ व्रिंदावनदासरो ।
२४ मोहकमसिंघ ।
२३ सुंदरदास व्रिंदावनदासरो ।
२४ किसनसिंघ ।
२४ रांमचंद ३ ।
२३ सकतसिंघ व्रिंदावनरो ।
२४ अजबसिंघ ५ व्रिंदावनरो ।

---

1 बलभद्र बांकड़ा राजा पृथ्वीराजका बेटा । 2 लदाणेमें चारण कान्हाने इसे मार दिया, अपुत्र रहा । 3 खान हबीबसे खोहमें लड़ाई हुई वहां काम आया । 4 किशनदास झरहरकी लड़ाईमें मारा गया । 5 रामसिंहके कोई पुत्र नहीं ।

२२ नरसिंघदास छीतरदासरो अऊत[1] ।
२२ माधोदास छीतरदासरो ।
२२ हरनाथ ।
२२ गिरधर ।
२१ बळकरण नरहरदास-जीरो ।
२२ मुकंददास ।
२३ चत्रभुज ।
२३ वेणीदास ।
२२ वंसीदास ।
२३ रांमसाह ।
२३ रांमचंद ।
२३ अनूपरांम ।
२२ गोविंददास ।
२३ उदैरांम ३ ।
२१ मोहणदास नरहर-दासरो । कांम आयो ।
२१ जसकरण नरहरदासरो कांम आयो ४ ।
२० वीठळदास पंचाइणोत ।
२१ वाघजी, राजा मांनसिंघ कंवर सवळसिंघनूं पकड़ियो तठै कांम आयो[2] ।
२२ हररांम ।
२२ बुधसिंघ कांम आयो ।
२० रांमचंद ।
२१ राघोदास वीठळदासरो ।
२० हिरदैरांम ।
२३ स्यांमसिंघ राजारो चाकर ।
२३ जैकिसन राजारो चाकर ।
२१ उदैसिंघ वीठळदासरो ।
२० सुजांणसिंघ ।
२३ बलू ।
२३ गजसिंघ ।
२३ सुरतसिंघ ।
२२ फरसरांम उदैसिंघोत रांम कह्यो[3] ।
२३ बुधरांम ।
२३ पेमसिंघ ।
२३ अजबसिंघ ।
२० जगनाथ उदैसिंघोत । राजारै चाकर ।
२० सिवरांम उदैसिंघोत ।
२० विजैरांम उदैसिंघोत । राजारै चाकर ५ ।
२१ हरिदास वीठळदासरो ।
२० गोयंददास ।
२३ मथुरादास । राजारै चाकर ।

---

1 छीतरदासका पुत्र नरसिंहदास अपुत्र रहा । 2 राजा मानसिंहने कुंवर सबलसिंहको पकड़ा वहां वाघजी मारा गया । 3 उदयसिंहका बेटा परसराम मर गया ।

२३ गोकळदास । राजारै चाकर ।
२३ कनकसिंघ ।
२२ भोजराज । उदैहीरी नांदोती वसतो[1] ।
२३ भारमल ।
२३ फतैसिंघ ।
२३ केसरीसिंघ ।
२३ देवीसिंघ ।
२३ सवळसिंघ ।
२३ सूरसिंघ ६ ।
२१ स्यांमदास वीठळदासोत । कटहड़ कांम आयो[2] ।
२२ लाडखांन स्यांमदासोत । वसी उदैही । रावळै चाकर[3] ।
२३ कुसळसिंघ ।
२४ हिमतसिंघ ।
२४ हिंदूसिंघ ।
२३ किसनसिंघ।
२३ अजबसिंघ ।
२३ अनोपसिंघ ४।
२१ सादूळ वीठळदासोत । वडो दातार हुवो ।
२२ सुंदरदास ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ अनूपसिंघ
२२ दयाळदास ।
२३ जोधसिंघ ।
२३ फतेसिंघ ।
२२ कांनड़दास ।
२३ राजसिंघ।
२३ गुमांनसिंघ ३,६।
२० नाराइणदास पंचाइणोत ।
२१ सुंदरदास ।
२२ किसनसिंघ फतैसिंघरो चाकर ।
२२ रांमचंद ।
२२ कुसळसिंघ ३ ।
२१ मुरारदास ।
२२ चतुरसिंघ । राजा जैसिंघरो चाकर २ ।
२२ सांवळदास पंचाइणोत ।
२० किसनदास पंचाइण भेळो कांम आयो खोहमें[4] ।
१९ गोपाळदास राजा प्रथीराजरो ।
२२ सुरजन वांकड़ो कहांणो ।
२१ जसूंत, मुवो[5] ।
२२ देवीसिंघ ।

1 उदैही परगनेके नादोती गांवमें रहता था । 2 कटहड़की लड़ाईमें मारा गया । 3 उदैहीकी जागीरी और जोधपुर महाराजाके यहां चाकर । 4 किशनदास पंचाइणके साथ खोहमें मारा गया । 5 मर गया ।

२१ रांमसाह, मोत मुंवो[1] ।
२२ किसोरसिंघ ।
२० वैरसल गोपाळरो ।
२२ देवकरण गोपाळरो । दिवांण कहीजतो[2] ।
२१ सांवळदास देवकरणरो ।
२२ हिरदैनारायण ।
२२ केसरीसिंघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२१ सिंघ देवकरणरो ।
२० नाथो गोपाळदासरो, जिणरा[3] नाथावत कछवाहा कहीजै ।
२१ विहारीदास नाथावत । वडो डील[4] । राजा भावसिंघरैसूं छाड़नै मोहवतखांनरै वसियो[5]। वडो दोलतवंद थो[6] । पाछो पातसाही चाकर हुवो ।
२२ गजसिंघ । गोड़ां मारियो[7] ।
२२ अजवसिंघ दिक्षणियां मारियो, मोहवतखांन कनै जातानूं[8] ।
२१ जसूंत नाथावत राजा भावसिंघरै[9] । पछै राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ जुधसिंघ ।
२३ वळभद्र। रावळे चाकर थो[10] ।
२२ छाताळ ।
२३ जगभांण । कावल मुंवो[11] ।
२१ रांमसाह नाथावत । राजा जैसिंघरो चाकर ।
२२ कुसळसिंघ ।
२३ दुरजणसिंघ ।
२२ सुजांणसिंघ ।
२१ मनोहरदास नाथावत ।
२२ अभैरांम ।
२३ अनूपसिंघ ।
२२ इंद्रजीत ।
२३ मोहनरांम ।
२२ अखैराज ।
२३ मधुवनदास ।
२२ मदनसिंघ राजारै चाकर।
२३ जगतसिंघ ।
२२ मुथरादास । राजरै चाकर, पछै पातसाहरै ।

1 रामशाह अपनी मौत मरा । 2 दीवान कहलाता था । 3 जिसके वंशज । 4 वड़ा जबरदस्त । 5 राजा भावसिंहको छोड़ कर मोहवतखांके यहां रहा । 6 वड़ा मालदार था । 7 गौड़ोंने मार दिया । 8 मोहवतखांके पास जाते हुएको । 9 नाथाका बेटा जसवंत राजा भावसिंहके यहां नौकर । 10 जोधपुर महाराजाके यहां नौकर था । 11 काबुलमें मरा ।

खंधार रांम कह्यो[1] ।
२३ पहलादसिंघ ६ ।
२१ केसोदास नाथावत ।
२२ सुंदरदास ।
२३ किसनसिंघ ।
२१ द्वारकादास नाथारो ।
२१ सांमदास नाथावत । पूरबमें कांम आयो ७ ।
२६ चत्रभुज प्रथीराजोत ।
२० कीरतसिंघ पठांणां मारियो[2] ।
२१ केसोदास कीरतसिंघरो ।
२२ किसनसिंघ राजा जैसिंघरो चाकर । पठांण घोड़ांरी सोबत[3] ले सांगानेर उतरिया था[4] त्यांरा[5] घोड़ा कीरतसिंघरा वैर मांहै खोस लिया । पछै पठांण जाय पुकारिया । तरैं पातसाहजीरा हुकमसूं राजा जैसिंघजी चढ़ नै किसनसिंघनूं मारियो संमत १६७६ ।
२२ गजसिंघ केसोदासोत । संमत १६८६ रावळै वसियो थो[6] । पटो रुपिया १७०००)रो दियो थो । पाछो संमत १६९५ छाड राजारै गयो[7] ।
२२ प्रतापसिंघ राजारै चाकर ।
२३ सूरसिंघ ३ ।
२० जूंझारसिंघ चत्रभुजोत ।
२१ हिमतसिंघ । इणनूं[8] मोहबतखांन लदांणो दियो थो । पाछो रावळै[9] रह्यो तरै पटो रुपिया १५०००)रो दियो थो । पछै सदोरै थकै बाहिरमी रीतरै छोड़ायो[10] । पछै संमत १७०० वळै उदैही राखियो थो[11] ।
२२ फतैसिंघ ।
२२ सकतसिंघ २ ।
१९ कल्यांणदास प्रथीराजरो ।
२० करमसी कल्यांणदासरो ।

---

1 खंधारमें मरा । 2 कीर्तिसिंहको पठानोंने मार दिया । 3 झुंड । 4 ठहरे थे । 5 उनके । 6 जोधपुर महाराजाके यहां नौकर रहा था । 7 फिर सम्वत् १६९५में छोड़ कर राजाके (जयपुरके) यहां चला गया । 8 इसको । 9 जोधपुर महाराजाके । 10 पीछे जबरदस्ती छोड़ाया गया । 11 सं० १७००में पुनः उदैहीमें रख दिया था ।

२१ खड़गसेन। राजा जैसिंघरो चाकर।

२१ सुंदरदासनूं विहारियां मारियो[1]।

२० मोहणदास कल्यांणदासरो।

२० रायसिंघ कल्यांणदासरो।

२१ जोध।

२१ जगनाथ।

२० कांन्ह कल्यांणदासरो४।

१९ रूपसी वैरागी राजा प्रथीराजरो। अकबर पातसाहरो चाकर। परबतसर जागीरमें पायो थो।

२० जैमल रूपसियोत[2]। अकबर पातसाह फतैपुर दियो। संमत १६४० जैमल असमाधियो[3] थो तरै मुथराजी जाय रांम कह्यो[4]। वडो परम भगत थो। मोटा राजाजीरी बेटी दमेती बाई परणाई थी[5]।

२१ उदैसिंघ जैमलरो। सांखलांरो भांणेज।

२२ राघोदास उदैसिंघरो।

२२ कचरो उदैसिंघरो। राठोड़ वाघ प्रथीराजोत मारियो[6]।

२० रांमचंद रूपसीरो।

२१ हररांम मींच मुंवो[7]।

२१ गोकळदास।

२१ द्वारकादास।

२१ बलू। सेखावते मारियो[8] ४।

२० तिलोकसी रूपसीरो। मोटा राजाजी बेटी किसनावती बाई परणाई थी। तिलोकसी मुंवो तरै साथै बळी[9]।

२० वैरसल रूपसीरो। वडगूजरांरो भांणेज[10]।

२० चतुरसिंघ रूपसीरो। मा मैणी थी[11]।

२० भोजराज रूपसीरो। करमां खवासरो[12] ७।

---

1 सुंदरदासको विहारी पठानोंने मारा। 2 रूपसीका पुत्र। 3 मरणासन्न हुआ। 4 तब मथुराजीमें जाकर मरा। 5 मोटा राजाजीकी (उदयसिंहकी) बेटी दमयन्तीबाई व्याही थी। 6 पृथ्वीराजके बेटे राठौड़ बाघने मारा। 7 हरराम अपनी मौत मरा। 8 शेखावतोंने मार दिया। 9 तिलोकसी मरा तब साथमें जली। 10 वड़गूजरों का भानजा। 11 रूपसीके बेटे चतुर्रसिंहकी मा मीणा जातिकी स्त्री थी। 12 करमां खवासके पेटका।

रूपसी वैरागीरा ।
१९ पूरणमल प्रथीराजरो ।
२० छीतर पूरणमलरो ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सूजो पूरणमलरो ।
२१ किसनदास ।
२१ वेणीदास ।
२२ उदैकरण ।
२१ माधोदास २, ३ ।
१८ कूंभो राजा चंदरो । प्रथीराजरो भाई । वैसणों गांव मोहारि[1] ।
१९ उदैसिंघ कूंभारो ।
२० राजमल उदैसिंघरो ।
२१ वेणीदास रायमलरो ।
२१ जसवंत ।
२१ डूंगरसी ।
२२ गोपाळदास ३ ।
२० रांम उदैसिंघरो ।
२१ लूणो रांमरो ।
२२ सादूळ ।
१८ नरो राजा चंदरो । प्रथीराजरो भाई ।
१९ छीतर नरारो ।
२० थांनसिंघ ।

२१ खंगार । राजा चंद उधरणरो । उधरण वणवीररो ।
१७ कछवाहो वणवीर । जिण वणवीररा वणवीरोत-कछवाहा कहीजै[2] । इणांरो परवार घणो छै, पिण मांडियो न छै[3] ।
वणवीर उधरणरो ।
१८ भैरूं । राजा मांनसिंघरै हाथियांरो फोजदार थो ।
१९ केसवदास भैरवरो ।
२० केसरीसिंघ ।
२० जसवंत केसवदासरो ।
२० अचळदास केसवदासरो ।
१४ वालो राजा उदैकरणरो, तिणरा[4] सेखावत ।
१४ बरसिंघ उदैकरणरो । जिणरा[5] नरूका-कछवाहा कहीजै ।
१५ मेहराज बरसिंघरो ।
१६ नरू मेहराजरो । जिणनूं[6] नरूका कहीजै ।
१७ दासो नरूरो ।

---

१ गांव मोहारमें निवासस्थान । २ जिस वणवीरके वंशज वणवीरोत-कछवाहा कहे जाते हैं । ३ इनका परिवार बहुत बड़ा है, परन्तु यहां नहीं लिखा गया है । ४ जिनके । ५ जिसके वंशज । ६ जिसको [illegible] ।

१८ चांनणदास दासारो ।
१९ सैहसो चांनणदासरो ।
निवाई ठाकुर हुवो ।
२० कांन्ह सैहसारो ।
२१ केसोदास वडे डील
थो[1] । मोहवतखां लाल-
सोट पटै दी थी ।
२२ उग्रसेन केसोदासरो ।
वडो रजपूत थो । मोह-
वतखांरै वास थो । पछै
रावळै वसियो[2] । रेयांरो
पटो दियो थो । राय-
पुररो पटो थो । मोह-
वतखांन लालसोट पटै
दी थी । मींच मुंवो[3] ।
२३ रुघनाथसिंघ ।
२२ सूरजमल केसोदासरो ।
२२ तेजसी केसोदासरो ।
२१ माधोदास कांनरो ।
निवाई पटै ।
२१ सकतसिंघ ।
२२ दीपसिंघ ।
२४ रूपचंद ।
२० रांम सहसमलरो । वण-
हटो रांमरो वसायो[4] ।

राजा जगनाथरी चाकर ।
२१ राघोदास रांमरो ।
अटक ऊपर खांनाजंगी
मोहवतखांनरै चाकरांसूं
हुई तठै मारियो[5] ।
२२ राजसिंघ राघोदासरो ।
मोहवतखांरै वास थो[6] ।
२२ रूप राघोदासरै टीका-
इत[7] । वणहटो मोह-
वतखांन दियो थो ।
२१ वीठळदास रांमरो ।
बेटो नहीं ।
२१ बिसनदास रांमरो ।
२२ राजसिंघ ।
२१ प्रतापमल रांमरो ।
२० गोपाळदास सहसमलरो ।
२० वेणीदास सहसमलरो ।
२० देईदास सहसमलरो ।
२० वीरमदे सहसमलरो ।
२० दुरगदास सहसमलरो ।
२० दूदो सहसमलरो ८ ।
सहसमल चांनणरो ।
१८ करमचंद दासारो ।
मोजावाद धणी । तिणनूं
राजा सांगै प्रथीराजरै

1 केशोदास जवरदस्त और मोटे शरीरका था । 2 फिर जोधपुर महाराजाके यहां रहा । 3 अपनी मृत्युसे मरा । 4 रामके वणहटो गांवको आवाद किया । 5 अटक ऊपर मोहवतखांके नौकरोंसे लड़ाई हुई वहां मारा गया । 6 मोहवतखांके यहां रहता था । 7 रूप राघोदासका उत्तराधिकारी ।

मारियो[1] ।
१९ सिंघ करमचंदरो ।
२० जैतसी सिंघरो ।
२१ चंद्रभांण जैतसीरो । पनवाड़ धणी । रावळै संमत १६६८ वसियो थो[2] । राहिण पटै । पछै पातसाही चाकर हुवो । राजा गजसिंघजी परणिया छा[3] । नरूकी केसरदे साथै बळी[4] ।
२१ इंद्रभांण जैतसीरो । रावर ठाकर ।
२१ हरराज जैतसीरो । राव केसोदास मारियो ।
२१ उदैभांण जैतसीरो ।
२० वेणीदास सिंघरो ।
२० नाथो सिंघरो ३ ।
१९ प्रथीराज करमचंदरो ।
२० भींव प्रथीराजरो । वडो दातार हुवो ।
१८ चांनण दासेरो ।
१९ अलखो चांदणरो ।
२० दलपत अलखारो । राजा जैसिंघजीरो चाकर ।
२० कीरतखां अलखारो ।
१८ रतन दासेरो ।
१९ सांगो रतनरो ।
२० कचरो सांगारो । मींच मुंवो[5] ।
२१ मालदे कचरारो ।
२२ सुरजन मालदेरो ।
२३ रायकंवर ।
२३ रांमकंवर ।
२३ चत्रसाळ ।
२३ दूदो ४ । सुरजनरा ।
२२ सादूळ मालदेरो ।
२३ कांन्हो सादूळरो ।
२३ जैतसिंह ।
२३ हरिसिंह ।
२२ प्रतापसिंघ मालदेरो ।
२३ जगरूप ।
२२ रायसिंघ मालदेरो ।
२३ करण ।
२३ अचळदास ।
२२ चत्रभुज मालदेरो ।
२३ गोपीनाथ ।
२२ माधोसिंघ मालदेरो ।
२२ केसोदास मालदेरो । पूनवमें भाटीरी वेढ़

1 जिसको पृथ्वीराजके पुत्र [illegible] मारा । 2 सं० १६६८में [illegible] 3 [illegible] 4 [illegible] 5 [illegible]

कांम आयो[1] ७ ।
मालदे कचरावतरा ।
२१ फरसरांम कचरावतरै
बेटा १२ ।
२२ राघोदास फरसरांमरो ।
२३ पीथो ।
२३ गिरधर ।
२३ स्यांमसिंघ ।
२३ कांन्ह ।
२२ वाघ फरसरांमरो ।
२३ मोहणदास । रावळै
वास थो[2] ।
२४ नरहरदास ।
२३ जगनाथ ।
२३ किसनसिंघ वाघवत ।
पंवारे मारियो[3] ३ ।
२२ भगवांनदास फरस-
रांमरो ।
२२ जसवंत फरसरांमरो ।
२३ हरिजस ।
२३ राजसिंघ ।
२३ किसनसिंघ ।
२२ वलिरांमजी फरस-
रांमोत ।
२३ नाथो ।
२३ उदैकरण फरसरामोत ।
२३ गोविंददास ।
२३ गोवरधनदास ।
२३ लूंणो ।
२२ हरिदास फरसरांमरो ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ वीठळदास ।
२२ रांमचंद फरसरांमरो ।
पंवारांरी वेढ़ कांम
आयो[4] ।
२३ गोपीनाथ ।
२३ पूरो ।
२२ उदैभांण फरसरांमरो ।
२२ नरसिंघदास फरस-
रांमरो ।
२३ दूदो १२ ।
२१ रुद्रकंवर । रावत किस-
नसिंघजीरो साळो ।
किसनसिंघजी साथै कांम
आयो[5] ।
२२ सूरसिंघ रुद्ररो ।
२२ कुंभकरण रुद्ररो ।
२२ मनोहरदास रुद्ररो ।
२३ राजसिंघ ।
२३ हरकरण ४ ।
२१ भोपत कचरावत ।
किसनसिंघजीरै वास

1 पूर्वमें भट्टीकी लड़ाईमें काम आया । 2 मोहनदास जोधपुर महाराजाके यहां नौकर था । 3 वाघाका बेटा किशनसिंह जिसे पंवारोंने मारा । 4 पंवारोंकी लड़ाईमें मारा गया । 5 रुद्रकुमार रावत किशनसिंहजीका साला जो उन्हींके साथ मारा गया ।

थो सु किसनसिंहजी साथै कांम आयो[1] ।

२२ देईदास भोपतरो । रा॥ जगमाल भारमल साथै कांम आयो[2] ।

२३ सूजो देईदासरो ।

२३ उग्रसेण ।

२२ मुकंददास भोपतरो ।

२३ राजसिंघ ।

२३ किसनसिंघ २,४ कचरा सांगावतरा ।

१६ सेखो रतनारो ।

२० मदनसिंघ सेखारो ।

२१ लूंणकरण मदनसिंघरो।

२२ अचळदास लूंणकरणरो।

२३ राजसिंघ । राजा जैसिंघरै वास । कंवर रांमसिंघ कनै रह्यो[3] ।

२२ केसरीसिंघ लूंणकरणरो। राजा जैसिंघरै वडगूजरांरी वेढ़ कांम आयो[4] २ ।

२१ जसवंत मदनसिंघरो ।

राजारैसूं छाड रावळै वसियो संमत १६८६[5]।

२२ हररांम जसवंतरो । रावळै चाकर थो[6] ।

२३ हिमतसिंघ ।

२३ कुसळसिंघ ।

२२ रूपसी जसवंतरो २ ।

२० भावसिंघ सेखारो । जगनाथ गोयंददासोत मारियो[7] २ । रतने दासावतरा ।

१८ जैमल दासेरो । निपट वडो रजपूत हुवो । मरणरै दिन घणो विसेप कियो[8] ।

१६ वलू जैमलरो ।

२० रांमदास ।

२० वीठळदास ।

२१ विसनदास ।

१६ लाडखांन जैमलरो ।

२० गोपाळदास महारोट कांम आयो ।

१६ रायकंवर ।

---

१ कचराका बेटा भोपत किसनसिंहजीके यहां रहता था, अतः किसनसिंहजीके साथ मारा गया । २ भोपतका बेटा देईदास जगमाल भारमलोंके साथ मारा गया । ३ राजसिंह राजा जयसिंहके यहां नौकर, कुंवर रामसिंहके पास रहा । ४ राजा जयसिंह और बड़गूजरोंकी लड़ाईमें मारा गया । ५ सं० १६८६में राजा जयसिंहके यहांसे छोड़ कर जोधपुर महाराजाके यहां रहा । ६ जोधपुर महाराजाके यहां चाकर था । ७ गोविंददासके बेटे जगन्नाथको मारा । ८ दासाका पुत्र जयमल बहुत बड़ा राजपूत हुआ । मरनेके दिन बहुत विशेषता प्रकट की ।

२० चत्रभुज ।
२१ मनोहरदास ।
१८ पूरणमल दासारो ।
१८ रायमल दासारो ।
१९ रांमचंद्र ।
२० वळभद्र ।
२१ गोविंददास वळभद्रोत । ईसरदास कूंपावतरो दोहितो । रावळै वास थो । रेवाड़ीरा गांव पटै[1] ।
२२ जोगीदास ।
१८ कपूरचंद दासारो ।
१९ रूपसी ।
१९ वैरसी ।
१७ लालो नरूरो । लालो राव कहांणो[2] ।
१८ ऊदो लालारो ।
१९ लाडखांन ऊदारो ।
२० फतैसिंघ लाडखांनरो । तिणनूं राजा जैसिंघ बेटो कर गोद लियो थो[3] ।
२१ राव कल्यांणमल फतैसिंघरो । राजा जैसिंघरै बेटां बरोबर थो । कांमां पहाड़ीरो सूबो थो[4] ।
२२ रिणसिंघ ।
२२ आणंदसिंघ ।
२२ अजबसिंघ ।
१४ बालोजी राजा उदैकरणरो । जिणरी ओलादरा सेखावत-कछवाहा कहीजै । सेखावतांरो उतन अमरसर वैसणो[5] ।
१५ मोकल बालैरो, जिणनूं पीर ब्रहांन चिसती निवाजस की, जिणरो तकियो मनोहरपुर गांव ताळै छै, डूंगरी ऊपर[6] ।
१६ सेखो मोकलरो, जिणसूं सेखावत कहांणा । अमरसर सेखैजी वसायो । अमरसर अमरै अहीररी ढांणी थी, जात खासोदो । सिखरगढ़

---

1 वलभद्रका बेटा गोविंददास, ईश्वरदास कूंपावतका दोहिता जो जोधपुर महाराजाके यहां नौकर था और जिसे रेवाड़ीके गांव पट्टेमें मिले हुए थे। 2 लाला राव कहलाया। 3 लाडखानके बेटे फतहसिंहको बेटा मान कर गोद लिया था। 4 राजा जयसिंह इसे अपने बेटोंके बरावर मानता था। कामा पहाड़ीका सूबेदार था। 5 उदयकर्णका पुत्र बालोजी जिसकी औलाद वाले शेखावत-कछवाहा कहे जाते हैं। शेखावतोंका निवासस्थान अमरसर। 6 मोकल बालेका पुत्र जिस पर शेख पीर बुरहान चिश्तीने कृपा की (और पुत्र दिया) जिसका तकिया मनोहरपुरके निकट पहाड़ी पर बना हुआ है।

राव सेखै वसायो[1] ।
१७ रायमल सेखावत ।
१८ सूजो रायमलरो ।
१९ राव लूंणकरण सूजारो । राव मालदेरी बेटी हंसबाई परणाई थी[2] ।
२० राव मनोहर, जिण मनोहरपुर वसायो । हंसा बाईरो बेटो[3] ।
२१ प्रथीचंद मनोहररो ।
२२ किसनचंद ।
२३ जैतसिंघ ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२२ प्रेमचंद ।
२३ इंद्रचंद ।
२३ कुसळचंद ।
२१ रायचंद मनोहररो । बंठास कांम आयो[4] ।
२२ तिलोकचंद ।
२१ प्रिथीचंद कांगुड़ै कांम आयो । राजा विक्रमायत साथै[5] ।
२१ प्रतापचंद ।

२० किसनदास राव लूंणकरणरो ।
२० दूलैराव लूंणकरणरो ।
२० ईसरदास लूंणकरणरो । सबळसिंघजीरो सुसरो । संमत १६७३ रांम कह्यो ब्रहांनपुरमें[6] ।
२१ गोकळदास खवासरोथो[7] ।
२० सांवळदास लूंणकरणरो ।
२१ रूपसी ।
२० नरसिंघदास लूंणकरणरो ।
२१ उग्रसेण नरसिंघदासरो ।
२२ महासिंघ उग्रसेणरो । राजा जैसिंघरै वास ।
२३ मांनसिंघ ।
२३ रतन ।
२३ अणंदसिंघ ।
२३ दीपसिंघ ।
२२ रांमसिंघ उग्रसेणरो । राजा जैसिंघरै वास थो । पछै रावळै चाकर थो । रुपिया २५०००)

---

1 [illegible] बेटा सेखा जिसके सेखावत कहलाये । सेखाजी अमरसरमें आबाद थे । अमरसर इनके पहले [illegible] जातिके [illegible] थी । राव सेखेने [illegible] बसाया । 2 राव मालदेवकी बेटी हंसाबाई ब्याही थी । 3 हंसाबाईका बेटा राव मनोहर जिसने मनोहरपुर बसाया । 4 बंठासमें मारा गया । 5 राजा विक्रमादित्यके साथ [illegible] कांगड़ेमें मारा गया । 6 [illegible] बेटा ईसरदास, सबलसिंहका ससुर । सं० १६७३में बुरहानपुरमें मरा । 7 गोकुलदास खवासके (रखेलीके) [illegible] हुआ था ।

पटो. रेवाड़ीरा गांव दिया[1]।

२३ चंद्रभांण ।

२३ अजवसिंघ ।

२३ रुघनाथसिंघ उग्रसेणरो।

२२ मेहकरण । रावळै वास थो । एक वार उदैहीरो पीपळाईसूं रुपिया १२०००) पटो हुतो[2]।

२३ मोहनरांम ।

२३ सवळसिंघ ।

२३ कुसळसिंघ ।

२३ किसनसिंघ ।

२२ जैतसिंघ अग्रसेणरो ।

२३ हरिसिंघ ।

२३ नराइणदास ।

२२ विहारीदास उग्रसेणरो ।

२३ केसरीसिंघ ।

२३ सकतसिंह ।

२२ गोविंददास उग्रसेणोत ।

२३ सूरसिंघ ।

२३ मुकंददास ।

२२ कल्यांणदास उग्रसेणोत । निरवांणारी लड़ाईमें कांम आयो[3]

२३ हरनाथ ।

२२ किसनसिंघ, कल्यांणदास साथै कांम आयो ।

२२ कांन्हीदास ।

२१ वळभद्र नरसिंघदासरो ।

२१ हररांम ।

२१ द्वारकादास नरसिंघदासरो । ३ नरसिंघदास, कल्यांणदास करणोत ।

२० भगवांनदास लूंणकरणोत ।

२१ अचळदास ।

२२ सकतसिंघ ।

२३ रूपसिंघ रावळै चाकर ।

१९ रायसल सूजारो । वाघा सूजावतरो दोहितो । अकवर पातसाहरै रायसल दरवारी कहीजतो । खंडेला-रैवासो पटे थो । खंडेलो निरवांणां कना रायसल लियो[4] । मूळ खंडेलो तुंवर खडगलरो वसायो[5] ।

---

1 उग्रसेनका वेटा रामसिंह, पहले राजा जयसिंहके यहां था, वादमें जोधपुर महाराजाका चाकर हो गया । रेवाड़ीके रु० २५०००)के गांव पट्टेमें दिये गये थे । 2 मेहकर्ण जोधपुर महाराजाके यहां नोकर था । इसे एक वार उदैहीका रु० १२०००)की रेखका पीपलाई गाँवका पट्टा दिया गया था । 3 उग्रसेनका वेटा कल्याणदास निरवानाकी लड़ाईमें मारा गया । 4 रसायलने निरवानोंके पाससे खंडेला लिया । 5 मूलमें खंडेला तुंवर खड़गलका वसाया हुआ है ।

२० लाडखांन रायसलरो ।
२१ माधो लाडखांनरो । तिणनूं सल्हेदी राजावत मारियो । माहरोठ मांहे[1] ।
२२ हिंदूसिंघ माधारो ।
२२ सूरो माधारो । रा॥ इंद्रभांण मारियो ।
२३ अजबसिंघ ।
२१ कल्यांणदास लाडखांनरो। तिणनूं भोजराज रायसलोत मारियो। संमत १६५३ । बेटो नहीं[2] ।
२१ केसो लाडखांनरो । केसानूं नाई मारियो । नाईरी वैरसूं हालतो[3] ।
२२ भगवांनदास ।
२१ आसकरण लाडखांनरो।
२२ कल्यांणसिंघ।
२२ चतुरसिंघ ।
२२ प्रेमसिंघ।
२२ नाथो ।
२२ दिलरांम ।
२१ सुंदरदास लाडखांनरो।
२२ पैहळाद ।
२२ चतुरसिंघ ।
२२ रतन ।
२१ जोधो लाडखांनरो ।
२१ केसरीसिंघ लाडखांनरो ।
२२ जैसिंघ ।
२१ जगो लाडखांनरो ।
२० गिरधरदास रायसलोत खंडेलै टीको । राठोड़ वीठळदास जैमलोतरो दोहितो । संमत १६८० ब्रहांनपुरमें सैदांसूं खांनाजंगी हुई तरै सैदां मारियो । पछै सैदांनूं ही परवेज साहिजादै मोहबतखांरै गरदन मारिया[4] ।
२१ राजा द्वारकादास गिरधरदासरो । खंडेलै टीको । खांनजिहांरी पैहली वेढ़ लोहड़ै पड़ियो

1 जिसको सलहदी राजावतने मारोठमें मारा। 2 जिसने रायसलके बेटे भोजराजको सं० १६५३में मारा। इसके कोई बेटा नहीं। 3 लाडखांका बेटा केसा, इसको एक नाईने मार दिया। नाईकी स्त्रीसे इसकी बदचलनी थी। 4 रायसलका बेटा गिरधरदास। खंडेलेका टीका हुआ। यह जैमलके बेटे राठौड़ विठ्ठलदासका दोहिता था। सं० १६८०में बुरहानपुरमें सैयदोंसे लड़ाई हुई तब सैयदोंने इसको मार दिया। बादमें शाहजादे परवेजने मोहब्बतखांकी मारफत सैयदोंको भी मार दिया।

थो पाछो खानजिहां मारियो तद कांम आयो[1] ।
२१ हरिसिंह गिरधररो ।
२२ राजा वरसिंघदे द्वारकादासरो । भारमलोतांरो भांणेज । कंवर श्री प्रथीसिंघजीरो नांनो[2] ।
२३ पुरसवहादर ।
२३ मोहकमसिंघ ।
२३ स्यांमसिंघ ।
२३ दौलतसिंघ ।
२३ अमरसिंघ । रावळै चाकर रुपिया ३०००)पटो[3] ।
२३ जगदेव ।
२३ अजसिंघ ।
२३ भोपतसिंघ ।
२३ अनूपसिंघ सूरसिंघरो ।
२१ सल्हैदी गिरधररो । राठोड़ कांन्ह रायसलोतरो दोहितो[4] ।
२२ हरदेव ।
२२ सांवळदास ।
२१ त्रिजैसिंघ गिरधररो ।
२२ हरभांण ।
२२ उधरसिंघ ।
२२ अरजनसिंघ ।
२१ किसनसिंघ गिरधररो ।
२२ जैसिंघ पातसाही चाकर ।
२२ अखैसिंघ पातसाही चाकर ।
२२ महासिंघ ।
२१ गोपाळदास गिरधररो ।
२१ गोरधन गिरधररो ।
२१ सूरसिंघ गिरधररो ।
२२ अनूपसिंघ ।
२० भोजराज रायसलरो ।
२१ तोडरमल भोजराजरो । वडो कपाळीक । उदैपुर खंडेला कनै रहै । पातसाही चाकरी छूटी । नाक वैठ गो छो[5] ।
२२ हरनाथसिंघ तोडरमलोत ।
२२ परसोतमसिंघ । रावळै चाकर । रेवाड़ीरो गांव

1 गिरधरदासका वेटा राजा द्वारकादास । खंडेले टीका हुआ । खानजहांकी पहली लड़ाईमें घायल हुआ था और फिर खानजहां मारा गया जब यह भी काम आ गया । 2 द्वारकादासका वेटा राजा वरसिंहदेव, भारमलोतोंका भानजा और कुंवर पृथ्वीसिंहका नाना था । 3 अमरसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, रु० ३०००)का पट्टा । 4 गिरधरका वेटा सलहदी रायसलके वेटे राठौड़ कान्हका दोहिता था । 5 भोजराजका वेटा तोडरमल वड़ा कापालिक था । खंडेलेके पास उदयपुरमें रहता था । वादशाही चाकरी छूट गई । नाक वैठ गया था ।

खोहरी वसी थी[1]।

२२ परसोतमरा बेटा–

२३ हरिसिंघ।

२३ प्रथीसिंघ।

२३ स्यांमसिंघ।

२३ हिमतसिंघ।

२३ भींवसिंघ।

२३ जूंझारसिंघ।

२१ केसरीसिंघ भोजराजरो।

२१ रुघनाथ भोजराजरो।

२२ चांदसिंघ। रावळै चाकर।

२० परसरांम रायसलोत। वड़गूजरांरो दोहितो।

२१ वीठळदास।

२२ अभैरांम।

२१ सुरतांणसिंघ।

२२ विजैरांम।

२१ सबळसिंघ फरसरांमरो।

२२ हरनाथ।

२२ रुघनाथ।

२३ सुजांणसिंघ।

२३ गजसिंघ हरनाथोत।

२३ चंद्रभांण।

२१ तिलोकसी फरसरांमरो।

२२ जैतसिंघ द्वारकादासरै कांम आयो।

२२ हरिसिंघ।

२३ महासिंघ।

२२ सूरसिंघ।

२१ वळिरांम फरसरांमरो।

२१ मदनसिंघ फरसरांमरो।

२१ चतुरसिंघ।

२२ सूरसिंघ ६। फरसरांमरा।

२० तिरमणराय रायसलरो। राजा सूरसिंघजी संमत १६६८ खंडेलै तिरमणरै परणिया था सु सेखा-वत साथै वळी[2]।

२१ गोगारांम।

२२ स्यांमरांम।

२२ रतन।

२२ कल्यांणसिंघ।

२२ तुळछीदास।

२१ बद्री तिरमणोत।

२१ उदैकरण खवासरो ४।

२० ताजखांन रायसलरो। वडगूजरांरो दोहितो।

२१ गिरधरदास। रावळै चाकर थो। मेड़तारो दाहो थो[3]।

---

1 पुरसोतमसिंह जोधपुर महाराजाका चाकर, मेड़तेका गांव [illegible] था।
2 रायसलका बेटा तिरमणराय। राजा सूरसिंहजीने सं० १६६८में खंडेलेमें तिरमणकी [illegible] ब्याही थी। सूरसिंहजीके [illegible] सेखावत [illegible] गई। 3 [illegible] जोधपुर महाराजाके यहां चाकर था, मेड़तेका [illegible] था।

२१ किरतसिंघ ताजखांनरो ।
२२ किसनसिंघ ।
२३ विजैसिंघ ।
२१ मुगटसिंघ ताजखांनरो ।
ढवो थो ३ ।
२० हररांम रायसलरो ।
निरवांणांरो दोहितो ।
२१ हिरदैरांम ।
२२ चंद्रभांण ।
२२ जैभांण ।
२२ हरभांण ।
२२ उदैभांण । रावळै रह्यो थो । रेवाड़ीरा गांव पटै[1] ।
२२ इंद्रभांण ।
२२ अमरभांण ।
२१ चतुरसिंघ हररांमोत ।
२१ फतैसिंघ हररांमोत ।
२२ दुरजनसिंघ ।
२२ अमरसिंघ ।
२२ अजसिंघ ।
२२ अनोपसिंघ ।
२२ भावसिंघ ।
२२ अचळसिंघ ।
२२ नरसिंघदास ।
२२ प्रथीराज ।

२१ राजसिंघ हररांमोत ।
२२ कल्यांणसिंघ ।
२२ महासिंघ ।
२१ संग्रामसिंघ हररांमोत ।
२२ रांमसिंघ ।
२२ सांमसिंघ ।
२२ मोहकमसिंघ ।
२० बिहारीदास रायसलरो ।
निरवांणांरो दोहितो ।
महारोठ कांम आयो[2] ।
२० बाबूरांम रायसलरो । जाटणीरा पेटरो । महारोठ कांम आयो । रायसलजी साहपुरो पटै दियो थो डीडवांणांरी मदद की । वळभद्र नारणदासोत आयो तद मारियो । मां ख्वाळखरी जाटणी थी[3] ।
२० दयाळदास रायसलरो ।
२० वीरभांण रायसलरो ।
गोड़ांरो दोहितो ।
२० कुसळसिंघ रायसलरो ।
सोनगरांरो भांणेज ।
२१ करमसेन ।

---

1 उदयभांण जोधपुर महाराजाके यहां नौकर रहा था, रेवाड़ीके गांव पट्टेमें थे। 2 बिहारीदास रायसलका बेटा, निरवानोंका दोहिता, मारोठमें मारा गया। 3 बाबूराम रायसलका बेटा, जाटनीके पेटका था। मारोठमें काम आया। रायसलने डीडवानेकी मदद की तब शाहपुरा पट्टेमें दिया था। इसकी मा ख्वालखकी (नागौर परगनाकी) जाटनी थी।

२१ नरसिंघदास ।
२१ उगरसेन १२ ।
१९ गोपाळ सूजारो ।
२० माधोदास ।
२० ततारखांन ।
२० सांईदास ।
२० गोकळदास
२० स्यांमदास ।
२१ सबळसिंघ ।
२० हरदास ।
२१ मोहणदास ५ ।
१९ गोपाळ सूजावत ।
१९ भैरूं सूजारो ।
२० नरहरदास ।
२१ नाहरखांन ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ मुकंददास ।
२१ हरिसिंघ ।
२१ जगनाथ ।
२१ जसवंत ।
२१ बलू ।
२१ रुघनाथ २१···६ ।
२० कंवरसाळ भैरूंरो ।
२१ चत्रभुज ।
२२ गर्वीदास ।

२२ सुंदरदास ।
२० सांगो भैरूंरो ।
२१ जैतसिंघ । मोहब्बतखांनरी वेढ़ कांम आयो[1] ।
२१ सल्हैदी सांगारो ।
२० भारमल भैरूंरो ।
२१ खींवकरण मोहब्बतखांरै वास थो[2] ।
१९ चांदो सूजारो ।
२० ततारखांन गिरधरजी साथै कांम आयो[3] ।
२१ मुकंददास ततारखांनरो ।
२१ फतैसिंघ ।
१८ सहसमल रायमलरो ।
१९ करमसी सहसमलरो ।
२० दुरजणसाळ राजा गजसिंघजीरै नांनो । रांणी सोभागदेजीनूं अकबर पातसाह बेटी कर ब्याह कियो । संमत १६६४[4] ।
२० रांमचंद करमसीरो । अकबर पातसाह दिखण मेलियो[5] उठै[6] खांनखांनो लड़ाई न करै छै । दिखणियांनूं[7] साथ

१ जैतसिंह मोहब्बतखांकी लड़ाईमें काम आया। २ खींवकरण मोहब्बतखांके यहां रहता था। ३ ततारखां गिरधरजीके साथ मारा गया। ४ दुर्जनसाल राजा गजसिंहजीका नाना। सं० १६६४में रानी सोभागदेवीका बादशाह अकबरने उसकी बेटी बना कर विवाह किया था। ५ भेजा। ६ उधर। ७ दक्षिणियोंसे।

नवाबनूं कही लड़ाईनूं चढ़ आवै । पछै आयनै नवाबनूं कही लेजायनै दिखणियांसूं सैज सी[1] लड़ाई कराई नै आप पैहलां-हीज उपाड़नै फोज मांहै नांखिया[2] सु कांम आयो ।

गीत रांमचंद करमसीरारो[3]

असमर[4] भुज धूंण वधै लग[5] अंबर ।
खत्रियां-गुर[6] जूझार खरै ।
रूठै दिखण तणै[7] सिर रांमै ।
हमल हलाया सिखर-हरै[8] ॥१
आठवाट[9] कर थाट[10] एकठा ।
भुज पतसाही भार भले ।
अैहमद नगर वीद वर ऊपर ।
कछवाहै चाळवी[11] कले ॥२

२१ धरमचंद । मींच मुंवो ।
१८ तेजसी रायमलरो ।
१९ सकतसिंघ तेजसीरो ।
१९ मांनसिंघ तेजसीरो ।
२० नारणदास मांनसिंघरो।
२१ वळभद्र नारणदासोत । दिखण पातसाहजीरै कांम आयो । खांन-जिहांरी वेढ़ छत्रसिंघ भेळो[12] ।
२२ कनीदास ।
२२ गोपीनाथ ।
२२ रतन ।
२२ सूरसिंघ ।
२२ किसोरसिंघ ।
२१ दीपचंद नारणदासरो ।
२१ नरसिंघदास मांनसिंघरो।
१९ रांमसिंघ तेजसीरो। मोटा राजाजीरो सुसरो जैतसिंघजीरो नांनो ३ ।
१८ जगमाल रायमलरो ।
१९ भींव जगमालरो ।

---

1 मामूली । 2 और उसने पहले अपने घोड़ोंको उठा कर सेनामें डाल दिया । 3 करमसीके बेटे रामचंदका गीत । 4 तलवार । 5 तक । 6 क्षत्रिय-श्रेष्ठ । 7 के । 8 शिखरके वंशजने । 9 संहार, नाश । 10 समूह । 11 शस्त्र चलाया । 12 नारायणदासका बेटा बलभद्र, दक्षिणमें खानजहांकी लड़ाईमें छत्रसिंहके साथ बादशाहके काम आया ।

२० दूदो भींवरो ।
१८ सीहो रायमलरो ।
१८ सुरतांण रायमलरो ६ ।
१७ दुरगो सेखारो ।
१८ मांनसिंघ दुरगावत ।
१९ सूरसिंघ मांनसिंघोत ।
२० नारणदास ।
२१ अलखां । द्वारकादासरै समैं खंडेलै साहवीरी मदार छै[1] ।
२२ जगनाथ रावळै चाकर ।
२२ दूदो ।
२२ दळपत ।
२२ बळभद्र ।
२१ केसोदास नारणदासरो। गिरधरजी साथै कांम आयो ।
२२ भगवांनदास ।
२१ मोहणदास । महारोठ कांम आयो ।
२२ दीपचंद ।
१७ रतनसी सेखारो ।
१८ अखैराज रतनसीरो ।
१९ कांन्ह अखैराजरो ।
२० दयाळदास ।
२१ स्यांमदास ।
१९ [illegible] [illegible]रो ।

२० दळपत पातसाही चाकर ।
२१ रांमसिंघ ।
२१ सांमसिंघ ।
२१ सुदरसण ।
१७ अभो सेखारो ।
१८ सांईदास अभारो ।
१९ लूंणो सांईदासरो ।
२० नाथो लूंणारो ।
२१ मनोहरदास ।
२१ जसो ।
२१ राघोदास ।
२१ भोपत ।
२१ हररांम ।
२१ दयाळ ।
२१ वीको ।
२१ सींधो ।
२१ जसो नाथावत ।
२२ चंद्रभांण ।
२१ सींधो नाथारो ।
२२ वीठळदास ।
२३ उदैभांण । पातसाही चाकर ।
२२ कल्यांणदास ।
२३ बिहारी ।
२३ जैतसी ।
२३ वेणीदास ।
२२ सुंदरदास ।

१ द्वारकादासके समयमें खंडेलेकी साहिबीका मदार [illegible] है ।

२३ राघोदास ।
२२ स्यांमदास ।
२३ अजबसिंघ ।
२२ सादूळ ।
२३ प्रेमसिंघ ।
२० पैरोज ।
२१ सूरसिंघ ।
२१ दळपत ।
२१ उदैसिंघ ।
२० सिंघ ।
२० ठाकुरसी ।
२१ किसनसिंघ ।
२१ डूंगरसी ।
२२ कुंभकरण ।
२२ चंद्रभांण ।
२२ विजैरांम ।
२१ केसरीसिंघ ।
२१ गिरधर ।
२२ गरीबदास ।
२२ जूंझार ।
२१ दरियाखांन ।
२२ बाहदर ।
१७ कूंभो सेखारो ।
१८ रांमचंद ।
१९ राघोदास ।
२० माधोदास राघोदासरो । रावळै जगड़वासरो पटो छो[1] ।
२० भोपत राघोदासोत ।
२१ रांमसिंघ ।
२१ सुजांणसिंघ ।
१८ जैमल कूंभारो ।
१९ ईसरदास जैमलोत । पातसाही चाकर ।
२० वीरभांण ।
२१ सवळसिंघ ।
२१ सांमदास ।
२१ गरीबदास ।
२० सुरजन कांम आयो ।
२१ प्रेमसिंघ ।
२० माधोसिंघ । कांम आयो ।
२१ गजसिंघ ।
२१ मांनसिंघ ।
२० प्रथीराज । नाहर मारियो कटारी ३ वाही[2] ।
२१ खींवकरण ।
२१ महासिंघ ।
२० भोपत ।
२१ सांवतसिंघ ।
२४ जैतसी कूंभारो ।
१७ भारमल सेखारो ।
१९ वाघ भारमलरो ।

---

1 राघोदासके पुत्र माधोदासको जोधपुर महाराजाकी ओरसे जगड़वास गांवका पट्टा था । 2 पृथ्वीराजने तीन वार कटारी मार करके नाहरको मारा ।

१९ भगवांनदासनूं चाकर मारियो[1] ।

२० माधोसिंघ ।

१९ गिरधरदास । राजा गिरधर साथै कांम आयो ।

१७ अचळो सेखारो ।

१८ रूपसी ।

१९ कलो ।

२० दुरजणसाळ ।

२० वलू ।

२१ रांमसिंघ ।

२२ राजसिंघ ।

२२ जूंभारसिंघ ।

१८ करमचंद अचळारो ।

१९ पीथो ।

२० गोविंददास ।

२१ गोपाळ ।

२१ महासिंघ ।

१५ खैराज खरहथ बालारा, जिणरा पोता करणावत कछवाहा कहीजै । अठै थोड़ा मांडिया छै । पण करणावत आदमी २०० छै । करणावत मनोहरपुर परधांन हुता[2] ।

१६ भींव ।

१७ गोयंद ।

१८ रांमसिंघ ।

१९ भगवंतदास ।

२० सूजो ।

२१ विजैरांम ।

२१ मांनसिंघ ।

२१ मोहनरांम ।

२० चतुरसिंघ भगवंतरो ।

२१ हिमतसिंघ ।

२० बळभद्र ।

२० हरिदास ।

१४ कछवाहो सिवब्रह्म राजा उदैकरणरो । जिणरा नींदड़का-कछवाहा कहीजै । अठै मांडिया नहीं । आंबेर चाकर छै[3] ४ ।

१३ राजा उदैकरण जूण-सीरो ।

१३ कछवाहो कूंभो जूण-सीरो । जिणरा कूंभाणी-

---

1 भगवानदासको उसके चाकरने मार दिया । 2 खैराज खरहथ बालाका, जिसके पोते करणावत-कछवाहा कहे जाते हैं, वे मनोहरपुरके प्रधान थे, यहां थोड़े ही लिखे हैं, परन्तु इनके २०० आदमी हैं । 3 राजा उदयकरणका बेटा कछवाहा शिवब्रह्म, जिसके वंशज नींदड़का-कछवाहा कहे जाते हैं, वे आमेरके चाकर हैं, यहां इन्हें नहीं लिखा है ।

कछवाहा कहीजै[1] ।
कूंभो उदैकरणरो भाई ।
कूंभांणियांरी वडी पीठ
छै[2] । आंवेर चाकर छै।
··· महेसदास पीथारो ।
··· किसनसिंघ । राजा
जैसिंघरै बटा कीरत-
सिंघ कनै रहतो । संमत
१७०८ काविल मींच
मुंवो[3] ।
१२ जुणसी कुंतळरो ।
१२ हमीर कुंतळरो। जिणरा
हमीर-पोता-कछवाहा
कहीजै, सु हमीरदेरा
पोतरा घण। डील छै ।
आंवेर चाकर छै । केई
नरायणै चाकर छै[4] ।
··· पतो ।
··· स्यांमसिंघ पतारो ।
राजा जैसिंघरो चाकर ।
··· रांमसिंघ पतारो ।
१२ भड़सी राजा कुंतळरो
जिणरा भाखरोत-कछ-
वाहा कहीजै । भड़सी-
पोता[5] ।
··· वेणीदास ।
··· साहिवखांन वेणीदासरो।
भलो रजपूत हुवो ।
पैहली आसफखांरै थो[6]।
पछै पातसाही चाकर
हुवो ।
··· किसनसिंघ साहिव-
खांनरो । राजा अनुरुध
गोड़रो चाकर[7] ।
१२ कछवाहो भड़सी
कुंतळरो । तिणरा
कीतावत-कछवाहा
कहीजै[8] ।
१२ आलणसी राजा
कुंतळरो जिणरा जोगी-
कछवाहा कहीजै[9] ।
इणांरी[10] ठाकुराई
पैहली जोवनेर हुती ।
हमैं तो जोवनेर जोगियांसूं

---

1 जुणसीका पुत्र कछवाहा कूभा जिसके वंशज कूंभाणी-कछवाहे कहे जाते हैं । 2 कूंभाणियोंकी वड़ी प्रतिष्ठा है । 3 किशनसिंह राजा जयसिंहके बेटे कीर्तिसिंहके पास रहता था, सं० १७०८ में काबुलमें अपनी मौत मरा । 4 कुंतलका बेटा हमीर, जिसके वंशज हमीर-पोता कछवाहे कहे जाते हैं, हमीरदेवके पोतों आदिका वड़ा कुटुम्ब है, कई आमेरमें और कई नराणेमें चाकर हैं । 5 जिसके वंशज भाखरोत-कछवाहे या भड़सी-पोता कहे जाते हैं । 6 पहले आसफखांके यहां नौकर था । 7 राजा अनिरुद्ध गौड़का चाकर । 8 जिसके कीतावत-कछवाहे कहे जाते हैं । 9 जिसके जोगी-कछवाहे कहे जाते हैं । 10 इनकी ।

छूटो[1]। केई आंबेर नरायणै चाकर छै[2]।

··· रांमदास वणवीररो। राजा जैसिंघरै वास[3]।

··· थांनसिंघ खांडेरावरो। राजा जैसिंघरै वास।

११ कुंतळ कीलणदेरो।

११ रावत खैराज कीलणदेरो। तिणरा[4] धीरावत कछवाहा कहीजै।

१२ मालक रावत खैराजरो।

१३ धीरो मालकरो। जिणरा[5] धीरावत कहावै[6]।

१४ नापो धीरारो।

१५ खांन नापारो।

१६ चांद खांनरो।

१७ ऊदो चांदरो।

१८ रांमदास ऊदारो। दरबारी।

१९ दिनमिणदास।

१९ सुंदरदास।

१९ दलपत।

१९ नारायण।

१८ रांमदास दरबारी ऊदावत पैहलो सल्हैदीरो वालार[7] थो। पछै पातसाह अकबररो बोहत निवाजसरो चाकर हुवो[8]। अरजबेगी हुवो[9]। वडो दातार हुवो। पछै अकबर पातसाह फोत हुवां पछै[10] जहांगीर वगसरै थांणै राखियो थो, उठै रांम कह्यो[11]। जहांगीर बोहत कुमया की[12]। अकबर-पातसाह गुजरात ली तद इणगारसूं गुजरात गयो। तद सांगानेर कोटवाळ थो,[13] तठै खिजमत की तद मुजरो हुवो[14]।

११ जरसी राव कीलणदेरो[15]। जिणरा जसरा-कछवाहा कहीजै। पूरब मांहै छै। जसरा

---

1 अब तो आंबेर जोगी-कछवाहोंसे छूट गया। 2 कई आंबेर और नरायणमें चाकर हैं। 3 राजा जयसिंहके यहां रहता है। 4 उसके। 5 जिसके। 6 कहलाते हैं। 7 नौकर। 8 पीछे बादशाह अकबरका बहुत कृपापात्र चाकर हुआ। 9 अर्ज गुजरानेका (अर्ज बेगी) पदाधिकारी नियत हुआ। 10 फौत होनेके बाद। 11 मर गया। 12 जहांगीरने बहुत अकृपा की। 13 जब यह सांगानेरका कोटवाल था। 14 वहां पर (गुजरातमें बादशाहकी) अच्छी सेवा की तब उसका वहां मुजरा हुआ था। 15 जरसी राव कीलणदेका बेटा।

पोता[1] ३ ।

१० कीलणदे राजदेवोत ।

१० भोजराज राजदेरो ।
जिणरा पोतरा लवांणारा-गढ़रा-कछवाहा कहीजै[2] ।

... केसोदास राजा जैसिंघरै वास[3] ।

८ वालो मलैसीरो । सात तवा अलावदी पातसाह आगै फोड़िया। मोहीलांरै परणियो तठै खेत्रपाळ कूट काढ़ियो तरै गैल छूटी[4] ।

७ मलैसी पुंजनरावरो । मलैसीरै ३२ वेटा हुवा।

७ भींवड़नै लाखण पुंजनरो। जिणरा पोतरा कछवाहा-परधांनका कहीजै[5] ।

४ राजा हणूं काकिलरो ।

४ कछवाहो अळधरो राजा काकिलरो[6] । जिणरा पोता तिके कछवाहा-मेड़का-कुंडळका कहीजै[7]। मनोहरपुर चाकर चींधड़ छै । मेड़का-कुंडळका अमरसर गांव १२ हुता। दांम १२०००००। हमैं अै गांव वैराट वांसै लगाया ।

४ कछवाहो रालण राजा काकिलरो जिणरा पोता रालणोत कछवाहा कहीजै । मनोहरपुर चाकर चींधड़ छै ।

४ कछवाहो देलण राजा काकिलरो । जिणरा पोता लहर-कछवाहा कहीजै । कैहेक कछवाहा गंगा जमना वीच अंतरवेध मांहै छै । सालेर मालेर गांव २० मांहै कछवाहा भूमिया असवार ४०० छै । घणा दिनांरा उठै जाय रह्या छै।

इति कछवाहांरी ख्यात वार्ता संपूर्णम ।

दसकत वीठू पनैरा छै । शुभं भवतु ।

1 जिसके वंशज जसरा-कछवाहे अथवा जसरा-पोता कहे जाते हैं, पूर्वमें हैं। 2 जिसके पोते लवाणागढरा-कछवाहे कहे जाते हैं। 3 केशवदास राजा जयसिंहके यहां रहता था। 4 वाला मलैसीका वेटा, इसने एक साथ लोहेके सात तवे एक ही तीरसे अलाउद्दीनके सामने फोड़ कर दिखाये थे, मोहिलोंके यहां व्याहा था, वहां पर क्षेत्रपालको मार भगाया, तव सवका पीछा छूटा। 5 जिसके पोते प्रधानका-कछवाहे कहे जाते हैं। 6 कछवाहा अलधरा राजा काकिलका वेटा। 7 जिसके पोते कुंडलका-कछवाहे अथवा मेड़का-कछवाहे कहे जाते हैं।

वात एक गोहिलां खेड़रा धणियांरी

खेड़[1] गोहिलांरी वडी ठाकुराई थी। राजा मोखरो धणी छै। तिणरै बेटी बूंट पदमणी थी[2]। तिणरी वात खुरासांणरै पातसाह सांभळी[3] तरै तिण ऊपर घोड़ा लाख तीन विदा किया। तिकै चढ़ खेड़ आया। तुरकें खेड़ सहर घेरियो[4]। गोहिल पिण[5] तद जोर[6] था। दिन ४ सारीखी वेढ़ हुई। पछै गोहिलें जमहर[7] करनै मैदांन आय वेढ़ हुई; तळाव बहवनसररै आगोर[8] तठै घणा गोहिल कांम आया; घणा तुरक कांम आया; नै घोड़ा पाछा गया। फौज आवतां पैहली बहवन कठैही[9] गयो थो सु ऊबरियो,[10] बूंट पिण ऊबरी[11]। राजा मोखरो कांम आयो। पछै मोखरारो बेटो बहवन टीकै बैठो। साथ घणो कांम आयो। ठाकुराई निबळी पड़ी[12]। तरै बाहड़मेररै धणियां गोहिल दबाया[13]। गांव नाकोड़ै गढ़ पंवारै कियो[14]। धरती लेणरो विचार कियो तरै बहवन मंडोवर हंसपाळ पड़िहार धणी थो, तिणनूं कहाड़ियो[15]—"म्हां कनां[16] पंवार धरती ले छै। कै तो म्हांरी ऊपर करो नहीं तरै पछै थांनूंही लागसी[17]।" तरै पड़िहारै कह्यो—"थांरै[18] बेटी पदमणी बूंट छै, तिका परणावो तो थां सांमल हुवां।" तरै इणां आपरै गम देखनै[19] बूंट परणावणी कबूल की। बूंट तो वरजियो भाईनूं[20] पण इणै वात मांनी नहीं। तरै पड़िहार हंसपाळ चढ़ खेड़ आयो। तिण समै पंवारै गायां लीवी।

---

1 खेड़ मारवाड़के मालानी प्रान्तमें लूनी नदीके किनारे बालोतरासे पांच मील पश्चिममें है। राठौड़ सीहा और आसथांनने सर्वप्रथम यहीं अपना राज्य कायम किया था। अब खेड़ खंडहरोंके रूपमें रह गया है। 2 राजा मोखरा वहांका स्वामी है, उसके बूट नामकी एक बेटी जो पद्मिनी थी। 3 सुनी। 4 तुर्कोंने खेड़ शहरको घेर लिया। 5 भी। 6 शक्तिशाली। 7 जौहर। 8 तालाबके पासकी वह भूमि जिसका पानी तालावमें आता है। 9 कहीं भी। 10 बच गया। 11 बूट भी बच गई। 12 राज्य निर्वल पड़ गया। 13 तब वाड़मेरके स्वामियोंने गोहिलोंको दवाया। 14 नाकोड़ामें पँवारोंने गढ़ बनवाया। 15 उसको कहलवाया। 16 हमारे पाससे। 17 या तो हमारी सहायता करो नहीं तो ये पीछे तुमको भी सतायेंगे। 18 तुम्हारे। 19 तब इन्होंने अपनी परिस्थितिका विचार करके। 20 बूटने तो भाईको मना किया।

तरै पड़िहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढ़िया,[1] सु गांव नाकोड़ै आपड़िया[2]। गायां तो कोट पोहती । हंसपाळ घोड़ो नांखियो सु प्रोळरा किवाड़ भागा[3] । तठै[4] पंवार मांणस[5] ४०० कांम आया । मांणस ३०० गोहिल पड़िहार कांम आया । हंसपाळरो माथो तूट पड़ियो । हंसपाळ माथो पड़ियै पछै धड़ गायां ले वळियो[6] । गायां खेड़ आंणी[7] । पणहारियां कह्यो–"देखो माथा विण धड़ आवै छै[8] ।" तठै हंसपाळ पड़ियो[9] । पछै पड़िहार परणण आया[10] ; फेरा २ लिया; तरै वूंट बोली–"गोहिल थांसूं छूटा[11] ।" पड़िहारै कह्यो–"छूटा ।" तरै इण वूंट कह्यो–"मैं तो थांनूं वरजियो थो[12] पण थे मांनियो नहीं । हमैं गोहिलांसूं खेड़ जाज्यो[13] । पड़िहारांसूं मंडोवर जाज्यो[14] ।" इणां दोनांहीनूं वूंट श्राप देनै उड़ गई । उड़तीनूं वूंटरै मांटी हाथ घातियो सु एक लूगड़ो वूंटरो हाथ आयो नै वूंट उड़ गई[15] ।

वात

गोहिलां कनां[16] खेड़ राठोड़ां ली, तरै[17] गोहिल खेड़ छाड़ नै[18] एक वार कोटड़ारै देस वरियाहेड़ै गया । पछै उठाथी धांधळै मारे नै परा काढ़िया,[19] तरै कितराहेक[20] दिन सीतड़हाई जेसळमेरथी कोस १२ छै तठै जाय रह्या । पछै उठैही[21] राठोड़ां आगै रह न सकै । तरै जेसळमेररो धणी गोहिलांरै परणियो हुतो सु औ रावळ कनै

---

1 तब पड़िहार और गोहिल दोनोंने शामिल होकर पीछा किया । 2 सो गांव नाकोड़ामें उनको पकड़ लिया । 3 हंसपालने अपना घोड़ा ऐसा डाला सो पोलके किंवाड़ टूट गये । 4 वहां । 5 मनुष्य । 6 हंसपालका सिर कट कर पड़ जानेके बाद उसका धड़ गायोंको लेकर लौटा । 7 गायोंको खेड़में ले आया । 8 देखो, बिना सिरके धड़ आ रहा है । 9 (पनिहारिनोंके ऐसा कहते ही घोड़े परसे) हंसपाल (का धड़) वहां गिर गया । 10 फिर पड़िहार विवाह करनेको आये । 11 तब वूंट बोली, गोहिल तुमसे ऋणमुक्त हुए । 12 मैंने तो तुम्हें पहले मना कर दिया था । 13 अब गोहिलोंसे खेड़ छूट जाय । 14 पड़िहारोंसे मंडोर छूट जाय । 15 उड़ती हुई को वूटके पतिने हाथ डाला सो वूटका एक वस्त्र उसके हाथ आया परन्तु वूट तो उड़ गई । 16 से, पाससे । 17 तब । 18 छोड़ कर । 19 पीछे वहांसे भी धांधलोंने मार कर निकाल दिया । 20 कितनेक । 21 वहां भी ।

गया[1]। तरै रावळ इणांनूं केई दिन जेसळमेररा गढ़ ऊपर राखिया। तिको दिखण दिस गढ़में ओ अजेस गोहिल टोळो कहावै छै[2]। तठा पछै कितरैहेक दिने अै सोरठनूं गया[3]। सेत्रूंजासूं कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै[4]। रावळ कहाड़ै छै[5]। भला रजपूत भूमिया छै। गांव ४०० मांहै उणांरो भोमियाचारारो ग्रास लागै छै[6]। सेत्रूंजो पिण गोहिलांरै छै[7]। पालीतांणै सिवो गोहिल छै, तिको जात करण आवै छै। तिणां कनै क्यूंही लेनै पछै सेत्रूंजै सिंघनूं चढ़ण दे छै[8]। विरद उणांनूं चारण भाट मारवारो दे छै[9]।

ग्रासरी विगत[10]—

सोरठरै देस एक ठोड़ां सीहोर, सेत्रूंजासूं कोस ४ छै तठै रावळ अखैराज; धोधरै परगनै इणांरो ग्रास[11] लागै।

एक ठोड़ लाठी, गांव ३६० में ग्रास लागै। लोलियांणो, अरजियांणो धोधुकाथी कोस १७।

सोरठ मांहै देवके-पाटण सोमईयो महादेव वडो जोतलिंग हुतो,[12] तिको संमत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाड़ियो,[13] तठै गोहिल हमीर, अरजन भींवरा बेटा कांम आया, वडो नांव कियो[14]। तिणां साथै वेगड़ो भील पिण कांम आयो[15]।

1 सो ये रावलके पास गये। 2 गढ़के अंदर दक्षिण दिशाका वह स्थान अब भी गोहिल-टोला कहलाता है। 3 जिसके कितनेक दिनों बाद ये सोरठको चले गये। 4 वहां जाकर रहे हैं। 5 रावल कहलाता है। 6 चारसौ गांवोंमें उनका भूमिचारा ग्रास (कर) लगता है। 7 शत्रुंजय भी गोहिलोंके अधिकारमें है। 8 पालीताना शिवा गोहिलके अधिकारमें है, वह वहां जो यात्रा करनेको आते हैं उनसे कुछ कर लेकर फिर यात्री-संघको शत्रुंजय पर्वत पर चढ़ने देता है। 9 (सोरठमें जाने पर भी) चारण और भाट लोग उनको मारुओंका (मारवाड़ियोंका) ही विरुद देते हैं। 10 ग्रासका विवरण। 11 एक कर। 12 सौराष्ट्रमें देवपाटन स्थानमें सोमनाथ महादेव एक ज्योतिर्लिंग था। 13 जिसको अलाउद्दीन बादशाह संम्वत् १३०० में जाकर उखाड़ लाया। 14 वहां पर भीमके बेटे गोहिल हमीर और अर्जुन काम आये, बड़ा नाम किया। 15 उनके साथमें बेगड़ा भील भी काम आया।

अथ पंवारांरी उतपत

आबू अनळकुंड वसिष्ट रिखेस्वर दैतांरै वधरै वास्ते च्यार जात रजपूत उपाया[1]—

१ पंवार ।
२ चहुवांण ।
३ पड़िहार ।
४ सोळंकी ।

पंवारांरी पीढ़ी—

१ पंवार ।
२ परूरव ।
३ किलंग ।
४ इंद्र ।
५ गंध्रपसेन ।
६ राजा विक्रमादित ।
६ भरथरी ।
७ वीकमचित्र ।
८ सालवाहन ।
९ स्रतनख ।
१० गोदभ ।
११ गोपिंड ।
१२ महिपिंड ।
१३ राजा कारतन ।
१४ सहंस राजा ।
१५ राजा सिंघळसेन ।
१६ भोज धाररो धणी ।
१७ राजा वंध ।
१८ राजा उदैचंद ।

राजा उदैचंदरा वेटा, आंक १८ ।

१९ राजा रिणधवळ ।
१९ आल आबू धणी ।
१९ पाल आबू धणी । तिणरी औलादरा उमर जाळौररै देश छैं[2] ।
१९ माधवदे सिद्धरावरै परणियो हुतो[3] । पछै पाटण आयो । तिणरा वेटा—
२० सूर । २० सांवळ ।
१९ जगदेव सिद्धरावरो चाकर, जिण कंकाळीनै माथो दियो[4] ।

---

1 आबूमें ऋषीस्वर वशिष्ठने दैत्योंका वध करनेके लिये अग्निकुंडसे चार जातिके राजपूतोंको उत्पन्न किया । 2 पाल आबूका स्वामी, इसकी औलादके जालोर प्रदेशके ऊमर गांवमें हैं । 3 थी । 4 जगदेव सिद्धरावका चाकर, जिसने कंकालीको अपना सिर काट कर दे दिया था ।

जगदेवरो परवार, आंक १९

२० डाभ रिष। तिणरा पोतरा आगरै नजीक पंवार[1]।

२० गूंगा । जगदेव माथो दियां पछै बेटा हुआ तिकै[2] ।

२० काबा । रांमसेण तथा द्वारका कांनी[3] ।

२० गैहलड़ो । कहै छै पैहली गैहलड़ांरी ठाकुराई खारी-खाबड़ हुती[4] ।

डाभ रिषरी औलाद, आंक २०

२१ धोम रिष[5] ।

२२ धरमदेव राजा, किराड़ू-धणी ।

२३ धांधू ।

२२ धरणी वराह, किराड़ू धणी ।

२३ बाहड़ । तिणरै घरै अपछरा थी[6] । अपछरारै पेटरो ।

२४ सोढ़ो ।

२४ सांखलो ।

२२ उपळराई किराड़ू छोड़ ओसियां वसियो । सचिवाय प्रसन हुइ माल वतायो । ओसियांमें देहरो करायो[7] ।

वात पंवारांरी

सोढा, सांखला पंवारै मिळै[8] । पैहली इणांरो दादो धरणीवराह, बाहड़मेर जूनो किराड़ू कहीजै, तिणरो धणी हुतो[9] । तिणरै नवै कोट मारवाड़रा हुता[10] । तिणरै बेटो बाहड़ हुवो । तिणसूं[11] आ धरती छूटी । एक वार बाहड़ रायधणपुर कनै[12] गांव झांझमो तठै जाय रह्यो । पछै बाहड़रो बेटो सोढो तो सूंमरां कनै गयो; तिणनूं

---

1 डाभ ऋषि जिनके पोते आगराके पासमें रहने वाले पँवार हैं । 2,3,4 जगदेवके सिर देनेके वाद जो वेटे हुए उनमें एक गूंगा, दूसरा कावा, जिसके वंशज रामसेन तथा द्वारकाकी ओर हैं और गैहलड़ो, जिसके वंशजोंके संवंधमें कहा जाता है कि पहिले इनकी ठकुराई खारी-खावड़में थी । 5 धोम ऋषि । 6 वाहड़ जिसके घरमें अप्सरा थी और उसके पेटसे सोढ़ा और सांखला हुए । 7 उपलराय किराड़ूको छोड़ कर ओसियांमें जा वसा, सचिवाय माताने प्रसन्न होकर उसे धन वताया और उसने ओसियांमें मंदिर वनवाया । 8 सोढा और सांखला दोनों शाखायें पँवारोंसे मिलती हैं । 9 पहले इनका दादा धरणीवराह, जो अव जूना वाड़मेर और किराड़ू कहा जाता है, उसका स्वामी था । 10 जिसके अधिकारमें मारवाड़के नौ ही कोट थे । 11 उससे । 12 पास ।

सूंमरां रातो कोट दियो, ऊमरकोटसूं कोस १४। नै तठा पछै[1] सोढा हमीरनूं जांम तमाइची ऊमरकोट दियो। वाघ मारवाड़ मांहै पड़िहारां कनै आयो। वाघोरियै वसियो।

पीढ़ियांरी विगत—

१ गंध्रपसेन।

२ अजैपाळ।

३ अजैसी।

४ बंधाइत।

५ बंध।

६ धरणीवराह।

७ बाहड़, तिणरै घरै अपछरा हुती। तिणरै पेट बेटा २—

८ सोढो, ८ सांखलो वाघ।

वाघ पंवार, तिणरी औलादरा सांखला हुवा[2]। तिण सांखलांरी दोय ठाकुराई सारीखी हुई। तिणरी विगत—

वाघ पंवार छहोटण, बाहड़मेर छोड़नै वाघोरियै आइ रह्यो। पड़िहार गैचंदरै घरै भुवा सुंदर हुती, तिण परसंग आयो। वाघोरियारो भाखर[3] दिखायो। इणरी भुवा खरच दै। पछै गैचंदनूं रजपूते भखायो,[4] कह्यो—"तिणरी इसी दछा दीसै छै,[5] थांनूं मार धरती अै लेसी[6]।" तरै गैचंद इण ऊपर फौज मेली। वाघनूं मारियो। घणा सांखला मारिया। मुंहतो सुगणो ऊवरियो[7]। वैरसी वाघावत पेट हुतो,[8] सु मुंहतो सुगणो इणरी मानूं लेनै अजमेर गयो। उठै गयां पछै वैरसी वेगोहो जायो[9]। मोटो हुवो। अजमेर धणी था तिणनूं मुं॥ सुगणो वैरसीनूं लेजाय मिळियो। घणा दिन चाकरी की। पछै मुजरो हुवो तरै कह्यो—"जांणै सो मांग[10]।" तरै इण कह्यो—"म्हारो वाप गैचंद विना खूंन[11] मारियो छै, तिणरी ऊपर करो[12], फौज दो। तरै फौज उणै[13] दी। तरै वैरसी माताजीरी इंछना मनमें

1 जिसके वाद। 2 सांखला-वाघ, जिसकी औलादके सांखले हुए। 3 पहाड़। 4 वहकाया। 5 इसकी ऐसी हालत दीखती है। 6 तुमको मार करके तुम्हारी वरती ये ले लेंगे। 7 वच गया। 8 वाघाका वेटा वैरसी उस समय गर्भमें था। 9 वहां जानेके वाद जल्दी ही वैरसीका जन्म हो गया। 10 तेरी इच्छा हो सो मांग। 11 अपराव। 12 उसके लिये सहायता करो। 13 उसने।

करी[1]–"म्हारै बापरो वैर वळै,[2] । गैचंद हाथ आवै तो हूं कँवळ-पूजा करनै श्री सचियायजीनूं माथो चढ़ाऊं।" पछै सचियायजी आय सुपनैमें हुकम दियो. वांसै[3] हाथ दिया नै कह्यो–"काळै वागै, काळी टोपी, वैहलरै[4] काळी खोळी, काळा बळद जोतरियां,[5] जिदारै[6] रूप कियां सांम्हां मिळसी । ओ गैचंद छै, तू मत चूकै; कूट मारै ।" पछै वैरसी मूंधियाड़ ऊपर फौज लेनै दोडियो । सांम्हां उण रूप आयो, सु गैचंद मारियो । पछै ओसियां जात आयौ[7] । आप एकंत देहुरो जड़नै कँवळपूजा करणी मांडी[8]। तरै[9] देवीजी हाथ झालियो,[10] कह्यो–"म्हे थांरी सेवा-पूजासौं[11] राजी हुवा; तोनै माथो बगसियो; तूं सोनारो माथो कर चाढ़।" आपरै हाथरो संख वैरसीनूं दियो, कह्यो–"ओ संख वजायनैं सांखलो कहाय[12] ।"

पछै वैरसी आय रूंणवाय वसियो । मूंधियाड़रो कोट पड़िहारांरो उपाड़नै सांखलै रूंणकोट करायो[13] ।

पीढ़ियांरी विगत—

१ सांखलो वैरसी वाघरो ।
२ रांणो राजपाळ ।
३ छोहिल राजपाळरो ।
३ महिपाळ राजपाळरो । तिणरै वांसला[14] जांगळवा ।
३ तेजपाळ राजपाळरो । तिणरै बेटा–
४ भोहो । जिण भोहारै बेटा–
५ उदग वडो रजपूत हुवो । राजा प्रथ्वीराज चहुवांणरा चाकर सांवतांमें[15] हुवो । मेड़तो पटै हुतो ।
५ देवराज भोहारो ।

---

1 तब वैरसीने अपने मनमें सचियाय माताजीका ध्यान करके अपनी इच्छा प्रकट की । 2 मेरे बापका वैर निकले । 3 पीछे । 4 वहलके । 5 काले बैल जुते हुए । 6 जिन्नका । 7 बादमें ओसियांकी यात्रा करनेको आया । 8 मंदिरको बंद करके एकान्तमें कमल पूजा करनी शुरु की । 9 तब । 10 पकड़ा । 11 से । 12 यह शंख बजा और सांखला प्रसिद्ध हो । 13 पड़िहारोंके अधीनस्थ मूंधियाड़ गांवका कोट गिरवा कर सांखलोंने उसने रूणवागमें रूणकोट बनवाया । 14 पिछले वंशज । 15 सामंतोंमें ।

सांखलो छोहिल राजपाळोत । तिणरै वांसला रूणेचा[1] आंक ३ ।

४ पालणसी छोहिलरो । पातसाह आयो थो,[2]
५ मेहदो । तिणसूं[3] लड़ाई हुई ।
६ हंसपाळ । पातसाह भागो । नगारा
७ सोढल । नीसांण पड़ाय लिया[4] ।
८ वीरम । तिणसूं सांखला नादेत-
९ चाचग ऊपर मांडवरो नीसांणोत कहावै छै[5] ।

सांखला चाचग वीरमोतरो परवार, आंक ९ ।

१० रांणो सीहड़ चाचगोत[6] । निपट वड़ो रजपूत हूवो । तिणरै पंगळी वेटी हुई । तिणरै पेट धारू आनळोत वडो रजपूत हुवो[7] ।

कवित्त सीहड़रो मेरसूं मांमलो[8] कियो तिण साखरो[9]—

कांणजो कोपियो, लूस, अमणेर लियंतो ।
दुजड़ां[10] हथो दुभाळ,[11] रोस रोहिसै रत्तो ॥
वाळ जाळ वोरवौ, भरम पहाड़ां भग्गो ।
मचकोड़ै मेवड़ो, वळै वधनोर विलग्गो ॥
वधनोर गांज[12] आडोवळो, तोड़ै जड़ां तिलायली ।
सांखलै रांण सुजड़ां[13] हथै, भांजी[14] सीहड़ भायली ॥

सीहड़रा वेटा—

११ सालो सीहड़रो । ११ लूंणकरण ।
११ वछो सीहड़रो । ११ रतनसी ।
११ हंसो । ११ सुरजन ।
११ जैंतकरण । ११ देवराज ।

---

1 जिसके पीछे वाले रूणेचा कहलाते हैं । 2 चाचगके ऊपर मांडवका बादशाह चढ़ कर आया था । 3 जिससे । 4 नगारे और निशान खोस लिये । 5 इसलिये सांखले नादेत-नीसाणेत कहलाते हैं । 6 राणा सीहड़ चाचगका पुत्र । 7 जिसकी कोखसे आनलका पुत्र धारू बड़ा राजपूत हुआ । 8 युद्ध । 9 उसकी साक्षीका । 10 कटारें । 11 बड़ा वीर । 12 नाश करके । 13 कटारें । 14 तोड़ दी ।

११ कूंभो ।

११ नाल्हो ।

११ विजो ।

११ मांडण ।

साले सीहड़ोतरो परवार, आंक ११ ।

१२ ऊधो सालारो, तिणरो परवार पीपाड़[1] ।

१३ मोटल ।

१४ भांण ।

१५ अखो ।

१६ सातल ।

१७ लखमण ।

१८ मांनो ।

१९ हदो । रा॥ प्रथीराजरै परधांन ।

२० वलू ।

२१ वैरसल ।

१२ भोजराज सालारो । तिणरै वांसला खींवसररी तरफ[2] ।

१३ जैतसी रांणो ।

१४ रांणो मांडो जैतसीरो ।

१५ रांणो वीरनरसिंघ ।

१६ तेजसी ।

१७ रायपाळ ।

१८ अखो ।

१९ वीरमदे ।

२० कूंभो, हरदास महेसदासोतरै चाकर । भलो रजपूत थो ।

२१ गोवरधन ।

सांखलो वछू सीहड़ोत, आंक ११ ।

१२ देलो ।

१३ चूंडराव ।

१४ मेहो ।

१५ कांधळ ।

१६ जोधो ।

१४ सोम चूंडावत ।

१५ अमरसी सोमावत । घणी आखड़ी वहतो[3]।

१६ भींव ।

१७ वैरो ।

१८ खींदो ।

१९ हमीर ।

१९ करमसी ।

१९ नगराज ।

१७ कलो ।

१८ वीदो ।

---

1 सालाका पुत्र ऊदा, इसका परिवार पीपाड़में है । 2 सालाका पुत्र भोजराज, इसके वंशज खींवसरकी ओर हैं । 3 सोमाका पुत्र अमरसी, यह बहुत नियमोंका पालन कर अपना जीवन व्यतीत करता था ।

१६ मैंदो, रांणा उदैसिंघरै चाकर थो, गांव ८४। तांणो सोळंकी मलावाळो जागीरमें दियो थो[1]।

२१ डूंगरसी।

२१ तेजसीरा वेटा मेवाड़।

२२ दयाळदास। रु० १००००)रो पटो पावै।

२२ राजसी। रु.१००००)रो पटो पावै। वडो इतवारी रांणै जगतसिंघजीरै हुवो[2]। रांणो मोकल रांणा राजपाळरै परणियो थो। तिणरो दोहितो रांणो कूंभो हुवो नै इणांरो दादो सांखलो करमसी वडो हर-भगत हुवो[3]। सु मेवाड़ इण परसंग औ सांखला नै धधवाड़िया चारण सांखलांरा उठै गया सु तिण दिनरा छै[4]।

सांखला सीहड़ रूंणेचारा पोतरा ढूंढ़ाड़ कछवाहांरै चाकर,[5] आंक १०।

११ उदग।

१२ गजैसी।

१३ मेहो।

१४ पूरो।

१५ वळकरन पूरारो। वडो रजपूत हुवो। राजा मांनसिंघरै चाकर थो। राजा मांनसिंघरै नागोर हुई तद गांव ८४सूं रूंण पटै दी थी।

१६ सांवळदास वळकरनरो।

१७ मनोहरदास। राजा गजसिंघजीरै जोधपुर वास वसियो[6]।

१८ स्यांमसिंघ मनोहरदासरो।

सांखलो रतन सीहड़ोतरा रूंणेचा जोधपुर चाकर,[7] आंक ११।

---

1 सोलंकी मलेवाला तागा गांव भी जागीरमें दिया गया था। 2 राणा जगतसिंहके पास बड़ा विश्वासपात्र था। 3 राणा मोकल राजपालके यहां व्याहा था, इसका दोहिता राणा कुंभा हुआ और इनका दादा सांखला करमसी बड़ा हरिभक्त हुआ। 4 इस प्रसंगसे ये सांखले और इन सांखलोंके धधवाड़िया चारण मेवाड़में चले गये, उस दिनसे वे वहां हैं। 5 सांखला सीहड़ रूणेचाके पोते ढूंढाड़में कछवाहोंके चाकर हैं। 6 मनोहरदास, जोधपुरमें राजा गजसिंहजीके यहां जाकर बस गया। 7 सीहड़ रूणेचाका बेटा सांखला रतन जोधपुरमें चाकर है।

१२ महदसी ।
१३ आसल ।
१४ जगो ।
१५ बापो ।
१६ नरसिंघ ।
१७ गांगो ।
१८ रतनो ।
१९ करण ।
२० ऊदो ।
२१ सुंदर ।
१८ खींदो वैरारो । वैरो, भींव, अमर, सोमो, चूंडराव, देल्हो, वछु रांगा सीहड़रो । पाछलै पांनै वंसावळी छै[1] ।
१९ हमीर खींदावत ।
२० सांवळदास हमीरोत ।
२१ आसो सांवळदासोत ।
२२ रांमसिंघ आसावत ।
२३ कूंभो । २३ गोरधन ।
२४ कचरो ।
२२ रूपसी आसावत ।
२३ मनोहर ।
२४ सादूळ ।
२३ दूदो ।
२४ राजसी ।
२३ कल्यांणदास ।
२२ सूजो । आसावत । रा॥ उदैसिंघ गोपाळदासोतरै वास । उजेण कांम आयो ।
२० दुरगो हमीररो ।
२१ नरहरदास दुरगावत ।
२३ गिरधर ।
२४ गोकळ । २४ आसो । २४ माधो ।
२३ चतुरभुज ।
२४ करन ।
२३ सुंदरदास ।
२१ सुरतांण दुरगावत ।
२२ खींवसी । गोपाळदासरै वास । मेरियोवास पटै[2] ।
२३ खेतसी ।
२० भांनीदास हमीररो ।
२१ नारणदास । तोसीणो पटै ।
२२ कल्यांणदास । रा॥ गिरधरदास साथै कांम आयो ।
२३ जगनाथ । २३ जगमाल । २३ कमो । २३ कचरो ।

---

1 इनकी वंशावली पिछले पन्नेमें है । 2 खींवसीका निवास गोपालदासके यहां और मेरियोवास गाँव पट्टेमें ।

सांखला जांगलवा

१ वैरसी वाघरो । ओ सांखलो हुवो ।
२ रांणो राजपाळ वैरसीरो।
३ महिपाळ राजपाळरो ।
४ रायसी महिपाळरो ।

वात रायसी महिपालोतरो

रायसी महिपाळोत रूण छाडिनै नीसरियो जांगळू[1] । च।। प्रथीराजरी वैर[2] अजादे दहियांणी आ ठोड़ वसाई थी[3] तठै आंण गूढो करनै रयो[4] । ऊपर वरसात आयो, तरै क्यूं ढाक-पळासियारा आसरा किया छै[5] । सु उठै जांगळूरा कोट नजीक गूढो छै तठै रहै छै, नै रूणरा विगाड़नूं दोड़ै छै[6] । नै अठै सांखलांरी वैरां[7] पांणीनै जाय सु दहियांरा कँवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिके वेहड़ानूं गिलोलां वाहै छै,[8] सासता[9] वेहड़ा फोड़ै छै । वैर सखरी[10] देखै तिका वे कपूत कँवर थोकारै छै[11] । अै कहै छै[12]–"हूँ आ लेईस,[13] हूँ आ लेईस ।" सु गूढारा लोग सारी वात सांखला रायसीनूं जाय कहै छै । सु रायसी राहवेधी[14] छै । रायसी धरती लेण ऊपर निजर राखै छै । सु सारा आपरा लोगांनूं कहै छै–"आपणो इसड़ोइज समै छै,[15] दाव देख चालणो[16] ।" तिण समै जांगळू मांहै वांभण[17] एक केसो उपाधियो रहै छै सु तळाई जांगळूरी प्रोळरै मुंहडै आगै करावण मतै छै[18]। सु ओ सदा दहियांनूं कहै छै–"कहो तो हूं अठै तळाई कराऊं" सु दहिया करण न दे छै । सु ओ गाढो[19] दिलगीर छै, नै राहवेधी

---

1 महिपालका वेटा रायसी रूण छोड़ करके जांगलूको निकल गया । 2 स्त्री,पत्नी । 3 यह स्थान आवाद किया था । 4 वहां आकर गूढा (गुप्त स्थान) वना कर रहा । 5 वर्षा आई तव ढाक-पलास आदिके झोंपड़े वना लिये हैं । 6 और वहांसे रूणमें लूट-खसोट करने व डाके डालनेको जाते हैं । 7 स्त्रियें । 8 जो घड़ोंको गुलेलें मारते हैं । 9 निरंतर । 10 सुंदर । 11 अपनी (स्त्री) वनानेकी नीच कामना करते हैं । 12 ये कहते हैं । 13 मैं यह लूंगा । 14 दूरदर्शी । 15 अपना समय ऐसा ही है । 16 अवसर देख कर चलना । 17 व्राह्मण । 18 जांगलूकी पोलके ठीक सामने ही एक तलाई करानेका विचार करता है । 19 अत्यंत ।

आदमी छै। पछै सांखलै दहियां सिरदारांनूं भायां-बेटां सारांनूं नाळेर ४० तथा ५० सांवठा दिया[1]। एक साहो थापियो[2]। पछै वे परणीजण आया, सु जीमण[3] मांहै दारूमें[4] धतूरो घातनै[5] पायो, सु सारा बेसुध किया। पछै हेठा[6] पड़िया, तरै कूट मारिया। नै केसो उपाधियो ही साथै तो[7] इणनूं ही मारण लागा। तरै इण कह्यो–"मोनूं मत मारो[8]। मनैं उबारो, हूं थांहरै भलै कांम आडो आईस[9]।" तरै इणां कह्यो–"म्हे थनै उबारियो, पिण तूं किसै[10] कांम आईस, तिका वात म्हांनूं[11] कहै।" तरै इण कह्यो–"ओ तो थे मारिया[12] पिण कोट किण भांत लेस्यो ?" तरै इण सांखलै दीठो,[13] बांभण साची वात कहीं; तरै इणनूं घणो हित कर पूछियो; तरै इण कह्यो–"मोनूं थे गुरपदो[14] दो नै मोनूं थे कोट आगै तळाई करण देज्यो।" तरै सांखले केसै उपाधियै वात कही सु कबूल करी। इणसूं सौंस-सपत किया;[15] तरै केसै कह्यो–"हमैं ढीलरो कांम नहीं[16]।" कह्यो–" रात थकी सेजवाळा[17] ५० तथा ६० छै सु वेगा जोतरो[18]। मांहै पांच-पांच रजपूत बैसो[19]। हूं किवाड़ खोलाइ देईस[20]।" तरै सेजवाळा जूता, तरै केसै उपादियै प्रोळरै मूंहडै आयनै प्रोळियारो नांव ले जगायो। कह्यो–"मोहरतरी वेळा टळी जाय छै,[21] प्रोळ खोलो, सेजवाळा बारणै ऊभा छै[22]।" तरै उणै प्रोळ खोली। सेजवाळा सोह[23] मांहै आया। तरै रावळा वैहली मांहिथा[24] कूद-कूद जीनसालीया उतरिया। दहियांरा जिकै कोट मांहै हुता सु सोह कूट मारिया। सांखला रांणा रायसीरी जांगळूमें आंण फिरी[25]। रायसी इण भांत जांगळू लीवी।

---

1 पीछे सांखलोंने दहिया सरदारोंको और उनके भाई-वेटे सबको एक साथ ४०-५० नारियल अपनी कन्याओंकी सगाई करनेके लिये दिये। 2 लग्नका दिन नक्की किया। 3 भोजन। 4 शराब। 5 डाल कर। 6 नीचे। 7 था। 8 मुझको मत मारो। 9 मैं तुम्हारे अच्छे काममें सहायक होऊंगा। 10 कौनसे। 11 हमको। 12 इनको तो तुमने मार दिया। 13 देखा। 14 गुरुका पद। 15 इससे सौगंद-शपथ लिये। 16 अब देरी करनेका काम नहीं। 17 महिलाओंकी वाहक गाड़ियां। 18 जल्दी जोत दो। 19 वैठ जाओ। 20 दूंगा। 21 मुहूर्त्त टला जा रहा है। 22 वाहन वाहिर खड़े हैं। 23 सव। 24 से। 25 राणा रायसी सांखलेकी जांगलूमें आन-दुहाई फिर गई।

इतरी पीढ़ी जांगळू सांखलारै रही[1] ।

१ रांणो रायसी ।
२ रांणो अणखसी ।
३ रांणो खींवसी ।
४ रांणो कंवरसी । जिको सोतमें वैरमें खरलां रजपूतांरी बेटी आंधी भारमल तोत कर परणाई[2] । सु कंवरसी हथळेवो जोड़ियो, तरै भारमलनूं आंखै सूझण लागो[3] । खरलांरी ठाकुराई पैहली तद छोहलै रिणधीरसर कुंवीरोह कहीजै तठै हुती[4] । पूंगळसूं कोस १०, विकुंपुरथी कोस १५ ।
५ रांणो राजसी कंवरसीरो ।
६ करमसी हर-भगत हुवो[5] ।
६ मूंजो ।
७ ऊदो मूंजावत ।
८ जैसिंघदे । जैसळमेर गयो । उणरै वांसला सावै छै[6] ।
८ पुनपाळ जांगळू धणी ।
९ मांणकराव पुनपाळरो ।
१० नापो मांणकरावरो । जांगळू धणी । तद बलोचै जोर दवाया, तरै राव जोधा कनै[7] जोधपुर आयनै कंवर वीकानूं जांगळू ले जाय धणी कियो । सांखला चाकर हुवा ।
६ रांणो आंवो राजसीरो । कंवरसी, खींवसी आंक १०, तिणनूं मूंजै राजसीयोत धावै मारनै जांगळू लीवी ।
७ गोपाळदे बेटो हुतो, तिको जोयां कनै हुतो[8] । आंवानूं मूंजै मारियो तद मूंजेरै बेटो गोपाळदेनूं उदै मूंजावत

---

1 सांखलोंकी इतनी पीढ़ी जांगलूमें रही । 2 राणा कुंवरसी, जिसको सौतके वैरके कारण खरला राजपूतोंकी भारमली नामकी एक अंधी लड़की व्याह दी गई । 3 सो कुंवरसीके पाणिग्रहण करते ही भारमलीको आंखोंसे दिखने लग गया । 4 उन दिनोंमें खरलोंकी ठकुराई छोहले-रिणधीरसरमें थी जो अब कुंवीरोह कहा जाता है । 5 करमसी हरिभक्त हुआ । 6 उसके पीछेके वंशज सावामें हैं । 7 पास । 8 जो जोईया राजपूतोंके पास था ।

उठै मारियो ।* ऊदैरी बैर मांगळियांणीनूं आधांन[1] थो, सु धरमो वीठू इणांरो चारण ले नाठो पीहर[2] । मांगळियांणी कीलू करणोतरी बेटी हुती, सु एकण-पग खींवसर आयो[3] । उठै मांगळियांणी मैहराज जायो[4] ।

८ खींवो जसहड़रो ।

८ वीरम खाबड़ियांणीरो ।

८ मैहराज मांगळियांणीरो । तठा पछै[5] मेहराज वरस १४ तथा १५ रो हुवो, तरै आपरा भाई रजपूत भेळा करनै जांगळू ऊपर गयो[6] । सु मूंजा ऊदानै मारनै ढाकसरीरा कोहर मांहै नांखियो[7] । घणो साथ मूंजै ऊदारो मारियो । घणो लोही वुहो[8] । लोहीरा वाहळा प्रोळरै बारै तांई आया[9] । पैहली दहिया मारिया था तदही[10] प्रोळ बारै लोही आयो तो[11] । सु मैहराज ऊजळ खत्री हुतो । इण जांगळू आदरी नहीं[12]; नै मांणकरावरा बेटा जांगळू वसिया; नै मैहराज गोपाळदेरो पीहलाप, जोगीरा तळावथी कोस २ ऊगवणनूं[13] छै, चूंडासरसूं कोस १, तठै वसियो; तठै मैहराजरा कराया तळाव ३ छै[14] ।

१ महिराजांणो तळाव ।

२ लूंभासर तळाव ।

१ हरभूसर तळाव ।

केहेक[15] दिन सांखलो मैहराज पीहलाप रह्यो । पछै नागोररै गांव भूंडेल राव चूंडासूं मिळनै वसियो । गोगादेजी दलो जोईयो

1 गर्भ । 2 सो इनका चारण धरमा वीठू उसको लेकर उसके पीहर भाग गया । 3 वह बिना कहीं विश्राम लिये खींवसर आया । एकण-पग=१ बिना विश्राम, २ लंगड़ा । 4 वहां मांगलियाणीने मेहराजको जन्म दिया । 5जिसके बाद । 6 जांगलू पर चढ़ कर गया । 7 मूंजा और ऊदाको मार करके ढाकसरीके एक कुँएमें डाल दिया । 8 बहुत रक्त बहा । 9 रक्तका प्रवाह पोलके बाहिर आया । 10 तब भी । 11 था । 12 इसने जांगलूमें रहना स्वीकार नहीं किया । 13 पूर्व दिशा । 14 वहां मेहराजके कराये हुए तीन तालाव हैं । 15 कई एक ।

* यहां ऊदा नहीं, गोपालदे होना चाहिये ।

मारियो तद मैहराजरो बेटो आलणसी साथै हुतो[1]। गोगादेजीरै पछै गोगादेजीनूं पद्रोलाई तळाई माथै[2] जोईयो धीरदे नै पूंगळरो राव रांणगदे पोहता[3]। तठै आलणसी गोगादेजी साथै कांम आयो।

मैहराज गोपाळदेओतरा बेटा, आंक १२—

१३ हरभू पीर। तिणरा पोतरा वैंहगटी[4]।

१३ आल्हणसी रा॥ गोगादेजी साथै कांम आयो।

१३ लूंभारा पोतरा मारवाड़ मांहै चींधड़सा[5] छै।

१३ कूंभो।

१३ जोधो। तिणरा वांसला वैंहगटी छै। मदा कहावै छै[6]।

१३ रिणधीर।

वात

राव चूंडो वीरमोत मंडोवर घणो तपियो[7]। पछै तुरकांनूं मारनै नागोर लियो। पछै आप नागोर हीज राजथांन कर रह्या छै। तिण दिन[8] सां॥ मैहराज गोपाळदेरो नागोर गांव भूंडेल रहै छै, सु एक दिन राव अरड़कमल चूंडावत सिकार रमण आयो हुतो, सु मैहराजरै गांव उतरियो[9], सु मैहराज गोठ की छै[10]। तठै मैहराजनूं खबर छै, भाटी सादो रांणगदेवोत ओडीट मोहिलांरै परणीजसी[11], सु आ वात अरड़कमल जांणै न छै; सु मैहराजरा मुंहडा मांहिसूं नीसर गयो[12]—

"वांभण पूत न वीसरै, ज्यूं विसहर काळै[13]।
आल्हणसीह न वीसरै, मैहराज मूंछाळै[14]॥ १॥

तरै अरड़कमलजी पूछियो—"थे मैहराज सांखला कासूं कह्यो ?"

---

1 था। 2 ऊपर। 3 पहुँचे। 4 हरभू पीर, जिसके पोते वहेंगटीमें रहते हैं। 5 अधिक अफीमके व्यसनी होनेसे असमर्थ अवस्था जैसे। 6 जोधाके वंशज वहेंगटीमें रहते हैं और मदा कहाते हैं। 7 वीरमके बेटे चूंडेने मंडोरमें बहुत दिन शासन किया। 8 उन दिनोंमें। 9 ठहरा। 10 मेहराजने दावत दी है। 11 राणगदेवका बेटा सादा ओडीट मोहिलोंके यहां व्याहेगा। 12 मेहराजके मुंहसे निकल गया। 13 काला सांप। 14 वीर।

तरै मैहराज कह्यो—"कुंही कहां नी[1]" तरै वळै अरड़कमलजी हठ कर पूछियो, तरै मैहराज कह्यो "थे ठाकुर; थांनै को आपरो दावो चीतां न आवै[2]; नै म्हे धररा धणी; म्हांरा पेट छोटा सु वात एक चीता आई[3]।" तरै अरड़कमलजी कह्यो—"किसी वात[4] ?" तरै मैहराज कह्यो—"रा॥ गोगादे वीरमोत मारियो, तद राव राणंगदे विसीठगारी गोगादेजीसूं कीवी थी[5], तद गोगादेजी कह्यो हुतो—"म्हारो दावो जोईयासूं को नहीं;[6] म्हारा तीन सरदार पड़िया; जोईयांरा सात सिरदार पड़िया; म्हारो कोई राठोड़ वैर मांगै तो राव रांणगदे कनै मांगज्यो। तद म्हारो बेटो आल्हणसी गोगादेजीरै साथै कांम आयो तो सु वा वात मोनूं याद आवै छै।" तरै अरड़कमल कह्यो—"तिका वात हमार क्यूं चीत आई ? वे कठै हुवै[7]?" तरै मैहराज कह्यो—"राव रांणगदेरो बेटो टीकाइत सादो ओडीट मोहिलांरै दिनां २ दोयनै परणीजसी।" तरै अरड़कमल हेरू[8] मेलिया, नै आप असवार २००सूं चढ़ खड़िया[9]। बीच नाहरां ४ चाररो सवण[10] हुवो। आ वात घणी छै, सु अरड़कमलरी वात मांहै लिखी छै[11]। पछै सवण बोलावणनूं कूंवौरे गैहलोत गोदारै गया नै उठै हेरू पाछो आयो, तरै अरड़कमल चढ़ खड़िया। सादो परणीजणनै चढ़ियो[12]। वांसासूं[13] अरड़कमलजी गांव आधीसर जसरासर नागोर बोकानेर बीच आपड़िया[14]। तठै एक बार सादो मोर घोड़ारो पराक्रम दिखावण वास्तै घोड़ो दोड़ाय नीसर गयो[15]। पछै पाछो फिर आयनै सादो कांम आयो। जेठी पाहू राव रांणगदेरै वडो रजपूत थो सु जुदो चालियो जातो थो सु तिणनूं ईदा ऊगमड़ारा बेटा २ दोय आपड़िया, तिणनै मारनै नीसरियो। सादा मारियारी खबर जेठी पाहूनूं न हुई। पछै जेठी पूंगळ गयो, तरै राव

1 कुछ भी नहीं कहता। 2 तुमको तो कोई अपना दावा (वैरका वदला) लेना नहीं आता। 3 हमारे छोटे पेटमें यह एक वात याद आ गई। 4 कौनसी वात ? 5 उस समय राव रांणगदेवने गोगादेजीकी अप्रतिष्ठा की थी। 6 जोईयोंसे मेरा कोई दावा नहीं रहा। 7 यह वात इस समय क्यों याद आ गई और वे कहां हैं ? 8 गुप्तचर। 9 और खुद २०० सवारोंके साथ चढ़ कर चल दिये। 10 शकुन। 11 यह प्रसंग वड़ा है सो अरड़कमलकी वातमें लिखा है। 12 सादा विवाह करनेको रवाना हुआ। 13 पीछेसे। 14 पीछे भाग कर पकड़ लिया। 15 निकल गया।

रांणगदे घणा ओळंभा[1] दिया। पछै सांखलो मैराज भूंडेल रहतो। राव चूंडारी थाट[2] पण भूंडेल रहती। सु मैहराज वडो सवणी[3]। आगै खबर हुवै;[4] तरै हाथ आवै नहीं। पछै भाटियां कनै कोहेक[5] मैहराजरो चाकर राखसियो रजपूत गयो, तिण कह्यो–" हूं मैराजनूं मराइस[6] हेवै कटक खांचियो[7]। राव रांणगदे नै पाहू जेठी छै। डेरो हुवै तठै आडो खाई खिणनै पांणीसूं भरैसूं सवण[8] बोलै। कहे–"आडा वाहण कनारै घोड़ा छै। पछै इण भांत करनै कटक आयो। सांखलै मैहराजरै कटक देठाळै हुवो,[9] तरै बेटो काढ़ियो। घोड़ी लांप चाढ़नै राखसियै सोमैनूं नागोर राव चूंडा कनै वोलाऊ मेलियो थो[10] जु "मांहरी मदत करो।" सोना-तरा दैणां कबूल किया। इण भांत करनै सोमै राखसियां रावजी चूंडाजीनूं वाहर चाढ़िया। नागोरसूं कोस २० जांभवा घोड़ैरो गुढ़ो हुतो, सु रावजी लूटण लागा; तरै इण कह्यो–"मांहरो गुढ़ो न लूटो तो म्हे राव रांणगदे वतावां, रांणगदेनै माराऊँ[11]। पछै जांभरो गुढ़ो न लूटियो। जांभ आगै करनै खड़िया[12]। राव रांणगदे कोसै १० उठाथी[13] उतरियो थो तठाथी[14] पाखती खड़नै[15] सामा घोड़ा जाक-झोलनै आया[16]। राव रांणगदे जांणियो—सोवत[17] आवै छै। नैड़ा आयनै घोड़ै चढ़िया नै कह्यो–"राव रांणगदे! राव गोगादे मांगूं[18]।" इतरो कहिनै रांणगदेनै पाहू जेठी नै रावजी श्री चूंडाजी मारियो। नै सांखला मैराजनूं तो पैहलांई भाटी रांणगदे मारनै नीसरियो हुतो[19]।

तठा पछै मैहराजरो बेटो हरभम भूंडेलसूं छाडनै फळौधीरै गांव चाखू, तिणसूं कोस ३, गांव सिरड़था[20] कोस ५ हरभमजाळ छै, तठै आंण गाडा छोड़िया[21]। तठै रांमदे पीर नै हरभमरै परसंग

---

1 उपालंभ। 2 सेना। 3 शकुनी। 4 पहिलेसे मालूम हो जावे। 5 कोई एक। 6 मैं मेहराजको मरवा दूंगा। 7 उन्होंने कटक चलाया। 8 शकुन। 9 सांखले मेहराजको कटक दिखाई दिया। 10 राव चूंडाके पास दूत भेजा था। 11 राणगदेको मरवा दूं। 12 जांभको आगे करके चले। 13 जहांसे। 14 वहांसे। 15 पासमें चला कर। 16 तेजीसे आये। 17 घोड़ोंका काफिला। 18 राव गोगादेका वैर मांगता हूं। 19 निकल गया था। 20 से। 21 वहां आकरके गाड़ोंको छोड़ा।

हुवो[1]। जोगी बाळनाथ रांमदे पीररै माथै हाथ दिया था । तिण ही[2] हरभम सांखलै माथै हाथ दिया । हरभम हथियार छोड़नै इण राहमें हुवो[3] । पछै लोलटै आय रह्यो । तठा पछै कितरेहेक दिने राव जोधाजी विखा[4] मांहै आया । सांखलै हरभम जीमाया नै आ दवा दी[5]–"इण मूंगां पेट मांहै थकां जितरी भूं घोड़ो फेरीस तितरी धरती थारा बेटा पोतरा भोगवसी[6] । पछै राव जोधैरै धरती हाथ आई । पछै राव जोधै हरभमनूं बैंहगटी सांसण कर दीनी[7]। तिण बैंहगटीमें हमैं ही हरभमरा पोतरा रहै छै[8] ।

सांखला मैहराज गोपाळदेओतरो परवार, आंक १२ ।

१३ हरभम पीर वडी करामातरो धणी हुवो । पीर रांमदे देहुरै गोर[9] ली, तरै कह्यो–"गोर १ म्हांरी गोररी पाखती[10] सांखला हरभमरै वास्तै संवार राखो[11] । आजथी दिनां ८ हरभमटी आइनै गोर लेसी[12] । पछै हरभू आय उठै गोर ली ।

१४ चूंडो हरभमरो ।

१५ पूंजो । १५ कोजो । १५ बोजो ।

पूंजारो परवार—

१६ सीवो ।

१७ रावत रायपाळ संमत १६३५ विखा मांहै खड़चर थको विकू कोहर करमसियोत मारियो ।

१८ ईसर ।

१९ सारंग ।

२० उधरण बैंहगटी ।

१७ डूंगर सिवारो ।

१७ तोगो सिवारो ।

१८ मेहाजळ । १८ ऊदो ।

१९ रांमदास मेहाजळोत ।

१९ जगहथ ।

१७ चाचो सिवारो ।

१८ नेतो ।

---

1 वहां रामदेव पीर और हरभमके मुलाकात हुई । 2 उसने ही । 3 हरभम शस्त्रोंको त्याग कर भक्तिकी ओर प्रेरित हुआ । 4 विपत्ति । 5 सांखले हरभमने उन्हें भोजन करवाया और दुआ दी । 6 इन मूंगोंके पेटमें रहते जितनी दूरी तक घोड़ा चला सकेगा उतनी धरती तेरे बेटे-पोते भोगेंगे । 7 फिर राव जोधेने बहेंगटी गांव हरभमको शासनमें दिया । 8 उस बहेंगटीमें अब भी हरभमके पोते रहते हैं । 9 समाधि । 10 पासमें । 11 तैयार करके रखो । 12 आजसे ८ दिन बाद हरभम भी आकर समाधि लेगा ।

१९ रांणो । १९ खेतसी ।
१९ दांमो । १९ दलो ।
१६ जांझण पूंजारो ।
१७ कांन्हो ।
१८ गोपाळ । १८ करन ।
१८ हरि ।
१७ किसनो जांझणरो ।
१८ खंघारो । १८ राघो ।
१८ जैमल ।
१४ मांडो हरभमरो टीकाई हुतो सु बूढ़ो हुवो तरै आपरा भाई चूंडानूं आप टीको दियो[1] ।
१६ रायमल ।
१५ अभीहड़ ।
१७ जैमल, बैंहगटी ।
१८ लालो ।
१९ वस्तो । १९ आणंद ।
१९ रिणमल ।
१४ सोभ हरभमरो ।
१५ जालाप ।
१६ तेजो ।
१७ देईदास । १७ खेतो बैंहगटी ।

पूंजो राजारो । राजो, कँवरसी, खींवसी, अणखसी, मूंजो, आंक ६—

७ ऊदो जांगळू धणी हुतो । तिणनूं सांखलै मैहराज मारियो ।
८ जैसिंघदे । इणरी बहन रावळ करण जैसळमेररो धणी परणियो हुतो[2] । पछै इणरो बेटो खेतसी उठै गयो तरै गांव १ सावो दियो छो,[3] तठै हमैं रहै छै[4] जैसळमेरसूं कोस १२ ।
९ मोजदे ।
१० वेगू ।
११ सूरो । ११ वीरम ।
११ जैतकरण ।

जैतकरण, आंक ११—

१२ दुसाझ ।
१३ सहसमल ।
१४ खेतो ।
१५ जैतो ।
१६ वैरसल ।

---

1 हरभमका बेटा गद्दी पर था सो जब वह बुड्ढा हुआ तो अपने भाई चूंडाको अपने हाथसे टीका दे दिया । 2 इसकी बहिन जैसलमेरके स्वामी रावल करनसे व्याही थी । 3 था । 4 जहां अब रहता है ।

जैतो खेतारो, आंक १५—

१६ वैरसल ।

१७ दूदो ।

१८ जोगी ।

१७ गंगादास ।

१८ चांपो । १८ जेठो ।

१८ गोपो ।

१६ अखैराज ।

१७ कांन्ह । १७ लालो ।

१८ भोजराज ।

१९ जीवो ।

१७ करण ।

१८ मेहो । १८ राजो ।

८ पुनपाळ । औ जांगळू धणी ।

९ मांणकराव ।

१० नापो ।

इतरी पीढ़ी सांखलांरै रही । पछै राव चूंडा ऊपर राव केलण रांणगदेरै वैर मुलतांणसूं फौज ले आयो हुतो[1] । राव चूंडो मारियो । तिण दावै सांखलो देवराज पण इण फौज मांहे हुतो । तिण वास्तै राव कांन्हो चूंडावत जांगळू ऊपर आयो, तद इतरा सांखला कांम आया—

साखरो दूहो—

"सधर हुवा भड़ सांखला, ग्यो भाजै[2] क्राभाळ[3] ।
वीर रतन ऊदो विजो, वच्छो नै पुनपाळ ॥१"

वात

जांगळवां सांखलांरै बारहठो वीठू चारण,[4] नै रूणोचा सांखलांरै चारण धधवाडिया अनै[5] जांगळवांरै बांभण उपाधिया, कूंभार गिरधर, सूत्रधार चोहिल ।

नापो सांखलो मांणकरावरो बेटो राव जोधाजी कनैं जायनैं बीकाजी जोधावतनूं ले आयो । जांगळू राठोड़ धणी हुवा, नै सांखला बड़ा इतबारी चाकर हुवा । गढ़री कूंची सदा सांखला नापारा पोतरांरै हवालै हुवै छै[6] ।

---

1 आया था । 2 भाग गया । 3 बहादुर । 4 जांगलवा सांखलोंके बारहठका पद वीठू चारणोंको । 5 और । 6 गढ़की चाबी हमेशा सांखला नापाके पोतोंके हवाले होती है ।

१ नापो ।

२ रायपाळ ।

३ सुरजन ।

४ अखैराज ।

५ ईसरदास ।

६ गोयंददास । गढ़री कूंची कनै[1] ।

६ रांमदास । ६ केसोदास । ६ नरसिंघदास ।

सांखलो महेस कलावत । बीकानेर भलो रजपूत हुवो । सुरताणीयं कंवर दलपत नै राजा रायसिंघरै साथ वेढ हुई तठै कांम आयो । तिणरै पीढ़ियांरी खबर नहीं ।

सांखला नापारो कवित्त—

रवि अंगीरी रास सिंघ जाय कोरी सुत्तो ।
पड़िया धोमारिक्ख मास आसाढ़ निरत्तो ।।
ऊवांणो ईखियो इसो काकड़ा तणो उर ।
असुरां गुर नस्ट गोक आवियो सुरां गुर ।।
देहियै दीवारै दांन विध विरदे मोकळ राव दुवौ ।
तिण वार हुवौ नरपाळ तूं मांणक रावउत माळवौ ।।१

जांगळवा पुनपाळरा पोतरा, आंक १—

२ सांडो ।

३ भोजो ।

४ अभो । चाटलौ पटै । कंवर भोपत मांडणोत साथै[2] ।

४ लूंणो राव मांडणरै वास चाटलै कांम आयो[3] ।

४ भादो, लूंणा साथै कांम आयो ।

४ तेजसी । रा।। देवीदास जैतावत साथै मेड़तै कांम आयो ।

५ मांनसिंघ । ५ जोधो । ५ गोयंददास ।

३ कीतो सांडारो ।

इति सांखलांरी ख्यात संपूर्ण ।

---

1 गढ़की चाबी इसके पासमें । 2 मांडणके बेटे कुंवर भोपतके साथ अभाको चाटला गांव पट्टेमें । 3 लूणेका रहवास राव मांडणके यहां, चाटला गांवके युद्धमें काम आया ।

अथ सोढांरी ख्यात

पंवारांरी पैंतीस साख, तिणांमें[1] एक साख सोढांरी ।

१ धरणीवराह पंवारसूं पीढी आगली सांखलांरै आद लिखी छै[2]—

२ छाहड़ धरणीवराहरो. तिणरै घरै अपछरा थी, तिणरै पेटरा बेटा दोय हुवा । तिणांरी[3] औलाद सोढा नै सांखला ।

सोढांरी पीढी—

१ सोढो ।
२ चाचगदे ।
३ राजदे ।
४ जैमुख ।
५ जसहड़ ।
६ सोमेसर ।
८ धारावरीस ।
८ दुजणसाल । ८ आसराव ।
६ खीमरो ।
१० अवतारदे ।
११ थिरो ।
१२ हमीर ।
१३ वीसो ।
१४ तेजसी ।
१५ वोपो ।
१६ गांगो ।
१७ पतो ।
१८ चंद्रसेण ।
१६ भोजराज ।
२० ईसरदास ।

७ धारावरीसरै दोय बेटा—
८ आसराव पारकररो धणी ।
८ दुजणसाल ऊमरकोट धणी ।
६ संग्रांमसीरो परवार घणो छै ।
६ केलणरो परवार घणो छै ।
६ नांगड़ । ६ भांण ।
६ खींमरो दुजणसालरो ।
१० अवतारदे ।
१० घोघो । १० सतो ।

अवतारदे, आंक १०—

११ थिरो ।
११ कीतो जैसळमेर छै ।
११ गजूरा जैसळमेर छै ।
११ वीरधवळ ।

---

1 उनमें । 2 धरणीवराहसे पहलेकी पीढ़ियां सांखलोंके प्रसंगमें लिखी हैं । 3 उनकी ।

११ वीरमदेरा जोधपुर आंबेर छै[1]।

१२ हमीर थिरारो।

१३ वैरसी। १३ वरजांग १३ वीसो। १३ ऊदो।

१२ रतो थिरारो।

सोढा हमीर थिरावतरो परवार, आंक १२—

वैरसी हमीरोतरो परवार, आंक १३—

१४ राजधर।

१५ देव।

१६ जोधो।

१७ रूपसी।

१८ कमो।

१९ रतनसी। इणरा बेटा आंबेर चाकर छै।

२० सेरखांन मोरदो पटै, नरांणा कनै[2]।

२० सल्हैदी। २० हरीदास।

१५ गोयंद राजधररो।

१६ गांगो।

१७ सुरतांण।

१८ मुकंद।

१४ मांडण वैरसीरो।

१५ देवराज।

१६ कूंभो।

१७ सिवराज।

१८ रांणो रायमल कांगणी। खेतरो जूंझार[3]।

१८ रतनसी सिवराजरो।

१८ कल्लो सिवराजरो।

१८ नैणसी सिवराजरो।

१८ मांणकराव सिवराजरो।

१९ ऊदो।

२० जोगीदास।

१९ वाघो।

१७ महिकरन कूंभारो।

१८ भाखरसी।

१९ मांनसिंघ। १९ चांपो। १९ रांमो।

२० महेस। २० राजधर। २० रायसिंघ।

१८ सूजो महीकरणरो।

१९ रांम।

११ गजू अवतारदेरो।

१२ मेळो गजूरो।

१३ डूंगरसी मेळारो।

१४ खरहथ डूंगरसीरो।

१५ सहसो खरहथरो।

१६ जोधो सहसारो।

१७ जींदो। १७ राजधर।

---

1 वीरमदेवके वंशज जोधपुर और आमेरमें हैं। 2 शेरखांनको नरानाके पासका मोरदा गांव पट्टेमें। 3 रांणा रायमलका कांगणीमें निवास। रणक्षेत्रका जूझार वीर।

१७ चांदराव ।

१७ मांडण ।

१८ जोगो मांडणरो ।

१८ जेठो मांडणरो । देवराजोतांमें बुड़कियो कनोड़ियो वसायो[1] ।

१९ सांमदास । १९ मांनो ।

१९ भांनो ।

१९ धनो ।

१९ मोहण ।

२० हरीदास ।

२० वैणो ।

१८ जैसो मांडणरो ।

१९ कचरो जाळीवाड़ै पोकरणरो तथा द्रेग वसै छै[2] ।

२० मांलण । २० ग्रासो ।

२० सुंदर ।

१८ रांमो मांडणरो । द्रेग वसै छै ।

१९ वीरदास । १९ गोपो । सोभो ।

सोढो वीसो हमीररो, ग्रांक १३ ।

कवित्त—सोढा तेजसी वीसावतरै बेटा १२ हुग्रा तिणांरो—

(१) देवीदास दुरंग सुपह (२) कांन्हो राजेसर
खड़गहथो[3] (३) खेतसी ग्रनै (४) बळराज उनैकर ॥
(५) चांपो नै (६) रायमदन्न रूप रायां छळ राखण ।
(७) वीदो नै (८) सामंत वैर वडवार विचक्खण ॥
(९) महोकरण (१०) नरौ (११) रिणमल मुदै (१२) मेरो गुण सागर सुमत ।
तेगियां, तिलक[4] तेजळ[5] तवां[6] बारै बेटा विरदपत[7] ॥१॥

१३ वीसो हमीररो ।

१४ तेजसी वीसारो ।

१५ देवीदास । १५ कांन्हो ।

१५ खेतसी । १५ बळराज । १५ वीदो ।

१५ सामत ।

१५ चांपो । १५ रायमल ।

१५ महीकरण । १५ नरो । १५ रिणमल ।

१५ मेरो ।

---

1 देवराजोतोंमें बुड़किया कनोड़ियामें बसा । 2 कचरा पोकरनके जालीवाड़ा गांवमें तथा द्रेग गांवमें रहता है । 3 शस्त्रधारी । 4 वीर शिरोमणि । 5 सोढा तेजसी । 6 कहता हूँ । 7 यशधारी ।

१५ कांन्हो तेजसीरो ।
१६ वाघो । १६ चाचो ।
१६ वणवीर ।
१६ वणवीर कांन्हारो ।
१७ हमीर ।
१८ गोयंद ।
१९ वीजो ।
२० रतनसी ।
२१ चांदराव ।
२० नांदो विजारो ।
२१ जगनाथ ।
२० उदैसिंघ । २० सूजो ।
२० दलो विजारो ।
१९ नराइण गोयंदरो ।
२० रांम नारणोत ।
२१ अखो । २१ जैमल ।
२१ दलपत । २१
भोपत ।
२१ पतो । २१ उदैकरण ।
२० वैरसी नारणोत । टीका-
इत ।
२१ जीवण । २१ रांमो ।
२१ चांदो नारणरो ।
२० महीकरण नारणरो ।
२० हरराज । २० चंद-
राज । २० गंगदास ।
२० जोधो ।
१८ गांगो हमीररो ।
१९ साहिब ।
२० उदैसिंघ ।
१८ मांनो हमीररो ।
१८ सिखरो हमीररो ।
१८ राहिब हमीररो ।
१९ खंगार । १९ लूणो ।
१६ चाचो कांन्हारो ।
१७ वीरमदे ।
१८ जैमल ।
१९ वांकीदास ।
२० माधोदास ।
२१ नारणदास । नागोररै
गांव नैछवै[1] ।
२२ सांवळदास । २२ नाहर-
खांन ।
२० मांनो । २० जसवंत ।
१५ चांपो तेजसीरो टीका-
इत । रांणो चांपो ऊमर-
कोट धणी ।
१६ रांणो गांगो चांपारो
ऊमरकोट धणी ।
१७ रांणो पतो टीकाई ।
१७ रायसल । १७ नेतसी ।
१७ सुरतांण । १७ मेघ-
राज ।
१७ मांनसिंघ । १७ रतनसी ।

---

1 नारायणदास नागौरके नैछवै गांवमें रहता है ।

१७ वैरसल। १७ हदो। १७ भोजदे।

रांणो पतो गांगारो। ऊमरकोट टीकै, आंक १७—

१८ रांणो चंद्रसेण राजा सूरजसिंघरो सुसरो।
१९ रांणो भोजराज।
२० रांणो ईसरदास, ऊमरकोट टीको छो[1]। पछै संमत १७१० रावळ सबळसिंघ इणनूं परो काढ़नै जैसिंघनूं टीकै वैसांणियो[2]।
२१ हमीर।
२० अमरो भोजराजरो। महेवै रावळ भारमलरै वास। गांव भूखो पटै[3]।
२१ वैणो। २१ सूरजमल। २१ हरिदास।
२० जोगीदास। २० जसो।
२१ जगनाथ।
१७ मेघराज। गांगारो।
१८ किसनदास। १८ भगवांन। १८ सांमदास। १८ भीम।
१६ बळभद्र।
१७ रतनसी गांगारो। रावळ मनोहरदासरो सुसरो। सूरजदे मनोहरदासरी वहू, तिका रतनसीरी बेटी। संमत १७२२ मुथराजीमें मुई[4]।
१७ मांनसिंघ गांगारा।
१८ रांणो जोधो।
१९ जैसिंघदे रांणो, ऊमरकोट टीकै।
२० रांणो वीरमदे।
२१ रांणो राजसिंघ टीकाई।
१९ वीरमदे जोधारो।
२० रांणो जैतसी।
१९ माधोसिंघ जोधारो। भाटी केसरीसिंघ अचळदासोत मारियो। भाटी सुंदरदासरै वैरमें[5]।
१९ गजसिंघ जोधारो।
१६ सूरजमल चांपारो।

1,2 रांणा ईसरदासको उमरकोटका टीका था, बादमें रावल सबलसिंहने सं० १७१०में इसको निकाल कर जयसिंघको टीके बैठाया। 3 भोजराजका बेटा अमरा, महेवेमें रावल भारमलके यहां निवास और भूका गांव पट्टेमें। 4 गांगाका बेटा रतनसी, रावल मनोहरदासका ससुरा। रतनसीकी बेटी सूरजदेवी जो मनोहरदासकी पत्नी, मथुराजीमें देवलोक हुई। 5 जोधाका बेटा माधोसिंह, जिसे भाटी सुंदरदासके वैरमें केसरीसिंह अचलदासोतने मार दिया।

१७ करण ।
१८ खींवो ।
१९ किसनो । १९ भांनो ।
१९ भांण ।
२० महेस ।
१९ भोपत । १९ मेहाजळ ।
१८ ठाकुरसी करणरो ।
१९ रायसिंघ । १९ दुरजो ।
१९ महेस । १९ हर-
राज ।
१९ जोगीदास । १९ अखै-
राज ।
१३ ऊदो हमीररो । हमीर,
थिरो अवतारदेरो ।
इणरो परवार महेवैरै
गोवल छै, नै के ऊमरकोट
परवर गांव समंद कनै
छै, तठै छै[1] ।
१४ कूंपो ।
१५ वैरसल ।
१६ महीरावण ।
१७ खेतसी । गोवल छै ।
१८ कांनो । १८ भांनो ।
१८ सादूळ । १८ सूजो ।
१८ लखो । १८ गोपाळ ।
१८ कांनो खेतसीरो ।
१९ सूरो कांनारो ।
२० रायमल ।
२१ जैतो । २१ तेजो ।
१९ मावो कांनारो ।
२० रामो ।
१९ सादूळ खेतसीरो,
बोहरावास ।
१९ अचळो ।
२० देवराज । २० सवळो ।
१८ सूजो खेतसीरो, गोवल
छै ।
१९ सेखो । १९ आसो ।
१८ लखो खेतसीरो ।
१९ जेसो ।
२० अखैराज, उजेण कांम
आयो । हरिदासरो
चाकर[2] ।
२१ रांमसिंघ ।
१८ भांनो खेतसीरो ।
१९ ऊदो भांनारो ।
२० सांगो ।
२१ भारमल । २१ जोधो ।
२० गोयंद ऊदारो ।
१९ भैरव ।
२० दलो । २० मेघराज ।
१९ दूदो भांनारो ।

---

1 ऊदा हमीरका बेटा । हमीर और थिरा अवतारदेवके बेटे । इनका परिवार महेवेके गोवल गांवमें है और कई ऊमरकोट प्रान्तका समुद्रके पास परवर गांव है वहां रहते हैं ।
2 अखैराज हरिदासका चाकर, उज्जैनकी लड़ाईमें काम आया ।

१७ नेतसी महरांवणरो ।
१८ परवत नेतसीरो, गोवल छै ।
१९ भोजो । १९ रामसिंघ ।
१९ भोपत । १९ खींवो ।
१८ भाखरसी बाहड़मेर कांम आयो ।
१९ राघो भाखरसीरो ।
२० मनोहर गोवल छै ।
१७ लूंणो महरांवणरो ऊमरकोट छै ।
१८ डूंगरसी लूंणारो ।
१९ घड़सी ।
२० मांडण । २० नरसिंघ ।
११ वीरमदे अवतारदेरो ।
१२ तमाइची वीरमदेरो ।
१३ सतो ।
१४ कूंभो ।
१५ सहसो ।
१६ सांमो ।
१७ मैहराज ।
१८ गोवरधन । १८ लाडखांन । १८ सुंदर ।
१३ देवराज तमाइचीरो ।
१४ सादो देवराजरो ।
१५ वनो सादारो ।
१६ सहसमल, उठै माहोमाह भार्यां मारियो, तद इणरो बेटो अड़वाल मारवाड़में आयो, रांणी लिखमी इणरी मासी थी, इण परसंग[1] ।
१७ अड़वाल ।
१८ महेस ।
१९ नेतसी ।
२० ईसरदास । खारियो सोजतरो पटै[2] ।
२१ गोवरधन ।
२२ खींवो खारियो पटै ।
२० नरहरदास ।
२१ रांमसिंघ ।
२२ कलो रांमसिंघरो ।
२१ गोकळ ।
२१ जीवो नरहरदासरो ।
१८ दूदो अड़वाळरो ।
१९ भांण दूदारो ।
२० अमरो । २० दयाळ ।
२० भगवांन ।
२१ दलो जाळोररो गांव पटै ।
१९ वेणीदास दूदारो ।

---

1 सहसमलको उसके भाइयोंने परस्परकी लड़ाईमें मार दिया, तब इसका बेटा अड़वाल मारवाड़में चला आया। राव सूजाकी रानी लक्ष्मी इसके मौसी लगती थी, इस प्रसंगसे । 2 ईश्वरदासको सोजतका खारिया गांव पट्टेमें ।

२० गोपाळदास ।
१८ महेस अड़वाळरो ।
१९ पतो । १९ हरिदास ।
१९ जैतो । १९ भोज ।
१५ भींवराज सादारो ।
१६ सायर ।
१७ जगमाल ।
१८ कवरो दंतीवाड़ै वसै ।
१६ मांडण भींवराजरो ।
१७ सूरो ।
१८ जगनाथ । अजमेररै गांव भांमोळाव रहै छै[1]
१४ संतो देवराजरो ।
१५ पीथमराव ।
१६ परबत ।
१७ सूजो ।
१८ जैमल ।
१९ उरजन ।
२० मांनो ।
२१ वरजांग देछूरै मढलै वसै ।

इति सोढांरी ख्यात सम्पूर्ण ।



1 जगन्नाथ अजमेरके भामोलाव गांवमें रहता है ।

वात पारकर सोढांरी—पंवारै भिलै

धरणीवराह बाहड़मेर धणी हुवो। तिणरै बेटो छाहड़ हुवो। तिणरै घरै अपछरा हुती। तिणरै बेटा दोय २—सोढो नै वाघ। तिण वाघरा सांखला कहीजै[1]।

सोढो; तिणरी औलादरा सोढा पीढी—

१ धरणीवराह।	१ आसराव, आंक १०—
२ छाहड़।	२ देवराज।
३ सोढो।	३ सलख।
४ चाचगदे।	४ देपो।
५ राजदे।	५ खंगार।
६ जैभ्रम।	६ भीम।
७ जसहड़।	७ वैरसल।
८ सोमेसर।	८ भाखरसी, वडो दातार।
९ धारावरीस।	९ गांगो।
१० आसराव, पारकर धणी।	१० अखो। १० चांदो।
१० दुजणसळरा ऊमरकोट धणी[2]।	११ मांणकराव।
	१२ लूंणो, देपो हमैं छै[3]।

चांदन सोढो पारकर वडो दातार हुवो। भाट बाळवनूं कोड़ दांन दियो[4]।

वात पारकररी

सैहर मैदांन मांहै वसै छै, नै छोटी सी भाखरी[5] ऊपर सोढा चांदनरो करायो गढ़ छै। तठै रांणो हुवै सु रहै[6]। गढ़ मांहै अंबारथ सखरी छै[7]। वावड़ी एक गढ़ मांहै पांणीरी छै, तिण गढ़ हेठै सैहर

---

1 उस वाघके वंशज सांखला कहलाते हैं। 2 दुजणसलके (दुर्जनसालके) वंशज उमरकोटके स्वामी। 3 लूणा और दीपा इस समय हैं। 4 पारकरमें चांदन सोढा वड़ा दानी हुआ, भाट वालवको उसने एक करोड़का दान दिया था। 5 पहाड़ी। 6 जो राणा होता है वह वहां रहता है। 7 गढ़में इमारतें अच्छी हैं।

वसै छै[1] । सो आगै तो वडी ठोड़ हुती । वडी साहिवी हुती । तद सैहर वस्ती घणी हुती[2] । हमैं ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै[3] । मुदो वस्तीरो वांणियां ऊपर छै[4] । वडो अलियळ देस । चवदै चेढी गांव लागै । चेढी १रो मांन ५६०; तिण चवदै चेढीरा गांव ७८४० हुवा । काळीझररो पहाड़ वडो, गांवसूं कोस..., पछम दिसा[5] लांवो कोस ५ । मांहै पांणी घणो, झाड़ घणा[6] । नास-भाजनूं वडी माथा-रखी[7] । गांवसूं पांवडा[8] १०० तळाव एक छै । तठै पांणी पीजै[9] । वावड़ी ६ तथा ७ गांवरी पाखती[10] सखरी छै । पांणी मीठो । पुरसै १० तथा १२[11] । गांव घणा लागै, चवदै चेढीरा । पैहली तो घणा गांव वसता । हिमैं[12] गांव १४० वसै छै । १०० पारकररा धणियांरै । गांव ४० सोढा रांमरी मऊ वसै ।

पारकररी धरती इण भांतरी । जिका धरती ऊमरकोट छहोटण, सूराचंद । इण तरफ गांव कैरिया,[13] एक साख, खेती–वाजरी, मूंग, मोठ, तिल । कूवै पांणी पुरसै २० मीठो । बीजी तरफ कछ दिसा, धरती कालार[14], तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहूं[15] ।

पारकररी सींव इतरी ठोड़सूं लागै[16]–

१ एकण तरफ कछरो वैसणो[17] । भुजनगर कोस ५०; कोस ४० तांई[18] पारकररी हद, गांव रांणी पारकररो । १० कोस आगै भुजरी[19] ।

१ ऊमरकोट कोस ८० । ५० कोस तांई पारकररी । ३० आगै ऊमरकोटरी ।

---

1 जिस गढके नीचे शहर वसता है। 2 उस समय शहरमें वस्ती अधिक थी। 3 अव भी जैतारण जितनी वस्तीका शहर वसा हुआ है। 4 वस्तीका आधार वनियोंके ऊपर है। 5 पश्चिम दिशा। 6 वृक्ष वहुत। 7 भाग कर छिप जानेका अच्छा स्थान। 8 कदम। 9 जहां पानी पीते हैं। 10 पास। 11 दस तथा वारह पुरुष गहरा पानी (पुरुष = एक प्राचीन माप, दोनों हाथ सीधे फैलाने पर वक्षस्थल सहित जो लंवाई आती है वह एक पुरुष कहलाती है। १२० अंगुलका भी पुरुष माना जाता है।) 12 अव। 13 करील आदि कँटीले पेड़ों वाले। 14 खारी जमीन, कल्लर भूमि। 15 जहां वरसाती पानी इकट्ठा हो जाता है और उसमें ज्वार और गेहूं उत्पन्न होते हैं। 16 पारकरकी सीमा इतने स्थानों से लगती है। 17 एक ओर कच्छका वैठना (राज्य)। 18 तक। 19 दस कोस आगे भुजकी सीमा।

१ सूराचंद कोस ४२ चाहुवांणांरी[1] । ३० कोस तांई पारकररी । १२ कोस आगै सूराचंदरी ।

१ एकण तरफ छहोटण कोस ६० । ४० पारकररी, २० कोस छहोटणरी ।

१ एकण तरफ दिखण वाव सूईगांव चहुवांणांरा कोस ५०[2] । २७ कोस तांई पाकररी, २३ कोस वाव सूईगांवरी ।

इति पारकररी ख्यात सम्पूरण ।

++++++++++

1 चौहानोंके सूराचंद गांवकी सीमा ४२ कोस । 2 एक ओर दक्षिण दिशामें चौहानोंके वाव और सूईगांव ५० कोस ।

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी

++++++++++

प्रकाशित ग्रन्थ

१–संस्कृत

१. प्रमाणमंजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्य, सम्पादक–मीमांसान्यायकेशरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर। मूल्य–६.००

२. यन्त्रराजरचना, महाराजा-सवाई-जयसिह-कारित। सम्पादक–स्व० पं० केदारनाथ, ज्योतिर्वित्। मूल्य–१.७५

३. महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, संपादक–म०म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी। मूल्य–१७.५

४. तर्कसंग्रह, अन्नंभट्ट, सम्पादक–डॉ० जितेन्द्र जेटली, एम. ए, पी-एच. डी., मूल्य–३.००

५. कारकसंबंधोद्योत, पं० रभसनन्दी, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी. एच-डी., मूल्य–१.७५

६. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्ण-भट्ट सम्पादक–पं. पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–२.००

७. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञात कर्तृक, सम्पादक–डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री, एम. ए., पी-एच. डी.। मूल्य–२.००

८. कृष्णगीति, कवि-सोमनाथ, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी. एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

९. नृत्तसंग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–१.७५

१०. शृङ्गारहारावली, श्री हर्ष-कवि-रचित, सम्पादिका–डॉ. प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य–२.७५

११. राजविनोद महाकाव्य, महाकवि-उदयराज, सम्पादक–पं. श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.२५

१२. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य, भट्ट लक्ष्मीधर विरचित, सम्पादक–केशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य–३.५०

१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्ण, सम्पादक–प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख, तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्। मूल्य ३.७५

१४. उक्तिरत्नाकर, साधुसुन्दर-गणी-विरचित सम्पादक–पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि। सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदीकृत, सम्पादक–पं० गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१६. कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथ विरचित, सम्पादक–पं० श्री गोपालनारायण बहुरा, एम. ए., उप-सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर । इसी ग्रंथकार की अपर कृति 'श्रीकृष्णलीलामृत' सहित । मूल्य–१.५०

१७. ईश्वरविलास–महाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित, सम्पादक–श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर । मूल्य–११.५०

१८. रसदीर्घिका, कवि विद्याराम प्रणीत, सम्पादक–गोपालनारायण बहुरा, उपसंचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–२.००

१९. पद्यमुक्तावलि, कविकलानिधि कृष्ण भट्ट, सम्पादक–पं० मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य । मूल्य–४.००

२–राजस्थानी और हिन्दी

२०. कान्हड़दे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ रचित, सम्पादक–प्रो. के. बी. व्यास, एम. ए. । मूल्य–१२.२५

२१. क्यामखां रासा, कविवर जान रचित, सम्पादक–डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा । मूल्य–४.७४

२२. लावारासा, चारण कविया गोपालदान विरचित, सम्पादक–श्री महताबचन्द खारैड़ । मूल्य–३.७५

२३. बाँकीदासरी ख्यात, कविवर बाँकीदास, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य–५.५०

२४. राजस्थानी साहित्यसंग्रह, सम्पादक–श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम. ए. । मूल्य–२.२५

२५. कवीन्द्रकल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित, सम्पादक–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य–२.००

२६. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादिका–श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत । मूल्य–१.७५

२७. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पादक–उदैराजजी उज्ज्वल । मूल्य–१.७५

२८. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची-भाग १ । मूल्य–७.५०

२९. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक–श्री बदरीप्रसाद साकरिया । मूल्य–८.५०

प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

संस्कृत ग्रंथ

१. शकुनप्रदीप, लावण्य शर्मा रचित	सम्पादक—मुनि श्रीजिनविजयजी
२. त्रिपुरा भारती लघुस्तव, धर्माचार्य प्रणीत	,, ,, ,,
३. करुणामृतप्रपा, ठक्कुर सोमेश्वर-विनिर्मित	,, ,, ,,
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर संग्रामसिंह विरचित	,, ,, ,,
५. पदार्थरत्नमंजूषा, पं० कृष्ण मिश्र रचित	,, ,, ,,

६. काव्यप्रकाशसंकेत, सोमेश्वर भट्ट कृत	सम्पादक—श्री रसिकलाल छो० परीख
७. वसन्तविलास फागु, अज्ञात कर्तृक	,, ,, एम. सी. मोदी
८. नन्दोपाख्यान, अज्ञात कर्तृक	,, ,, बी. जी. सांडेसरा
९. वस्तु रत्नकोश, अज्ञात कर्तृक	,, डॉ. प्रियबाला शाह
१०. चांद्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमि विरचित	,, श्री बी. डी. दोशी
११. वृत्तजाति समुच्चय, कवि विरहाङ्क विनिर्मित	,, ,, एच. डी. वेलणकर
१२. कविदर्पण, अज्ञात कर्तृक	,, ,, ,,
१३. स्वयम्भूछन्द, कवि स्वयम्भू विनिर्मित	,, ,, ,,
२४. प्राकृतानन्द, रघुनाथ कवि रचित	,, मुनि श्री जिनविजयजी
१५. कविकौस्तुभ, पं० रघुनाथ विरचित	,, श्री एम. एन. गोरी
१६. दशकण्ठवधम्, पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी	,, ,, गङ्गाधर द्विवेदी
१७. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभा प्रणीत	,, डॉ. प्रियबाला शाह
१८. भुवनेश्वरी स्तोत्र (सभाष्य), पृथ्वीधराचार्य रचित	,, ,, गोपालनारायण बहुरा
१९. इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध	,, डॉ. दशरथ शर्मा
२०. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग २, नैणसी मुंहता	,, श्री बदरीप्रसाद साकरिया
२१. वीरवांण, ढाढी बादर रचित	सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
२२. गोरा बादल पदमिणी चउपई, कवि हेमरतन विनिर्मित	सम्पादक—श्री उदयसिंह भटनागर
२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज मूल लेखक श्री आर. एस. भण्डारकर।	अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी।
२४. राठोड़ांरी वंशावली	सम्पादक—मुनि श्री जिनविजयजी
२५. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रन्थ-सूची	,, ,, ,,
२६. मीरां बृहत् पदावली,	,, (विद्याभूषण स्व. पुरोहित हरिनारायणजी द्वारा संकलित)
२७. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग २।	
२८. राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ (देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह वार्ता)	सम्पादक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
२९. पुरोहित वगसीराम हीरां और अन्य वार्ताएं	,, ,, लक्ष्मीनारायण गोस्वामी
३०. रघुवरजसप्रकास, आढ़ा किसनाजी	,, ,, सीताराम लाळस
२२. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १	

इन ग्रन्थोंके अतिरिक्त अनेकानेक संस्कृत, राजस्थानी और हिन्दी भाषाके ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

'राजस्थान पुरातत्त्व' नामसे एक शोध-पत्र (जर्नल) निकालने की योजना भी विचाराधीन है।

